मॉरीशस सरकार व भारत सरकार

द्वारा

मॉरीशस में गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की 180वीं वर्षगाँठ के संदर्भ में

आयोजित

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन 2014

की

स्मारिका

सहयोगी संस्थाएँ :

महात्मा गांधी संस्थान, हिंदी स्पीकिंग यूनियन, आर्य सभा मॉरीशस, हिंदी प्रचारिणी सभा, सरकारी हिंदी शिक्षक संघ, ऋषि दयानंद इंस्टीट्यूट

प्रधान संपादक

श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल

सहायक संपादक

सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी

संपादकीय टीम:

श्रीमती उषा राम, सुश्री चित्रलेखा रामदोयाल, श्रीमती विजया सरजु, सुश्री करिश्मा रामझीतन, सुश्री त्रिशिला सोमर, सुश्री नम्रता भोला

मुख पृष्ठ तथा सम्मेलन स्मृति चिह्न की संकल्पना व डिज़ाइन

विश्व हिंदी सचिवालय

सम्मेलन स्मृति चिह्न की संकल्पना

स्मारिका के पीछे के कवर पर संलग्न सम्मेलन स्मृति चिह्न की छवि गिरमिटिया आप्रवासी समुदाय के इतिहास की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। यह चित्र गाथा है उन गिरमिटिया मज़दूरों की, जो 19वीं शताब्दी में समुद्री जहाज़ों पर सवार होकर, अपने देश भारत को छोड़, अनेक देशों में पहुँचे थे और आप्रवासी घाट जैसे ऐतिहासिक स्थल की सीढ़ियों पर चढ़कर अपने नव प्रवास के देश में पहला कदम रखा था। उस समय शर्तबंध गिरमिटिया मज़दूरों के गले में टँगा हुआ टिन का टिकट, उसपर गढ़ा हुआ नंबर उनका पहचान-पत्र हुआ करता था।

निवेदन :

सम्मेलन स्मारिका में प्रकाशित लेखों के विचार लेखकों के अपने हैं। विश्व हिंदी सचिवालय और संपादक मंडल का उनके विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

REPUBLIC OF MAURITIUS

MINISTRY OF EDUCATION AND HUMAN RESOURCES, TERTIARY EDUCATION AND SCIENTIFIC RESEARCH

(Office of the Minister)

संदेश

प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार : अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ विषय पर 2014 में मॉरीशस में आयोजित अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन की स्मारिका के माध्यम से विश्व के समर्पित हिंदी जनों तक अपनी शुभकामनाएँ पहुँचाते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

गिरमिटिया आप्रवासियों के अथक परिश्रम ने जिस देश में हिंदी की ज्योत जलाए रखी उस मॉरीशस की शिक्षा मंत्री होने के नाते, विश्व के सम्पूर्ण गिरमिटिया व नव-प्रवासी हिंदी समुदाय की समस्याओं को जानने, समझने व आपस में मिलकर उनका समाधान खोजने का यह सार्थक प्रयास मुझे गौरवान्वित करता है। विशेष रूप से तब जब यह आयोजन मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की 180वीं वर्षगाँठ के संदर्भ से जुड़ा रहा।

इस सम्मेलन की अर्थवत्ता विशेष रूप से इस कारण बढ़ जाती है कि इसमें संबंधित देशों से आए विद्वानों ने किसी अप्रत्यक्ष अनुभव या शोध के आधार पर अपने विचार नहीं रखे। इस स्मारिका में प्रकाशित प्रत्येक आलेख ऐसे लोगों का प्रत्यक्ष अनुभव है जिनका हिंदी शिक्षण, हिंदी संस्था प्रबंधन और प्रचार से सीधा संबंध है। यहाँ प्रस्तुत आलेख इन सभी देशों में हिंदी के शिक्षण के इतिहास और वर्तमान से संबंधित जानकारी का एक समृद्ध डाटाबेस है जिसके आधार पर कार्य करते हुए शोधार्थी, शिक्षाविद और नीति निर्माता एक बेहतर भविष्य के निर्माण में योगदान दे पाएँगे।

महत्वपूर्ण बात यह है कि इन आलेखों में अभिव्यक्त विचार और उनसे पनपे मंतव्य 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के वृहद मंच के समक्ष प्रस्तुत किए जाएँगे। मुझे पूरा विश्वास है कि 10वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन इन विशेष समस्याओं के समाधान के लिए कटिबद्ध होगा। इसका सुखद संकेत इस बात से ही मिलता है कि विश्व हिंदी सम्मेलन में गिरमिटिया देशों में हिंदी पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण सत्र रखा गया है।

भारत सरकार और मॉरीशस सरकार सहित मॉरीशस स्थित हिंदी संस्थाओं को सम्मेलन के आयोजन के लिए तथा विश्व हिंदी सचिवालय की संपादन टीम को इस समृद्ध प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

मेरा मानना है कि सम्मेलन का अयोजन और आलेखों का प्रकाशन, कार्य का अंत नहीं है, कार्यारंभ का आधार है...इसलिए बधाई के साथ-साथ प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण के उन्नयन के लिए किए जाने वाले सभी व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयासों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन)

24 अगस्त, 2015

MITD House, Phoenix
Tel. No.: (230) 6862402/03 • Fax: (230) 6983601/ (230) 6861478
E-mail: moeministeroffice@govmu.org

HIGH COMMISSIONER OF INDIA
PORT LOUIS, MAURITIUS

सत्यमेव जयते

भारतीय उच्चायुक्त
पोर्ट लुई, मॉरीशस

संदेश

भारत सरकार एवं मॉरीशस सरकार तथा विश्व हिंदी सचिवालय के संयुक्त तत्वावधान में गत वर्ष अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। सम्मलेन में विभिन्न देशों से आए हिंदी विद्वानों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए थे और विश्व स्तर पर हिंदी शिक्षण तथा प्रचार-प्रसार में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने की दिशा में अपने सारगर्भित विचार सामने रखे थे।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि विश्व हिंदी सचिवालय इस सम्मलेन में प्रस्तुत शोधपत्रों को प्रकाशित करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। मुझे विश्वास है कि 'सम्मलेन स्मारिका' का प्रकाशन इस सम्मेलन में उठाए गए मुद्दों के समाधान के प्रति हमें सतत जागरूक एवं प्रयत्नशील करता रहेगा। इस सार्थक कदम के लिए विश्व हिंदी सचिवालय को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अनूप कुमार मुद्गल)

6th Floor, L.I.C. Building, President John Kennedy Street, P.O. Box 162, Port Louis, Mauritius
Tel.: (230)208 7372/208 8123 • **Fax:** (230) 208 8891
Email: hicom.ss@intnet.mu • **Website:** www.indiahighcom-mauritius.org

और पसीना बहता रहे...

'प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण और प्रचार-प्रसार : अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ' विषय पर आधारित अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन 2014, मॉरीशस की स्मारिका विश्व हिंदी समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अचानक विचार मौन से हो गए हैं। स्मारिका प्रकाशन की प्रक्रिया जब से शुरू हुई है, तब से मन में संपादकीय को लेकर हज़ारों विचार उफ़नते रहे। इन देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार के लिए किस-किसने संघर्ष किया है, क्या-क्या बलिदान दिए गए हैं, आज इनकी कौन सी कठिनाइयाँ हैं, उनके समाधान के लिए अंतरराष्ट्रीय हिंदी समुदाय और विशेषकर भारत को कौन-कौन से ऐतिहासिक कदम उठाने चाहिए, यह सबकुछ कहने की ठान रखी थी। लेकिन संपादन कार्य से गुज़रते हुए जैसे-जैसे एक-एक आलेख का पुनरावलोकन करता गया, जैसे-जैसे गिरमिटिया और नव-प्रवासी हिंदी समुदाय द्वारा अपने-अपने देश में अपनी भाषा और उसके माध्यम से अपनी पूरी अस्मिता के संरक्षण के इतिहास और वर्तमान की गाथा एक चलचित्र के समान नज़रों के सामने से गुज़रती रही, वैसे-वैसे विचार मौन होते गए।

स्मारिका का हर आलेख दो मुख्य तत्वों से बना है। प्रथम है, तथ्य और जानकारी। इन तथ्यों के विश्लेषण पर अपने विचारों का रुझान लादना ठीक प्रतीत नहीं हो रहा है; क्योंकि हर आलेख में जो तथ्य हैं, उनके विश्लेषण का उत्तरदायित्व शोधकर्ताओं को सौंपने के उद्देश्य से ही तो स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस स्मारिका की सार्थकता ही प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण और प्रचार-प्रसार से संबंधित जानकारी का एक डेटाबेस होने में है, जो शोधार्थी, शिक्षाविद् और नीति-निर्माताओं के भावी कार्यों का आधार बने।

दूसरा तत्व है, उन तमाम सूचनाओं के बीच से झाँकते, 180 वर्षों के इतिहास से उत्पन्न, संघर्ष और उपलब्धियाँ, द्वंद्व और विश्वास, पीड़ा और आनंद तथा भविष्य को लेकर चिंता एवं प्रवासी समुदाय की प्रतीक बनी हुई वह संघर्ष-शक्ति, जो उसको चिंताओं के अंधकार में भी आशाओं के जुगनू खोजने के लिए विश्व प्रसिद्ध बनाती आई है। इस दूसरे तत्त्व के विषय में कुछ कह-लिख पाने में आज स्वयं को असमर्थ पा रहा हूँ। अज्ञेय की प्रसिद्ध पंक्तियाँ याद आ रही हैं—'मौन भी अभिव्यंजना है'। यहाँ अंकित एक-एक देश, एक-एक संस्था, एक-एक व्यक्ति की कहानी अपने आप में हिंदी की विश्व-यात्रा का ऐसा महाकाव्य है, जो यह सिद्ध करता है कि 'मेहनत मौन कर देने वाली अभिव्यंजना है'। इसलिए बावजूद इसके (या शायद इसीलिए) कि वह इतिहास मेरा अपना है, हम में से हर एक का अपना, मेहनत और संघर्ष के इस महाकाव्य के समक्ष विचार मौन हैं।

इस मौन का एक कारण और भी है...एक टीस।

इस प्रवासी हिंदी समुदाय में एक ओर कुछ ऐसे देश हैं, जिनको इतिहास, भूगोल, नीति और जनसांख्यिकी तक से कमोबेश संतोषजनक संबल मिला; मिल रहा है और जिसके बलबूते वे अपनी ज़मीन पर अपनी भाषा को सींच पा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर कई आलेखों से आपको अनुभव होगा कि कुछ ऐसे देश भी हैं, जो इन्हीं संबलों के अभाव में एकदम पृथक्, अलग होकर अपना सारा संघर्ष अकेले झेल रहे हैं। कुछ आलेख मन में यह टीस उत्पन्न करते हैं कि 'इन्होंने अनेक मंचों से, अनेक बार अनेक प्रकार से अपने संघर्ष के एकाकीपन की कहानी कहने की कोशिश की है, लेकिन उसको सुना नहीं गया।' यह दस्तावेज़ एक अनुरोध है। शायद आज तक किसी ने जो ठीक से नहीं किया है, उतना हम कर लें, बस इनकी बात सुन लें!

वस्तुत: संघर्ष और उपलब्धियाँ, द्वंद्व और विश्वास, पीड़ा और आनंद तथा चिंताओं और जुझारूपन की ये गाथाएँ आप सभी के समक्ष

हमारे विचारों, निर्णयों और पूर्वग्रहों से मुक्त अपनी वास्तविक स्थिति में प्रस्तुत हो पाएँ, इसके लिए हमारी ओर से यही प्रयास रहा कि यथासंभव सभी आलेखों की मूल भाषा और शैली को न छुआ जाए। ये आलेख किसी डिग्री की प्राप्ति के लिए नहीं लिखे गए हैं। जिन लोगों ने लिखा है, उनमें से अधिकतर स्वयं को हिंदी-विद्वान् मानने से इनकार करते हैं। कइयों की आजीविका भी कृषिविज्ञान, प्रबंधन, हिंदीतर भाषा-शिक्षण आदि से आती है। अनेकों को स्वयं किसी पाठशाला में हिंदी सीखने का अवसर तक नहीं मिला, लेकिन ये सभी हिंदी के प्रति अगाध समर्पण के प्रतीक हैं, जिनके ये आलेख भाषा-दक्षता प्रदर्शन के उद्देश्य से प्रस्तुत नहीं किए गए, इनका ध्येय अस्मिता-प्रतीक भाषा-रक्षा है। पाठकों की मीमांसा का उद्देश्य भी वही रहे, तो हमारा प्रयास सार्थक होगा।

इन सभी आलेखों से गुज़रने के बाद आपको एक और अनुभव होगा कि आज की तारीख में मुद्दा केवल यह नहीं रहा कि इस भाषा, इस अस्मिता की रक्षा और संवर्धन के कार्य की पूर्ति कब होगी। इतिहास साक्षी है कि इस प्रकार के संघर्ष कभी भी समाप्त नहीं होते, इनका जारी रहना ही इनका अस्तित्व है। इन देशों में हिंदी शिक्षण और प्रचार-प्रसार के माध्यम से अस्मिता-रक्षा की इस प्रक्रिया में बहुत पसीना बहा है, बह रहा है और उसका बहते रहना भी निश्चित है। लेकिन आज कई स्थानों पर प्रश्न यह है कि इस संघर्ष को आरंभ करके ताकत प्रदान करनेवाली पीढ़ियों के बाद क्या होगा? जिस नई पीढ़ी को वर्तमान भूमंडलीकृत संदर्भ में अपनी भाषा, संस्कृति, इतिहास से जोड़ने में मानसिकतागत, संसाधनगत, नीतिगत कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं, उस पीढ़ी में ऐसे हिंदी सैनिक कहाँ से और कैसे उत्पन्न किए जाएँ, जो अपनी भाषा के लिए अपने अग्रजों के समान और समकक्ष भावना के साथ पसीना बहाते रहें। भाषा नहीं बल्कि संघर्ष के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है।

यह संकट सम्मेलन के आयोजन में सम्मिलित किए गए इस भविष्योन्मुख विचार 'अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ' को कठिन परंतु अपरिहार्य सिद्ध करता है। आगे का सफ़र अकेले नहीं चला जा सकता। यह अकाट्य है। परंतु साथ बने कैसे? सहयोग कैसे उत्पन्न हो? शक्तियाँ एकजुट कैसे हों? इन प्रश्नों का उत्तर पाना आसान नहीं है। कुछ उत्तर सम्मेलन के प्रस्तावों और मंतव्यों के रूप में मुखरित हुए। कुछ विश्व हिंदी सम्मेलन के मंच से उभरने का विश्वास है और कुछ आपकी मनीषा से अपेक्षित हैं।

सम्मेलन के आयोजन से लेकर इस प्रकाशन को आपके हाथों में पहुँचाने तक की पूरी प्रक्रिया में शामिल हर संस्था और व्यक्ति गिरमिटिया तथा नव-प्रवासी देशों में हिंदी की गाथा आप तक पहुँचाने के निमित मात्र हैं। निमित्त के प्रति आभार प्रदर्शन करके कर्तव्यपूर्ति का भ्रम उत्पन्न करने से बचना चाहता हूँ। क्योंकि वास्तविकता तो यही है कि आभार के योग्य वे ही होंगे, जो इस सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए प्रत्येक आलेख को पढ़ने के बाद ठोस प्रयासों में जुटेंगे। प्रयास ऐसे, जिनसे यह निश्चय हो पाए कि इन देशों में हिंदी की रक्षा, प्रचार और संवर्धन के लिए पिछले 180 वर्षों तक जो पसीना बहता रहा है, वह भविष्य में भी निरंतर बहता रहे।

—गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल

कार्यवाहक महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय
सम्मेलन संयोजक

अनुक्रम

भाग–1 : सम्मेलन सत्र

1. बीज-वक्तव्य : प्रथम दिवस — **महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल** 3

प्रथम सत्र : मॉरीशस में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण

2. मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण — **श्री सत्यदेव टेंगर** 9
3. HINDI TEACHING AND LEARNING IN MAURITIUS — **Mr. Lutchmee Taucoory** 14

द्वितीय सत्र : पूर्वी एशिया व प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में हिंदी

4. फिजी में हिंदी भाषा शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार — **श्रीमती मनीषा रामरक्खा** 21
5. सिंगापुर में हिंदी का विकास — **सुश्री उदीची पांडेय** 27
6. न्यू ज़ीलैंड में हिंदी — **श्रीमती सुनीता नारायण** 30
7. ऑस्ट्रेलिया में हिंदी — **श्रीमती माला मेहता** 35

तृतीय सत्र : अफ़्रीका तथा हिंद महासागरीय क्षेत्र में हिंदी

8. दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी — **श्रीमती मालती रामबली** 39
9. HINDI SHIKSHA SANGH–SOUTH AFRICA GAUTENG REGION: AN OVERVIEW — **Mr. Heeralall Sewnath** 42
10. रियून्यन में हिंदी प्रशिक्षण : मेरे अद्वितीय अनुभव — **डॉ. राजरानी गोबिन** 49
11. पश्चिमी अफ़्रीकी देशों में हिंदी : संभावनाओं का महाद्वीप — **डॉ. श्रीमती संयुक्ता भुवन-रामसारा** 53

चतुर्थ सत्र : दक्षिण अमेरीका क्षेत्र में हिंदी

12. सूरीनाम में हिंदी — **श्री वीरजानंद अवतार** 59
13. Survival of Hindi in the Caribbean, the Guyana Experience — **Ms. Varshnie Udho Singh** 62

पंचम सत्र : मॉरीशस में तृतीयक स्तर पर हिंदी शिक्षण एवं शोध व प्रकाशन

14. मॉरीशस में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण — **डॉ. अलका धनपत** 71
15. मॉरीशस में हिंदी-शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार में शोध की भूमिका — **डॉ. माधुरी रामधारी** 84
16. मॉरीशस में हिंदी-शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार में शोध तथा प्रकाशन की भूमिका — **श्री धनपाल राज हीरामन** 89
17. 'मॉरीशस में हिंदी पाठ्यक्रम में भोजपुरी के समावेश द्वारा दोनों भाषाओं का परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण' — **श्रीमती संध्या अंचराज़-नवसाह** 93

छठा सत्र : ग़ैर सरकारी, अर्ध सरकारी व स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार

18. मॉरीशस में गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण — **श्री यंतुदेव बुधु** 101

19. मॉरीशस की स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा हिंदी का शिक्षण — **डॉ. उदय नारायण गंगू व श्री देवव्रत सीरतन** 105

20. मॉरीशस में हिंदी प्रचार-प्रसार : संस्थाएँ व गतिविधियाँ — **श्री राजनारायण गति** 115

सातवाँ सत्र : यूरोप एवं अमेरिका में हिंदी

21. अमेरिका में हिंदी शिक्षण — **श्री अशोक ओझा** 121

22. Teaching and Propagation of Hindi with success in Canada — **Dr. Ratnakar Narale** 125

23. हॉलैंड में हिंदी — **श्री नारायण शर्मा मथुरा** 132

आठवाँ सत्र : विश्व में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार-भारतीय संस्थाओं की भूमिका व योगदान

24. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा विदेशी शिक्षण केंद्र — **प्रो. चित्तरंजन मिश्र** 139

25. प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण व प्रचार-प्रसार—विदेश मंत्रालय, भारत सरकार का योगदान — **श्रीमती सुनीति शर्मा** 143

सम्मेलन की कार्यवाही पर मुख्य प्रतिवेदक द्वारा रिपोर्ट व गोलमेज़ बैठक का सार

26. मुख्य प्रतिवेदक द्वारा सम्मेलन की कार्यवाही का सारांश — **श्री केसन बधु** 147

27. गोलमेज़ बैठक — **श्री केसन बधु** 155

भाग–2 : वक्ताओं का परिचय

अंतरराष्ट्रीय तथा मॉरीशसीय वक्ता 159

भाग–3 : सम्मेलन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन 173

भाग–4 : चित्रावली

भाग–1 : सम्मेलन सत्र

1. बीज-वक्तव्य : प्रथम दिवस

जो आप ने अभी सुना प्रोफ़ेसर साहब से उससे बहतर बीज-वक्तव्य अब मैं क्या दूँगा। प्रोफ़ेसर साहब फ़िज़िक्स के स्कॉलर हैं और उन्होंने आपको सही मायने में एक जो रास्ता दिखा दिया है इस कॉन्फ़्रेंस के लिए, मुझे नहीं लगता है कि मैं उसके ऊपर जाकर आप से बात कर पाऊँगा। मैं खुद भी विज्ञान का ही छात्र हूँ, प्रोफ़ेसर साहब आप फ़िज़िक्स *(physics)* के हैं और मैं प्लांट बायो-टेक्नोलॉजी *(Plant Bio-Technology)* का हूँ। अब देखते हैं कि दोनों का मेल होकर हिंदी को कहाँ पहुँचाता है। मैं बीज-वक्तव्य देने के ना तो काबिल हूँ और ना उस बात के लिए अपने आपको समर्थ मानता हूँ लेकिन आपसे बातचीत करना चाहूँगा कि आखिर ये कॉन्फ़्रेंस क्यों कर रहे हैं, ये हमें किस तरफ़ ले जा सकती है। वो भी क्यों, क्योंकि मैं ऐसी कॉन्फ़्रेंस के साथ काफ़ी सालों से जुड़ा हुआ हूँ। जैसा कि आप जानते हैं मैं डिफ़रेंट एंबसीज़ *(different embassies)* में काम करता आया हूँ और मैंने स्कॉलर्स को बात करते सुना है। मेरी अपनी स्कॉलरशिप नहीं है लेकिन मैं एक केयरफ़ुल लिस्नर *(careful listener)* के तौर पर वो सभी बातें मेरे अंदर समा रही हैं।

मित्रों मेरे ऊपर से कल का नशा अभी पूरी तरह से नहीं उतरा है, पता नहीं आप लोगों में से कितने कल वहाँ पर बैठे हुए थे, तो वो जो आपने जज़्बा देखा, आपने कल जो प्यार देखा, हिंदी के लिए अभी उसका, जैसे कहते हैं हैंगओवर *(hangover)* चल रहा है तो मेरा भी दिमाग उस लेवल *(level)* पे घूम रहा है। अगर मैं आप को वापस कल में ले जाऊँ तो आपने राष्ट्रपति जी का वक्तव्य सुना, शिक्षा मंत्री को सुना, चूनी जी को सूना, उसमें कई बात मुझे छू गई और मैंने सोचा कि ऐसा क्यों कहा, क्योंकि उसी बात को मैं पहले भी सुन चूका हूँ और उसके ऊपर डिस्कशन *(discussion)* व डिबेट *(debate)* भी सुन चुका हूँ। जब उन्होंने कहा कि भाषा गई तो संस्कृति गई, हमें शुरू में ये बात समझ में नहीं आती थी कि भाषा गई तो संस्कृति गई! हमें पता है कि संस्कृति तो एक बहुत बड़ा सागर है और भाषा उसमें जानेवाली एक नदी मान लीजिए या उसका हिस्सा मान लीजिए। अगर एक हिस्सा कट जाए तो सागर को क्या नुकसान हो सकता है? पहले जब हम यंग *(young)* थे तो हमें लगता था कि ऐसे क्यों कहते हैं?

तो दोस्तों जैसे कि आप जानते हैं—मैं एक डिप्लोमैट *(Diplomat)* हूँ और तीन सालों से मैं दुनिया भर में इधर-उधर घूमा हूँ, भटका हूँ। मैंने लैटिन अमेरिका *(Latin America)* में भी बहुत समय बिताया, यूरोप में भी समय बिताया और कई जगहों में समय बिताया तो मैंने जो देखा और जो लैंग्वेजज़ *(languages)* सीखी, मैंने भारत का इतिहास, हमारे ग्रंथ, उनके बारे में अंग्रेज़ी में भी पढ़ा, स्पैनिश में भी पढ़ा और कई भाषाओं में भी पढ़ा। बहुत सुंदर लिखा है उन्होंने लेकिन वो बात नहीं बनती। इन फैक्ट, मैं आपको बताता हूँ कि मैं एक बहुत फ़ेमस मेक्सिकन ऑथर *(famous Mexican author)* के पास गया, उन्होंने एक चैप्टर *(chapter)* लिखा है सुंदरकांड के बारे में तो हमने उसको पढ़ा और वो आपके दिल को छू जाता है लेकिन उसके बाद आप तुलसी कृत पढ़ लीजिए। वो बात बन ही नहीं पाती है!

देखिए एक बात होती है—कल्चर *(culture)* का एक्सप्रेशन *(expression)* और एक बात होती है—कल्चर *(culture)* की समझ। संस्कृति का एक्सप्रेशन *(expression)* तो आप पकड़ लेंगे बिना भाषा के लेकिन आप उसकी समझ, उसकी जड़ को नहीं पकड़ पाएँगे। हमने बहुत से लोगों को देखा—बिना किसी भाषा की जानकारी के 'कथक' भी कर लेते हैं, 'भरतनात्यम' भी कर लेते हैं, 'दांदिया' भी कर लेते हैं, 'राधा-कृष्ण' के गीतों पर भी नत-नाटिका भी कर लेते हैं लेकिन उस बात को पकड़ नहीं पाते कि कर क्या रहे हैं तो जब मैंने सोचा तो मुझे लगा कि ये बात कही है, इस बात का असली मतलब यही है कि आपको पता भी

नहीं चलता कि आपके पैरों के नीचे से ज़मीन कैसे फिसल जाती है। ये बात मुझे याद दिलाती है जब मैं पिछली बार वर्ल्ड हिंदी कॉन्फ़्रेंस *(World Hindi Conference)* में जोहान्सबर्ग में गया तो वहाँ महात्मा गांधी की पौत्री, इला गांधी, उन्होंने एक एक्सप्रेशन *(expression)* दिया, बोले—''ये जो संस्कृति है, वो मुट्ठी में भरी रेत की तरह होती है, ये रेत धीरे-धीरे खिसकता जाता है और आपको पता नहीं चलता, आप सोचते हैं कि मुट्ठी में पकड़े हुए हैं और जब कुछ समय के बाद आप मुट्ठी खोलते हैं तो देखते हैं कि मुट्ठी तो खाली हो गई है और तो पूरी तरह से कॉन्फिडेंट *(confident)* है कि उसे पकड़ रखी है और ये फिसल गई''। आई थिंक *(I think)* भाषा वो चीज़ है, जो मुट्ठी में जो दरारें है, जिसमें से रेत खिसक जाता है, उन दरारों को भरकर रखती हैं।

इसीलिए आपको अपनी भाषा का बहुत बड़ा स्कॉलर होने की आवश्यकता नहीं है लेकिन इसकी पकड़ होनी जरूरी है। भाषा चीज क्या है ? भाषा तो जीवन से ताल्लुक रखती है। हम घरों के किचन *(kitchen)*, ड्राइंग-रूम *(drawing room)* डाइनिंग रूम *(dining room)* लेकिन उसकी जो मूल जड़ है, उसे समझना ज़रूरी है और इसी वजह से इस कॉन्फ़्रेंस का जो महत्व है, वो बढ़ जाता है। जैसे कल हमने कहा कि 6 सौ मिलियन लोग हिंदी बोलते हैं तो ऐसा कौन सा खतरा मंडरा रहा है, कहीं नहीं जाएगी। मुझे पूरा भरोसा है कि ये बढ़ती जाएगी। भाषा के लिए मुझे कोई शक नहीं है। आज लोग ज़्यादा हिंदी बोलते हैं, उसे ज़्यादा सुनते हैं। ऐसा क्यों ? क्योंकि हिंदी को धीरे-धीरे हम लोगों ने अपनी दैनिक भाषा बना ली है। अब देखिए किसी भी भाषा को जीवित रखने के लिए अगर आप उसको इनसानी जीवन से सीधा नहीं जोड़ पाएँगे तो भाषा को जितना बचाने की कोशिश करेंगे वो बच नहीं पाएगी, ऐसा क्या करें कि ये पकड़ बनी रहे। लोग अपने आप इसकी तरफ़ खिंचे आएँ और उन्हें खींचने की ज़रूरत न पड़े।

भाषा को आम आदमी तक ले जाना, एक आम आदमी उस भाषा में कंफ़र्टेबल *(comfortable)* है या नहीं, इस बात का ध्यान रखना और जब वह उसमें कंफ़र्टेबल *(comfortable)* है तो उसे इस्तमाल करने में उसको गर्व होता है या नहीं ? *If you do not feel pride in what you are doing,* आप उसको ज़्यादा देर तक बचा नहीं सकते। उसके पीछे आपका जो गर्व है, उस गर्व का होना ज़रूरी है। भाषा को आम आदमी तक ले जाना सिंपल डेली यूस मेथड्स से उसके जो एलिमेंट्स हैं, उस पर ध्यान देना। देखिए, मैं भी हिंदी बोल रहा हूँ लेकिन खिचड़ी भी बना रहा हूँ पर उससे हिंदी के लिए मेरा प्यार कम नहीं हो जाता है। यह समझना है कि ये बात आम आदमी तक ले जानी है और उसके अंदर वो गर्व पैदा करना है।

अभी प्रोफ़ेसर साहब ने कहा कि प्राइम मिनिस्टर जहाँ जाते हैं, वहाँ हिंदी बोलते हैं, उनकी हिंदी सुनी है आपने, बहुत ही सीधी-साधी हिंदी का इस्तेमाल करते हैं। इसीलिए जब भी वे एक वाक्य बोलते हैं तो लोग खड़े हो जाते हैं और तालियाँ बजाना शुरू कर देते हैं। उनको वे समझ पाते हैं। आम आदमी अपने आप को उस भाषा के साथ आइडेंटिफ़ाइ *(identify)* कर पाता है। देखिए, ये बहुत बड़ा मुद्दा है, हम इसे आम आदमी की भाषा बनाए रखें। स्कॉलरशिप का अपना महत्व है। जैसा कि आपने देखा कि वो एक पोल स्टार होता है, अब उसे देखते-देखते तो पूर्व में कोई नहीं जाता लेकिन उसको देखते-देखते हर आदमी अपनी राह ज़रूर पकड़ लेता है। तो स्कॉलरशिप वही पोल स्टार है, वो बना रहना चाहिए। हम लोग जो नाव लेकर घूमते हैं, हमें पोल पर थोड़े ही जाना है लेकिन पोल स्टार है, वहाँ पर, जिसे देखकर अपने आप सीधा रास्ता पकड़ लेते हैं। अब जो डिफ़रेंट लेवल्स हैं, स्कॉलरशिप के उन लेवल्स को हमें समझना है और यह एक्सेप्ट करना चाहिए कि हर आदमी पोल पर नहीं जाए लेकिन उसे उसकी ज़रूरत है।

अब हमें यह समझना है कि हर आदमी उसी स्कॉलरशिप लेवल पर नहीं पहुँचता है तो इसे डिफ़रेंट लेवल्स पर हमें इसे ट्रीट करना पड़ेगा। हर लेवल के लिए हिंदी को अडैप्ट किया जाए।

उसके बाद टेक्नोलॉजी देखिए। अब टेक्नोलॉजी का भाषा में कंट्रीब्यूशन *(contribution)* देखिए। जो भाषा टेक्नोलॉजी से जुड़ी रहेगी, बच्चे उसी को पढ़ेंगे। जो टेक्नोलॉजी से छूट जाएगी, आगे की पीढ़ियाँ उसे पकड़ नहीं पाएँगी। जैसे-जैसे सोसाइटी इवॉल्व करेगी भाषा को भी उसके साथ इवॉल्व करना पड़ेगा। अपनी जड़ को पकड़े रखिए पर अपने पत्तों को फ्रीडम दीजिए हवा के साथ हिलने की। इसीलिए इस बात का ध्यान रखना है कि जो टेक्नोलॉजी आ रही है, उसके साथ उस भाषा को पूरी तरह से जोड़ दें। उसके बाद मैं आपको बताता हूँ—मैं तो जर्मनी में था, वहाँ पर लोग कहते थे कि आप हमारी हिंदी पढ़ने में मदद कर सकते हैं। हमने कहा कि अरे आपको हिंदी पढ़ने का क्या शौक चढ़ गया और वो मैं बड़ी-बड़ी मल्टिनैशनल कंपनीज़ *(multinational companies)* की बात कर रहा हूँ। उन्होंने कहा, साहब अगर हमें 1.2 बिलियन मार्केट में कुछ करना है तो आपकी भाषा सीखनी ही होगी। इसका मतलब ये है कि अगर हम भाषा को जीविका से नहीं जोड़ेंगे तो भाषा से अकेले पेट नहीं भरेगा। ये देखना है कि भाषा को कैसे जीविका से ज़्यादा से ज़्यादा जोड़ पाएँ।

आई ऐम श्योर, मैंने जो बात कही, कोई नई या बड़ी बात नहीं थी लेकिन हर बार उसे दुहराना चाहिए ताकि मुट्ठी से रेत फिसल न जाए। बार-बार मुट्ठी खोलकर देखना चाहिए कि वह है या नहीं। आप लोग अगले दो दिन मिलेंगे तो इन्हीं मुद्दों पर चर्चा करेंगे और मुझे पूरी उम्मीद है कि जो बातें मैंने आपको सुनी-सुनाई कहीं, क्योंकि मैं तो स्कॉलर हूँ ही नहीं, किंतु स्कॉलर्स को सुनकर कह रहा हूँ तो ज़रूर कुछ-न-कुछ तो होगा। आपको उन मुद्दों को बड़ी होशियारी से पकड़कर अंत में जब आप रेज़लूशंस ड्रैफ्ट करेंगे तो उसमें प्रैक्टिकल सलूशंस खड़े रहें। जैसे मैंने कहा पोल स्टार, पोल में तो कोई नहीं जाता है लेकिन उसे देखकर रास्ते का पता चलता है जो आपके काम आता है। आप प्रैक्टिकल सलूशंस एंड सजेशन दें जिससे कि इस बात को आगे बढ़ाया जा सके। अब क्योंकि यह कॉन्फ़्रेंस मॉरीशस में हो रही है, जैसे कल बात हुई, बीज तो किसी के पास हो सकता है, किसी भी मिट्टी में डाला जा सकता है लेकिन हर मिट्टी में बीज उगता नहीं। तो ये वो मिट्टी है, जहाँ ये बीज फूटके फूल और फल पैदा कर देगा। यहाँ पर वे चीज़ें हैं हिंदी व भारतीय संस्कृति से ताल्लुक रखनेवाली जो आप देखेंगे कि आपके बिना जाने आपके ऊपर असर कर जाएँगी और आपको मदद करेगी इन चीज़ों के बारे में सोचने के लिए।

आप महात्मा गांधी संस्थान में बैठे हैं, एम.जी.आई. तो अपने आप ही एक लैंडमार्क है इन चीज़ों के लिए। संस्कृति की बात करें या भाषा की, जो काम एम.जी.आई. कर रही है, ऐसी संस्था शायद ही आपको कहीं और मिलेगी। मैं आपसे दरख्वास्त करूँगा कि एम.जी.आई. इस पर काम कर रही है, उसके ऊपर ज़रूर स्टडी करें। दिल्ली से हमारी एक टीम आई तो थी एम.जी.आई. की मदद करने के लिए कि टीचिंग मटेरियल कैसे बनाया जाए और यहाँ से मदद लेकर वापस चले गए। तो यह ज़रूर ध्यान दीजिएगा कि यहाँ क्या हो रहा है, क्या चीज़ आपके काम आ सकती है और उसे किस तरह से अडैप्ट किया जा सकता है। तो इन शब्दों के साथ मैं फिर से एक बार आप सबका स्वागत करता हूँ, आपको शुभकामनाएँ देता हूँ और इस बात का भरोसा रखकर यहाँ से जा रहा हूँ कि इन सवालों के जवाब आप ज़रूर ढूँढ़ लेंगे। धन्यवाद।

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल
भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस

प्रथम सत्र : मॉरीशस में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण

2. मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण

श्री सत्यदेव टेंगर

कुली शिविरों से आधुनिक भाषा-शिक्षण तक का सफर

मॉरीशस में 'कुली' कहे जाने वाले प्रथम भारतीय शर्तबंद मज़दूर जब पहली बार शक्कर-अल्पतांत्रिक गोरों के खेतों में पसीना बहाने के लिए यहाँ लाए गए तो अपने साथ एक एकमात्र विरासत लाए वह थी—उनका धर्म, उनकी संस्कृति और उनकी भाषाएँ।

ये परंपराएँ 19वीं सदी के मध्य तक, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से पहुँचाई जाती रहीं, आखिरकार जब हिंदी की शिक्षा को लेकर जागरूकता बढ़ने लगी। तब से मॉरीशस वासियों की भाषा की हैसियत से पूर्वीय भाषाओं को स्कूली पाठ्यक्रम में पूरी मान्यता मिलने में 100 साल और तरह-तरह की सार्वजनिक एवं राजनीतिक पैरवी की आवश्यकता पड़ी। आज हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाएँ न केवल प्राथमिक स्तर पर अपितु माध्यमिक एवं उच्च स्तरों पर भी फल-फूल रही हैं। परंतु प्राथमिक स्तर पर हिंदी की शिक्षा और आने वाली चुनौतियों पर बात करूँ, इससे पहले मैं आपको उस लंबे और दु:साध्य स्मृतिपथ का एक सरसरी ऐतिहासिक दौरा कराता हूँ जिसपर चलकर आज हिंदी प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च-शिक्षा स्तरों पर तथा देश में इस मुकाम पर पहुँची है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

फ्रांसीसी उपनिवेश काल (1730-1810) में मॉरीशस में हिंदी थी ही नहीं क्योंकि दासों में जो लोकभाषा प्रचलित थी, वह फ्रेंच, मलागासी और अफ्रीकी बोलियों की एक मिलावट थी जो आज 'क्रियोल' नाम से जानी जाती है। फ्रांसीसी उपनिवेश के सालों में भारत से जो लोग यहाँ लाए गए, वे आमतौर पर पंडिचेरी के, जो उस समय फ्रांसीसी उपनिवेश था, कुशल कारीगर थे। इनमें अधिकतर तमिल थे।

भारी संख्या में, मुख्यत: उत्तर-प्रदेश और बिहार से, 'कुलियों' के आगमन से हिंदी के प्रयोग में एक नई भाषाई गतिशीलता उत्पन्न हुई। बर्तानी शासन ने भारतीय मज़दूरों की संतानों को शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता समझी। समय-समय पर कुछ राज्यपालों ने शिक्षा को लेकर न केवल अपनी चिंता व्यक्त की अपितु महत्वपूर्ण फ़ैसले भी लिए जिनका स्कूलों में प्रयोग की जाने वाली एवं सिखाई जाने वाली भाषा पर गहरा और दूरगामी प्रभाव पड़ा। भारतीय मूल के बच्चों की शिक्षा के माध्यम के बारे में चिंतित राज्यपालों में दो नाम उल्लेखनीय हैं : वे हैं—हिग्गिंसन (जो 5 साल भारत में बिताने के बाद 1885 में मॉरीशस आए थे) और फ़ायरे। फ़ायरे महोदय जब 1878 में देश से रवाना हुए तो उस समय यहाँ 5 स्कूलों में पूर्वीय भाषाओं का प्रयोग हो रहा था।

यद्यपि शिक्षा में भाषा-नीति का मुद्दा 19वीं सदी के अंत तक बर्तानियों द्वारा सुलझा दिया-सा लगता था, फिर भी 20वीं सदी में देश में जो विभिन्न सामाजिक उथल-पुथल हुई, वे भाषाओं की प्रतिष्ठा और भूमिका संबंधी कई झगड़ों की जड़ साबित हुई।

एक भारतीय वकील, मणिलाल डॉक्टर द्वारा 1909 में, और बाद में महाराज सिंह द्वारा मॉरीशस के प्राथमिक स्कूलों में, मुख्य भाषाओं की श्रेणी में, पूर्वीय भाषाओं को भी सिखाए जाने का आग्रह किए जाने के बाद, 1935 तक आते-आते देश की लगभग 48 सरकारी एवं सरकार-समर्थित पाठशालाओं में, भारतीय भाषाएँ सिखाई जाने लगी थीं। 1841 वाली अपनी रिपोर्ट में उस समय के शिक्षा-निदेशक, डॉ. फ्रैंक वार्ड ने, न केवल इन भाषाओं के पढ़ाए जाने पर आपत्ति की थी, अपितु यह भी सलाह दी थी कि सरकार इन भाषाओं के शिक्षण का खर्च उठाना बंद कर दे। तुरंत डॉ. शिवसागर रामगुलाम, डॉ. वार्ड के इस दृष्टिकोण के विरुद्ध डटकर खड़े हो गए।

पूर्वीय भाषाओं के समर्थन में जबरदस्त सामाजिक दबाव के परिणामस्वरूप यह निर्णय लिया गया कि न केवल इन भाषाओं की शिक्षा प्राथमिक स्कूलों तक फैला दी जाए, अपितु इनके अध्यापकों को प्रशिक्षण भी दिया जाए।

भाषाई मतभेद की इसी पृष्ठभूमि में, 1947, भारतीय भाषाओं

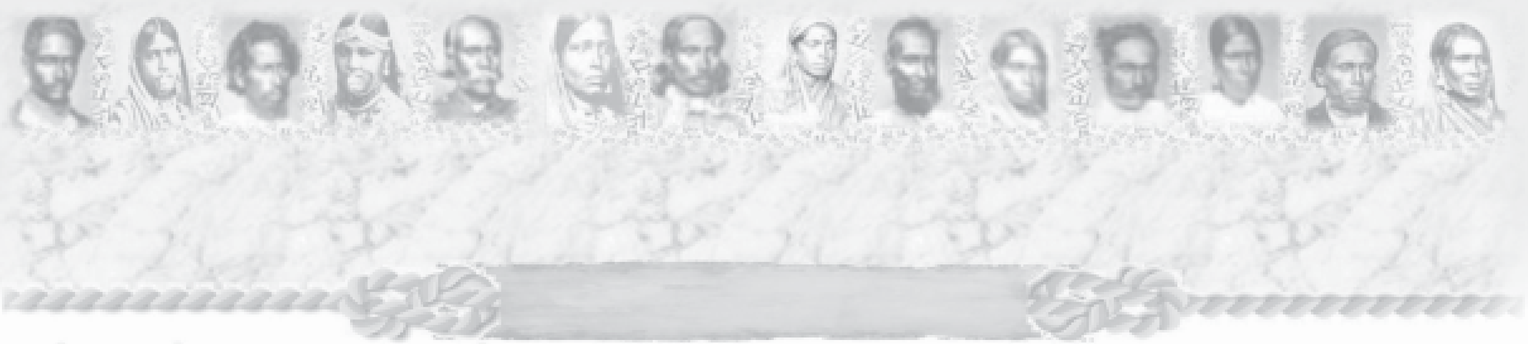

के लिए निर्णायक सिद्ध हुआ। पूर्वीय भाषाओं की परिकल्पना को लेकर संविधान में मूलभूत परिवर्तन लाए गए, और जब मतदान के अधिकार के लिए अंग्रेज़ी, फ्रेंच, हिंदुस्तानी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, उर्दू, चीनी या 'पातवा क्रियोल' इनमें से किसी भी भाषा में साक्षरता-परीक्षा की शर्त रखी गई, तो पूर्वी भाषाओं को कुछ प्रोत्साहन और औपचारिक मान्यता भी मिली।

इससे देश में नए परिवर्तन की प्रक्रिया की चिंगारी सुलग उठी। नतीजे भी तुरंत मिलने लगे। 1948 के आम चुनावों में ग्रामीण इलाकों के कई उम्मीदवार निर्वाचित हुए, जो भारतीय भाषाओं के कर्मठ समर्थक थे। यह, सार्वजनिक मताधिकार के लिए, राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम के कष्टसाध्य अभियान की शुरुआत थी, जो 1959 में यथार्थ बन गया।

इस राजनीतिक प्रक्रिया ने जन-सामान्य को उसके बंधनों से मुक्ति तो दिलाई ही, साथ में औपनिवेशिक विघटन की प्रक्रिया के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया, जिसकी परिणति 1968 में मॉरीशस की स्वतंत्रता में हुई।

सरकारें आती-जाती रहेंगी, परंतु भाषा नीतियाँ, विशेषकर पूर्वी भाषाओं की पढ़ाई संबंधी नीतियाँ, रातोंरात नहीं बदलने वाली। चूँकि यह राजनितिक दृष्टि से एक बहुत ही पेचीदा मामला है, कोई भी सरकार, आम चुनाव हार जाने के डर से, इसमें काट-छाँट करने की हिम्मत नहीं कर पाएगी।

सरकारी नीतियाँ

स्वतंत्रता-पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर भाषाई नीतियाँ

स्वतंत्रता से पूर्व और उसके बाद भी भाषा को लेकर बहस मुख्यतः एक ही मुद्दे पर केंद्रित थी: क्या पूर्वीय भाषाओं को वही दर्जा देना चाहिए जो अंग्रेज़ी और फ्रेंच का है ? जहाँ तक सांस्कृतिक विकास का प्रश्न था, पूर्वीय भाषाओं को बड़ा महत्व नहीं दिया गया था। यद्यपि यह तर्क रखा जा रहा था कि हिंदी, परीक्षणीय विषय के रूप में मान्यता प्राप्त करके, शिक्षा प्रणाली में अपना योग्य स्थान पाने की हकदार है, फिर भी मुख्यतः ईसाई संस्थाओं की ओर से कट्टर विरोध प्रकट किया जा रहा था। यहाँ तक कि उन्होंने इस मामले में मॉरीशस की सर्वोच्च अदालत का दरवाज़ा भी खटखटाया, परंतु इस अदालत के फैसले को प्रिवी कौंसिल ने, औचित्य का परिचय देते हुए, उलट दिया। अदालत के निर्णय को चुनौती देकर 1994 में प्रिवी कौंसिल तक मामला ले जाने का श्रेय सरकारी हिंदी अध्यापक संघ (GHTU) को जाता है।

प्राथमिक शिक्षाकाल की समाप्ति पर, विभागक्रम निर्धारण हेतु, हिंदी सहित अन्य पूर्वी भाषाओं को अपनाने का मामला सुलझाने के उद्देश्य से, सरकार ने 1984 और 1991 में दो सिलेक्ट कमिटियाँ गठित कीं। एक बार फिर सरकारी हिंदी अध्यापक संघ, सभी विरोधी ताकतों का डटकर सामना करने के लिए सबसे आगे आया। विरोधियों में कुछ हिंदू संगठन भी थे, जो हिंदी को विभागक्रम निर्धारण के लिए गिने जाने पर आपत्ति कर रहे थे। देश में ज़बरदस्त सार्वजनिक बहसों एवं सामाजिक संघर्षों के बाद, 2004 में, सी.पी.ई. (CPE) परीक्षाओं संबंधी नियमावली और पाठ्यक्रम में वास्तविक और ठोस परिवर्तन लाए गए, जिनके परिणामस्वरूप हिंदी सहित पूर्वीय भाषाओं के नतीजे विभागक्रम हेतु गिने जाने लगे।

संप्रति कुल 4, 146 प्राथमिक-स्कूल शिक्षकों में 1, 366 पूर्वी भाषाओं के अध्यापक हैं और उनमें हिंदी के अध्यापक 578 हैं। 70 डेप्यूटी मुख्याध्यापक हैं, 12 असिस्टेंट सुपरवाइज़र, 2 सुपरवाइज़र और 1 वरिष्ठ सुपरवाइज़र हैं।

कुछ अन्य आँकड़ों के प्रति मैं आपका ध्यान आकर्षित करना

चाहता हूँ : प्राथमिक पाठशालाओं में पढ़ाई करनेवाले 1 लाख 8 हज़ार 853 बच्चों में 40.1 प्रतिशत, अर्थात् 41 हज़ार 565 बच्चे, हिंदी पढ़ते हैं। इनमें 900 ईसाई धर्म के बच्चे भी हैं, जो देश के 51 ईसाई शिक्षा प्राधिकरण (RCEA) स्कूलों में हिंदी सीखते हैं।

अंततः स्टेटिस्टिक्स मॉरीशस से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार सन् 2012 में सी.पी.ई. परीक्षाओं में हिंदी विषय में उत्तीर्ण होने वाले बच्चों की दर 69.5 प्रतिशत थी। यद्यपि यह अंग्रेज़ी में उत्तीर्ण होने वाले बच्चों की दर (73.1%) से कुछ कम है, फिर भी फ्रेंच भाषा में उत्तीर्ण हुए बच्चों की 78.6 प्रतिशत दर के आस-पास ही है।

अतः, मॉरीशस में प्राथमिक शिक्षा की ऊँची दर को ध्यान में रखते हुए, यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि हमारे बच्चों में 70 प्रतिशत ऐसे हैं जिन्होंने अंग्रेज़ी और फ्रेंच के साथ-साथ पूर्वीय भाषाओं में भी, कुछ भाषाई एवं साहित्यिक कौशल विकसित किए हैं।

सरकारें आती-जाती रहेंगी, परंतु भाषा नीतियाँ, विशेषकर पूर्वी भाषाओं की पढ़ाई संबंधी नीतियाँ, रातोरात नहीं बदलने वाली। चूँकि यह राजनीतिक दृष्टि से एक बहुत ही पेचीदा मामला है, कोई भी सरकार, आम चुनाव हार जाने के डर से, इसमें काट-छाँट करने की हिम्मत नहीं कर पाएगी।

अतः अभी के लिए प्राथमिक एवं अन्य स्तरों पर, हिंदी शिक्षण को कोई आँच नहीं आ सकती है। इन नीतियों के ही अनुरूप, हिंदी सहित पूर्वीय भाषाओं की पढ़ाई का एक सामान्य उद्देश्य है : हमारी पैतृक सांस्कृतिक विरासत एवं परंपराओं को सुदृढ़ रखना। हमारे आर्थिक विकास में हमारी सांस्कृतिक विविधता एक महत्वपूर्ण तत्व रही है। सामाजिक व सांकृतिक सहजीवन की मिसाल बना हुआ मॉरीशस, एक ऐसे देश के रूप में शोभायमान है, जहाँ 'शांति' एक खोखला शब्द नहीं है।

प्राथमिक स्कूलों में हिंदी शिक्षण

निस्संदेह, भाषा शिक्षण पर उस पूरे वातावरण, परिप्रेक्ष्य और संस्कृति का प्रभाव पड़ता है, जिसमें पढ़ाई हो रही हो। जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है, यह तो एक आधुनिक भाषा है, और हमारी राय है कि इस मुद्दे पर किसी भी तरह के विवाद की गुंजाइश ही नहीं है। मानवीय पूँजी अभिवर्धन एवं विकास के लिए शिक्षा अत्यावश्यक है। मॉरीशस गणराज्य को शिक्षित बहुभाषी लोगों की ज़रूरत है, और हिंदी शनैः शनैः अंतरराष्ट्रीय भाषा का आयाम ले रही है, जो सम्मान की समता और मानक की दृष्टि से, अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं से कुछ कम नहीं है।

मॉरीशस जैसे बहुभाषी देश में, जो वर्तमान पाठ्यक्रम है, वह सोच को प्रोत्साहित करने, तरह-तरह के ज्ञान और संस्कृतियों तक पहुँच बढ़ाने, और वैधीकरण की प्रक्रिया में अपने आप को अनुकूल बनाने के लिए अनेक भाषाओं को सीखने और उनके प्रयोग के लिए संभावनाएँ प्रदान करता है। प्राथमिक पाठ्यक्रम, विभिन्न संस्कृतियों को एक-दूसरे के संपर्क में विकसित होते हुए, सद्भावना, आदर, सामाजिक एकजुटता और शांतिपूर्ण सहजीवन बढ़ावा देता है।

प्राथमिक स्तर पर हिंदी की पढ़ाई यह सुनिश्चित करती है कि सभी विद्यार्थियों को सीखने का अवसर मिले, शिक्षार्थियों को अपने व्यक्तिगत विकास को बढ़ाने के लिए अनुकूल मूल्य एवं कौशल मिले, उनके समालोचनात्मक और अनुसंधानमूलक चिंतन को बढ़ावा मिले और उन्हें नवीनता लाने तथा वैश्वीकरण की ओर दिन-ब-दिन अधिक अग्रसर हो रहे समाज में परिवर्तनों के समक्ष अपने आपको ढालने का प्रोत्साहन मिले।

अतः प्राथमिक पढ़ाई के अंत में विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे—

- **प्रभावशाली ढंग से विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषाई कुशलता प्राप्त करें**

हिंदी की पढ़ाई में श्रवन, वाचन, दर्शन, पाठन और लेखन

जैसी आधारभूत भाषाई कुशलताओं पर संतुलित बल दिया जाता है। विद्यार्थी बेहतर रूप से तभी पढ़ सकते हैं, जब उन्हें एक ऐसे माहौल में रखा जाए, जहाँ हिंदी बोलने और सुनने पर ज़ोर दिया जाता हो। विद्यार्थी जो भी पढ़ते हैं, उसे समझते हैं, अपनी उम्र के अनुकूल सामग्रियों से परिचित होते हैं, और अपने विचार, अपनी भावनाएँ तथा अपना अनुभव वाक्यों एवं छोटी-छोटी सार्थक लिखित उक्तियों के माध्यम से प्रकट करते हैं। 6 सालों की, प्राथमिक स्तर की पढ़ाई में व्याकरण, शब्दावली और वाक्य-विन्यास पर भी बल दिया जाता है ताकि आगे की पढ़ाई के लिए नींव रखी जा सके। विद्यार्थी अलग-अलग परिस्थितियों एवं संदर्भों की घटनाओं के बारे में स्पष्टता, संबद्धता और सर्जनशीलता से लिखने का कौशल प्राप्त करते हैं।

- **समीक्षात्मक एवं सृजनात्मक ढंग से सोचने की क्षमता विकसित करें**

इस भाषा में जो तरह-तरह की शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक मल्टीमीडिया सामग्रियाँ उपलब्ध हैं, उनका रसास्वादन करने की इच्छा विद्यार्थी में जगाना तथा बाल कहानियों, कविताओं, गीतों और बाल साहित्य की अन्य विधाओं के प्रति उसमें उत्साह जगाना भी प्राथमिक हिंदी शिक्षा का उद्देश्य है।

- **मन में पैतृक भाषा के रूप में हिंदी के प्रति प्रेम जगाए**

शिक्षार्थी हिंदी भाषा के अध्ययन के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाते हैं और अपनी पैतृक भाषा तथा भाषाई परंपराओं को सुरक्षित रखने की आवश्यकता समझते हैं। साथ में इस भाषा के जन्म-स्थल एवं प्रवासी देशों सहित विश्व भर के हिंदी भाषियों के साथ संपर्क के औज़ार के तौर पर भी, इस भाषा की अहमियत समझते हैं।

- **नैतिक मूल्य ग्रहण करें जो उनके आचरण के आधार बनें**

भाषा नैतिक मूल्य और समाज-सम्मत व्यवहार सिखाने का महत्वपूर्ण साधन है। पूर्वीय भाषाओं के संपर्क में आने से छात्रों के लिए स्वयं अपने, तथा अन्यों के मूल्यों को पहचानने, समझने और सराहने के दरवाज़े खुल जाते हैं।

- **प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में आई.सी.टी. (ICT) क्यों ?**

जानकारियाँ ग्रहण करने, दूसरों के साथ संपर्क करने तथा नए-नए विचार विकसित करने की प्रक्रिया में, प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) एक महत्वपूर्ण औज़ार है। अधिकतर हिंदी अध्यापक कंप्यूटर-साक्षर हैं, और कइयों ने 'सांकोरे' परियोजना के अंतर्गत प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। सन् 2012 से, पहली और दूसरी कक्षा में गीतों, कविताओं तुकबंदी, खेलों, कार्टूनों तथा कहानियों के माध्यम से भोजपुरी मिश्रित हिंदी पढ़ाई जाती है।

उन सभी बहुविध साधनों का प्रतीक है इंटरनेट, जिनके माध्यम से शिक्षार्थी, इलेक्ट्रॉनिक तरीके से जानकारियों की प्राप्ति, भंडारण और पुन: प्राप्ति करता है, उन्हें प्रयोग में लाता है, उनका आदान-प्रदान करता है और उन्हें पेश करता है। एक ऐसे युग में इंटरनेट ने जानकारियों की पहुँच सभी के लिए खोल दी है, सीखने-सिखाने में भी सुविधाओं से लाभ उठाना आवश्यक है। ICT, विद्यार्थियों को हिंदी की पढ़ाई अधिक सुगम बनाने, सीखने की बाधाओं को दूर करने, और प्राथमिक हिंदी पाठ्यक्रम के शिक्षा-उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, आधुनिक टेक्नोलॉजी का प्रयोग करने का अवसर देती है।

जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है, ICT को, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को, बेहतर बनाने वाले औज़ार के रूप में देखा जाता है। शिक्षार्थी अनेकानेक जनों से जानकारियाँ एवं विचार शीघ्रता से प्राप्त करते हैं, उनकी छान-बीन करते हैं और उन्हें व्यवहार में लाते हैं। हिंदी शिक्षण में इसका प्रयोग, सर्जनात्मक तरीके से अवधारणाओं की समझ पैदा करने के लिए होता है। यह कारगर तरीके से जानकारियाँ पैदा करने, सुरक्षित रखने, ढूँढ़ने एवं पेश करने में सहायक होती है। यह रेडियो एवं टेलीविज़न द्वारा प्रसारित

शैक्षिक प्रोग्राम जैसे शिक्षात्मक सॉफ्टवेर के माध्यम से, विषय के तौर पर हिंदी को जानने और उसमें गहराई तक जाने में भी सहयोग देती है।

दृश्य-श्रव्य शैक्षिक सामग्रियों के प्रयोग से यह जटिल अवधारणाओं एवं यथार्थ जीवन के अनुभवों के बीच पुल बँधने का ही काम करती है।

चुनौतियाँ

आगे का मार्ग चुनौतियों से खाली नहीं है। तीव्र गति से परिवर्तनशील इस विश्व में हिंदी के शिक्षण को आधुनिकता के साथ कदम मिलाते हुए 'स्लेट, छड़ी, श्यामपट्ट' से हटकर आई पैड और अन्य इंटरैक्टिव उच्च-टेक्नोलॉजी वाले उपकरणों की ओर जाना चाहिए। भविष्य में हम जो भी शैक्षणिक सुधार लाना चाहेंगे, उनके अभिन्न अंग के रूप में संचार टेक्नोलॉजी को शामिल करना ही पड़ेगा। नई पीढ़ी तो वैसे भी 'स्मार्ट फ़ोन्स' के साथ उच्च-टेक्नोलॉजी की इस दुनिया में डटकर आरूढ है, उसे हम आधुनिकता की उसकी आकांक्षाओं से वंचित नहीं रख सकते। हमें 'स्मार्ट स्कूल्स और स्मार्ट क्लासज़' के रूप में सोचना होगा जहाँ हमारे छात्र पल्लवित हो सकें। इसके लिए हमें क्या-क्या बीड़ा उठाना पड़ेगा, उनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं—

मूल ढाँचा

- कक्षा की व्यवस्था (साधन-संपन्न तथा अध्यापन की नई प्रवृत्तियों के अनुरूप)
- कक्षा का आकार—उचित कक्षा हिंदी की पढ़ाई के लिए एक निर्धारित कक्षा वर्तमान आई.टी. लैब में प्रयुक्त होने के वास्ते फिल्म स्लाइड्स की व्यवस्था

पाठ्य-पुस्तकें

रंगीन पाठ्य-पुस्तक जिसमें अनुकूल तस्वीरें हों। पाठ्यक्रम को कंप्यूटरीकृत करने की आवश्यकता है।

माध्यमिक स्तर की छोटी कक्षाओं में पाठ्य-पुस्तक गतिविधि-उन्मुख, खेल-आधारित एवं योजना-आधारित होनी चाहिए और अध्यापकों के लिए अनुकूल दिशा-निर्देश होने चाहिए।

अध्यापकों की कमी

- अध्यापक पीछे विद्यार्थी की संख्या 20 होनी चाहिए, UNESCO के 1:20 टीचर-प्यूपिल रेशियो के अनुरूप

सभी अध्यापकों के लिए समर्थन प्रणाली

- एड्यूकेटर वर्ग के लिए सहायक अध्यापक, एड्यूकेटर के लिए रिमीडिअल सपोर्ट एड्यूकेटर, तथा विशेष अपेक्षाओं के लिए एक अलग एड्यूकेटर
- टेक्नोलॉजी संपन्न माहौल
- शैक्षणिक सलाहकार
- स्कूल संचालन का समर्थन
- कार्यान्वयन में निरीक्षकों का समर्थन

अध्यापकों का प्रशिक्षण एवं अभिभावनाओं की जागरूकता

- पाठ्यक्रम को अमल में लाने के लिए अध्यापकों का प्रशिक्षण

प्रधान, सरकारी हिंदी शिक्षक संघ
सेकंड फ्लोर, गजाधर बिल्डिंग
मोंसेंयर गोनिन स्ट्रीट, पोर्ट लुई, मॉरीशस
s.tengur@yahoo.com,
pstccu@intnet.mu

3. HINDI TEACHING AND LEARNING IN MAURITIUS

Mr. Lutchmee Taucoory

History

The history of education in Mauritius is one of the gradual extension of provision from serving a privileged group to a system covering all children without distinction in class, gender, ethnic origin or even language and its literature so that no child and no language is left behind.

For this purpose, it has evolved from a completely private undertaking to a national education system. Apart from English and French Languages which we have inherited from our colonial masters, not less than 8 ancestral languages including Hindi are spoken, understood and taught at primary, secondary and tertiary levels.

Systematic but 'unofficial' secondary Hindi education may be said to have started with the establishment of the Hindi Parichay Examination by the Hindi Pracharini Sabha in 1946, but much earlier, Hindi teaching in several evening schools (Baithkas) of the Island by voluntary bodies including the Arya Samaj movement was then more effective than that of some of the schools run under state direction.

In 1973 a motion was carried out by late Sharma Jugdambi in the legislative assembly for the teaching of Hindi in the state secondary schools.

The same year, amidst a large gathering at the Municipal Theatre of Port Louis in honour of Shivmangal Singh Suman, then visiting Mauritius, the then Prime Minister, Hon Sir Seewoosagur Ramgoolam announced that his government would introduce Hindi in state secondary and junior secondary schools.

Professor Ram Prakash was the first Education Officer for Hindi and Indian Culture, the second according to the staff list was Mr. Takoorduth Panday in 1970, the third was Mr. Ramessur Ori in 1972 both attached to the Teachers Training College as Tutors. It is a fact that by then Hindi had not been introduced in the government secondary schools.

Then comes the historic date for the Hindi Movement in Mauritius. On 29 January, 1974, five Hindi Education Officers were appointed and sent to the government secondary schools to introduce Hindi Language on the same footing as the traditional languages English and French. They were Mr. Devnarain Autar to Royal College, Port Louis, Mr. Prahlad Ramsurrun to Royal College, Curepipe, Mr. Permeshwar Chady to John Kennedy College, Miss Dhanwantee Reekaye to Queen Elizabeth College and Miss B. Busgeet to Rose Belle State Secondary College.

Source : Indradhanush special August 2014 issue

Today Hindi is taught in all 63 state secondary schools and most private secondary schools of Mauritius including those run under the Roman Catholic Education Authority.

Present Situation 2013 (stats) learner and teaching staff

The education system in Mauritius is largely based on the British System since Mauritius was a former British Colony. It consists of a 2+6+5+2 system of formal education. Student passing CPE exams gain admittance to secondary schools, those with excellent results are admitted in the National Secondary Schools.

Secondary education covers a seven-year span starting from Form I to Form VI. Various subjects are

taught from Form I to Form III including all Asian Languages which are compulsory in all state secondary schools and these Asian subjects depend upon the subjects taken at CPE level. As from Form IV students are streamed according to the subjects they have opted for. At the end of the 5th year of study at the secondary level students sit for Cambridge School Certificate (SC) examination. Passing the SC exams allows them to continue another 2-year study ending with the Higher School Certificate (HSC) examinations. Good results at these exams allow them admission in good Universities with excellent courses.

Table I : Percentage of students studying Hindi in Secondary Schools in 2012

Institutions	**Percentage of Students**									
	FI	**FII**	**FIII**	**FIV**	**FV**	**LVI Princ**	**LVI Sub**	**UVI Princ**	**UVI Sub**	**Total**
State Secondary Schools	45.6	44.7	43.7	14.4	15	3.6	3	3.6	3	25.9
Private Colleges	19.8	19.3	18.2	6.3	6.7	3.9	0.6	4	0.7	11.8
Total	**32.2**	**31.3**	**30.2**	**10**	**10.2**	**3.9**	**1.8**	**3.9**	**1.9**	**18.5**

Table II : Percentage of students studying Hindi in Secondary Schools in 2013

Institutions	**Percentage of Students**									
	FI	**FII**	**FIII**	**FIV**	**FV**	**LVI Princ**	**LVI Sub**	**UVI Princ**	**UVI Sub**	**Total**
State Secondary Schools	45.8	45.9	43.6	16.3	15.3	4	3.6	3.8	3.5	26.7
Private Colleges	21.1	19.8	20.7	7.2	6.6	4.2	0.7	4.3	0.6	12.6
Total	**32.4**	**31.2**	**31**	**7.2**	**10.2**	**4.1**	**2.2**	**4**	**2.1**	**19**

Source : Statistics Mauritius

Secondary Schooling in Mauritius is compulsory for all students of ages 12 to 16 years and optional for students of ages 17 to 20.

Educators

Currently in 2014 there are 89 Hindi Educators on establishment and the Ministry seeks the help of about 20 Supply Educators as and when required to cater for replacement of these educators. As for Private Secondary Schools there are more than 80 Educators catering for the Hindi Sector.

Government Support and Policies

At the secondary level all subjects are treated according to the curriculum. However, unlike English and French languages Hindi and other Asian Languages are given less time in terms of teaching time i.e. only 3 periods weekly as compared to 5 for English and French Languages.

Since 2012, all students opting for an Asian Language at Form I level should compulsorily study it until Form III (circular notice No. 8 of 2012) and the subject is offered at Form IV and Form V level irrespective of the number of students who have opted for the subject.

The role of religious bodies like Arya Sabha, Mauritius and Hindi Pracharini Sabha cannot be forgotten. Together with this the contribution of evening schools held in the 'Baitkas' cannot be minimized. Since the olden days despite the lack of proper amenities, selfless teachers have contributed a lot into the propagation of this language.

As for educators teaching at secondary level in the state sector, all of them are graduates or hold post graduate qualifications and are recruited by the Public Service Commission on a regular basis. Despite their qualifications regular teacher training is being provided to educators by the Ministry and Mauritius Institute of Education.

Subject combinations have been harmonized to allow maximum students to benefit from the subjects offered in view of scholarships, future career and courses at the tertiary level.

The Mauritius Examination Syndicate, body responsible for examination in Mauritius in collaboration with Cambridge International Examinations allowed the marking of the Hindi paper for SC since the 90's by training the Mauritian Hindi Educators through workshops. All the markers have been duly trained and up to now given satisfaction to CIE. Together with the Hindi SC Paper, Hinduism and Literature in Hindi papers are also marked by the Mauritian Educators/Markers.

Pedagogical Philosophies and Strategies

The Mauritius Institute of Education in close collaboration with the Mahatma Gandhi Institute, propose courses of BA (Hon) Hindi with Education for school leavers. The University of Mauritius proposes joint BA courses coupled with History, English or French Languages. Together with these courses, for the training of secondary educators the Mauritius Institute of Education/Mahatma Gandhi Institute proposed the Post Graduate Certificate in Education course in 1985 to train the 1st batch of Hindi Educators. Then this course was relaunched since 2006 to train all the secondary Hindi Educators.

As far as curriculum development is concerned the MGI has been entrusted with this complex work together with the production and printing of text books. So far the personnel of MGI have given a very big help in the propagation of all the Asian Languages.

To give a further boost to the propagation of the Hindi Language the Mahatma Gandhi Institute is proposing a diploma course in Hindi with Education to help those people who wish to go further in this field.

Key Players in the Sector

The main key player in this sector is the Ministry of Education and Human Resources who is providing all the facilities possible for the propagation of this language in our country. The Mahatma Gandhi Institute with all the facilities provided for the propagation of Hindi Language together with five secondary schools plus the training of educators deserve a very good place. The MIE helps in the training of Educators, be it at primary or secondary level and helps in curriculum development. The MES is the body responsible for the conduct of all examinations in our country and even marking of the Cambridge SC Hindi Paper since the past 15 years.

The MBC plays a key role in the propagation of Hindi Language by proposing many programmes in Hindi and relaying the programme of Zee TV and Doordarshan programme from India without forgetting the locally produced programme be it on television or the radio where specific channels are dedicated to the Hindi Language.

The role of religious bodies like Arya Sabha, Mauritius and Hindi Pracharini Sabha cannot be forgotten. Together with this the contribution of evening schools held in the 'Baithkas' cannot be minimized. Since the old days despite the lack of proper amenities, selfless teachers have contributed a lot into the propagation of this language.

Moreover, the Government Hindi Teachers' Union at the Primary Level and the Government Secondary Teachers' Union at Secondary Level have in their own way waged an incessant struggle to propagate this language despite many reservations. Last but not the least, the role of Hindi Pracharini Sabha in collaboration with University of Allahabad, India has helped a lot for the Hindi Language by organizing examinations such as parichay, prathama, madhyama and uttama examinations, thus encouraging students to prosper in the villages of Mauritius.

Year	**No. of students taking part in Exams**						
	Praveshika	**Parichay**	**Prathama**	**Madhyama**	**Uttama**	**Uttama II**	**Uttama III**
2013	1198	648	487	335	219	204	185
2014	1142	623	391	270	225	173	185

Source : Hindi Pracharini Sabha

Careers Prospects for Learners

The Cambridge HSC being a gateway to University now, students opting for Hindi along with other subjects can gain entry in any course provided he/she satisfies other criteria as well. Students may opt for courses such as Law, Finance, Human Resources, Management, Business Communication, Psychology, Humanities and even languages. With such courses for students the sky is the limit.

International Support

The setting up of the World Hindi Secretariat in Mauritius through the close collaboration of the Government of India is one of the most noteworthy step taken in the move to get international recognition of Hindi as a United Nations Language. Moreover, the Indian Government by the setting up of the Mahatma Gandhi Institute, the Indira Gandhi Centre for Indian Culture and by providing many scholarships for Mauritian students to study Hindi at University level has enhanced the teaching of Hindi in Mauritius.

The World Hindi Secretariat in close collaboration with the MGI is working on innovative measures in the teaching and learning of Asian Languages. Undeniably the use of Information and Communication Technology along with a variety of opportunities existent online, proves to be beneficial in producing techno-pedagogical materials and thereby rendering the essence of teaching and learning more effective and efficient. The Language Resource Centre, MGI has already produced a handbook in ICT for Hindi Language.

Ag. Asst. Director,
Ministry of Education & Human Resource,
Zone 4, Mauritius
Cremation Rd, Camp Thorel,
St. Julien D'hotman, Mauritius
ltaucoory@govmu.org

द्वितीय सत्र : पूर्वी एशिया व प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में हिंदी

4. फिजी में हिंदी भाषा शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार

श्रीमती मनीषा रामरक्खा

मातृभाषा हिंदी

मनुष्य के जीवन में ज्ञान-विज्ञान, आधुनिक तकनीक का जितना महत्व है, उससे कहीं अधिक महत्व और अनिवार्यता मातृभाषा तथा उससे जुड़ी हुई संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, सामाजिक मूल्य और आध्यात्मिकता का ज्ञान प्राप्त करने की है। मातृभाषा व्यक्तित्व को निखारती है।

'माँ व्यक्ति की जननी है तो मातृभाषा व्यक्तित्व की जननी'

प्राणी स्वभाव से अन्वेषणशील रहा है। उसे अपने जन्मजात मूल संस्कारों, विचारों, सांस्कृतिक मूल्यों को परिवर्तनशील एवं नए वातावरण का आवरण पहनाकर प्रस्तुत करना अच्छा लगता है। यही कारण है कि गयाना, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम और फिजी जैसे विभिन्न पूर्व उपनिवेशों में भारतीय संस्कृति पूर्ण समृद्ध एवं पल्लवित है और भारतीयता के गौरव को जाग्रत रखे हुए है। मनुष्य के अपनत्व की पहचान उसकी मातृभाषा से होती है। हिंदू व हिंदुत्व की पहचान है, 'मातृभाषा हिंदी'। फिजी में हिंदी भाषा को पूर्ण और समान अधिकार प्राप्त है।

फिजी में प्रवासी भारतीयों की संस्कृति सभ्यता, आचार-विचार को देखकर उतना ही सुकून, आनंद एवं आत्मिक सुख प्राप्त होता है, जैसा मानो विशाल भारत भ्रमण से प्राप्त होता है। फिजी एक बहुजातीय देश है। भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा और वैदिक संस्कृति की झलक फिजी देश के छोटे से दायरे में देखी जा सकती है। इस दृष्टि से फिजी भारत का एक भूखंड महसूस होता है।

फिजी की भौगोलिक स्थिति-संक्षिप्त परिचय

फिजी प्रशांत महासागर का स्वर्ग कहलाता है। प्राकृतिक सौंदर्य और विभिन्न सांस्कृतिक सभ्यताओं का सुंदर समन्वय फिजी की ख़ास विशेषता है। प्रशांत महासागर में ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अमेरिका के बीच यह द्वीपसमूह स्थित है। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व में और न्यू ज़ीलैंड के उत्तर में फिजी द्वीप बसा है। फिजी द्वीप 180वीं देशांतर रेखा पर स्थित है। नव दिवस के सूर्य की पहली किरण प्रथम फिजी धरती को प्रकाशित करती है।

दूर-दूर तक फैले हुए लगभग 844 छोटे-बड़े द्वीप फिजी देश में शामिल हैं जिनमें से लगभग 100 द्वीपों में आबादी है और इनमें से केवल दो सबसे बड़े और घनी आबादीवाले द्वीप हैं जो कि वीतीलेवू और वनुआलेवू के नाम से जाने जाते हैं। फिजी देश के सभी बड़े-बड़े शहर वीतीलेवू में स्थित हैं। वर्तमान में फिजी की राजधानी सूवा शहर है। सभी देशों के दूतावास भी सूवा में स्थित हैं। फिजी को भूगोलवेत्ता नारियल और मूँगों की दुनिया मानते हैं। फिजी का मौसम सदाबहार है। फिजी के जंगल भी विभिन्न फल-फूलों और कंद-मूल से भरपूर हैं। माना समय-समय पर राजनैतिक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं, फिर भी हिंदी भाषा (फिजीयन एवं अंग्रेज़ी के साथ-साथ) और सांस्कृतिक विचारधारा पूर्णत: सुरक्षित एवं पल्लवित है।

फिजी के मूल निवासी-परिचय

फिजी देश के आदिवासी लोग 'काईवीती' कहलाते हैं। ये लोग डील-डौल में लंबे-चौड़े, प्रसन्नचित्त रहनेवाले और सबका हार्दिक सत्कार करनेवाले हैं। 'वूला' कहकर खुशी से सबका स्वागत करना इनकी संस्कृति है। भारतीय संस्कृति और फिजीयन संस्कृति की कुछ एक बातें मेल खाती हैं जैसे घर आए मेहमान को प्रेम से भोजन कराना, सरल साधारण रहन-सहन और दिल से दूसरों की सहायता के लिए तैयार रहना।

फिजी का 'इसा लेई' नामक गीत बहुत ही मार्मिक भावनाओं से भरा हुआ है। यह गीत बड़ा ही मननोहक और सुंदर विचारों से भरा हुआ है जिसमें वापस बुलाने की उत्कंठा और बिदाई का बड़ा ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया जाता है। इस गीत में फिर मिलने

की भावना को बड़े ही मनोरम ढंग से प्रगट किया जाता है। फिजी द्वीप का प्राकृतिक सौंदर्य और यह 'इसा लेई' गीत दोनों ही हर जानेवाले को फिजी वापस आने को उत्तेजित करते हैं। यह गीत हर सुननेवाले के हृदय में मीठा दर्द छोड़ जाता है।

इनकी भाषा काईवीती है और लेखन के लिए रोमन लिपि काम में लाई जाती है।

फिजी में हिंदी भाषा का इतिहास

फिजी में हिंदी भाषा की नींव डालने का श्रेय उन 463 भारतीयों को जाता है जो 15 मई, 1879 को गिरमिट प्रथा के अंतर्गत, प्रथम जहाज़ लिओनीदास द्वारा फिजी की भूमि पर उतारे गए। 11 नवंबर, 1916 तक शर्तबंद मज़दूर भारत के कोने-कोने से लाकर फिजी की भूमि पर उतारे जाते रहे। इस तरह 37 वर्षों तक लगभग 87 जहाज़ फिजी पहुँचे। इसके बाद गिरमिट प्रथा समाप्त हो गई।

कहाँ जा रहे हैं? क्यों जा रहे हैं? यह सब न जानते हुए भी, ये अपने साथ अपने देवी-देवता, अपनी मातृ भूमि की विचारधाराएँ, अपनी पुरातन तथा बहुमूल्य सांस्कृतिक परंपराओं और अपनी भाषा को साथ लेकर आए थे। उनमें से कुछ-एक अपने साथ अपने-अपने धर्म ग्रंथ जैसे रामायण, महारानी का गुटका, गीता, कुरान आदि भी लेकर आए थे।

अधिकांशत: निरक्षर थे पर उनमें अपनी संस्कृति और अपनी भाषा को कायम रखने की ललक थी। शरीर से वे फिजी में रहते थे पर आत्मा हमेशा भारत भूमि की मिट्टी छूने और अपने मुल्क की ख़बर सुनने के लिए तड़पती थी। अपना कुली काल पूरा करने के बाद अनेक प्रयास करने पर भी जब वे अपने मुल्क यानी भारत लौटने में असमर्थ रहे तब वे फिजी में ही अपना मुल्क बनाने, भारतीय संस्कृति को जुटाने और उसे समृद्ध बनाने में लग गए। अपना कुली काल पूरा करने पर उन्होंने अपने बल पर छोटे-छोटे केंद्र स्थापित किए और हिंदी तथा हिंदू संस्कृति की शिक्षा देना शुरू किया। शिक्षा का माध्यम हिंदी और संस्कृत हुआ करता था। पाठ्य पुस्तक थी 'चाणक्य नीति दर्पण' या जो भी पुस्तक उपलब्ध होती थी उसे पाठ्य पुस्तक के रूप में काम में लाया जाता था। उदाहरण के तौर पर पंडित भगवानदत्त पांडे शर्तबंदी में 1884 में फिजी आए थे। कुलीकाल पूरा होने पर वूसी (नसौरी) में अपनी छोटी सी कुटी बनाकर रहने लगे और यही कुटी हिंदुओं के लिए धार्मिक शिक्षा केंद्र बन गई। आगे चलकर यहीं स्कूल का निर्माण किया गया।

यहाँ यह बतलाते हुए मुझे खुशी हो रही है कि इस कार्य में सफ़लता पाने के लिए फिजी स्थित भारतीय दूतावास के हिंदी अधिकारियों द्वारा बहुत सहयोग दिया गया। भारतीय दूतावास द्वारा सभी स्कूलों को सहायक सामग्री प्रदान की गई, कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। वर्तमान में हिंदी भाषा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग और उसकी सुविधाएँ सर्वत्र उपलब्ध हैं, विभिन्न हिंदी सॉफ़्टवेयर्स उपलब्ध हैं।

फिजी में हिंदी का वर्तमान स्वरूप

आज फिजी में हिंदी भाषा निरंतर तरक्की कर रही है। अन्य भाषाओं (अंग्रेज़ी और फिजीयन) के साथ-साथ हिंदी भाषा को फिजी संविधान में समान अधिकार प्राप्त है। व्यावहारिक दृष्टि से भी राष्ट्रीय स्तर पर फिजी में तीनों भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में हिंदी भाषा पूर्ण सुरक्षित और समृद्ध है। फिजी में हिंदी के दो रूप देखने को मिलते हैं—

- पहला है, बोल-चाल की भाषा जिसे फिजी हिंदी कहते हैं। फिजी हिंदी का अपना एक रूप है, अपना अलग इतिहास है, साथ ही इसमें अद्‌भुत मिठास और सौंदर्य है। बोलने और समझने में सरल, यहाँ के काईवीती भाई इसका

प्रयोग बड़ी आसानी से कर लेते हैं। आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं, ख़ासकर अंग्रेज़ी और फिजीयन भाषा के शब्दों का मिश्रण भी देखने को मिलता है। भारत के अधिकांश प्रांतों के लोगों को फिजी लाया गया जिनकी भाषा-बोलियाँ अलग-अलग थीं जैसे भोजपुरी, अवधी, ब्रज, राजस्थानी, बिहारी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, मलयालम आदि। इन आनेवालों में अधिकतर ग्रामीण इलाके के लोग थे, सीधे-साधे, अनपढ़ जो एक-दूसरे की भाषा को समझते न थे। फिजी हिंदी इन सभी भाषाओं का मिश्रित रूप है।

कहावत है 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है', अत: जब अपने दु:ख-सुख में दूसरों को शामिल करने की आवश्यकता हुई तो मिश्रित भाषा 'फिजी बात' का आविष्कार हुआ। जब भारत से नए कुली आते तो सरदार उनसे कहता, ''फिजी बात सीखो।'' यह फिजी बात उस समय भारतीय मज़दूरों के विचारों के आदान-प्रदान का सरल माध्यम थी। अत: फिजी हिंदी एक बोली है, जो व्यावहारिक दृष्टि से पूर्णत: सक्षम है।

- दूसरा है, मानक हिंदी फिजी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त और शिक्षा मंत्रालय द्वारा निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रम भाषा, मानक हिंदी है। इसका लिखित रूप पूर्णत: देवनागरी लिपि है। यह पाठ्यक्रम कक्षा एक से लेकर कक्षा आठ तक प्राइमेरी स्कूलों के लिए और वर्ष नौ से लेकर वर्ष तेरह तक सेकंडरी स्कूलों के लिए पूर्णत: मानक हिंदी पर आधारित है। मानक हिंदी फिजी में औपचारिक तौर पर काम में लाई जानेवाली सक्षम भाषा है। माना फिजी में मानक हिंदी का स्तर उतना उच्च नहीं, जितना भारत में है।

वर्तमान में फिजी सरकार की भाषा नीति के तहत हिंदी शिक्षण

एजुकेशन समिट, 2000 की रिपोर्ट के सुझावों के तहत मातृभाषा के महत्व को समझा गया और इसके पठन-पाठन पर अधिक ज़ोर दिया जाने लगा है। बच्चों के चरित्र-निर्माण में मातृभाषा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसी के परिणाम स्वरूप शिक्षा मंत्रालय ने निम्न कदम उठाना अनिवार्य समझा। यह भी आवश्यक समझा गया कि सभी बच्चों को स्कूली व्यवस्था के अंतर्गत तीन भाषाओं में विचारों के आदान-प्रदान की योग्यता प्राप्त होनी चाहिए। पहली उसकी अपनी मातृभाषा, दूसरी वार्तालापीय भाषा (Conversational Hindi or Fijian) और तीसरी अंग्रेज़ी भाषा।

फिजी में शिक्षा मंत्रालय द्वारा भाषा को बढ़ावा देने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दिया जा रहा है—

- प्राइमेरी स्कूलों में कक्षा एक से कक्षा आठ तक मातृभाषा अनिवार्य कर दी गई है।
- सेकंडरी स्कूलों में वर्ष 9 और वर्ष 10 के लिए मातृभाषा अनिवार्य है। वर्ष 11, 12 और 13 के बच्चों के लिए वैकल्पिक/ चयनात्मक विषय के तौर पर हिंदी पाठ्यक्रम उपलब्ध है। पठन-पाठन का माध्यम मानक हिंदी और देवनागरी लिपि है।
- वार्तालापीय (Conversational Hindi) हिंदी पाठ्यक्रम-समस्त प्राइमेरी और सेकंडरी स्कूल के गैर-हिंदुस्तानी बच्चों के लिए अनिवार्य है। वार्तालापीय हिंदी शिक्षण का माध्यम रोमन लिपि है। मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान जितनी सक्षमता से कर लेता है वह उतनी ही उन्नति करता है और अपने आप को समर्थ समझता है तथा उसे आंतरिक सुकून प्राप्त होता है। इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए फिजी सरकार एवं शिक्षा मंत्रालय द्वारा वार्तालापीय

हिंदी-फिजीयन पाठ्यक्रम को तैयार किया गया। सन् 2000 से सभी स्कूलों में अनिवार्यत: एवं नियमित रूप से इसे कार्यान्वित किया गया है।

हिंदी भाषा के माध्यम से जीविका-यापन

हिंदी भाषा के माध्यम से जीविका-यापन के क्षेत्र में निरंतर विस्तार होता जा रहा है—

- सन् 1879 से लेकर सन् 1931 तक स्कूलों में हिंदी के लिए कोई पाठ्यक्रम नहीं था। हिंदी भाषी अपने साथ जो भी हिंदी पुस्तक लाए थे या फिर रामायण, गीता अथवा अन्य प्रकार की धार्मिक पुस्तकों द्वारा हिंदी भाषा के ज्ञान का आदान-प्रदान करते थे।
- अगले तीन दशकों में हिंदी पाठ्यक्रम कुछ व्यवस्थित हुआ। सन् 1969 में 'शिक्षा आयोग' की रिपोर्ट के सुझावों (प्राइमेरी स्कूलों में प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो) के आधार पर हिंदी शिक्षण में औपचारिकता आने लगी।
- 1930 से 1970 के वर्षों में कार्य-क्षेत्र अति सीमित था।
- 1970 में फिजी स्वतंत्र हुआ और नीति विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित संविधान की धारा के अनुसार कोई भी संसद फिजीयन अथवा हिंदी में अपने विचार प्रकट कर सकता है। इसके परिणामस्वरूप मातृभाषा हिंदी-फिजीयन पर शिक्षा के माध्यम से अधिक ध्यान दिया गया।
- इस तरह आज हिंदी का कार्य-क्षेत्र अति विस्तृत है और बढ़ता ही जा रहा है—

➢ अध्यापक, समस्त प्राइमेरी और सेकंडरी स्कूल, (International School in Fiji)

➢ प्राध्यापक एवं ट्यूटर्स (University of the South Pacific (USP), University of Fiji, Fiji National University (FNU), Fulton College, Corpus Christi-Teachers Training College)

➢ अनुवादक, दुभाषिए, पत्रकार, पंडित, लेखक, प्राइवेट हिंदी ट्यूटर्स आदि

➢ अनाउंसर्स (फिजी में छह रेडियो स्टेशन्स हैं जहाँ चौबीस घंटे हिंदी कार्यक्रम चलते हैं। टी.वी. चैनल्स फिजी वन, एफ.बी.सी.)

➢ हिंदी पत्रकार (फिजी में पिछले छह दशक से प्रकाशित होनेवाला हिंदी समाचार पत्र 'शांति दूत'।)

आधुनिक तकनीकी का प्रयोग

सन् 2000 तक फिजी के स्कूलों में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी (Hindi Computer typesetting, Hindi Software) के प्रयोग का चलन बहुत कम था।

शिक्षा विभाग के हिंदी अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से कार्यशालाओं के माध्यम से प्राइमेरी और सेकंडरी स्कूलों के समस्त अध्यापकों को हिंदी टाइपसेटिंग की योग्यता उपलब्ध कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाता रहा है।

यहाँ यह बतलाते हुए मुझे खुशी हो रही है कि इस कार्य में सफ़लता पाने के लिए फिजी स्थित भारतीय दूतावास के हिंदी अधिकारियों द्वारा बहुत सहयोग दिया गया। भारतीय दूतावास द्वारा सभी स्कूलों को सहायक सामग्री प्रदान की गई, कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। वर्तमान में हिंदी भाषा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग और उसकी सुविधाएँ सर्वत्र उपलब्ध हैं, विभिन्न हिंदी सॉफ़्टवेयर्स उपलब्ध हैं।

हिंदी शिक्षण में गैर-सरकारी संस्थाओं का योगदान

फिजी सरकार के पूर्ण सहयोग के साथ-साथ हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार में अनेक गैर-सरकारी संस्थाएँ, धार्मिक संस्थाएँ तन-मन-धन से कार्यरत हैं—

हिंदी टीचर्स एसोसिएशन ऑव फिजी

इसकी स्थापना 2000 में की गई, उस समय मैं शिक्षा मंत्रालय के साथ कार्यरत थी। यह एक रजिस्टर्ड बॉडी है—

हिंदी टीचर्स एसोसिएशन ऑव फिजी—नेशनल बॉडी

हिंदी टीचर्स एसोसिएशन—पश्चिमी विभाग

हिंदी टीचर्स एसोसिएशन—उत्तरी विभाग

हिंदी टीचर्स एसोसिएशन—केंद्रीय विभाग

सभी अध्यापकों के लिए कार्यशाला आयोजित करना, हिंदी संबंधित मुख्य बातों पर विचार-विमर्श करना, हिंदी दिवस का आयोजन करना आदि। हिंदी सॉफ़्टवेयर, हिंदी टाइपसेटिंग की योग्यता उपलब्ध कराने में इस संस्था ने बहुत सहयोग दिया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा ऑव फिजी

स्वामी दयानंद जी के सिद्धांतों और वैदिक सिद्धांतों पर आधारित होने के कारण संस्कृत और हिंदी भाषा की उन्नति आर्य समाज के नियमों में एक मुख्य नियम है। सन् 1804 में फिजी में सत्य सनातन वैदिक संस्कृति का झंडा लहराया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्राइमेरी, सेकंडरी स्कूल और यूनिवर्सिटी, मेडिकल, लॉ स्कूल भी हैं। इन सभी में हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है।

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ऑव फिजी—हिंदी की प्रगति के लिए वचनबद्ध है।

फिजी सेवा आश्रम संघ, फिजी—हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में लगी संस्था है। स्कूली बच्चों के लिए कविता-पाठ, रामायण-पाठ, लेखन, भाषण और अन्य अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित करना, संस्कृत-हिंदी कक्षाएँ आयोजित करना आदि।

भारतीय दूतावास, फिजी—हिंदी के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा सहयोग प्रदान करता है। हिंदी पुस्तकों का वितरण, कार्यशालाओं के आयोजन में सहयोग देना आदि।

अन्य धार्मिक संस्थाएँ, यू.एन.डी.पी. आदि भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दे रही हैं। गुजरात संस्था, सिक्ख संस्था, संगम संस्था, कबीर पंथी, वहाई धर्म, ऐसी अनेक भारतीय मूल की संस्थाएँ भारतीय संस्कृति, हिंदी भाषा को फिजी में कायम रखे हुई हैं।

फिजी के जाने-माने हिंदी साहित्यकार, लेखक-लेखिका

- आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी ने सन् 1927 में पंडित अमीचंद्र विद्यालंकार जी को, फिजी में भाषा और संस्कृति के प्रचार और प्रसार के लिए फिजी बुलाया था। सन् 1935 में पं. अमीचंद्र जी ने स्कूलों में हिंदी पढ़ाने के लिए छह पोथियाँ (हिंदी की पहली, दूसरी, नवीन तीसरी, चौथी, पाँचवी, छठवीं) लिखी थीं।
- सन् 1970 में शिक्षा के क्षेत्र में फिर बदलाव आया और हिंदी पुस्तकों का पुन: अवलोकन करते हुए नई पाठ्य-पुस्तकें लिखी गईं। 'मेरी पहली पुस्तक' से लेकर 'मेरी छठी पुस्तक' तक लिखी गई।
- सन् 2009 से हिंदी पाठ्यक्रम में बदलाव के कारण ऐसी शिक्षण-सामग्री की आवश्यकता का अनुभव किया गया जो इस नई शिक्षण-नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो ताकि बच्चे बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास रख सकें। ये पुस्तकें वर्तमान में स्कूलों में चल रही हैं—शाश्वत ज्ञान 1-4।
- फिजी में हिंदी के पाठ्यक्रम में संस्कृति शिक्षा को विशेषकर जोड़ा गया है। पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक अध्ययन जोड़ने के लिए पुस्तकें लिखी हैं जो कि फिजी में हिंदी के पाठ्यक्रम के साथ जुड़ी हुई हैं। ये हैं—संस्कृति और नैतिक शिक्षा-प्राइमेरी स्कूल, कक्षा पाँच और छ: के बच्चों के लिए तथा संस्कृति और मानव धर्म-प्राइमेरी स्कूल, कक्षा सात और आठ के बच्चों के लिए।

- श्री कंवल जी ने सन् 1976 में लेखन कार्य शुरू किया। कई उपन्यास, कहानी पुस्तकें लिखीं जिनमें से कुछ फिजी के हिंदी पाठ्यक्रम में लगी हुई हैं—'सवेरा', 'धरती मेरी माता', 'करवट', 'हम लोग', 'सात समुद्र पार', 'कुछ पत्ते कुछ पंखुड़ियाँ'।
- श्रीमती अमरजीत कंवल ने फिजी की गिरमिट समस्याओं को लेकर कविता-संग्रह की रचना की। 'चलो चलें उस पार', 'उपहार', 'स्वर्णिम साँझ'—इसके लिए इन्हें प्रवासी भारतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- अन्य लेखक : पंडित कमला प्रसाद—'मुल्क की रचनाएँ'
- पंडित प्रताप चंद्र—'प्रवासी भजनांजलि', इस तरह बहुत सारा लेखन कार्य किया गया पर दुर्भाग्यवश अधिकांशतः छप न सका।
- गिरमिट-कालीन फिजी की दर्द भरी रचना के कुछ उदाहरण—

नगोना हम से छूटे न प्यारी,
देस छूटा जात छूटी,
छूटी बाप महतारी,
नगोना हम से छूटे न प्यारी,
इस टापू का भाँग नगोना,
पी के रात गुजारी,

दूसरी रचना—

सतियों का धर्म डिगाने को जब,
अनुयायियों ने कमर कसी,
जल अगम में कुंती कूद पड़ी,
पार बही मझधार नहीं।
अत्याचार की चक्की में,
पिस कर धर्म नहीं छोड़ा,
हिंदूपन अपना खो बैठें,
भारत के वीर गंवार नहीं।
इस पतन का कुछ तो यत्न करो,
हर कुंती का जीवन सफ़ल रहे,
बिन धर्म धारण किए,
सुख शांति का संचार नहीं।

फिजी में मानक हिंदी जिन चुनौतियों का सामना कर रही है, वे हैं—

- आधुनिक तकनीकी-फ़ेसबुक, चैट, इ-मेल आदि के आकर्षण के कारण मातृभाषा के प्रति युवाओं की बढ़ती हुई अरुचि।
- मातृभाषा और धर्म के प्रति बढ़ती हुई युवा वर्ग की अरुचि का कारण है कि वह यह सोचता है कि विदेश जाने पर हिंदी भाषा का कोई महत्व नहीं रह जाता है। शिक्षा को केवल धन कमाने का माध्यम समझने के कारण मातृभाषा के प्रति अरुचि बढ़ रही है।
- माता-पिता के बदलते ख़याल, आधुनिकता की ओर झुकाव है।
- पाठ्यक्रम में मानक हिंदी के स्थान पर फिजी हिंदी लाने के कुछ असफ़ल प्रयास।
- देवनागरी लिपि का स्थान रोमन लिपि ले रही है। परिणामतः हिंदी ध्वनियों का लोप हो रहा है।

प्रधान, हिंदी टीचर्स एसोसिएशन ऑव फिजी
(National Body)
48 Namena Road, Nabua, Suva
PO Box 11440, Suva
PO Box 3400, Lautoka
mrsramrakha@gmail.com

5. सिंगापुर में हिंदी का विकास

सुश्री उदीची पांडेय

हिंदी सोसाइटी की स्थापना को 25 वर्ष हो चुके हैं। हम सभी इस वर्ष हिंदी सोसाइटी की रजत जयंती मना रहे हैं। हिंदी सोसाइटी की सफ़लतापूर्वक स्थापना में कई लोगों का योगदान रहा। हमारे विद्यार्थी प्रति वर्ष बढ़ते रहे और आज यदि हम देखें तो 25 वर्षों के बाद उनकी संख्या 99 से बढ़कर 3081 हो गई है।

सन् 1920–1940 में हिंदी भाषी लोग कहीं एकत्रित होकर बच्चों को हिंदी की शिक्षा दिया करते थे।

सन् 1930 में आर्य समाज मंदिर में हिंदी की कक्षाएँ चलाई जाती थीं। इन कक्षाओं में बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में पढ़ाया जाता था। सन् 1964 में एक विद्यालय खुला, जिसका नाम 'डी.ए.वी.' था, जहाँ बच्चों को मुफ़्त शिक्षा दी जाती थी। पहले के समय में आए हुए जितने भी भारतीय हैं, उनमें से अधिकांश लोगों ने मजबूरी में ही सही परंतु चाइनीज़ और मलय बोलना सीख लिया।

13 जुलाई, 1990 के एक समाचार-पत्र में रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें इस बात का ज़िक्र किया गया था कि Indian Singaporean विद्यार्थियों का शैक्षिक-प्रदर्शन अच्छा नहीं था।

इसका कारण यह बताया गया कि सिंगापुर में जो तीन मुख्य भाषाएँ थीं, चाइनीज़, मलय और तमिल, विद्यार्थियों को उन्हीं में से किसी एक का चुनाव करना था, जो कि उनकी मातृभाषा नहीं थी। जिसके कारण बहुत से बच्चे इस समस्या से जूझ रहे थे।

उसके बाद NTIL (Non Tamil Indian Languages) का गठन हुआ और उसमें प्रत्येक भाषा के किसी एक व्यक्ति द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया। NTIL के अंतर्गत पाँच मुख्य भाषाएँ आती हैं—बंगाली, गुजराती, पंजाबी, हिंदी औरउर्दू।

1989 में सिंगापुर के शिक्षा मंत्री द्वारा यह घोषणा की गई कि माध्यमिक कक्षाओं के बच्चे NTIL भाषाओं में से किसी एक भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ सकते हैं।

उसके बाद एक और कमिटी बनाई गई जिसमें इस बात पर शोध किया गया कि क्या यह प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए भी संभव हो सकता है ?

सन् 1989 में ही The Hindi Society (Singapore) की स्थापना हुई। सन् 1992 की वार्षिक पत्रिका में उस समय Hindi Society के लिए यह परिकल्पना की गई थी कि हमारी अपनी एक ऐसी इमारत हो जहाँ पर हम बच्चों के लिए काफ़ी सारी गतिविधियाँ आयोजित कर सकें।

शुरुआती दौर में बच्चों को लिखने से ज़्यादा बोलने पर ज़ोर दिया जाता था। पुस्तकें भी उतनी ज़्यादा उपलब्ध नहीं थीं। उस समय पुस्तकें भारत से ही मंगाई जाती थीं। लेकिन इसका दुष्परिणाम यह था कि पाँचों NTIL भाषाओं में अलग-अलग पुस्तकें और अलग-अलग बातें सिखाई जाने लगीं। सभी अपने-अपने ढंग से पढ़ा रहे थे।

उस समय तक बच्चों के प्राप्तांक उनके परिणाम पत्र में भी नहीं जुटते थे क्योंकि तब तक सारी NTIL भाषाओं में समानता नहीं थी।

सन् 1998 से कुछ कक्षाओं के लिए Common Examinations शुरू हुए। विशेष रूप से PSLE और O-Level के स्तर पर ये परीक्षाएँ शुरू की गईं।

23 जुलाई, 2000 में बच्चों का गणवेश बनाया गया। सन् 2000 में ही पहली बार रंगीन वार्षिक पत्रिका बनाई गई। अभ्यास पुस्तिकाएँ बनाई गईं, जिससे बच्चों का ज़्यादा से ज़्यादा लिखित अभ्यास करवाया जा सके।

वर्ष 2000 में सभी कक्षाओं की एक साथ परीक्षा आयोजित की गई और उनके परीक्षा-पत्रों की जाँच के लिए एक केंद्र निर्धारित किया गया जहाँ पर सभी भाषाओं के परीक्षा-पत्रों की एक साथ जाँच की गई। यह प्रक्रिया इसलिए भी शुरू की गई ताकि सभी भाषाओं में समान स्तर बना रहे।

हिंदी शिक्षा का बदलता स्वरूप

पहले के समय में लोगों का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषी लोगों

को इकट्ठा करना था। पहले लोगों ने जब विदेशों में आगमन किया तब उस समय शायद लक्ष्य सिर्फ़ रोज़ी-रोटी ही कमाना था। धीरे-धीरे जब रहन-सहन का स्तर सुधरा तब उन्हें अपनी मातृभाषा और मातृभूमि का ध्यान आया। उन्होंने अपनी पहचान और अपनी मातृभाषा को बचाए रखने के लिए कई प्रकार की कोशिशें शुरू कीं।

जब सन् 1990 में हिंदी सोसाइटी की स्थापना हुई तब हिंदी बोलने या पढ़ने की यह स्थिति थी कि वे सभी लोग जो हिंदी के जानकार थे उन्हें बुलाकर हिंदी के पठन-पाठन के लिए भी एक प्रकार का दबाव देना पड़ता था। तब बच्चों की संख्या 99 थी। धीरे-धीरे सिंगापुर में भारतीयों की संख्या बढ़ने के कारण हिंदी पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई।

समय-समय पर शैक्षणिक तरीके बदलते रहे और लोगों में भी शिक्षा देने के तरीकों में काफ़ी सुधार हुआ। पहले सभी अपनी इच्छानुसार अलग-अलग तरीके से पढ़ाते रहे फिर यह तय किया गया कि जो भी शिक्षा दी जा रही है वह कम-से-कम एक जैसी होनी चाहिए। उसके बाद कुछ सालों तक भारत से पुस्तकें मंगवाई गईं। बच्चों ने काफ़ी सालों तक बाल-भारती और ज्ञान-सुधा पुस्तकें भी पढ़ीं। जब सन् 2007 में हमें सरकार की तरफ़ से आर्थिक मदद मिली तब हमें भी अपने आप को साबित करना था कि हम जिस NTIL के अंतर्गत काम कर रहे हैं उसकी सारी भाषाओं में शिक्षा का समान स्तर है और फिर NTIL के अंतर्गत अपनी पुस्तकें बनाई गईं।

प्रत्येक समूह से कुछ अध्यापिकाओं को लेकर प्रत्येक कक्षा के लिए पुस्तकों का निर्माण किया गया। उन अध्यापिकाओं में से मैं भी एक हूँ। वह हमारी एक उपलब्धि थी। यह अलग बात है कि पुस्तकें बन जाने के बाद उनके बारे में बहुत सारे अभिभावकों के सकारात्मक और नकारात्मक विचार भी सुनने में आए।

प्रत्येक समूह से कुछ अध्यापिकाओं को लेकर प्रत्येक कक्षा के लिए पुस्तकों का निर्माण किया गया। उन अध्यापिकाओं में से मैं भी एक हूँ। वह हमारी एक उपलब्धि थी। यह अलग बात है कि पुस्तकें बन जाने के बाद उनके बारे में बहुत सारे अभिभावकों के सकारात्मक और नकारात्मक विचार भी सुनने में आए।

उदाहरण के तौर पर इन पुस्तकों में कोई कविता या भारत के किसी महान व्यक्ति के बारे में कोई ज़िक्र नहीं था। लेकिन इन पुस्तकों को बनाने में बहुत सारी अच्छी बातों का भी ध्यान में रखा गया। जैसे यदि हम प्राथमिक एक की पुस्तक को देखें तो इसका पहला पृष्ठ वर्णमाला से शुरू नहीं होता। इसके पीछे कुछ सोच या लोगों के अपने विचार हैं।

अब यहाँ पर बात सिर्फ़ हिंदी सीखने की नहीं है। अब जब बच्चों के अंक परीक्षाओं में जुड़ने लगे हैं तब हमें इस बात पर ध्यान देना होता है कि उनकी हिंदी की पढ़ाई का स्तर और सिंगापुर के राष्ट्रव्यापी स्तर में समानता हो। वह इस प्रकार हो कि विद्यार्थियों को परीक्षा में अच्छे अंक भी प्राप्त हों।

पहले जब बच्चों ने हिंदी पढ़ना शुरू किया तो उनका उद्देश्य सिर्फ़ हिंदी बोलनेवाले वातावरण में तीन-चार घंटे व्यतीत करना था। जब बच्चों के अंक जुड़ने की शुरुआत हुई तब माता-पिता की चिंता भी शुरू हुई।

हमारे यहाँ बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने कभी भारत ही नहीं देखा है और उन्हें भारत के बारे में बताना कभी-कभी असंभव सा हो जाता है। यदि वे भारत के बारे में कुछ जानते हैं तो वह भी दूरदर्शन के माध्यम से। हिंदी सोसाइटी में हमने बहुत से दूसरे तरह के कार्यक्रम भी शुरू किए हैं जिनसे बच्चों का पाठ्यक्रम रुचिकर हो जाए।

जैसे 'शो ऐंड टेल' (स्पीकिंग ऐंड रीडिंग एसेसमेंट), 'स्टोरी

टेलिंग', 'स्पीच ऐंड ड्रामा', एक साल में तीन बार अलग-अलग कक्षाओं के लिए एनरिचमेंट का कार्यक्रम आदि।

हिंदी शिक्षा देने के विभिन्न प्रकार

ICT PORTAL

प्राथमिक कक्षाओं के लिए ICT PORTAL का प्रयोग होता है जिसमें बच्चे वर्णमाला, समानार्थी, विलोम आदि का अभ्यास घर पर बैठे-बैठे कर सकते हैं।

रंगीन काड्र्स का प्रयोग

काड्र्स पर अपने बारे में लिखकर देना और बिना एक-दूसरे की जान-पहचान के अपने सहपाठी के बारे में जानना।

रंगीन काड्र्स के प्रयोग द्वारा कक्षा में बच्चों की बातें समझ पाना।

निबंध पढ़ाने के लिए काड्र्स का प्रयोग होना।

हम बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा तसवीरों के साथ पढ़ाना चाहते हैं ताकि वे उस विशेष विषय के बारे में कल्पना कर सकें।

फ्लैश काड्र्स का प्रयोग

छोटी कक्षाओं में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि बच्चों को कम-से-कम पुस्तकें देखनी पड़ें और ज़्यादा से ज़्यादा वे चित्रों के माध्यम से पढ़ें। फ़्लैश काड्र्स का प्रयोग हम कई प्रकार से करते हैं। जैसे गिनती, रंगों की पहचान, आकार का ज्ञान आदि।

त्योहार

होली, रक्षा-बंधन, दशहरा, दीपावली, राष्ट्रीय दिवस आदि के बारे में बच्चों को पूरी जानकारी दी जाती है।

माध्यमिक कक्षाएँ

माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को मुख्य रूप से निबंध लेखन में काफ़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। जो हमारी पुरानी अध्यापिकाएँ हैं वे अब सिंगापुर की शिक्षा प्रणाली के अनुसार बच्चों को समझा पाने में काफ़ी हद तक सफ़ल हो पाती हैं, जब कि नई अध्यापिकाओं को यह समझा पाना बहुत मुश्किल होता है कि वे सिंगापुर के बच्चों से क्लिष्ट हिंदी के प्रयोग की उम्मीद न करें। कभी-कभी दिक्कत यह होती है कि अध्यापिकाएँ बच्चों के हिसाब से नहीं बल्कि अपने ज्ञान के अनुसार बच्चों को शिक्षा देती हैं जो कि बच्चों के लिए समझ पाना असंभव होता है।

दूसरी समस्या जिसका सामना हमें करना होता है, वह होता है अध्यापिकाओं का लंबे समय तक सिंगापुर में न रुक पाना। हमारी अधिकांश अध्यापिकाएँ डी.पी. (Deputation) पर होती हैं। जब तक थोड़ा-बहुत वे खुद को तैयार कर पाती हैं तब तक उनका सिंगापुर से स्थानांतरण हो जाता है।

हमारी हिंदी सोसाइटी में लगभग 135 अध्यापिकाएँ हैं। वर्ष 2014 में हमारे यहाँ विद्यार्थियों की कुल संख्या 3081 हो गई। यह बढ़ती हुई संख्या उन विद्यार्थियों की ज़्यादा है जो कुछ ही सालों के लिए सिंगापुर में रहते हैं। हमारे यहाँ जो भी विद्यार्थी हैं उनमें से सिर्फ़ 20 प्रतिशत ही ऐसे हैं जो हिंदी बोलते हैं। बाकी बच्चे भारत के अलग-अलग प्रांतों से हैं। उनके लिए या फिर उनके माता-पिता के लिए हिंदी विदेशी भाषा जैसी ही है। वे भी अपने बच्चों के साथ बहुत परिश्रम करते हैं। उनकी उम्मीदें अध्यापिकाओं से बहुत ज़्यादा होती हैं। यदि बच्चों के परिणाम अच्छे नहीं आए तो अभिभावक मायूस भी हो जाते हैं।

उनका मुख्य उद्‌देश्य हिंदी सीखना नहीं बच्चों को अच्छे अंक दिलाना है। अंकों के चक्कर में माता-पिता यह भूल जाते हैं कि सर्वप्रथम बच्चे का हिंदी भाषा को पसंद करना आवश्यक है। हमारी पूरी कोशिश है कि हम बच्चों को हिंदी भाषा के साथ-साथ अपनी संस्कृति से भी जोड़कर रख सकें।

मुख्य अध्यापिका, हिंदी सोसाइटी सिंगापुर
महात्मा गांधी मेमोरियल
3 रेस कोर्स लेन
सिंगापुर 218731
hindi@singnet.com.sg

6. न्यू ज़ीलैंड में हिंदी

श्रीमती सुनीता नारायण

न्यू ज़ीलैंड में आज लगभग 200 भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से हिंदी एक है। यहाँ की औपचारिक भाषाएँ अंग्रेज़ी ते रेओ माओरी (आदिवासियों की भाषा) और साईन लैंग्वेज (मूक-बधिरों की भाषा) हैं।

अप्रवासी भारतीयों में ज़्यादातर भारतीय फिजी, भारत, यू.के., दक्षिण अफ़्रीका, केन्या, तंज़ानिया आदि देशों से हैं। सन् 2013 जनगणना के अनुसार भारतीयों की संख्या अब 66,312 हो गई हैं। यह आँकड़ा सन् 2006 के मुकाबले 22,000 अधिक है। हिंदी अब न्यू ज़ीलैंड में चौथे स्थान पर है और ऑकलैंड शहर में तीसरे स्थान पर है, जहाँ 49518 हिंदी भाषी निवास करते हैं। आँकड़ों के अनुसार न्यू ज़ीलैंड में पैदा हुए लोगों में केवल 18.5 प्रतिशत हिंदी बोलते हैं। यह संख्या विदेशों में पैदा हुए भारतीयों की तुलना में 30.1 प्रतिशत से कम है जो चिंताजनक है। नीचे दिए गए रेखाचित्र से कोई भी अनुमान लगा सकता है कि अगर इस स्थिति में प्रगति नहीं हुई तो आगामी पीढ़ियों में हिंदी का ज्ञान घटता जाएगा और हमें विस्तारण में अधिक परिश्रम और धन खर्च करना पड़ेगा। बेहतर होगा कि हम आज ही से मिलकर ऐसी नीतियाँ बनाएँ जिससे बच्चे और युवा को प्रोत्साहित कर सकें।

यद्यपि न्यू ज़ीलैंड में हिंदी सुनने और अनुभव करने के अनेक सुअवसर प्राप्त हैं, हिंदी के संरक्षण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका माता-पिता और परिवार का ही है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ जैसे ए.एन. जेड बैंक, रेडियो तराना, एशिया एन जेड आदि बड़े शहरों में भारतीय त्योहारों और उत्सवों को स्पॉन्सर एवं सहायता करती हैं। इन त्योहारों में दिवाली, होली, रक्षा-बंधन और ईद हैं। कई सिटी काउंसिल भी अपने शहरों में भारतीय सामाजिक संस्थाओं को उत्सव के आयोजन में मदद करते हैं। कई वर्षों से दिवाली और ईद संसद भवन बीहाइव में हर साल सरकार द्वारा आयोजित किए जाते हैं।

भारतीय दूरदर्शन जैसे ज़ी.टी.वी., स्टार प्लस यहाँ मिलते हैं। स्थानीय टी.वी. चैनेल्स के माध्यम से हमें अनेक तरह के प्रोग्राम और फ़िल्मों का आनंद प्राप्त होता है। आकाशवाणी द्वारा चौबीस घंटे कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। अंतरराष्ट्रीय हिंदी प्रोग्राम्स इंटरनेट पर भी उपलब्ध हैं। परंतु कोई हिंदी अख़बार नहीं है। हाल में एक नया अख़बार इंडियन एक्सप्रेस शुरू हुआ है, जिसमें 1-2 पन्ने हिंदी को समर्पित किए जाते हैं।

कई शहरों में अब विश्व हिंदी दिवस मनाया जा रहा है। हिंदी विद्यालय अपने कार्यक्रमों में भाषा, संगीत, निबंध इत्यादि की प्रतियोगिताएँ भी करते हैं और माता-पिता को भी सम्मिलित करते हैं। सभी उस समय का अधिक आनंद उठाते हैं। ऑकलैंड में जहाँ भारतीयों की संख्या बड़ी मात्रा में है वहाँ जनता के लिए और भी कार्यक्रम होते हैं जो हफ़्ते-भर चलते हैं। इस आयोजन में श्रीमान सत्या दत्त जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस साल पहली बार वेलिंग्टन के विक्टोरिया विश्वविद्यालय में भारतीय मल्टीकल्चरल क्लब द्वारा एक सप्ताह का प्रोग्राम आयोजित किया गया।

न्यू ज़ीलैंड सरकार संविधान द्वारा अप्रवासियों को अपनी भाषा और संस्कृति बनाए रखने की अनुमति देती तो है पर कुछ ही को सहायता प्राप्त है। कोई भी भारतीय भाषा इनमें नहीं है। ऑकलैंड में तीन सेकंडरी विद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है लेकिन यह परीक्षा विषय नहीं है। वेलिंग्टन में एक विद्यालय में लंच आवर में हिंदी देते हैं। पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए कम-से-कम 15 विद्यार्थियों का होना आवश्यक है। इस स्कूल के प्रिंसिपल, सन् 2015 में अपने बच्चों को हिंदी ऑप्शन देना चाहते हैं।

इन सालों में जहाँ विकास हुआ है वहीं कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो चिंताजनक हैं। सबसे पहले तो मातृभाषा सिखाने की ज़िम्मेदारी माता-पिता की होती है। बच्चों की मातृभाषा का शिक्षण माँ और घर से शुरू होता है पर आज यह देखा जा रहा है कि अंग्रेज़ी को ज़्यादा महत्व दिया जा रहा है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारा भारतीय समुदाय यह नहीं समझ पा रहा है कि अपनी मातृभाषा में निपुण होने से हमारा मानसिक विकास और प्रबल होता है।

हम अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, एक्स्ट्रा-करिक्यूलर गतिविधियों जैसे खेल-कूद, नृत्य-संगीत पर ज़्यादा ध्यान देने लगे

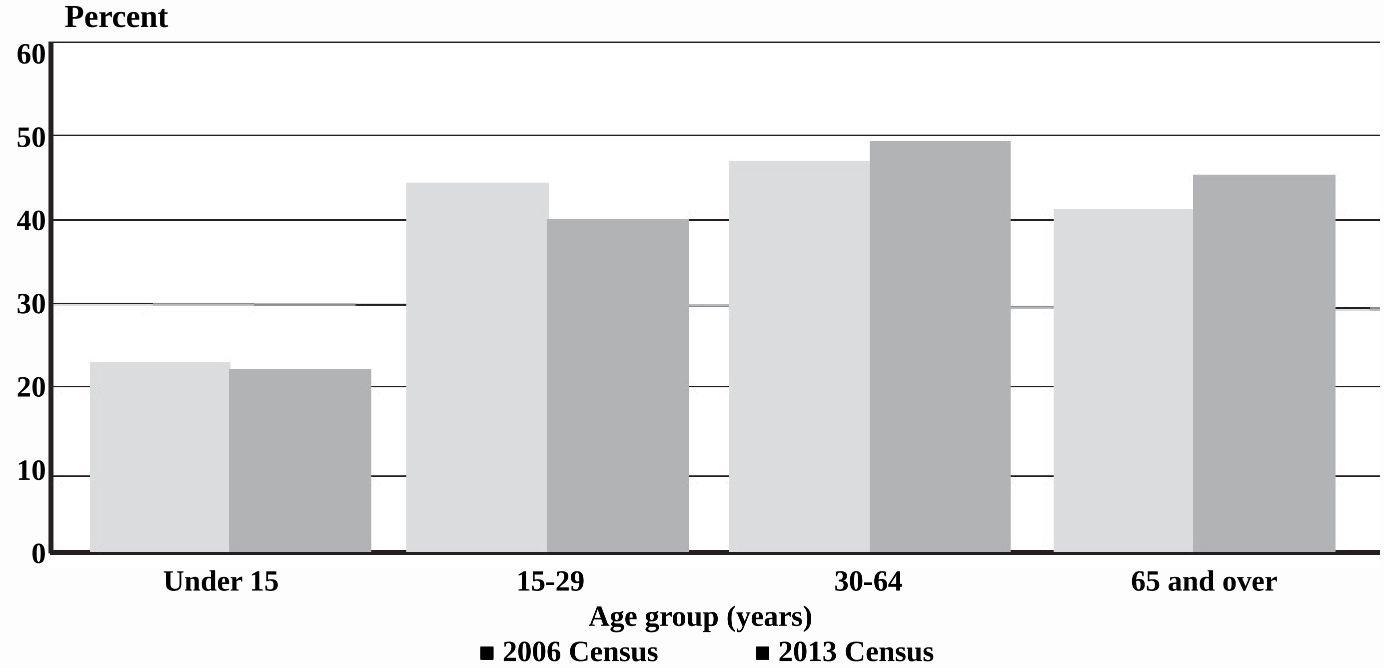

Note : Some percentage may be too small to show on graph
Source : Statistics New Zealand

हैं। इसमें बहुत धन खर्च करते हैं। कई लोगों का विचार है कि यह सब करने से उनके परिवार का दर्जा ऊपर हो जाता है। हिंदी शिक्षण का सवाल उठता ही नहीं। जहाँ एक तरफ़ गैर-भारतीय हिंदी सीखना चाहते हैं वहीं दूसरी तरफ़ हमारे अपने युवा अपनी संस्कृति और भाषा से मुँह मोड़ रहे हैं, हिंदी बोलने से हिचकिचाते हैं तथा अपना नाम भी बदल लेते हैं जैसे कोमल से कोमाल, कृष्ण से कृशान, कमल से कमाल आदि। इनको हम दोषी नहीं ठहरा सकते!

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम

सन् 2007 में न्यू ज़ीलैंड के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन लाए गए थे। इसके अंतर्गत भाषा वर्ग को दो भागों में विभाजित कर दिया गया था—(1) अंग्रेज़ी और (2) अन्य सभी भाषाएँ। पाठ्यक्रम अंग्रेज़ी के माध्यम से पढ़ाया जाता है। भाषाओं में शामिल हैं—चीनी, जर्मन, स्पेनिश, फ्रेंच, जापानी, मओरी, कुछ प्रशांतीय भाषाएँ और संकेत भाषा।

स्कूलों में क्या पढ़ाया जाएगा, इसका निर्णय स्वयं स्कूल का संचालन-मंडल करता है। एक तरफ़ यह स्वतंत्रता है तो दूसरी तरफ़ पूरे साधन न होने की लाचारी। छात्र की संख्या उपयुक्त है तो टीचर नहीं टीचर हैं तो उपयुक्त संख्या में छात्र नहीं। यह परिस्थिति केवल हिंदी को ही नहीं बल्कि और भाषाओं को झेलना पड़ रहा है।

किसी भी विश्वविद्यालय में हिंदी नहीं पढ़ाई जाती है। आजकल न्यू ज़ीलैंड क्वालिफ़िकेशंस अथॉरिटी (एन.ज़ेड.क्यू.ए.) भाषा पढ़ानेवाले टीचर्स क्वालिफ़िकेशन लेवल 4-5 क्वालिफ़िकेशन (सर्टिफ़िकेट/डिप्लोमा) का पुनरीक्षण कर रहे हैं। जिसमें अनौपचारिक भाषा शिक्षकों को सम्मिलित करने की संभावना है। इसी उद्देश्य को लेकर मेसी यूनिवर्सिटी भी अपने लेवल 6-7 (बैचलर/मास्टर्स) क्वालिफ़िकेशन का पुनरीक्षण कर रहा है। यह हमारे लिए एक सराहनीय और बहुमूल्य कदम है।

न्यू ज़ीलैंड में हिंदी शिक्षण

हम भारत, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि से दूर यहाँ न्यू ज़ीलैंड में भी हिंदी और भारतीय संस्कृति के अनुरक्षण तथा प्रसार में लगे हुए हैं। यहाँ हिंदी की पढ़ाई का औपचारिक साधन तो नहीं है फिर भी हम कई जगहों पर छोटे-छोटे स्कूल चला रहे हैं जहाँ शनिवार/रविवार को पढ़ाई होती है। लगभग पच्चीस वर्षों से यहाँ बहुत सारे लोग हिंदी को बढ़ावा देने और संरक्षण के लिए पढ़ाने-लिखाने में जुटे हुए हैं। उन सब का एक ही लक्ष्य है कि हमारे बच्चों और युवाओं में भारतीयता होने का तथा हिंदी बोल पाने का गर्व हो।

हिंदी शिक्षण में रोहित कुमार 'हैप्पी' जी का योगदान महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने अपनी वेबसाइट 'भारत दर्शन' पर ऑनलाइन हिंदी टीचर शुरू किया और बारीकी से पाठ तैयार किए जहाँ छात्र को उच्चारण विधि भी दी गई। यह एक प्रगतिशील कदम रहा है। पाठ के अलावा वे अपनी रचनाएँ—कविता, कहानियाँ आदि भी प्रस्तुत करते हैं।

ऑकलैंड, वेलिंग्टन, हेमिल्टन, क्राइस्टचर्च आदि नगरों में कई विद्यालयों का संचालन हो रहा है। लगभग 8 पाठशालाएँ अपने-अपने ढंग से कार्यक्रम कर रही हैं, कइयों ने तो पाठ्यक्रम भी तैयार कर लिए हैं। आजकल सभी पाठशालाओं में शिक्षित अध्यापक (इनमें अवकाश प्राप्त अध्यापक शामिल हैं) भी हैं। ये अध्यापक पूरे सप्ताह नौकरी करते हैं और शनिवार व रविवार को हिंदी स्कूलों में पढ़ाते हैं। कक्षा का समय 1 से 3 घंटों का होता है जहाँ भाषा, इतिहास, संस्कृति, संगीत, नृत्य आदि सिखाए जाते हैं। सभी विद्यालय वार्षिक समारोह करते हैं जिसमें माता-पिता, परिवार और जनता को आमंत्रित किया जाता है।

पाठशालाएँ मंदिरों, सामुदायिक केंद्रों, घरों और कई स्कूलों में अपनी कक्षाएँ चलाती हैं। पिछले 8-10 सालों से हिंदी शिक्षण के प्रयास में भारतीय दूतावास भी शामिल हो गया है और पुस्तकें भी प्रदान कर रहा है जिनमें पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ अन्य सामान्य पुस्तकें भी हैं। फिर भी हमें यहाँ की स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कुछ सामग्री खुद तैयार करनी पड़ती है।

जैसा भी हो, सभी पाठ्यक्रम हिंदी भाषा के साथ-साथ संस्कृति और सभ्यता, इतिहास और साहित्य को प्राथमिकता देते हैं। विद्यालयों के सिद्धांत भी हैं जो उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। पाठ्यक्रमों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. हिंदी भाषा का दैनिक जीवन में प्रयोग को बढ़ावा देना।
2. हिंदी भाषा साहित्य के प्रति सही सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण को महत्व देना।
3. हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा प्रोत्साहन।
4. स्वस्थ सामाजिक परंपराओं को गहरा करना जिनसे विद्यार्थी भविष्य के शिक्षक बन सकें।

हाँ कुछ चुनौतियाँ भी हैं!

- कक्षा के लिए पर्याप्त जगह, माता-पिता की बढ़ती अपेक्षाएँ।
- दुभाषिये और गैर भारतीय बच्चों और बड़ों को पढ़ाने की गतिविधियाँ।
- एक्स्ट्रा-करिक्यूलर क्रियाकलापों के कारण छात्रों की अनुपस्थिति।
- विद्यालय के संचालन में धन की आवश्यकता भी पड़ती है। दान और फंड रेज़िंग से हम धन प्राप्त करते हैं।
- एक ही कक्षा में बच्चों की योग्यताओं में बहुत अंतर होता है, जो एक अध्यापक के सामने चुनौतियाँ खड़ी कर देता है। फिर भी अध्यापक हार नहीं मानते। हमारा संकल्प है कि न्यू ज़ीलैंड में हिंदी को औपचारिक मान्यता दी जाए।

सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ

न्यू ज़ीलैंड में आजकल अनगिनत सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ हैं। कई मंदिर भी बन गए हैं जहाँ भारत से लाई गई मूर्तियाँ मंदिरों की शोभा में चार चाँद लगा रही हैं। यहाँ हर त्योहार मनाया जाता है। लोग भारी संख्या में आने लगे हैं और सम्मिलित होकर

पूजा-पाठ करते हैं। दिवाली, होली, रामलीला, राम नवमी, रामकथा, शिवरात्रि, श्रीकृष्ण अष्टमी, दुर्गा पूजा, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि आदि पर्व घरों में भी मनाए जाते हैं और जनता को भी आमंत्रित किया जाता है। उस समय लगता है कि हम फिजी या भारत में हैं। हर्ष की बात है कि कई मंडलियाँ बच्चों और युवाओं को भी गीत-संगीत, भजन-कीर्तन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। निर्धारित समय पर बच्चों के लिए अभ्यास का प्रबंध भी किया जाता है। एक कमी है, नई पीढ़ी को हिंदी पढ़ना नहीं आता इसलिए गाने रोमन में लिखे हुए होते हैं जिससे सही उच्चारण में बाधाएँ आती हैं। लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ हिंदी तथा संस्कृति के अनुरक्षण एवं विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

हिंदू कौंसिल ऑव न्यू ज़ीलैंड साल में कई सम्मलेन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, योग तथा त्योहारों का आयोजन करता है। वे सफ़लतापूर्वक यहाँ की माओरी जनजाति संस्कृति और सभ्यता को संपूर्ण रूप से शामिल करते हैं। यह एक अत्यंत सराहनीय कदम रहा है।

दिवाली के समय वेलिंग्टन और ऑकलैंड नगरों में धूम-धाम से दिवाली मेला लगाया जाता है। आजकल मेला एक दिन से दो हफ़्तों का कार्यक्रम बन गया है। इस दौरान कई तरह की प्रदर्शनियाँ, बॉलीवुड फ़िल्में और भारतीय संस्कृति से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। बड़े-बड़े व्यवसाय घरों के प्रायोजनों से ही यह सब संभव हो पाता है। अक्टूबर-नवंबर के महीनों में इस मेले का हम इंतज़ार करने लगते हैं। हमें एक और सुनहरा मौका मिलता है जब हम अपनी संस्कृति को सब के साथ गर्व से बाँट सकें। गैर-भारतीय लोग भी बड़े उत्साहपूर्वक शामिल होते हैं।

ऐसे महोत्सव, भारतीय शादियाँ और बॉलीवुड से गैर-भारतीयों का परिचय हो गया है। भारतीय वेश-भूषा और खान-पान यहाँ लोकप्रिय हो रहे हैं। गैर-भारतीय लोग भारतीय खाने को दिलचस्पी के साथ अपने आहार में शामिल कर रहे हैं। देखा जा रहा है कि स्त्रियाँ भारतीय कपड़ों और ज़ेवरों को अपना रही हैं। शादियों में गैर-भारतीय युवा लोग अक्सर भारतीय वस्त्रों कुर्ता, साड़ी, लहंगा, घागरा-चोली इत्यादि में देखने को मिलते हैं।

संचार माध्यम

हिंदी के प्रचार-प्रसार में 25 सालों से कम्युनिटी रेडियो स्टेशनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लगभग 20 सालों से ऑकलैंड से 'रेडियो तराना' चौबीस घंटे राष्ट्रीय तौर पर प्रसारित होता है। यह स्टेशन फिजी आप्रवासी रोबेर्ट खान जी द्वारा स्थापित किया गया। यह रेडियो आज दुनिया के कई जगहों पर सुना जा सकता है। फिजी से रोज़ाना जुड़कर प्रोग्राम होते हैं। भारतवंशी लोगों के लिए इस माध्यम से गीत-संगीत, बॉलीवुड की खबरें, दुकानदारी, विज्ञापन, सामाजिक सूचनाएँ, मेहमानों से मुलाकातें इत्यादि प्रसारित होते हैं।

हिंदी की पत्रिकाएँ अभी तक नहीं हैं। हालाँकि मासिक भारतीय अख़बार 'इंडियन न्यूज़लिंक' कई सालों से प्रकाशित हो रहा है। प्रकाशक रवींद्र लाल जी हैं और संपादक एवं मुख्य रिपोर्टर वेंकट रमण जी हैं, जो दुनिया भर के खासकर भारत, फिजी और न्यू ज़ीलैंड के समाचारों को विस्तार रूप से लिखते हैं। 'ग्लोबल इंडियन' और 'इंडियन वीकेंडर' ऑनलाइन अख़बार हैं। 'इंडियन एक्सप्रेस' एक मात्र अख़बार है जो 2-3 पन्ने हिंदी को समर्पित करता है।

ज़ी.टी.वी. अत्यंत लोकप्रिय हो गया है। आज घर-घर में स्टार प्लस चैनल है। समाचार, धार्मिक कार्यक्रम, मनोरंजन, सोप्स, बॉलीवुड फ़िल्में, पकवान और कई मुख्य धारावाहिक प्रसारित होते हैं। बच्चे से बूढ़े तक के लिए यह माध्यम मनोरंजन के अतिरिक्त हिंदी सीखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। माओरी टी.वी. चैनल पर समय-समय पर भारतीय सांस्कृतिक प्रोग्राम और बॉलीवुड फ़िल्में देखने को मिलती हैं। बॉलीवुड फ़िल्में अत्यंत लोकप्रिय हो गई हैं। गैर-भारतीय भी बॉलीवुड फ़िल्में देखते हैं। सिनेमा में भी लगातार फ़िल्में चलती हैं और वीडियो की दुकानें पुरानी से लेकर नई-नई फ़िल्मों की कॉपियाँ रखती हैं। बॉलीवुड

डांस प्रतियोगिताओं में अक्सर गैर-भारतीय लड़कियाँ भाग लेती हैं। ऑकलैंड और वेलिंग्टन में कई नृत्यशालाएँ हैं जहाँ भरतनाट्यम, मणिपुरी, कथक जैसे शास्त्रीय नृत्य सिखाए जाते हैं और दर्शकों के लिए प्रदर्शन भी होते हैं।

न्यू ज़ीलैंड में हिंदी का भविष्य और निवेदन

हिंदी के परिवर्धन और संरक्षण के लिए हमारे कुछ सुझाव इस प्रकार हैं—

- अध्यापकों के लिए शिक्षण और प्रोत्साहित करने की सुविधाएँ।
- गैर-भारतीयों और दुभाषियों को हिंदी पढ़ाने का उचित शिक्षण, साधन और प्रबंध उपलब्ध हो।
- हमारे युवा विद्यार्थियों के लिए आदान-प्रदान एक्सचेंज योजनाएँ और हिंदी सम्मेलन।
- दुनिया के और प्रांतों में हिंदी अधिकारियों की नियुक्ति और सांस्कृतिक केंद्रों को खोलकर सेवियों का उत्साह बढ़ाएँ।
- पश्चिमी देशों के लिए एक मानक जिसे भारत के हिंदी शिक्षण संस्थाओं से स्वीकृति प्राप्त हो।
- विश्व हिंदी सचिवालय के क्षेत्रीय दफ़्तरों की स्थापना की जाए जो हमारे प्रयासों को प्रबल बनाएँ और उसके लक्ष्य-प्राप्ति में सहयोग प्रदान करें।
- सम्मेलन के तुरंत बाद विदेशी सरकारों को सम्मेलन के परिणाम से अवगत किया जाए और उनसे सहयोग के लिए अनुरोध किया जाए ताकि मिलकर हिंदी शिक्षा और प्रसारण की योजनाएँ बनाई जा सकें।
- सभी पक्षों को भूमिका और ज़िम्मेदारियाँ सौंपी जाएँ जिनसे सचिवालय को सहयोग मिले।

हमारे बच्चों के हिंदी शिक्षण में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। हम माता-पिता को शिक्षित करें और आनेवाली पीढ़ी को अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी भाषा में प्रवीणता हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उनमें यह भावना जागृत करें, 'इट्स कूल टु बी इंडियन'! अभाषियों को भी हिंदी सीखने के लिए प्रोत्साहित करें।

भारतीय दूतावास, विश्व हिंदी सचिवालय और हिंदी विशेषज्ञों से हमारा निवेदन है कि वे विदेश मंत्रालय के हिंदी विभाग से जुड़कर हमारे प्रयासों में मदद करें। पुस्तकों के अलावा अध्यापकों का शिक्षण, पठन-पाठन की सामग्री के निर्माण में मदद करें। दुनिया के सभी प्रांतों में हिंदी अधिकारियों की नियुक्ति और सांस्कृतिक केंद्रों को खोलें जो हिंदी और संस्कृति के प्रसार व प्रचार में हमारी सहायता करें और सेवियों को प्रोत्साहित करें।

हम सब मिलकर अपनी मातृभाषा का अनुरक्षण और सृजन करें तथा मिलकर इसका दीप दुनियाभर में जलाते रहें!

References:

Narayan, S. 2010 Vishwa Hindi Patrika.
New Zealand Curriculum 2007. Ministry of Education. Wellington New Zealand
Census Report. 2013: Ethnic Group Profiles. http://www.stats.govt.nz/Census/2013– census/profile-and-summary-reports/ethnicprofiles.aspx?request_value=24743&tabname=Languagesspoken

Acknowledgements:

Mrs Anuradha Gupta, Wellington New Zealand
Mrs Jai Chandra, Teacher. Shivacharan Trust. Auckland New Zealand
Mrs Kala Satyanand, Head Teacher. Canterbury Hindi Trust. Christchurch New Zealand
Mr Satya Datt, President, Language and Culture Trust. Auckland New Zealand

संचालिका, वेलिंग्टन हिंदी स्कूल, न्यू ज़ीलैंड
38, प्रिसिला क्रिसेंट, किंटाल,
वेलिंग्टन, न्यू ज़ीलैंड
sundev@paradise.net.nz

7. ऑस्ट्रेलिया में हिंदी

श्रीमती माला मेहता

मैं अपने परिवार सहित 32 साल पहले ऑस्ट्रेलिया आई थी। यह देश अति सुंदर है और यहाँ पर सभी सुविधाएँ उपस्थित हैं। शुरू में मेरी कोशिश यही थी कि मैं अपने बच्चों को अपनी भाषा तथा संस्कृति से जोड़े रखूँ। इसी प्रयास में मैंने हिंदी-स्कूल को स्थापित किया। उसे स्थापित किए हुए अट्ठाईस वर्ष हो चुके हैं। स्कूल की शुरुआत इसलिए की गई थी क्योंकि कई प्रवासी यहाँ बसे हुए थे और उनके बच्चे यहीं पर बड़े हुए। सब की यही इच्छा थी कि वे किसी भी तरह अपने देश से जुड़े रहें। अब आगे जाकर यहाँ पर हिंदी हाई स्कूल सर्टिफ़िकेट के लिए निर्धारित हुई तो उसको पढ़ाने के लिए हमको और मेहनत करनी पड़ी। उसके साथ हमारा स्कूल बहुत ही संरचित हो गया।

यहाँ पर हम लोग पाठ्यक्रम के मुताबिक ही पढ़ाते हैं। हर साल हमारे स्कूल में लगभग 16-17 अध्यापिकाएँ पढ़ाती हैं और बच्चों की संख्या 120-130 तक होती है। पहले हमारे स्कूल में 170 बच्चे पढ़ते थे। उस वक्त 2007 में मैंने यहाँ पर '*Saturday School of Community Languages*' नाम के मुख्य शिक्षा-विभाग (*main stream department of education*) के संभाग में हिंदी शुरू करवाई थी और इसके साथ फिर उनके दो केंद्र और खुल गए जहाँ पर बच्चे हिंदी पढ़ सकते हैं लेकिन ये सिर्फ़ 7वीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक का ही है जबकि हमारे स्कूल में 3 साल के बच्चों से लेकर एच.एस.सी. (*highest school level- HSC*) कक्षा के बच्चों के लिए हिंदी विषय पढ़ाया जाता है जिसको '*Hindi Continuers*' कहते हैं और ये 2 यूनिट का विषय होता है। इसके अलावा एडल्ट्स भी हिंदी सीखने आते हैं जिसमें ज़्यादातर ऑस्ट्रेलियन हैं। पहले तीस-तीस एडल्ट्स आते थे फिर इतनी जगह नहीं रही इसलिए 2007 में सिडनी यूनिवर्सिटी (Sydney University) में भी पढ़ाई शुरू की गई। वहाँ पर हमारी अध्यापिकाएँ पढ़ाती हैं और हमारे ज़्यादातर एडल्ट्स स्टूडेंट्स को सिडनी ही भेजा जाता है। लेकिन जो वहाँ नहीं जा पाते हैं तब वे हमारे पास आते हैं।

तो हर साल ऐसा ही चल रहा था लेकिन शिक्षा-विभाग के शोध निदेशक का एक प्रोग्राम था '*Expanding Horizons into Asia*', इसमें उन्होंने चीन के ऊपर काफ़ी पढ़ाई शुरू करवाई थी। उनको लगा कि अब इंडिया के बारे में भी बच्चों को सिखाना है इसलिए उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उनके लिए एक प्रोग्राम बनाऊँ जिससे बच्चे भारत के बारे में सीख पाएँ। इस प्रोग्राम की शुरुआत 2012 में हुई थी और इस प्रोग्राम में ज़्यादातर बच्चे ऑस्ट्रेलियन हैं, हिंदुस्तानी बच्चे बहुत कम हैं, लगभग 5 या 6। हर साल हम 250 बच्चों को पढ़ाते हैं। ये बच्चे प्राथमिक स्कूल के तृतीय या चतुर्थ वर्ष के होते हैं। इस प्रोग्राम को मैंने नाम दिया है—'इंडिया कॉलिंग' (*India Calling*)। इसके साथ हम बच्चों को भारत के बारे में और हिंदी भाषा के बारे में सिखाते हैं। शुरुआत में ज़्यादातर गोरे बच्चे थे और इन्होंने भाषा को बहुत अच्छी तरह से सीखा और भारत के बारे में उन्होंने बहुत सी जानकारियाँ प्राप्त कीं। इस प्रोग्राम में हम इनको भारतीय त्योहारों के बारे में भी सिखाते हैं जैसे 'होली' का त्योहार। साथ ही इनको हम भारतीय खान-पान के बारे में भी सिखाते हैं। 8 स्कूल इस प्रोग्राम में सम्मिलित हैं और भारतीय खान-पान का कार्यक्रम वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग द्वारा किया गया था। फिर 'होली' के त्योहार में इन्होंने भाग लिया और एक छोटा बच्चा गांधी बना था जिसने गांधीजी की दांडी-यात्रा भी की थी।

कुछ साल पहले, 2012 में इला गांधी भी यहाँ आई थीं और उन्होंने एक पूरी सुबह बिताई हमारे 'एशबरी प्राथमिक स्कूल' (*Ashbury Public School*) में जहाँ यह प्रोग्राम चलाया जाता है। हर साल कुछ न कुछ नया करते हैं इन बच्चों के साथ और इन्हें हम भारतीय कला के बारे में भी बहुत कुछ सिखाते हैं। इसके लिए मैंने पूरा प्रोग्राम बनाया है जिसमें सारे बच्चे अपने स्कूल से यहाँ के

कला वीथी *(Art Gallery)* में जाकर भारतीय कला की मूर्तियाँ, सामान आदि देख सकते हैं जिससे उनकी जानकारी बढ़ती है। 2012 में जो हमारी प्रधानमंत्री थीं, जूलिया एलीन गिलार्ड ने *'Asian century white paper'* का आयोजन किया था। उसमें उन्होंने हिंदी भाषा को प्रायोरिटी *(priority)* भाषा बना दी थी। परिणामस्वरूप स्कूलों में हिंदी भाषा के आने से सरकार आर्थिक रूप से सहायता करेगी। उसका यह भी कारण है कि वे चाहते हैं कि हिंदी भाषा अब स्कूलों में आए। इस कार्य में थोड़ा सा समय लगा लेकिन इस साल से स्कूलों में हिंदी पढ़ाई के लिए सरकार ने फ़ंड्स प्रदान कर दिए हैं और पिछले हफ़्ते ही मुझे खबर मिली कि नवंबर महीने में हम हिंदी का पूरा पाठ्यक्रम *(curriculum)* लिखेंगे और अगले साल तक हिंदी भाषा का पाठ्यक्रम तैयार हो जाएगा जैसे यहाँ के अन्य भाषाओं का होता है।

अध्यक्षा, संस्थापक और समन्वयक,
इंडो-ऑस्ट्रेलियन बाल भारती विद्यालय,
हिंदी पाठशाला आई.एन.सी., ऑस्ट्रेलिया
hindi_school@hhotmail.com

तृतीय सत्र : अफ्रीका तथा हिंद महासागरीय क्षेत्र में हिंदी

8. दक्षिण अफ्रीका में हिंदी

श्रीमती मालती रामबली

हिंदी शिक्षा संघ एक ऐसी संस्था है जो चौंसठ वर्षों से हिंदी भाषा की सेवा कर रही है। एक समय था जब लोग हिंदी बोलते थे लेकिन हम अब इस जगह पर आ गए हैं जहाँ बहुत कम लोग हिंदी बोलते हैं या हिंदी से परिचित हैं। इतिहास गवाह है कि एक समय हिंदी भाषा दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मूल के कुछ लोगों की मातृभाषा थी।

जब हमारे पूर्वज यहाँ आए थे तो वे भोजपुरी बोलते थे। समय के साथ-साथ सभाएँ स्थापित की गई थीं। सभाओं में हिंदी पढ़ाई गई थी। आप जानते हैं कि '1920' में भारत में खड़ी बोली की स्थापना ने दक्षिण अफ्रीका की भोजपुरी को प्रभावित किया। धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं ने हिंदी भाषा को जागृत रखने की कोशिश की। आज भी कई पाठशालाएँ मंदिरों से जुड़ी हुई हैं। अभी भी वे हिंदी भाषा और संस्कृति फैलाती हैं।

हमारे पूर्वजों में ऐसे लोग थे जिन्होंने हिंदी बढ़ाने के लिए बहुत प्रयत्न किया। एक ऐसे व्यक्ति थे स्वामी शंकरानंद जी, जो भारत से थे। वे एक धर्मप्रचारक थे। इनके बाद थे स्वामी भवानी दयाल संयासी। उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई संस्थाओं से निवेदन किया।

सन् 1947 में पंडित नरदेव वेदालंकार दक्षिण अफ्रीका आए थे। उन्होंने देखा कि दक्षिण अफ्रीका में हिंदी का प्रचार-प्रसार सही ढंग से नहीं हो रहा था। आर्य प्रतिनिधि सभा और सनातन धर्म सभा की सहायता से उन्होंने हिंदी शिक्षा संघ को स्थापित किया। वे पहले प्रधान बने और 27 वर्षों के लिए उन्होंने इस पद में हिंदी भाषा की सेवा की। इनका एकमात्र लक्ष्य था हिंदी भाषा की सेवा, प्रचार के रूप में। वे एक बहुत ही ठोस गांधीवादी थे और इसलिए हिंदी उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। सन् 1947 में उन्होंने हिंदी साक्षरता का सम्मेलन रचाया। 35 पाठशालाएँ इसमें शामिल थीं। यहाँ से शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher training) शुरू हो गया। उनके बाद कई प्रधान आए और उन्होंने इस लक्ष्य को बढ़ाने की कोशिश की। कई क्षेत्रों में यह माना गया है कि हिंदी आज भी जीवित है क्योंकि हिंदी शिक्षा संघ ने हिंदी भाषा को जीवित रखने की पूरी कोशिश की।

हिंदी शिक्षा संघ के तीन लक्ष्य हैं—हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य का प्रोत्साहन, भारतीय संस्कृति का प्रोत्साहन और हिंदू शास्त्रों का प्रचार-प्रसार।

हिंदी शिक्षा संघ के कार्यक्रमों में हमेशा युवाओं को मौका दिया जाता है। हर साल हम प्रतियोगिताएँ (eisteddfod) रखते हैं। प्रतियोगिता के चार अंक हैं—बाल विभाग, किशोर विभाग, युवा विभाग और प्रौढ़ विभाग। प्रतियोगिता कविता, नाटक, नृत्य और संगीत में विभाजित है। इसके माध्यम से हमारी कोशिश रही है कि लोगों को मौका मिले अपनी-अपनी कला / हुनर प्रस्तुत करने के लिए, जो हिंदी भाषा से संबंधित हैं। इन अदाकारियों के माध्यम से बच्चे हिंदी समझने लगे हैं क्योंकि सारी प्रस्तुतियाँ हिंदी में हैं। युवाओं के लिए यह अनुभव वर्षों तक उनके दिलों और दिमागों में रहता है।

हिंदी शिक्षा संघ के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए परीक्षाएँ भी रखी गई हैं और इन राष्ट्रीय परीक्षाओं के माध्यम से हम हिंदी के प्रचार में लगे हुए हैं, शुरुआत से।

प्रारंभ में दक्षिण अफ्रीका के हिंदी विद्यार्थीगण वर्धा की परीक्षाएँ लिखते थे। सन् 1970 में बदलाव आया। उस समय हिंदी शिक्षा संघ के अध्यक्ष, डॉक्टर हेमराज और हिंदी शिक्षा संघ की कार्यकारिणी बोर्ड ने यह निर्णय लिया कि हमारा परीक्षा पत्र हिंदी शिक्षा संघ में तैयार किया जाए। यह निर्णय इसीलिए लिया गया क्योंकि हमारी चुनौतियाँ बदल गईं। कुछ लोगों की सोच थी कि दक्षिण अफ्रीका में कम लोग हिंदी बोलते थे क्योंकि परीक्षा मुश्किल थी। फलस्वरूप सन् 2014 में 625 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। संख्या और बढ़ सकती

है लेकिन जैसा मैंने कहा है बाकी देशों की तुलना में हमारी स्थिति अलग है इसलिए चुनौतियाँ भी अलग होंगी। शायद यह निर्णय सही था।

आज हमारे विद्यार्थी दक्षिण अफ़्रीका के अलग-अलग प्रांतों में पढ़ते हैं और परीक्षा देते हैं, खासकर क्वा ज़ुलू नटाल में, गौटेंग में और पोर्ट एलिज़ाबेथ में परीक्षा देते हैं और वह भी एक साथ। हमारी परीक्षाएँ विभिन्न स्तरों में विभाजित की गई हैं। और वे हैं— प्रथमा, प्राथमिक, प्रारंभिक, प्रकाश, प्रदीप और प्रवेश। उसके बाद विद्यार्थी महीने में एक बार हिंदी शिक्षा संघ आते हैं, हिंदी सीखने के लिए। यहाँ हमारे शिक्षक दल उनको पढ़ाते हैं। कई पाठशालाओं में भी यह शिक्षण होता है।

हमारी पुस्तकें भारत से आती हैं। हम 'झरना' सीरीज़ का प्रयोग करते हैं।

अफ़सोस की बात है कि हिंदी बोलनेवाले कम हो गए हैं। कई लोग लिख सकते हैं और पढ़ सकते हैं लेकिन बोल नहीं सकते हैं। ऐतिहासिक तौर से हम जानते हैं कि क्या हुआ। अंग्रेज़ी सीखते-सीखते हम हिंदी भूल गए। लेकिन आज हम लोकतंत्र शासन के सदस्य हैं तो हमें अपने अधिकार के लिए लड़ना चाहिए और यह लड़ाई शुरू होती है, अपने आप से। We can make demands from the government, but if we are not prepared to put the effort we will go nowhere.

दूसरा कारण अपराध है। कई पाठशालाएँ शाम को खुलती हैं ताकि काम करनेवाले पाठशाला जा सकें। अपराध और उसके कारण बढ़ती असुरक्षा से लोग पाठशाला जाने से डरते हैं। अपराध की दृष्टि से हमारी स्थिति बिलकुल खुली है।

भारतीय मूल के लोगों का इतिहास अनुबंधित श्रमिक से जुड़ा हुआ है। हिंदी भाषा के संदर्भ में वे लोग जो दक्षिण अफ़्रीका आए थे वे भोजपुरी के विभिन्न रूपों के साथ आए थे।

ये आम लोग थे, ज़्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, मगर वे बड़ी आसानी से तुलसीदास कृत रामचरितमानस के पदों को रटते थे। दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी भाषा का जन्म इन महान व्यक्तियों से हुआ। यह था सन् 1860 से।

मगर अगर हम खड़ी बोली के इतिहास की जाँच करेंगे तो यह बात सामने आती है कि खड़ी बोली अपने वर्तमान रूप में सन् 1920 के बाद निखर आई। तो इस बात को परखना ज़रूरी है क्योंकि सन् 1860 से सन् 1930 तक सत्तर साल का अंतर है। शुरुआत में भोजपुरी बोली जाती थी और अब खड़ी बोली भारत की राष्ट्रभाषा घोषित की गई तो इसका असर दक्षिण अफ़्रीका की भोजपुरी पर पड़ा। धीरे-धीरे लोग भोजपुरी को कम महत्व देने लगे।

आर्थिक दृष्टि से अगर देखा जाए तो हिंदी सीखने से कुछ नहीं मिलनेवाला है। कई लोग इसलिए हिंदी सीखते हैं ताकि वे रामचरितमानस पढ़ सकें। हमारे कुछ शिष्य स्कूलों में पढ़ाते हैं लेकिन स्कूलों में बच्चों की संख्या कम है। हमारे स्कूलों के नए पाठ्यक्रम में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को कोई अहमियत नहीं दी गई। कई अध्यापक तथा अध्यापिकाएँ मंदिरों से जुड़े हुए हैं और उन्हें कुछ तनख्वाह नहीं मिलती।

क्वा ज़ुलू नटाल के पाठशालाओं के बच्चे अधिकतर भारतीय परिवारों से आते हैं। सरकरी स्कूलों में अधिक बच्चे अफ़्रीकी हैं। लेकिन जोहांसबर्ग की बात अलग है, इसके बारे में अधिक जानकारी श्री हीरालाल शिवनाथ जी के लेख में प्रदान की गई है।

दक्षिण अफ़्रीका में प्रौद्योगिकी हिंदी के संदर्भ में एक गंभीर समस्या है। आई.सी.टी. की कार्यशाला के लिए गुलशन जी और बालेंदु जी आए थे। हम इस लिपि का इस्तेमाल करते हैं मगर हमारे अध्यापक-अध्यापिकाएँ सामान्यत: पुरानी पीढ़ी के हैं, उनमें से कम लोग कंप्यूटर का प्रयोग करते हैं। मगर यथार्थ यही है कि

अगर हम हिंदी को जीवित रखना चाहते हैं तो यह प्रौद्योगिकी ज़रूरी है क्योंकि आती पीढ़ी प्रौद्योगिकी में बहुत होशियार है और वे इसी माध्यम को चुनते हैं। हमें ऐसे प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना चाहिए और सब जानते हैं कि इसका प्रयोग आसान है और मेहनत करनी पड़ेगी इस प्रौद्योगिकी को लेकर।

अधिक पाठशालाएँ मंदिरों से जुड़ी हुई हैं इसी कारण से वे औपचारिक नहीं हैं। कई पाठशालाएँ स्कूलों में रखी गई हैं। एक समय पर लोग अपने घरों में, गराजों में पढ़ाते थे लेकिन यह परिस्थिति आज कम है। हमसे संबद्ध पाठशालाओं में प्रथमा से प्रवेश तक हिंदी सिखाई जाती है। उसके बाद, महीने में एक बार वरिष्ठ स्तर (senior levels) की पढ़ाई के लिए हिंदी शिक्षा संघ के केंद्र में आते हैं। ये स्तर हैं प्रबोध, प्रवीण, परिचय, विशारद और कोविद। कोविद के बाद शिक्षण पद्धति आती है। लेकिन अफ़सोस की बात यही है कि हिंदी शिक्षा संघ को मान्यता नहीं मिली है। इसीलिए शिक्षण पद्धति सिर्फ़ हिंदी शिक्षा संघ के लिए प्रासंगिक है। यूनिवर्सिटी में भी भारतीय भाषाएँ नहीं सिखाई जाती हैं। दोष किसका है ? दोष हमारे लोगों का है क्योंकि संख्या कम थी और इसलिए निर्णय लिया गया कि ये भाषाएँ निकाली जाएँगी।

हिंदी शिक्षा संघ एक ही संस्था है जिसका काम है हिंदी का प्रचार-प्रसार। दक्षिण अफ्रीका में तमिल फ़ेडेरेशन, आंध्र महासभा, गुजराती संस्कृति, बज़्मे अदब हैं। सब अपनी भाषाओं के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। हमारे यहाँ पूर्वी भाषा संस्थान (Institute of Eastern Languages) है जो कई सालों से भारतीय भाषाओं के प्रति लड़ रहा है।

आर्थिक दृष्टि से सरकार की ओर से हमें कोई सहायता नहीं मिलती है। हम ने अनुदान सहायता (grant-in-aid) के लिए निवेदन किया लेकिन फिर भी सरकार हमें कुछ नहीं देती है। यह हमारी खुशनसीबी है कि हिंदवाणी हमारा एक अंग है। इस स्टेशन के विज्ञापनों द्वारा हम हिंदी शिक्षा संघ को चलाते हैं।

दक्षिण अफ्रीका में एक नया पाठ्यक्रम निकला है CAPS - Curriculum And Assessment Policy Statement। यह एक राष्ट्रीय दस्तावेज़ है। पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार भारतीय भाषाओं के लिए जगह थी लेकिन इस साल से यह स्थिति बदल गई है। हमें कहा गया है कि भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए बच्चे स्कूल के बाद हिंदी स्कूल आएँ ताकि वे अपनी भाषाएँ सीख सकें। इसका तात्पर्य यही है कि सरकारी स्कूलों में हमारी भाषाओं को अपना सही स्थान नहीं मिल रहा है। स्कूल के बाद अन्य बच्चे स्पोर्ट इत्यादि के लिए जाते हैं। अगर बच्चों को हिंदी स्कूल और स्पोर्ट में चुनना है तो वे क्या चुनेंगे ? आखिर ये बच्चे हैं।

हमारी सबसे बड़ी समस्या यही है कि हम लोगों को हिंदी सीखने के लिए प्रोत्साहित नहीं कर सकते। हम लोगों पर ज़ोर नहीं डाल सकते और हमारे देश में हिंदी बोलने का मौका कम है। हमारे लिए हमारी भाषा हमारी संस्कृति से जुड़ी हुई है।

किससे क्या बोलें हम ? हिंदवाणी द्वारा हम कोशिश करते हैं लेकिन समस्या गंभीर है। रेडियो लोटस पर भी भाषा का प्रचार-प्रसार होता है। स्कूलों में कई अध्यापक-अध्यापिकाएँ पढ़ाते हैं लेकिन उन्हें भी पता नहीं है कि अगले साल भारतीय भाषाएँ सिखाई जाएँगी या नहीं।

लगता है कि दक्षिण अफ्रीका की स्थिति इतनी उज्ज्वल नहीं है मगर यह भी सच है कि घर-घर में ज़ी.टी.वी. है तो लोग हिंदी सुनते हैं और समझते हैं पर कब बोलने लगेंगे ? हम आशा करते हैं कि यह दिन दूर नहीं है।

बाकी मैं अंग्रेज़ी में कहूँगी, “We have to decolonize our minds.” अंग्रेज़ी सीखते-सीखते हम हिंदी भी सीख सकते हैं।

अध्यक्षा, हिंदी शिक्षा संघ
डरबन, दक्षिण अफ्रीका
mramballi@yahoo.com

9. HINDI SHIKSHA SANGH–SOUTH AFRICA GAUTENG REGION: AN OVERVIEW

Mr. Heeralall Sewnath

1. Introduction

In the second half of the 19th century, Indian indentured workers stepped onto South African soil. They were destined not to return to their motherland. They soon established roots in this new found land and in so doing, introduced a new dimension to the prevailing cultural environment. Ever since their arrival, history has recorded their struggle for rights, dignity and the freedom to live and grow in their own cultural environment. The fight for cultural survival has been a feature in the colonial history of many societies. Indian South Africans have had their fair share of this experience.

The maintenance of one's linguistic heritage is a pre-eminent aspect of any cultural struggle. The history of colonization is littered with stories of resistance to the imposition of a language foreign to one's own. In 1976 in Soweto, South Africa, students similarly rose up against the imposition of Afrikaans as a medium of instruction, with the slogan, "the language of the oppressor in the mouths of the oppressed is the language of slaves." That uprising changed forever the politics of South Africa.

The Indian indentured workers brought along with them their rich cultural heritage from the world's most ancient civilization that is India. The Hindi language came to be woven into the intricate tapestry that was emerging in the new South African society. The Hindi that came with these early settlers has survived to this day. Over the years, many a devotee of the language has lent a hand to ensure its survival. At the time of the first World Hindi Conference in South Africa in September 2012, and the ninth conference since inception, we paid homage to the many who gave of themselves to preserve our linguistic heritage in Gauteng, South Africa.

2. The "Old Transvaal" Gauteng

Indians trickled on to the Transvaal platteland in the late 1800's. They came as workers indentured to mining companies, farmers, businessmen and they also arrived as 'passenger Indians', to trade. They were not welcomed in the land where gold had just been discovered. All Indians who lived and worked in the Transvaal, did so under permits issued by government. So under the cloud of servitude, living in a land with an unfriendly and hostile government, people lived from day-to-day, with the threat of repatriation a constant reminder of their uncertain status. Soon enough, Mahatma Gandhi was called to help Indians fight the injustices heaped upon them by the racist government. In spite of all this, life went on.

Hindi speakers, in time, and by force of social circumstances, came under the influence of Afrikaans. This was the language of the workplace, of government, of commerce and of society. The Afrikaans language and culture was the predominant culture of the province. In time, Afrikaans also became the language spoken in Hindi-speaking homes. Afrikaans combined with Hindi in the home. Words from both languages mixed uniquely in a development that virtually created something new. New "mixed"

phrases in a clearly unique accent distinctly identified an Indian from the "Transvaal," now Gauteng. The remarkable outcome of this mix was a mellifluous dialect that was unique in itself, and which maintained for many decades. The accent is still evident in pockets to this day. Even more remarkable was the people's refusal to jettison their own language, Hindi, for that of the new world they found themselves in. Many a patriotic stalwart then emerged to play a role to preserve Hindi alive. Sung or unsung, we honor all of them. Their efforts have ensured that Hindi remains a feature of Indian social fabric to this day.

Shri Ram Singh of Asiatic Bazaar taught Hindi in Pretoria in the 1950's and 1960's. Other contributors from Laudium include Pt. Hari Beharie Singh, Smt. Radha Singh, Smt. Radha Chikory and Shri Sisripat of Asiatic Bazaar. The Mooloo family, Hari Bhai Dina and Chandra Lutchman of Midrand.

Information about personalities of the past is unrecorded and sparse. The little that we have been able to gather is recorded hereunder. Information about others will be gratefully received and dutifully recorded. This will help us complete the picture of a legacy that the Hindi speaking community can truly cherish.

3. Three Prominent "Stalwarts:"

Swami Bhawani Dayal Sanyasi

One of the most prominent proponents of the Hindi language was Swami Bhawani Dayal Sanyasi who was born in Germiston, Johannesburg in September 1892. His enthusiasm for the Hindi language was evident from an early age. He learnt his Hindi from his parents and then in India. In time, he initiated Hindi schools in Johannesburg, Newcastle, Hattingspruit, Dannhauser, Glecoe and Ladysmith. He also organized Hindi literary conferences in Ladysmith and Pieternaritzburg in KwaZulu-Natal. Together with Hindi, he was keen on Hinduism and became a member of the Arya Samaj. He served the Hindu community with distinction as a sewak of the Samaj. In his later life, he continued with his spiritual work both in South Africa, Africa, India and other parts of the world.

Swami Shankaranand Sarawati

Swami ji, who was born in Jullunder, Punjab, in 1871, came to South Africa in 1912. He remained here for five years, performing many missionary works among Hindus. His mission was to spread Vedic knowledge. He saw an opportunity to teach Hindi and did this in several places including 'Transvaal' and 'KwaZulu-Natal'.

Pt. Nardev Vedalankar

Pandit ji was born in 1913 and came to South Africa in 1948 as a Gujarati priest. He saw the Hindi speaking community divided in two schools of thought – Pauranic and Vedic. He then fostered the promotion of Hindi through which he succeeded in bringing both these groups together. His contribution to Hindi and

other mother tongue languages in South Africa is immeasurable. He established the Hindi Shiksha Sangh – South Africa in 1948, a year after his arrival. He gave Hindi a character and introduced Hindi Grammar through classes and teacher training workshops that he conducted. He then introduced Dharma Shiksha study towards examinations and once one passed these series of examinations, he then prepared students to write the Rashtrabhasha Prachar Samiti, Wardha, India – Hindi Examinations from Prathama to Ratna levels. Today, the Hindi Shiksha Sangh prepares its own examinations and annually at an average of 700 students write these examinations. They are graded from Prathama to Kovid and Shikshan Padithi, teacher training course.

Some of the Local Stalwarts

Benoni, Springs and Germiston

Sri Ramkrishnan Jaghessar Lowton (1894 – 1962) headed this remarkable family. The family had settled in Benoni. From the earliest days, Ramakrishnan stamped his authority and got the family children learning Hindi. The first class started on the verandah of their home. Soon enough, other families in the community linked up with him. A thriving Hindi Pathshala soon took root. Other members of the family carried on with the good work which continued for many years. The Lowton family, in time, became the 'Hindi' teaching family of Benoni with Ranjeeth Lowton, Gopichand Lowton, Butchee Lowton, Marjory Lowton and Saraswati Lowton keeping Hindi learning alive in benoni and for over three decades.

Other members of the community who played a supportive role in providing facilities, encouraging and transporting children were at hand over the years to ensure the pathshala's continuity. Names such as Shri Saldanha (of Portuguese extraction) of Boksburg, Parthap Singh, Iqbal Singh, Desraj Dass, Niranjan Bhoola, Mahendra Bhoola and Suren Rampershad, among others, easily come to mind. There may well be others whose names we have missed out, whose enthusiasm and contribution all helped to make Benoni a hotbed of Hindi education.

The Springs community was blessed with the presence of Pt. Gowrieshankar and Smt. Koosmi Maharaj both of whom were involved in the teaching of Hindi around the 1908's and 1990's. During this time – the community in Germiston, the birth place of Swami Bhawani Dayal, was diminishing because of the Group areas act. Pt. Mithoo Maharaj worked hard in Germiston to keep Hindi alive in the area.

Laudium and Midrand

Shri Ram Singh of Asiatic Bazaar taught Hindi in Pretoria in the 1950's and 1960's. Other contributors from Laudium include Pt. Hari Beharie Singh, Smt. Radha Singh, Smt. Radha Chikory and Shri Sisripat of Asiatic Bazaar. The Mooloo family, Hari Bhai Dina and Chandra Lutchman of Midrand.

The Pretoria Hindu School now Amity Internal College, opened its doors some years back and ensured

that Hindi and other Indian languages were taught as part of the main school curriculum. Hindi was reborn and thrived and continues to do so at this school.

Lenasia, Kliptown and Fordsburg

Hindi and Hindu cultural education was spearheaded by the Sanathan Veda Dharma Sabha (SVDS) based in Lenasia. Under its auspices, Hindi education received attention from the Sabha's very earliest days. Many committed teachers graced its classrooms including L.P. Ajoodha (Dami), Smt. Gurupersadh (Maaji), Smt. Chandrawil Das, Smt. Amrita Ajoodha (Bhaneji), Smt. Goodall Budhan Ajoodha, Suku Bhai Singh, Smt. Rani Rampersadh, Pt. Maharaj and Smt. Roshnidevi Maharaj and others. A special word of honour must go to the late Suku Bhai Singh who, in his later years, worked closely with the Gauteng Branch of the Hindi Shiksha Sangh to keep the teaching of Hindi alive in Lenasia. He was very committed to the propagation of Hindi and was a wonderful soul indeed, a true stalwart of the SVDS.

In Mayfair and Fordsburg, the Mayfair School of Music and Hindi established itself in recent years and still continues to function despite the untimely death of its founder Shri Rahiv Shrivastava. The good work continues to this day with Smt. Shiva Shrivastava, his wife, now holding the baton.

Other Areas

Many other areas saw small Indian settlements develop. In all of them, cultural activity was not amiss. The Hindi Shiksha Sangh – Gauteng, would do everything possible to up structures to establish Hindi schools in those areas.

4. The Present

The current period from the year 2000 onward is characterized by the slow regeneration of Hindi learning in Lenasia, Laudium. Mayfair and Benoni with little pathshalas making their appearance. Laudium was stimulated by the Pretoria Hindu School, Mayfair by its School of Music and Hindi, Benoni by its Hindi Pathshalas, Lenasia by the SVDS, Randburg by the Randburg Hindu Society and Midrand by the Midrand Hindu Sewa Samaj. The Hindi Shiksha Sangh of South Africa brought these emerging pathshalas together in 2005 to participate in a Hindi eisteddfod competition. Currently, in Lenasia at the Bharath Sharda Mandir School there are over hundred students studying Hindi. This is a full-time English medium school. At the following year's event, the Gauteng Branch of the Hindi Shiksha Sangh was launched in Lenasia. Shri Heeralall Sewnath and Shri Virjanand Garrib were asked to steer this ship as the organization's Joint Regional Directors. Both of them ran small pathshalas of their own and gave leadership to the region.

Since then, we have succeeded in broadcasting the Hindi learning movement with the development of pathshalas in the following areas:

Benoni, Springs, Robertsham, Lenasia, Randburg, Midrand, Edenvale, Azaadville and Honeydew and the Indian Cultural Centre (ICCR) in

Johannesburg and in Laudium where some of these classes are small but consistent. We are pleased with this progress and now see a need to grow and consolidate these institutions. Hindi scholars from Durban who have moved into the province, feel a need to make their contributions as teachers. This has been a welcome gesture that we have accepted with both hands.

The Uttar Bharath Sewaa Samaj and the ICCR both in Johannesburg are very supportive of this effort.

5. Barriers to progress

- English is the predominant language in social, commercial and educational institutions. It has become the home language in all Hindi speaking homes;
- Our society is bombarded by the written and electronic media that strongly promotes the western way of life, culture and value systems. This has had a debilitating effect on our own culture and value systems, which people have come to regard as the norm. The apartheid system gave privilege to "whites". Our people aspired to equate to their way of life. This hangover still persists;
- The electronic media delivers knowledge of world events instantaneously into our homes. The world has come together as never before, we get to see a lot of the bad that happens, not much of the good. World events and the impressions they leave behind affect attitudes, and change people's ways of thinking. Exposure to all of this has made our youth directionless and distinctly disobedient. They would sooner imitate what is happening elsewhere, neglect their culture, adopt foreign value systems and in so doing, abandon or neglect that which is their own. The youth of Bharath are similarly afflicted. We are presently witnessing a transformation in Bharath that is looking ominous, portending a social tragedy of some magnitude, as it unfolds on our television screens;
- The previous apartheid government encouraged the learning of our own languages. Hindi was taught in schools. There was a Department of Eastern Languages at our University. The new government has taken away our university, closed the Department of Eastern Languages, has discouraged the teaching of Indian languages in schools as it is not an official language of the country, and has neither engaged with us nor offered any alternative way of helping us preserve our own language. In the realm of language preservation and promotion, we are now more oppressed than we were under the apartheid. Ironically, the new South African Constitution requires government to "promote and ensure respect for Indian languages"; and
- The broader Hindi speaking community of South Africa has over the years become listless and lethargic over the preservation of its

language. Hindi speaking community show little love, desire or commitment for their own language. This is not a happy state of affairs. One can never be "too busy" not to want to embrace our heritage and identity. Even general support can add so much strength and impetus to a movement.

6. Blessings

- The arrival of the ICCR to South Africa has given impetus to many people to embrace their culture more intensely. This development will certainly help in restoring pride in the community and in time will reverse the negative trends alluded to above. Greater financial support from the Indian Government to organizations like the Hindi Shiksha Sangh will enable much greater strides to be made to grow Hindi in South Africa;
- The popularization of Hindi movies via television, the arrival of Indian television channels, increased cultural exchanges with Bharathmata, the implementation of 'The Share History' annual cultural programme between the Government of India and South Africa, has given Indian Culture prominence in the cultural milieu of South Africa. Many non-Hindi speaking South Africans now find resonance with Indian culture, Bollywood films, Indian Music and Hindi. In Gauteng certainly, many non-Hindi also take keen interest in other aspects of Indian culture;
- The recognition of India as a major economic power together with a healthy respect for its skills base, Hindi, and its culture to the forefront in international relations and understanding. Hindi is now formally taught in schools in the west and elsewhere. The learning of Hindi has extended to corporate personnel and their families. Even private schools in South Africa have begun to offer lessons in Hindi;
- Most of the Indian South Africans live along the coast of KwaZulu-Natal. The denial of jobs and opportunities to them by policies designed to favor Africans has caused a dispersion of Indians to other parts of South Africa. Their sudden immersion into unknown waters where members of their communities are few and far between has prompted a rethink of their values and identity. This rethink has already brought many youngsters to the doors of the Hindi class. Long may this trend continue!
- Economic liberation has enabled many Hindi-speaking South Africans to travel abroad and experience other cultures. Naturally, most of our people want to visit India. Exposure to the language and culture there has left many a traveller feeling inadequate and exposed. This experience has certainly been good for Hindi as, many are now turning up to Hindi classes; and
- Hindi is a sweet and link language that lends

itself easily to all who are exposed to it. It is ancient, mature and reflects the oldest civilization in the world. Hindi's acceptance among people of other cultures must find resonance among Hindi-speaking South Africans also. The time has come for South Africans to shake off this inertia, reignite our bellies and recapture the magic of Hindi which has been a gift to all of us, wherever we live.

7. Conclusions

- Problems pertaining to the promotion of Hindi in Gauteng are not unique to the region;
- The media in all its forms is inadequately exploited for the betterment of Hindi;
- Hindi is not forcefully represented at government level. Its profile in those forums is woefully low and needs to change. The Hindi Shiksha Sangh will need to be more aggressive in this regard. This organization must, sooner rather than later, become the government's point of reference for all matters in Hindi;
- Indian socio-political institutions (South African) which should represent our community at government level are not proactive enough. The South African Hindu Maha Sabha, for example, by most showing its hand to the government in socio-political matters affecting the community, has by its inaction, left the community unrepresented and voiceless;
- Legislation exists to ensure that Hindi language gets equal treatment in democratic South Africa. The Pan South Africa Languages Board, which is entrusted with this responsibility, must be approached, informed and made to become our partner in the development of Hindi;
- We also urge countries like India, Mauritius, Fiji, Trinidad and others where Hindi is a recognized language to lend support to South Africa in securing that Hindi becomes a recognized language.
- The Government of India, in particular, to set up a liaison with the Hindi Shiksha Sangh–South Africa so that they understand the trials and tribulations in promoting Hindi in South Africa and work out strategies through which the objective of Hindi Promotion maximizes in South Africa, the will is there, but we lack enthusiasm, workable programmes, communication initiatives, audio-visual aids for teachers and students, teaching capacity, teacher capacity building programmes, rapid use of technology, community based Hindi language programmes, setting up of a language laboratory and making simple, readable Hindi written material.

Hindi Shiksha Sangh
Gauteng, South Africe
Sewnath@arc.agric.za
hindishikshasangh.gauteng@gmail.com

10. रियून्यन में हिंदी प्रशिक्षण : मेरे अद्वितीय अनुभव

डॉ. राजरानी गोबिन

प्रस्तावना

महात्मा गांधी संस्थान का प्रमुख उद्देश्य भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना रहा है। इसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु, सन् 2014 में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस एवं रियून्यन की नगरपालिका, सें-देनी के मध्य संधि का हस्ताक्षर हुआ। महात्मा गांधी संस्थान द्वारा 22 जुलाई एवं 17 अगस्त, 2013 के बीच सें-देनी में हिंदी के भावी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण-कार्यक्रम चलाया गया। न केवल प्रशिक्षण देने का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा गया, अपितु प्रशिक्षणार्थियों के चयन का दायित्व भी क्योंकि जिन प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के लिए आवेदन-पत्र भेजा था उनमें से न तो किसी के पास हिंदी में डिप्लोमा था, न डिग्री। अत: मुझे ही रियून्यन जाकर फ्रेंच माध्यम में उनका इंटरव्यू लेना पड़ा। उनकी मौखिक अभिव्यक्ति एवं लेखन कौशल दोनों का परीक्षण लेना पड़ा। सुबह की फ्लाइट पकड़, सें-देनी पहुँची। नौ प्रशिक्षणार्थियों का चयन कर, शाम को ही स्वदेश वापस आई।

प्रशिक्षणार्थियों का परिचय

जिन नौ प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया वे न केवल अलग-अलग भाषा एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के थे अपितु उनकी हिंदी में प्रशिक्षण पाने की प्रेरणा भी विभिन्न कारणों से थी। फ्रांसीसी नागरिक ज़ां लूक गॉद्फ्रुआ का फ्रांस निवासी पॉन्डिचेरी कन्या के साथ विवाह ने उसे हिंदी प्रेमी एवं प्रचारक बनने का अभिलाषी बना रखा था। ज़ां लूक की एक यात्रा अभिकरण ट्रेवल एजेंसी भी है, भारत में पर्यटन हेतु रियून्यनवासियों को लेकर जाता है और मार्गदर्शक की भूमिका स्वयं निभाता है। हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान इस दृष्टि से उनके लिए अत्यंत लाभदायक था। गुजराती मूल की तीसरी पीढ़ी तथा इंग्लैंड से अंग्रेज़ी माध्यम से कुरान संबंधित विषय पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त करनेवाली सामिया लोकात पुनः अपनी जड़ की ओर लौटने की प्रेरणा से हिंदी के प्रति आकृष्ट हुई थीं। गुजरात से रियून्यन में ब्याही अंग्रेज़ी अध्यापिका पूजा अमृतलाल, पॉन्डिचेरी से रियून्यन में ब्याहा तमिल, फ्रेंच एवं हिंदी भाषी, भारती सारांगम जैसे छात्रों की कक्षा में उपस्थिति ने समरस, पारंपरिक हिंदी कक्षा को नया आयाम, नई गति एवं स्फूर्ति प्रदान की। एक मॉरीशसीय प्रशिक्षणार्थी भी थी जो पच्चीस वर्षों से रियून्यन में सपरिवार आवासी है तथा नगरपालिका में योगासन की शिक्षिका है। निस्संदेह इस चुनौतीपूर्ण प्रशिक्षण से सुखद एवं ज्ञानवर्धक अनुभव दोनों प्रशिक्षक तथा प्रशिक्षणार्थियों को प्राप्त हुए।

प्रशिक्षण की कक्षाएँ

नगरपालिका के सभागार में ही प्रशिक्षण की कक्षाएँ लगीं। प्रौद्योगिक उपकरणों का आश्रय लेते हुए, फ्रेंच भाषा के माध्यम से, विदेशी-भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की विधियों, प्रणालियों का ज्ञान प्रदान किया गया। चूँकि प्रशिक्षणार्थियों को आगे चलकर 12-13 वर्षीय छात्रों को पढ़ाना था, शिक्षण-विधि भी तदनुकूल चयनित हुई यथा विदेशी छात्रों में रुचि कैसे उत्पन्न की जाए, विदेशी भाषा-शिक्षण की विधियाँ, सामूहिक कार्य-प्रणाली, सामूहिक विचार मंथन विधि, खेल विधि, भाषिक निमज्जन विधि, भाषिक निवास आदि।

प्रत्येक सत्र में विधि के अतिरिक्त शुद्ध उच्चारण के साथ वर्ण विन्यास/अक्षर विन्यास की शिक्षा भी दी गई। महात्मा गांधी संस्थान द्वारा तैयार की गई पुस्तिका Une Introduction à l’Hindi (हिंदी एक परिचय) तथा उससे संबद्ध ओडिओ सीडी के प्रयोग से भी प्रशिक्षणार्थियों को अभ्यस्त कराया गया। शुद्ध उच्चारण, उचित आरोह-अवरोह के साथ उनसे आदर्श पठन करवाया गया। विडंबना यह थी कि प्रशिक्षणार्थियों के फ्रेंच उच्चारण में भी सुधार लाना पड़ा जिससे कि भविष्य में छात्र उनकी खिल्ली न उड़ाएँ।

प्रमाण पत्र वितरण समारोह

प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन भी हुआ। 17 अगस्त को फ्रेंच

भाषा में संचालित प्रमाण-पत्र वितरण समारोह भव्य रूप से संपन्न किया गया। इसके अंतर्गत, महात्मा गांधी संस्थान के भूतपूर्व महानिदेशक श्री बिजय मधु एवं निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल, सें-देनी नगरपालिका के महापौर ज़िल्बेर आनेत, भारतीय वाणिज्यदूत (कौंसुल) श्री जार्ज राजू तथा सें-देनी के कुछ एम.एल.ए. भी उपस्थित थे। उस फ्रेंच-भाषी देश में हिंदी भाषा की गरिमा घनीभूत हुई। प्रशिक्षण की झलकियाँ 'आंटेन रेउनियों' के 'जियोनिसिते' कार्यक्रम के अंतर्गत दर्शाई गईं (http:www.antennereunion.fr/ Programmes/Dionicité-émission du 07-08-2013) स्थानीय पत्रों ले जुर्नाल दे लिल दे ला रेउनियों (Le journal de l'île de la Réunion) और ले कोचिजिएँ (Le Quotidien) में महात्मा गांधी संस्थान द्वारा संपन्न इस महत प्रशिक्षण कार्य से संबंधित लेख भी प्रकाशित हुए।

हिंदी और मीडिया

प्रशिक्षणार्थियों में हिंदी के प्रति इतनी लगन थी कि हर लेक्चर उनके लिए एक वरदान जैसा था। दैनंदिन जीवन में उन्हें हिंदी में संवाद करने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता है। रियून्यन में हिंदी दिखती नहीं है, सुनाई भी नहीं देती है। एक ही रेडियो चैनल है जहाँ बिना बातचीत, बिना घोषणा / अनाउंसमेंट के केवल हिंदी गाने चलते हैं। Canal Satellite डिश टी.वी. लगाने पर केवल ज़ी.टी.वी. आती है, जिसे बहुत कम लोग देखते हैं। हिंदी बोलने की इच्छा होने पर कुछ प्रशिक्षणार्थी प्रतिदिन भारत फ़ोन कर, स्काइप द्वारा अपने रिश्तेदारों या हित मित्रों से बात करते हैं। प्रशिक्षणार्थी पूजा मोधा कब रियून्यन में हिंदी बोल पाई? जब उसका तीन वर्षीय बेटा हिंदी बोलने लायक बना। रियून्यन में अधिकांश भारतीय मूल के वासी दक्षिण भारत के वंशज हैं विशेषकर पोंडिचेरी अथवा तमिलनाडु के। अत: वहाँ मॉरीशस जैसी उपजाऊ भूमि कहाँ, जहाँ हिंदी पुष्पित-पल्लवित हो पाती।

प्रशिक्षण के अंतिम दिन प्रशिक्षणार्थी अत्यंत क्षुब्ध इसलिए हुए, क्योंकि उनको जोड़नेवाली एकमात्र कड़ी मैं ही थी और मेरे मॉरीशस लौटने के पश्चात न उन्हें हिंदी में संप्रेषण करने का अवसर मिलेगा न संप्रेषण करने की उत्कट इच्छा होगी। अपनी ओर से मैंने उनको यही सुझाव दिया कि महीने में एक बार मिलने का कार्यक्रम बनाएँ, परस्पर संवाद बनाए रखें तथा मेरे संपर्क में भी रहें। परंतु एक बार बिछड़े तो यह योजना अधूरी रह गई। उनकी दी हुई घड़ी हमेशा उनकी याद दिलाती रहती है।

हिंदी और भारतीय संस्कृति

निस्संदेह हिंदी के माध्यम से भारतीय अस्मिता का बोध रियून्यन में धीरे-धीरे बढ़ने लगा है। 15 अगस्त, 2014 को फ्रांस विभाग रियून्यन में भारतीय वाणिज्यदूत जॉर्ज राजू के निवास स्थल, सेंत-मारी में जब तिरंगा झंडा नीले नभ में फहराया गया तब राष्ट्रीय गान एवं हिंदी गीतों की गूँज से समस्त वातावरण प्रफुल्लित हो उठा था। वहीं कई ऐसे डेंटिस्ट, व्यापारियों से मैं मिली जिन्होंने हिंदी के प्रति अपना नॉस्टैल्जिया व्यक्त किया। भारतीय स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ही रात्रि में सें-देनी नगरपालिका के सभागार में भारतीय वाणिज्य दूतावास एवं नगरपालिका के मिले-जुले सहयोग से पहली बार एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। कार्यक्रम का संचालन फ्रेंच भाषा में हुआ। वहाँ कुछ पच्चीस वर्षों से बसे एक मॉरीशसीय दंपति ने जब हिंदी गीत गाया तब उसकी खूब सराहना हुई। रियून्यन के एक प्रसिद्ध सेगा गायक की बेटी ने ज्यों ही 'जन-गण-मन अधिनायक जय है' गाना प्रारंभ किया तो लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। हिंदी के विश्व-जननी रूप का आभास हुआ।

हिंदी एवं सृजनात्मक कौशल

छात्रों में सृजनात्मक कौशल एवं आत्माभिव्यक्ति के विकास हेतु कुछ उपाय सुझाते समय मैंने प्रशिक्षणार्थियों को स्वयं माँ विषय पर कविताएँ रचने का आदेश दिया। कविता रचते-रचते कुछ लोग रो पड़े। कविता पढ़ते समय उनका कंठ अवरुद्ध हो गया। माँ से बिछड़ने का दर्द मात्र जननी माँ से विछोह जैसा नहीं लगा, मुझे भारत माता का व्यामोह लगा। एक प्रशिक्षणार्थी ने उस कुंठा से मुक्ति पाई जिससे वह वर्षों से ग्रस्त था। उसके भारतवाले सगे संबंधियों ने उस पर यह आक्षेप लगा रखा था कि वह अपनी माँ की मृत्यु का कारण है। उसी के विरह में तड़प-तड़पकर माँ ने प्राण त्याग दिए थे। उसकी इस कुंठा को अन्य प्रशिक्षणार्थियों तथा मैंने मिलकर दूर किया। आज ऑनलाइन हिंदी शिक्षण की बात चल रही है। क्या इस प्रकार का विरेचन ऑनलाइन शिक्षण से संभव हो पाता? मेरा निजी अनुभव कहता है, कदापि नहीं। उस प्रशिक्षणार्थी को थपकी देकर मैंने चुप करवाया था। एक शिक्षक का प्रमुख गुण प्रेम है, उस प्रेम के लिए साक्षात दर्शन आवश्यक हैं।

प्रशिक्षणार्थियों कृत कुछ कविताएँ जिसे सुनकर जन्मभूमि भारत का हृदय भी दहल जाए—

माँ आज तुम्हारी याद करता हूँ
जहाँ-जहाँ मैं जाऊँ,
जो जो भी मैं करूँ,
लगता है हर समय तुम मेरे ऊपर
नज़र रखती रहती हो।
अरे माँ! मैं तो बच्चा नहीं रहा
फिर भी मुझे मालूम है
कि माँ को याद करके,
या माँ के पास आकर,
मैं हमेशा बच्चा ही रहूँगा!

—ज़ां लुक

मीलों दूर है मेरी माँ,
मेरे सबसे करीब है मेरी माँ।
बिन बोले बिन कहे,
सब जाने मेरी माँ।
इतनी दूर से न जाने कैसे
पहचाने मुझे मेरी माँ।

—पूजा मोधा

माँ माँ प्यारी माँ!
मुझसे बहुत प्यार करती माँ।
दूर जब तुझसे माँ,
जीवन का अर्थ पता चला तबसे माँ।
तेरी झप्पी, तेरा लाड़, बहुत याद आता माँ।
सुबह, दोपहर, शाम रात तुझे पुकारती थी माँ।
तेरे सिर पर वह हाथ फिराना,
आँख में आँसू लाता माँ।
सोच रही हूँ दौड़ आ जाऊँ,
गोद में सो जाऊँ माँ।

—पूजा अमृतलाल

विदाई की बेला

प्रशिक्षण के अंतिम दिन प्रशिक्षणार्थी अत्यंत क्षुब्ध इसलिए हुए क्योंकि उनको जोड़नेवाली एकमात्र कड़ी मैं ही थी और मेरे मॉरीशस लौटने के पश्चात न उन्हें हिंदी में संप्रेषण करने का अवसर मिलेगा न संप्रेषण करने की उत्कट इच्छा होगी। अपनी ओर से मैंने उनको यही सुझाव दिया कि महीने में एक बार मिलने का कार्यक्रम बनाएँ, परस्पर संवाद बनाए रखें तथा मेरे संपर्क में भी रहें। परंतु एक बार बिछड़े तो यह योजना अधूरी रह गई। उनकी दी हुई घड़ी हमेशा उनकी याद दिलाती रहती है।

रियून्यन में हिंदी शिक्षण

प्रशिक्षण के पश्चात जब नगरपालिका द्वारा दो-तीन माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधि के रूप में हिंदी शिक्षण हेतु विज्ञप्ति निकाली गई तो सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली। मुझे अत्यधिक निराशा हुई क्योंकि वहाँ तमिल भाषा के समर्थक अधिक हैं, इस टापू में तमिलनाडु प्रांत के वंशज ही अधिक हैं और कुछ उनका संस्थागत प्रयास भी रहा है कि हिंदी के स्थान पर तमिल को बढ़ावा दिया जाए। परंतु देवों की भाषा के प्रवाह को कौन रोक पाया है ? दिसंबर 2014 में शुभ समाचार प्राप्त हुआ कि इस बार कुछ प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधि के रूप में हिंदी शिक्षण प्रारंभ होने जा रहा है। मेरे लिए यह किसी सम्मान या पुरस्कार से बढ़कर था। किसी विदेशी देश में बाल्यावस्था से ही बच्चों में हिंदी के बीजारोपण में अपना हाथ बटा पाना मेरे लिए एक महत उपलब्धि है।

आज सन् 2015 में पूजा मोधा, सुरेंद्र कुमार बड़ी तन्मयता एवं गर्व के साथ सें-देनी के कुछ विद्यालयों यथा एकोल सांत्राल, एकोल ज़ुएंविल, एकोल ज़ुल रेदेले बे में छात्रों की अनेक छोटी-छोटी टोलियों को हिंदी भाषा से परिचित करा चुके हैं। पाठ्यक्रम सात सप्ताह का होता है और सप्ताह में चारों दिन (केवल चार ही दिन पढ़ाई चलती है) एक-एक घंटे हिंदी का पठन-पाठन चलता है। सुरेंद्र कुमार के मतानुसार छात्रों की रुचि सराहनीय है। मुझे भी उनको पढ़ाना बहुत अच्छा लगता है।

निष्कर्ष तथा सुझाव

मैंने जो अनुभव ग्रहण किया उसके आलोक में मैं यही कहना श्रेयस्कर समझती हूँ कि यदि रियून्यन में हिंदी का प्रचार-प्रसार करना है तो प्रौढ़ लोगों को भी प्रेरित करना पड़ेगा। हिंदी के प्रति ललक मैंने प्रौढ़ लोगों में देखी है, विशेषकर उन गुजरातियों में जो वर्षों पहले मैडागास्कर के निवासी थे और वहाँ की सामाजिक अव्यवस्था, अराजकता के कारणवश रियून्यन में पुन: प्रवास किया है। यदि एक माँ को हिंदी पढ़ा दी गई तो आनेवाली भावी पीढ़ी में भी हिंदी का बीजांकुरण हो गया। कक्षाएँ साक्षात लगनी चाहिए न कि online अथवा distance education के माध्यम से। लोगों को प्रेरित तभी कर पाएँगे जब उनके हृदय की तंत्रियों को छू पाएँ, distance से यह संभव नहीं है। दूरियों को पाटने का प्रयास करें, दूरियों को बढ़ाने का अभियान न चलाएँ! निष्कर्ष रूप में रियून्यन के संदर्भ में वांछनीय सुझावों को दोहरा देना उचित होगा। सुझाव इस प्रकार हैं—

- ❖ रियून्यन में लगातार हिंदी का प्रचार किया जाए। इसके लिए विशेष पहल करनी पड़ेगी क्योंकि रियून्यन में हिंदी विरोधी दल यथा तमिल भाषा के पक्के समर्थक पहले से वहाँ कार्यरत हैं।
- ❖ प्रौढ़ जनों के शिक्षण पर बल दिया जाए क्योंकि उनमें जड़ की ओर लौटने की पिपासा है।
- ❖ प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर शिक्षण किया जाए पर शिक्षण साक्षात हो। साक्षात शिक्षण के अंतर्गत वास्तविक समस्याओं से अवगत होंगे और उनका समाधान भी संभव होगा।
- ❖ प्रौढ़ लोगों का हिंदी शिक्षण सायंकाल को अथवा शनिवार को ही संपन्न किया जाए जब कार्यरत लोगों को अवकाश प्राप्त हो।

एसोशिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस
rajranigobin@yahoo.com

11. पश्चिमी अफ्रीकी देशों में हिंदी : संभावनाओं का महाद्वीप

डॉ. श्रीमती संयुक्ता भुवन-रामसारा

सन् 2004 में मैंने और चार दूरदर्शी विद्वज्जनों के साथ व कुछ अन्य विश्व कल्याणकारी समाज सेवकों ने एक अंतरराष्ट्रीय परियोजना को आरंभ किया जिसे 'सर्व अफ्रीका' *(Serve Africa)* के नाम से जाना जाता है। इस परियोजना के अंतर्गत कुछ नाम उल्लेखनीय हैं जैसे नेजाम जुम्मा जो केन्या के प्रसिद्ध उद्योगपति व समाज सेवक हैं; मोज़ज़ मार्कस, दक्षिण अफ्रीका के कर्मठ व्यवसायी; नीक क्रिस्यांसन, यू.के. के प्रौद्योगिकी वैज्ञानिक तथा राजयोगिनी, वेदांती जी जो गुजरात निवासी तथा संप्रति अफ्रीका राज्यों के केंद्रों की महानिदेशिका हैं। इस अंतरराष्ट्रीय परियोजना का उद्‌देश्य था कि संपन्न देशों में धर्म, संस्कृति, भाषा और सज्जनता द्वारा सुख-समृद्धि और शांति का संचार करना। साथ ही सकारात्मक चिंतन, आत्म प्रबंधन नेतृत्व *(self-management leadership)*, तनाव मुक्त जीवन *(stress free living)*, समय प्रबंधन *(time management)*, जीवन मूल्यों *(living values)* आदि कार्यक्रम द्वारा व्यक्ति और समाज का उत्थान करना। अफ्रीका महाद्वीप के 16 देशों में यह लोक कल्याणकारी कार्य पहले से ही शुरू हो चुका था। 'सर्व अफ्रीका' *(Serve Africa)* परियोजना द्वारा शेष 40 देशों में यह सेवा आरंभ हुई। मेरा सौभाग्य है कि मुझे भी देव वाणी हिंदी का प्रचार-प्रसार तथा धर्म और संस्कृति के अनमोल रत्नों का दान करने का सुनहरा अवसर मिला और इस गहन अनुभव से प्राप्तियाँ हज़ार गुना हुईं।

सन् 2005 से 2008 के बीच लगभग ढाई वर्षों तक अफ्रीका महाद्वीप के इन देशों में कार्यरत रही—केन्या, कैमरून, इथियोपिया, आइवरी कोस्ट, रूआंडा, चाड, सेंट्रल अफ्रीका, सेंट्रल अफ्रीकी गणराज्य *(central African republic)* आदि। अफ्रीकी देशों में रहकर सेवा करना चुनौतीपूर्ण रहा। मीडिया और अंतरजाल द्वारा अफ्रीकी जीवन की झलक तो मिल ही जाती है लेकिन ढाई वर्षों तक इन देशों में उपस्थित होकर प्रत्यक्ष अनुभव भी हुआ। वहाँ की गरीबी देखी तथा भ्रष्टाचार के भयानक रूपों से भी भेंट हुई।

जैसा कि आप सभी जानते हैं किगाली, रूआंडा में सन् 1994 में अमानुषिक नरसंहार हुआ था, मैं किगाली में भी थी काफ़ी समय तक। तो वहाँ युद्ध के बाद के अभिशप्त वातावरण के हृदयविदारक दुष्ट परिणामों को भी जीया और चाड में जो जाति-संहार *(genocide)* हुआ था जिसमें एक दिन में एक मिलियन लोगों की हत्या की गई थी, मशेटी *(machete)* से मारा गया था, उधर वहाँ का जो वातावरण है, बहुत पीड़ाजनक है। वहाँ लोग कभी हँसते नहीं हैं और ऐसा लगता है कि वे एक श्मशान में जी रहे हैं। जिसको भी देखिए उनके चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं होती है। बहुत प्रयास करना पड़ता है, चुटकुले *(jokes)* बोलने पड़ते हैं तब जाकर वे थोड़ा मुस्कुराते हैं।

इसी प्रकार से मैं चाड में भी गई थी। चाड में प्रकृति का प्रकोप और देश की अव्यवस्था मानव को झकझोर देती है जब 50 डिग्री तापमान में बिजली और पानी का अभाव हो और मलेरिया *(malaria)* व टाइफ़ॉइड *(typhoid)* जैसी बीमारियाँ तो वहाँ आम बुख़ार की तरह हैं। हमें कई बार ये बीमारियाँ हुई और ठीक भी हो गईं।

अब एबोला *(Ebola)* अपना जाल बिछा रहा है फिर भी मेरा यह निष्कर्ष है कि पश्चिम और मध्य अफ्रीका के देश गरीब नहीं हैं क्योंकि मैंने करीब से देखा, वहाँ जीया, उस जीवन को देखा क्योंकि वहाँ प्राकृतिक संसाधनों की बहुलता है, बस उनका उपयुक्त दोहन और उनसे प्राप्त आय के समान वितरण की आवश्यकता है। नहीं तो बहुत धनी देश है, कई बार कई नदियों में गए तो वहाँ हीरे दिख जाते। बहुत ही धनी देश है।

इन ढाई वर्षों में मुझे विशेष साहस, निर्भरता, धैर्य, सहनशक्ति, प्रतिबद्धता, उमंग-उत्साह, निष्ठा और समर्पण की आवश्यकता पड़ी। इन देशों में स्वसशक्तीकरण हेतु शिक्षण केंद्र खोलने की निमित बनी। मैं उन देशों के राष्ट्रीय समन्वयक *(coordinator)* के रूप में कार्यरत रही। विश्व के अनेक देशों से लगभग 100 लोगों ने तन, मन, धन

तथा मनसा–वाचा–कर्मणा इस परियोजना में निःशुल्क तथा निस्स्वार्थ भाव से अपना संपूर्ण सहयोग प्रदान किया। मैंने भी अवैतनिक अवकाश *(leave without pay)* लेकर वहाँ सेवा की। मॉरीशस वासियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही क्योंकि हम त्रै–भाषिक हैं अर्थात हिंदी–अंग्रेजी के साथ–साथ फ्रेंच भी जानते हैं। तो इस प्रकार हम देखते हैं कि इस परियोजना से उन अफ्रीकी देशों में संपर्क स्थापित करने में भारतीय व्यवसायी ही सहयोगी थे। अतः हिंदी के ज्ञान ने भी महत्वपूर्ण पुल का काम किया है।

फिर जैसा कि पहले बता चुकी हूँ कि पश्चिम अफ्रीका की भाषा फ्रेंच है, इस दृष्टि से इन सभी देशों में भारतीय व्यवसायियों को हिंदी के माध्यम से फ्रेंच सिखाने का भी अवसर मिला। जब वे अपने काम से निवृत्त होते तो शाम के समय हम उन्हें हिंदी के माध्यम से फ्रेंच सिखाते थे। अतः आप यह अनुमान लगा सकते हैं कि पश्चिम अफ्रीका में भारतवंशी लोगों के लिए विधिवत शिक्षण-पद्धति के आयोजन की संभावनाएँ हैं।

इस प्रकार पश्चिमी अफ्रीकी देशों में हिंदी की संभावनाओं पर विचार प्रस्तुत करने से पहले मैं यह बात स्पष्ट कह देना चाहती हूँ कि मेरा इन देशों में जाने का प्रत्यक्ष लक्ष्य भले ही हिंदी से जुड़ा न था, लेकिन वहाँ जाने पर मैंने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार की अनगिनत संभावनाएँ अनुभव कीं।

पश्चिमी अफ्रीकी देशों में भारतीयों से संबंधित हिंदी

विश्व के लगभग 110 देशों में 30 मिलियन से अधिक भारतीय बसते हैं। पश्चिमी एवं मध्य अफ्रीका में प्रायः 4 प्रकार के भारतीय हैं—पहला है—भारतीय व्यापारी जो अनुबंध पर वहाँ जाते हैं, दूसरा है—अनेक पेशेवर जो अनेक वर्षों से वहाँ पर काम कर रहे हैं और सपरिवार रहते हैं, तीसरा—कर्मचारी जो भारतीय कंपनियों में कार्य करते हैं और चौथा—कुछ ऐसे लोग हैं, जो चालीस वर्षों से अधिक वहाँ पर रह रहे हैं। जैसे कि पाकिस्तान और भारत का विभाजन हुआ तो बहुत से सिंधी व्यापारी लोग सीधे अफ्रीका या पश्चिमी अफ्रीकी देशों में चले गए। इनमें से अधिकांश सिंधी, गुजराती, मुस्लिम एवं दक्षिण भारतीय हैं और भारतीयों तथा पाकिस्तानियों में हम देखते हैं कि बहुत ही प्रेम भाव है और यह भी देखते हैं कि दोनों मिलकर ईद तथा दिवाली भी साथ–साथ मनाते हैं।

महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय मूल के लोग जहाँ भी जाते हैं अपनी भारतीयता को नहीं छोड़ते। कुछ भी नहीं छोड़ते, चाहे वह वेश–भूषा हो, भोजन हो, व्रत–त्योहार हो या चाहे अपनी हिंदी भाषा।

पश्चिमी अफ्रीकी देशों में भारतीयों के बीच हिंदी और हिंदू–संस्कृति की उपस्थिति

किगाली, रूआंडा में साढ़े तीन सौ भक्त प्रत्येक शनिवार को मंदिर में मिलते हैं और रामचरितमानस का पाठ करते हैं, प्रवचन होता है। इसी प्रकार से द्वाला जो कैमरून की आर्थिक राजधानी है वहाँ नवरात्रि में नौ दिनों तक लगभग 5 सौ से भी अधिक भक्त व्रतधारण करके देवी–पूजा करते हैं और नौ दिनों तक वहीं पकवान–भोजन करते हैं। इसी प्रकार आबिदजान जो आइवरी कोस्ट की राजधानी है वहाँ भी प्रति रविवार को सभी गीता–मंदिर में मिलकर गीता–पाठ एवं सत्संग करते हैं। मार्के की बात यह है कि वहाँ पर कोई ज्ञानी पंडित नहीं है लेकिन जो–जैसे–जितना जानता है वो वैसे पूजा करता है। इस प्रकार संस्कृत मंत्रों का गायन और हिंदी भाषा का खूब प्रयोग होता है।

भारतवंशी और हिंदी-शिक्षण

कैमरून, आइवरी कोस्ट, रूआंडा, चाड, आदि में विधिवत हिंदी की पढ़ाई नहीं होती। फिर भी द्वाला के एक अमेरिकी स्कूल में प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल में मानव मूल्यों पर विचार–

मंत्रण करने जाती थी। तभी वहाँ भारतीय पेशेवरों के बच्चों को हिंदी पढ़ाने का मौका मिला। कुछ अफ़्रीकी बच्चों में भी हिंदी सीखने की रुचि थी। वे अंग्रेज़ी माध्यम से हिंदी सीखते थे। साथ ही रूआंडा राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में तीन बार कुछ कार्यशालाएँ लगाईं और स्नातक तथा स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राएँ विदेशी भाषा के रूप में हिंदी सीखने की तीव्र इच्छा रखते हैं।

फिर जैसा कि पहले बता चुकी हूँ कि पश्चिम अफ़्रीका की भाषा फ्रेंच है, इस दृष्टि से इन सभी देशों में भारतीय व्यवसायियों को हिंदी के माध्यम से फ्रेंच सिखाने का भी अवसर मिला। जब वे अपने काम से निवृत्त होते तो शाम के समय हम उन्हें हिंदी के माध्यम से फ्रेंच सिखाते थे। अत: आप यह अनुमान लगा सकते हैं कि पश्चिम अफ़्रीका में भारतवंशी लोगों के लिए विधिवत शिक्षण-पद्धति के आयोजन की संभावनाएँ हैं।

पश्चिमी अफ़्रीकी देशों में भारतीयता से लगाव

भारतीयों का भारत से प्रेम तो स्वाभाविक है लेकिन अफ़्रीकी लोगों का भारत के लिए प्रेम निस्संदेह ही अविस्मरणीय है। भारतीयता के प्रति उनके आकर्षण के आधार इस प्रकार हैं—भारतीय जीवन शैली, भारतीय लोग, भारतीय वेशभूषा, भारतीय भोजन, भारतीय दर्शन, हिंदी फ़िल्में, हिंदी फ़िल्मों के अभिनेता-अभिनेत्री, हिंदी-गीत, हिंदी भाषा और हिंदू-त्योहार। इन सभी देशों में हिंदी फ़िल्में अत्यंत प्रसिद्ध हैं। जैसे चाड में एक बंगलादेशी व्यवसायी का सिनेमाघर है जिसमें प्रतिदिन दो हिंदी फ़िल्में दर्शाई जाती हैं। आइवरी कोस्ट के बाज़ार के गुज़रते हुए कभी-कभी *'आवारा हूँ या गर्दिश में हूँ आसमान का तारा हूँ'* ये गीत सुनाई दिया करता था और साथ-ही-साथ कैमरून की गलियों में *'जीमी जीमी आजा आजा'* बहुत बार सुनाई पड़ा। इसी प्रकार से अमिताभ बच्चन, शाहरुख ख़ान, ऐश्वर्य राय सभी बहुत प्रसिद्ध हैं। हिंदी भाषा के प्रति उनका काफ़ी रुझान है। हमारे केंद्र में जो लोग भारतीय दर्शन, संस्कृति तथा योग सीखने आते थे, उन्होंने स्वयं हिंदी भाषा सीखने की माँग की। हमने उनको वर्णमाला, छोटे-छोटे संवाद सिखाए और थोड़े ही समय के बाद उन्होंने हिंदी बोलना भी शुरू कर दिया तथा सब के मन में ऐसी भावना थी कि कम-से-कम एक बार भारत अवश्य जाएँ।

इन देशों में अंतरराष्ट्रीय धार्मिक सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधि जो हैं, वे अफ़्रीकी मूल के ही हैं जैसे इस्कॉन *(International Society for Krishna Consciousness)* के प्रतिनिधि राफ़ाएल दास जी हैं, पं. फ्रांसिस साईं बाबा के प्रधान हैं जो संस्कृत-मंत्रों तथा हिंदी का बहुत अच्छा प्रयोग करते हैं। वे भारत में काफ़ी समय तक रह चुके हैं और उन्होंने भारतीय जीवन को भी अपनाया है। वे लोग ब्रह्म मुहूर्त में जागरण करते हैं, शाकाहारी हैं, योग-साधना करते हैं और हिंदी भी सीखते हैं। अभी ऐसे लोग हैं जो संस्था को संभाल रहे हैं। इस प्रकार क्रिसमस मनाने के साथ-साथ रक्षा-बंधन भी मनाते हैं जिसमें पाकिस्तान, भारत, अफ़्रीका आदि के लोग मिलकर यह त्योहार मनाते हैं।

रास्ते पर रहनेवाले बच्चों *(street children)* को भी हिंदी सिखाई क्योंकि उन्हें हिंदी-गाने बहुत पसंद थे। साथ ही कैमरून की जेल के कैदियों को भी हिंदी सिखाने का अवसर प्राप्त हुआ। 2007 में हम वहाँ के स्थानीय शिक्षा मंत्री से मिले और भारत-दर्शन तथा हिंदी की विधिवत पढ़ाई पर चर्चा की और उनकी ओर से सकारात्मक उत्तर भी मिला।

अंत में हम यही कहेंगे कि हम पश्चिम अफ़्रीका में हिंदी सेवा शुरू कर सकते हैं। यह जटिल कार्य अवश्य ही रेगिस्तान में बहार पैदा करने जैसा है लेकिन हम सभी हिंदी प्रेमी इस प्रकार के चमत्कारी पुरुषार्थ के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध हैं।

एसोशिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस
holyswan108@yahoo.co.uk

चतुर्थ सत्र : दक्षिण अमेरीका क्षेत्र में हिंदी

12. सूरीनाम में हिंदी

श्री वीरजानंद अवतार

अगले साल, सन् 2015 में भारतीय मूल के लोग सूरीनाम में 142वाँ आप्रवासी दिवस हर साल की तरह बहुत धूम-धाम से मनाएँगे। एक क्षण के लिए उस परिस्थिति को ध्यान में लाया जाए जब 5 जून, 1873 को 422 लोग लल्ला रूख़ नामक जहाज़ में 90 दिन डूबते-उतरते सूरीनामी घाट पहुँचे, '4 जून रात्रि की बेला है', चेहरे पर हताशा, साथ-ही-साथ आशा भी है, आशा इसलिए कि हम पहुँचे श्री राम देश जहाँ सोने की थाली में खाने को मिलेगा। हाथ में रामायण, बगल में गठड़ी, कंठ में भोजपुरी, हिंदी और अवधी।

आज वह गठड़ी खुलकर अवश्यमेव बड़े-बड़े घरों में, पदों पर और ऊँची-ऊँची इमारतों में बदल गई लेकिन हाथ में रामायण और गीता ज्यों-की-त्यों सुरक्षित हैं, हमारे दिल में और हमारे हाथों में भी। कंठ में हिंदी और भोजपुरी उसी समय से अटक गई। मैं, वीरजानंद अवतार, उन्हीं में से एक हिंदुस्तानी हूँ जिसकी हिंदी भाषा है ज़बानी, हिंदी अध्यापक व भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी के रत्न स्तर का विद्यार्थी हूँ। सूरीनाम साउथ अमेरिका महाद्वीप में स्थित एक बहुजातीय, बहुभाष्य एवं बहुसांस्कृतिक देश है। सरकारी भाषा डच है और इसके अलावा सरनामी, हिंदी, क्रियोली, चीनी, इंडोनेशियाई आदि, कुल मिलाकर 20 भाषाएँ हैं जो बोली जाती हैं। सूरीनाम हिंदी परिषद एक ऐसी संस्था है जो 5 सितंबर, 1977 से व्यवस्थित रूप से हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई है।

इससे पहले हमारे पूर्वज जिन्हें गोरे लोग शर्त-बंदी प्रथा के तहत में भारत से लाए थे, अपने ढंग से, घरों में, मंदिरों आदि स्थानों पर हिंदी पढ़ाते थे। उन दिनों नाथुराम की पहली और दूसरी पुस्तक से हिंदी सिखाई जाती थी।

भारत से आए बाबू महातम सिंह ने उस समय बहुत बड़ा योगदान दिया, सब को एक छत के नीचे एकत्रित कर, हिंदी भाषा और संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। कबीर साहिब कहते हैं, ''ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय, औरन को शीतल करें, आपहूँ शीतल होय।''

आज हमारे देश सूरीनाम में हम सब बहुत गर्व के साथ कह सकते हैं, उन पूर्वजों, उन आजा-आजी, नाना-नानी से सीखी हिंदी भाषा और उससे जुड़ी धर्म-संस्कृति को आज तक जीवित रखा है, यदि हम कहें कि हम उन आजा-आजी की संतान हैं तो हमारा कर्तव्य और उत्तरदायित्व बनता है कि हम भाषा तथा धर्म-संस्कृति को आगामी में सुरक्षित रखें। इस समय आठ दूरदर्शन और दस आकाशवाणी के उद्घोषकों के द्वारा कार्यक्रम यथासंभव हिंदी में चलाया जा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज भी वे लोग मौजूद हैं जिनके अंदर अभी भी यह आग लगी है कि अपनी संस्कृति को भाषा के माध्यम से बचाना है। यह आग तीसरी पीढ़ी तक जलती रही और रहेगी, यह सोचकर कि हम अपने आजा-आजी की धरोहर, अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखकर दक्षिणा दे रहे हैं। यहाँ मैं रुककर एक विशेष बात आप को बताना चाहूँगा हम सूरीनाम की सरकार के शिक्षा मंत्रालय का धन्यवाद करना चाहेंगे जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में आज तक सहयोग दिया और हमें पूर्ण आशा है, भविष्य में भी सहयोग मिलता रहेगा।

सन् 1982 में हिंदी परीक्षाओं को शिक्षा मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त हुई। सूरीनाम हिंदी परिषद के तत्वावधान में हर साल पाँच से छः सौ हिंदी विद्यार्थी परीक्षा में भाग लेते हैं, प्रथमा से कोविद तक। भाषा रत्न की परीक्षा का प्रबंध भारत के हिंदी प्रचार संस्था, वर्धा द्वारा किया जाता है। हिंदी के स्तर प्रथमा से लेकर उत्तमा की पुस्तक 'मंजूषा' की रचना, सूरीनाम के हिंदी विद्वानों और भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के हिंदी अध्यापकगण द्वारा संयुक्त रूप से की गई है। कहते हैं—

मेरे सीने में न सही, तेरे सीने में ही सही।
आग कहीं भी हो, लेकिन जलनी चाहिए॥
लेकिन!

अब आनेवाली पीढ़ी तक यह आग धीमी हो गई है और अब इस नई पीढ़ी को प्रेरणा देना मुश्किल हो जाता है। आज की परिस्थिति देखी जाए तो कितने कारणों से हिंदी और उससे जुड़ी सरनामी घट रही है।

कुछ कर्मठ लोग शाम को मंदिरों के प्रांगण में या अपनी छुट्टी की तिलांजलि देकर रविवार को किसी सरकारी विद्यालय की छत के नीचे हिंदी पाठशालाएँ चलाते हैं। कुछ देर तक सोचिए, दिन-भर काम करने के बाद या कहिए थकान के बाद सबको आराम की ज़रूरत होती है, इसके उपरांत 120 हिंदी से प्रेम रखनेवाले अध्यापक-अध्यापिकाओं को बिना वेतन काम करना पड़ता है तो! सूरीनाम में हिंदी भाषा के घटने का पहला कारण है : कठिन परिस्थितियों में बिना वेतन के पढ़ाना।

दूसरा कारण : नई पीढ़ी की सोच कि हिंदी पढ़ाई से कोई व्यवसाय या नौकरी नहीं मिलती, तो क्यों पढ़ें! इस तरह नई पीढ़ी को प्रेरणा देना मुश्किल हो जाता है।

अभी तक हम सूरीनाम के लोग भाग्यशाली हैं कि हिंदी और भोजपुरी पूरे दक्षिण अमेरिका तथा कैरेबियाई देशों में, एक सूरीनाम में ही जीवित है, लेखन, पाठन व वाचन जैसे हर कौशल में।

यहाँ की धार्मिक संस्था जैसे आर्य समाज, सनातन धर्म, गायत्री परिवार में पवित्र ग्रंथों जैसे वेद आदि शास्त्र, रामायण, पुराण, गीता अभी जीवित हैं। धीरे-धीरे हिंदी के साथ इन ग्रंथों की पढ़ाई भी कम हो रही है। करीबन चार साल पहले इन संस्थाओं के स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती थी, आज यह भी समाप्त हो गई है। हरेक देश

सबसे पहले उन 120 अध्यापकों को मासिक वेतन दिया जाए ताकि लोगों को यह लगे कि पढ़ने के बाद नौकरी मिलेगी। आज के आधुनिक युग में युवा के पास अवसरों (opportunities) की कमी नहीं है। वे हिंदी की पढ़ाई में व्यवसाय ढूँढ़ते हैं। हमें यहाँ, भारत सरकार के योगदान की सख़्त से सख़्त ज़रूरत है क्योंकि हमें लगता है कि अभी तक जो संभालकर रखा है, अब हाथ से छूट रहा है।

जहाँ बहुसंस्कृतियाँ हैं, अपनी-अपनी समस्याएँ भी होती हैं जैसे आर्थिक स्थिति, जाति पक्ष, अनेक और जिससे भाषा विकास में रुकावट आ जाती है। इन सारी समस्याओं का समाधान किस तरह से किया जाए, यह एक गंभीर प्रश्न है जो हिंदी प्रेमियों के लिए जहाँ तक भाषा विकास का प्रश्न है, एक बहुत बड़ी चुनौती है।

अरे हिंदी प्रेमियो, सावधान! हिंदी भाषा हमारी माँ है, मातृभूमि, मातृभाषा और माँ, इसका कोई विकल्प नहीं, जिस दिन या तो लापरवाही से या किसी और कारण से हिंदी और उससे जुड़ी संस्कृति हम से छीन ली जाएगी तब हम बहुत पछताएँगे। ''अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत'', तब हम न घर के होंगे न घाट के। भारतीय राजदूतावास तथा भारतीय सांस्कृतिक केंद्र से हमारा चिर संबंध है जिससे हमें पाठ्य पुस्तकें, समय-समय पर प्राप्त होती रहती हैं। इसके अलावा छात्रवृत्ति (scholarship) और कुछ सालों से अध्यापक-अध्यापिकाओं को मानदेय दिए जा रहे हैं। सांस्कृतिक केंद्र के हिंदी अध्यापक द्वारा परिषद में नियमित रूप से कार्यशाला, सेमिनार तथा अध्यापकों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यों का आयोजन होता है। मतलब, भारत सरकार योगदान दे रहा है। इसके लिए सूरीनाम के लोग आभारी हैं और धन्यवाद भी देते हैं। योगदान में कुछ और जोड़ दिया जाए तो मुमकिन है भविष्य में हम हिंदी तथा उससे जुड़ी सरनामी धर्म एवं संस्कृति का जो आज स्तर है, उसे बचा पाएँगे।

सबसे पहले उन 120 अध्यापकों को मासिक वेतन दिया जाए ताकि लोगों को यह लगे कि पढ़ने के बाद नौकरी मिलेगी। आज

के आधुनिक युग में युवा के पास अवसरों (opportunities) की कमी नहीं है। वे हिंदी की पढ़ाई में व्यवसाय ढूँढ़ते हैं। हमें यहाँ, भारत सरकार के योगदान की सख़्त से सख़्त ज़रूरत है क्योंकि हमें लगता है कि अभी तक जो संभालकर रखा है, अब हाथ से छूट रहा है।

जीवन ख़त्म हुआ...
मन की मशिनरी...
फूल चुनने आए थे बागे हयात में...
फुरसत में तख़्त न सिमरण का वख़्त निकला...

भारत से 17 हज़ार किलोमीटर दूर पश्चिमी गोलार्ध में एक छोटा भारत है, अभी हरा-भरा है और धड़क रहा है, उसकी अस्मिता, उसकी पहचान बचाना हम सबका काम है, इसलिए 'अब ना चूको चौहान'।

''पुस्तक विहीन घर, खिड़की से विहीन भवन के समान होता है। समृद्ध भाषा से विहीन देश, तारों से विहीन गगन के समान होता है।''

विभागाध्यक्ष, खाद्य निरीक्षण सेवा,
स्वास्थ्य मंत्रालय, सूरीनाम
पी.ओ.बॉक्स 1061
पारामारिबो, सूरीनाम
wirdjarita@sr.net

13. Survival of Hindi in the Caribbean, the Guyana Experience

Ms. Varshnie Udho Singh

This year marked 176 years since the first Indian immigrants arrived on the shores of Guyana. To clear up any confusion, Guyana is the gateway to South America and the Caribbean located between my neighbours Suriname, Venezuela and above Brazil. That 2 out of the 9 conferences have been held in our region of South America and the Caribbean, we hope to convey the interest and enthusiasm our brothers and sisters have for this essential part of our heritage.

In Guyana our forefathers came to the Caribbean with barely 3 things, their religions, languages and cultures; Hindi, Sanatan Dharma and love for family. It was a very strong foundation that saw them through the hard days of slavery at the hands of their colonial masters. It was a foundation that through carelessness we neglected to build on securely with concrete and steel, using instead mere straws.

Indian immigration started in Guyana on 5 May, 1838 with Indians coming from all parts of India. They came to Guyana as indentured labourers which was a fancy word for slaves. Some came initially on a 5 year bond with a contractual arrangement for a return passage to India. Some were misled and some even kidnapped from the land of their birth.

They travelled for many days by boat in abysmal conditions, many died and only the strongest survived. From different regions of India they were unified as 'Jahajis' by their common uncertain fate. They were mostly uneducated, spoke different languages, but they all had a variable understanding of Hindi. They retained their religions, cultures, family values and conviction to improve their lot. These qualities have remained intact up to now.

The Hindi language continued to be the language of communication amongst the Indians for a long time to come. Many had the desire to return to their motherland after the period of indentureship was over but the sugar planters made it difficult to do so.

Hindi language was taught in makeshift Mandirs and Logees during the early period of indentureship under the guidance of a knowledgeable person among the Indians. Later it shifted to bottom house schools (informal night schools under the common stilt type houses). My Ajee (Paternal Grandmother) had such a school under her house and was a teacher.

It was not until 1876 when primary education was made compulsory that the Indians started to send their sons to school. Sadly the education of girls was never given priority by the parents or the authorities until the 1950's. The school curriculum of the period leading up to the 1950's included Hindi as a school subject and thus teachers were required to teach it. The Teacher's Certificate examination at that time had Hindi as an optional subject. Hindi was vibrant until the late 60's and 70's.

The present day situation is that Hindi education is left mainly to socio-cultural organizations like the Guyana Hindi Prachar Sabha, to take the initiative and responsibility. Hindi is no longer taught in schools apart from 4-5 in the whole country.

In 1954, independent India gave us the gift of Hindi and Cultural teachers through the ICCR (Indian Council of Cultural Relations). We were blessed to have teachers like dynamic freedom fighter Shri Dr. Kaka Sahib Kalilkar, Babu Mahatam Singh, then Shrimatee Amma Ratnamayee Devi Dixit who transformed the cultural jungle in Guyana into a beautiful landscaped garden of Hindi and Culture.

The answer to this HiTech world challenges are in the Ramayana. To be able to access the deeper meaning we need Hindi. Our forefathers knew this and used this knowledge successfully to produce outstanding human beings by living what they read every day of their lives. They passed down their knowledge to their children. We too wish to teach our children to ensure the rich legacy of knowledge continues but we don't know enough Hindi.

The Guyana Hindi Prachar Sabha was established by Shri Mahatam Singh in 1954. Both he and his predecesssor Amma, along with my Ajee, father and a host of vibrant youths spread Hindi through teaching. They went village to village from one end of Guyana to the other; training unpaid voluntary teachers and establishing Hindi classes.

Students were prepared for overseas Hindi Examinations by Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras 17. Many students, including non-Indians, successfully wrote the Prathamik, Madhyama and Rashtrabhasha examinations. Many assisted the propagation of Hindi in those days from 1954 to the early 1970's.

Political turmoil aimed at destroying Indians and their culture forced a mass migration. Many of our Hindi loving teachers migrated and Hindi suffered. Those who remained in Guyana had to give priority to survival under a destructive dictatorship. Very few teachers and students remained so for over 2 generations, Hindi suffered further.

Guyana Hindi Prachar Sabha remained and continued their village to village activities throughout this turbulent period and continues to fulfil their mandate to this present day; which my generation is fortunate to enjoy.

My Pitaji Beni Singh is 83 years young! And along with a few other Senior Hindi Premi, I am the youngest, who have made Hindi their life's work. Part of my life's work is to help my Pitaji and his team to realize their dreams with securing Hindi and building the Guyana Hindi Prachar Sabha Headquarter in Shantiniketan style to teach Hindi and true culture before their eyes close.

Today the Guyana Hindi Prachar Sabha unpaid volunteers go to every village to train teachers and establish Hindi classes. We provide books, charts, past exam papers, syllabus, we offer 5 levels of

examinations every August;

1. Bal Bodh 1
2. Bal Bodh 2
3. Prarambha
4. Pravesh
5. Shabdavali (for nursery school children)

Modern day society, culture and politicians have given Hindi a backseat in terms of priority. On one hand they say Hindi should be a world language but are not investing in teaching the diaspora who are begging to be taught, in particular Guyana.

The answer to this HiTech world challenges are in the Ramayana. To be able to access the deeper meaning we need Hindi. Our forefathers knew this and used this knowledge successfully to produce outstanding human beings by living what they read every day of their lives. They passed down their knowledge to their children. We too wish to teach our children to ensure the rich legacy of knowledge continues but we don't know enough Hindi.

At birth we were given Hindi names, as young children we were taught Hindi by our grandparents or parents. We did not see the relevance too much at that time but it made them happy. Once we were older and more experienced we could appreciate the knowledge as there is much false interpretation of what our scriptures say.

In my family we used to read the Tulsicrit Ramayana from cover to cover in pure Hindi. We had an excellent grasp of the meaning and language. Learning Hindi actually helps you with English grammatically and does not cause academic suffering in any way. Romanized pronunciation does not come close to the real Mccoy as we found out by trying to use it to help us when we forgot letters in the alphabet.

We soon found out that the language used in the Ramayana was different to that used in movies and that people did not use that beautiful poetical language in ordinary conversation.

One of our greatest regrets and disadvantages that I see now is that we did not practice speaking Hindi outside of Ramayana reading. This is a commonplace situation in Guyana and the Caribbean where people know to read and write but can't speak the language to have an ordinary conversation

The Hindi lessons provided at the Mandir level were based on Hindi text books such as Baitaal Pacheesee, Prem Sagar, Nathuram's Pahli, Doosrie and Teeserie Pustak and Baal Shiksha. In addition excerpts from the Ramayana are used for normal and ethical lessons. These are expanded in Ramayana Kathas and at various yajnas.

The present situation vis-à-vis Hindi Education:

1. At present, in Guyana amongst the majority of the population there is the misconception that there is no economic value to learning Hindi unless you wish to become a Pandit. India is a global economy and Hindi has as much value as a second language as Spanish, French,

German which are compulsory and surpasses those languages in terms of the spiritual and cultural benefit.

2. Many Hindi words are embedded in the local parlance.
3. Pujas are conducted using Hindi and Sanskrit invocations.
4. Parents continue to give their children Hindi names.
5. There is a love by our nation and region for Hindi films, soaps, especially religious ones.
6. Hindi songs are popular with our nation and region.
7. Hindi is spoken only by a few persons in our nation and region.

Our Knowledge of Hindi in Guyana:

We can read Hindi (a little), we can write Hindi (a little), we know a little about 'swar', we know a little 'Vyanjan', we know a little of 'Matra' or 'Barah Khari' (vowel signs), 'Adha Akshar' (1/2 letters), 2-4 letter words, simple present tense (vartman kaal), the AA, AY, EE rule, TA, TAY, TEE rule, simple present tense e.g. "Mai Hindi sikhtee hu", simple past tense e.g. "Way Hindi sikhtay thay", simple future tense e.g. "Hamaray baal bachay Hindi sikhengay", imperative (Vidhi) e.g. "Tu ja – thou goest", "Tum jaow – you go", "Aap Jaeay – you please go".

We can recite prayers (Sandhya, Havan) and sing from memory (Ramayan, Hanuman Chalisa, Bhajans) in Hindi and Sanskrit but we have completely lost the art of speaking Hindi and understanding the real essence of our scriptures.

The Challenge is how to propagate Hindi in a Non-Hindi speaking environment?

1. In February 2014, we kept a meeting of socio-cultural organizations in Guyana with the view to discussing the future of Hindi and passed 3 resolutions:

(1) That Hindi be included on the national curriculum at all levels from Nursery to "University."

(2) That the Government of Guyana takes responsibility for the training of teachers

(3) That the Government of Guyana ensures Hindi is offered as a CXC subject (CXC is the Caribbean equivalent of "O'Levels.")

We circulated a letter to the society at large with a copy of the Resolutions and a questionnaire to see how they felt about Hindi and the Resolutions. Guyana is a land of 6 Races and all without exception gave a positive response.

This made us consider the fact that for Hindi to be protected for the generations to follow we needed to appeal not only to our Indian brethren but to our entire Nation. This is essential for the success of our mission.

We consulted a linguistic and Communications expert, Dr. Rovin Deodat who generously donated his time to help us create a professional approach to achieving National Desire For Hindi; using modern methods, multi and social "media," he devised a 4-

phased position paper and awareness activities into a time framed schedule.

We have found that children attend Hindi classes when they are young and as they mature their parents stop them because they need to concentrate on the 10-15 CXC subjects they seem compelled to have to write to be recognized for academic excellence. Hindi suffers.

Our Muslim brethren ensure their a “children,” exams or not, attend Masjid and learn Urdu and/or Arabic, they are encouraged on religious grounds and it appears to work as the children have knowledge and visible grasp of their languages.

In Guyana we need a holistic approach using all media, human and other resources available of which there are not much. We are working to create new and young and exciting Hindi lessons to be broadcast on TV, radio etc. 15 minute lessons covering from the alphabet to basic sentences with 10 minute Bol Chaal, which will be reproduced on radio and printed in newspapers etc. Like my sister from New Zealand said we wish to let youths know Hindi is cool or fashionable!

Just like people tune into watching their favourite soaps, like Jodha-Akbar, Chotee Bahu, etc. the nation can tune-in to learning Hindi. We also have a school and community workshop campaign under way to show people the ease with which Hindi can be learnt to speak and to make them aware of the importance of Hindi.

We will also launch quizzes, essay, poetry competitions with prizes to keep Hindi in the hearts and minds of the nation.

It may not sound like much at this stage but broad based consultation and understanding of our youth and nation has led us to the feeling that this is the way forward for us.

Also in getting the nation’s attention and whetting their appetite for Hindi, we will need to train teachers to be able to keep more classes eventually in all 10 of our regions in “Guyana.”

The law in Guyana provides that if there is a teacher who knows Hindi already and is teaching in any school, that school must provide and support in terms of the timetable for the teacher to keep Hindi classes.

This is a bonus for us since all our volunteers work for free in their spare time, to have to pay for a venue would kill Hindi classes right there. It would be good to be able to offer a modest financial payment to help teachers with things like transportation costs, copying materials, books etc.

In training teachers and inspiring the nation to embrace Hindi, we feel our Government will acknowledge our efforts and lend their much needed support.

Recommendations: We are humbly requesting all the resources listed below by way of donation, template etc to help us on our mission.

1. There is a need for flexible English speaking

teachers, who know and can teach Hindi to come to Guyana, etc. for at least a 3-4 year period and teach us to read, write and particularly speak Hindi.

The G.H.P.S will do all the groundwork and make all the preparations for the teachers to function; accommodation, food, transportation, but we can't afford to pay you.

2. We need the latest and most effective and intensive scientific methods of teaching Hindi both spoken and written.
3. There is a need to have a series of special graded textbooks for the Hindi language written for persons not necessarily familiar with the language, but want to learn it.

   We found useful Samuchee Hindi Shiksha books 1-4 by the late Shri Veda Mitra and Hindi Rachna 1&2 (Grammar). We know there are others we have not seen or heard of yet and are open to suggestions and donations.
4. The creation of an International Fund provided by supporters of Hindi and Culture, to assist lovers of Hindi to purchase books, pay for teachers, provide learning aids/software etc so we can help ourselves and help others.
5. The textbooks must attempt to integrate Nagri script and translation simultaneously.
6. The textbooks must carry a key to pronunciation of Nagri script and translation simultaneously.
7. The use of abridgements of Indian classical and historical texts should form a significant component of the new textbooks.
8. Nursery picture books, junior and beyond Hindi dictionaries with pictures should be compiled to go along with the new text books.
9. Learn Hindi/ Bol Chaal, Audio cassettes, CD's, DVD's, YouTube lectures, Hindi teaching websites and Hindi Software etc should be made available free to all who wish to learn and teach Hindi and we are asking for these.
10. We also need our religious texts like the Ramcharitmanas, The Bhagvad Gita, Mahabharata, Vedas etc translated and made available to us, especially large print for the Seniors who love Hindi but can't see small writing.
11. Guyana Hindi Prachar Sabha got a letter from the High Commission of India asking for recommendation of youths to go to India for 3 weeks for a culture immersion type experience, not a mention of Hindi was made which is a wasted opportunity. Our response was to please include Hindi in the cultural experience.
12. We need Hindi lessons and story books in Amar Chitra Katha style.
13. We would like to see Hindi Lessons and Classical/Religious/Historical Texts on CD, DVD made available free to those who wish to learn and teach.

14. We badly want Hindi to be spoken by the diaspora particularly Guyana within 5 years and are planning the work schedule.

In short the sweetness of Hindi has left our lives, we recognized this since Hindi teachers stopped coming to Guyana. Yet we have not been in slumber, we have been working tirelessly to keep Hindi alive.

The Guyana Hindi Prachar Sabha has attended 5 out of the 9 conferences, the level is way above our head and we have learnt nothing.

In attending this conference in Mauritius and connecting to genuine Hindi Premi, organizers Mauritius I feel for the first time I am in the right place with the right people and am confident our dreams for Hindi will be fulfiled.

I only wish my Pitaji Beni was here, being amongst all of you would make tears well in his eyes and his heart swell with pride to learn of all the good work you are doing and keep his inferno of passion for Hindi burning brightly.

The World Hindi Conference is aimed at advanced students and masters of Hindi, not beginners like us. If Hindi is to be a major world language, it will need to be taught worldwide. When learning a new language you will need to start from the beginning, the basics. Why not reflect this in the conference?

We had asked that for the 10th and every Conference to follow, special teaching sessions be included for novices, in workshop format. Using modern methods and techniques to teach beginners to read, write and speak Hindi. We have been calling for this recognition and inclusion in the World Hindi Conference for many years, at all levels and forum without success.

If the World Hindi Conference is not the right forum, then let Mahatma Gandhi Institute, Mauritius take the lead and with the Government of India and the Government of Mauritius and the World Hindi Secretariat, let us continue with the International Conference as often as is economically viable and let us build on the expected concrete foundation we long to be created here.

We are on bended knees with clasped hands and all humility, begging the Government of India & Mauritius and this conference to help us with the tools we need, so we can have Hindi as a spoken language in our lifetime.

Hindi is not just a language to us, it's our life, if Hindi dies, as Indians we die, if we die humanity will suffer.

"bahut dhanyavaad! Jay Hind! Hindi maa ki jay ho!"

‘‘बहुत धन्यवाद! जय हिंद! हिंदी माँ की जय हो!’’

सचिव, गयाना हिंदी प्रचार सभा, गयाना
गयाना हिंदी प्रचार सभा
1 एनमोर पास्टर, ई.सी.दी., गयाना, दक्षिण अमेरिका
jaihindimaa@gmail.com

पंचम सत्र : मॉरीशस में तृतीयक स्तर पर हिंदी शिक्षण एवं शोध व प्रकाशन

14. मॉरीशस में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण

डॉ. अलका धनपत

महात्मा गांधी संस्थान के इस सभागार में आप सभी का स्वागत है। आज विश्वविद्यालय स्तर पर पूर्वी भाषा शिक्षण के लिए महात्मा गांधी संस्थान की पूरे देश में विशेष पहचान है। हिंदी शिक्षण को यहाँ तक पहुँचाने के लिए संस्थान ने काफ़ी लंबी तथा संघर्षशील यात्रा तय की है। उस यात्रा की रिपोर्ट से पूर्व मैं महात्मा गांधी संस्थान में आज विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण की एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना चाहूँगी। संस्थान के हिंदी विभाग में छः प्रवक्ता हैं। अन्य विभागों के कुछ प्रवक्ता जिनके पास हिंदी की उच्च डिग्री है हिंदी शिक्षण के कार्य में सहयोग देते हैं। हिंदी विभाग संस्थान का एक बड़ा विभाग है। इस विभाग में छात्रों की संख्या भी सर्वाधिक है। सन् 2014-2015 में संस्थान विश्वविद्यालय स्तर पर निम्न कोर्स चला रहा है—

महात्मा गांधी संस्थान

मॉरीशस यूनिवर्सिटी तथा मॉरीशस इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन के सहयोग से

MGI in collaboration with UOM & MIE – 2014-2015

पाठ्यक्रम कोर्स (Mahatma Gandhi Institute in collaboration with University of Mauritius)	**छात्रों की संख्या**
बी.ए. हिंदी ऑनर्स प्रथम वर्ष	39
बी.ए. हिंदी ऑनर्स द्वितीय वर्ष	27
बी.ए. हिंदी ऑनर्स तृतीय वर्ष	28
बी.ए. हिंदी ऑनर्स (जॉइंट) प्रथम वर्ष	3
बी.ए. हिंदी ऑनर्स (जॉइंट) द्वितीय वर्ष	2
बी.ए. हिंदी ऑनर्स (जॉइंट) तृतीय वर्ष	3
बी.ए. हिंदी ऑनर्स (पी/टी) द्वितीय वर्ष	6
एम.ए. हिंदी ऑनर्स (2013-2014)	5
एम.ए. हिंदी ऑनर्स (2014-2015)	4
पाठ्यक्रम कोर्स (Mahatma Gandhi Institute in collaboration with Mauritius Institute of Education)	
पी.जी.सी.ई. पी/टी हिंदी	13
पी.जी.सी.ई. फ़ुल टाइम हिंदी	18
मॉरीशस में पीएचडी छात्र (हिंदी)	21

पाठ्यक्रम कोर्स (Mahatma Gandhi Institute in collaboration with University of Mauritius)	एम.फिल, पीएचडी की छात्र संख्या—हिंदी
पीएचडी (2012 तक पूर्ण कर चुके) 91 91 पीएचडी (कर रहे छात्र)	4 6
पाठ्यक्रम कोर्स (Open University, Mauritius)	
पीएचडी (कर रहे छात्र) नवीन पंजीकरण	4 2

इससे पूर्व कि हम महात्मा गांधी संस्थान की यात्रा के साथ अपनी यात्रा को आगे बढ़ाएँ, मैं पूर्व में डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज तथा संप्रति ऋषि दयानंद संस्थान, जो विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण का कार्य कर रहा है, उसकी चर्चा करना चाहूँगी।

डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज (2007-2013), संप्रति ऋषि दयानंद संस्थान (2014), डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज (आर्य सभा), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सहयोग से कार्य कर रहा था और अब R.D.I ओपन यूनिवर्सिटी, मॉरीशस के सहयोग से।

डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज के कोर्स (2007-2013)

वर्ष	B.A (General) P/T Hindi, Sanskrit, Philosophy, English	M.A P/T Hindi
2007-2008	32	-
2008-2009	25	9
2009-2010	11	12
2010-2011	25	9
2011-2012	23	10
2012-2013	26	10

ऋषि दयानंद संस्थान ने अभी हिंदी के किसी कोर्स को विज्ञापित नहीं किया है।

आज ऋषि दयानंद संस्थान ओपन यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर विश्वविद्यालय स्तर पर कार्य करने का निर्णय ले चुका है।

आज मॉरीशस में हिंदी शिक्षण पूरे देश के लगभग प्रत्येक प्राइमेरी एवं सेकंडरी स्कूल में हो रहा है। मॉरीशस विश्वविद्यालय के साथ मिलकर महात्मा गांधी संस्थान, विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण कर रहा है।

सन् 1968 में मॉरीशस स्वतंत्र हुआ। देश के निर्माताओं ने नवनिर्माण के स्वप्नों को साकार करने का बीड़ा उठाया। इसमें शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण विषय था। स्वतंत्र मॉरीशस के शिक्षित समाज के सपने की एक दिशा पूर्वी भाषाओं को देश की मुख्य धारा के साथ जोड़ना भी था।

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में मॉरीशस

के प्रथम प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने कहा था, ''मॉरीशस में हिंदी का विकास हमारे समाज के इतिहास का दस्तावेज़ है।''

इसी सम्मेलन के पहले सत्र के संचालन में डॉ. धर्मवीर भारती ने कहा था, ''इसी विराट विश्व हिंदी सम्मेलन का बीज वही गन्ने के खेतों की बैठकाएँ थीं। उन पूर्वजों को मैं प्रणाम करता हूँ। आज सचमुच हिंदी बैठकाओं से यूनिवर्सिटी तक पहुँच गई है। आज वह अपनी अस्मिता की लड़ाई के लिए अधिक सशक्त हो गई है।''

एम.जी.आई. ने इस लक्ष्य को पाने के लिए एक लंबा सफ़र तय किया है। संस्थान से बी.ए., एम.ए. की डिग्री प्राप्त छात्र पूरे देश में आज अध्यापन, मीडिया, समाचार-वाचन, अनुवादक, एम.बी.सी., सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी तथा पंडितों के रूप में सर्वत्र कार्य कर रहे हैं।

भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी तथा मॉरीशसीय प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम द्वारा 3 जून, 1970 को एम.जी.आई. की आधारशिला रखी गई।

महात्मा गांधी संस्थान ऐक्ट नं. 64 सन् 1970 में बना और सन् 1975 में इस संस्थान ने कार्यारंभ किया तथा पुनर्सुधार के साथ ऐक्ट नं. 49 सन् 2002 में पुनः प्रकाशित हुआ।

इसका मुख्य उद्देश्य था—

- महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि स्वरूप, भारतीय संस्कृति एवं परंपरा, शिक्षा के अध्ययन हेतु एक शिक्षण केंद्र की स्थापना।
- शिक्षा तथा संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना।

इसी उद्देश्य हेतु भाषा, संस्कृति, कला, दर्शन, संगीत, मॉरीशसीय क्षेत्र अध्ययन आदि का विस्तार किया गया।

आज एम.जी.आई. में विश्वविद्यालय स्तर पर पाँच भाषाओं में स्कूल ऑव इंडियन स्टडीज़ कार्य कर रहा है। ये भाषाएँ हैं हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगु तथा मराठी। लेकिन इस स्तर पर पहुँचने के लिए एम.जी.आई. ने एक लंबे सफ़र को पूरा किया है। बैठकाओं की हिंदी आज विश्वविद्यालय तक पहुँच गई है और एम.जी.आई., मॉरीशस विश्वविद्यालय के साथ मिलकर पीएचडी तक के छात्रों को पढ़ा रहा है।

एम.जी.आई. ने यहाँ तक पहुँचने के लिए किन मील के पत्थरों को रास्ते पर आनेवालों के लिए छोड़ा है आइए उसे समझने का प्रयास करें।

वर्ष	कार्यभार/योजनाएँ	उपलब्धियाँ
1975-1976 नींव का वर्ष	• सेकंडरी स्कूल का प्रारंभ • स्कूल ऑव म्यूज़िक ऐंड आर्ट • परीक्षा विभाग • प्रकाशन विभाग • अध्यापक शिक्षण • पाठ्य-पुस्तक निर्माण • पाठ्यक्रम निर्माण • निरीक्षण तथा रिपोर्ट • अध्यापन-कार्य • सेमिनार, कोर्स तथा विशेष भाषणों का आयोजन	• पूर्वी भाषाएँ तथा संस्कृति का प्रचार-प्रसार (प्राइमेरी तथा सेकंडरी स्तर पर)। • संस्थान के निवेदन पर पूर्वी भाषाएँ (हिंदी तथा उर्दू) HSC स्तर पर 'प्रिंसिपल विषय' के रूप में कैंब्रिज सिंडिकेट ने स्वीकार कीं। • उत्तमा के छात्रों के लिए (हिंदी साहित्य सम्मेलन)

		शनिवार तथा एक अन्य दिन कक्षाएँ। • HSC में हिंदी तथा उर्दू लेनेवाले छात्रों की मदद हेतु शनिवार को कक्षाएँ लगाईं। • भारत सरकार से प्रिंटिंग प्रेस मिला। • मॉरीशस की हिंदी कविता (12 श्रेष्ठ हिंदी कवियों की रचनाएँ छपीं)। • फ़ॉर्म ।, ।। के लिए अनुवाद पर एक पुस्तक छपी, लेखक थे श्री मुनीश्वरलाल चिंतामणि। • मॉरीशस लघु कथा संग्रह भी छपा। • पाठ यूनिट तथा 'शिक्षण विधि' तैयार करके भेजना। • उस समय की पूर्वी भाषाओं की पुस्तकों का निरीक्षण कर, एक रिपोर्ट मंत्रालय को भेजी गई। • पूर्वी भाषा का पाठ्यपुस्तक निर्माण तथा लेखन प्रक्रिया।
अप्रैल 1976	• 2 सप्ताह का कोर्स	• रचनात्मक लेखन।
	• 2 सप्ताह का कोर्स	• नाट्य लेखन।
	• 'इंडक्शन कोर्स'	• पूर्वी भाषा के सेकेंडरी अध्यापकों के लिए
28-30 अगस्त, 1976	• विश्व हिंदी सम्मेलन	• आयोजन का कार्य भार महात्मा गांधी संस्थान ने संभाला।

1977-78

वार्षिक रिपोर्ट /Annual report 1977 (MGI)

'By next year we are planning to enter the sphere of Tertiary Studies, with a degree course in music and we hope that this will lead on to courses in the humanities and the social sciences.'

—Dr. K. Hazareesingh (Director, MGI)

कार्यभार/ योजनाएँ	उपलब्धियाँ
• सन् 1976 के कार्यक्रम यथावत् चल रहे थे। • 'पार्ट टाइम' अध्यापक भी लिए गए।	• छात्रों की संख्या बढ़ने लगी Lower फ़ॉर्म VI –15 Upper फ़ॉर्म VI –20 P/T अध्यापक –03 उत्तमा I –89 II –86 P/T अध्यापन –09
• 10 सितंबर से 17 अक्टूबर, 1977 में (MGI के निवेदन पर भारत से प्राध्यापकों का एक दल आया)	• सन् 1975 से चलनेवाले सभी कार्यक्रमों का निरीक्षण किया गया तथा सुधार के साथ भावी योजनाएँ बनीं। • अपने कोर्स को स्तर तक लाने के लिए, छात्रों हेतु पूर्व प्रशिक्षण कोर्स चलाए जाएँ। • प्रवेश परीक्षा का स्तर बढ़ाया जाए। • श्रवण कौशल को बढ़ाया जाए (कैसेट्स आदि का प्रयोग)। • मीडिया (टेलीविजन, रेडियो) पर शिक्षण संबंधी हिंदी के कार्यक्रम बढ़े ।
• हिंदी पत्रिका का प्रकाशन	• मार्च 1978 से वसंत पत्रिका छपने लगी। • अध्यापन प्रशिक्षण परीक्षा (1978) में 2445 छात्रों ने परीक्षा में भाग लिया • 'बैठका' अध्यापकों का प्रशिक्षण (1978) —35 ने प्रशिक्षण लिया

1979-1981

अब वार्षिक रिपोर्ट के विषय क्रम में 'भारतीय भाषा अध्ययन विभाग' सबसे ऊपर आने लगा।

आयोजन	उपलब्धियाँ
• इस वर्ष वार्तालाप पर आधारित मौखिक वाचन का एक वर्ष का कोर्स शुरू किया गया।	• एक लाख शब्दों का शब्दकोश तैयार किया गया। हिंदी-फ्रेंच-फ्रेंच-हिंदी।
• दो वर्ष का सर्टिफ़िकेट कोर्स शुरू किया गया।	• 30,000 पुस्तकें पुस्तकालय में थीं, जिनमें 50% भारतीय भाषाओं की थीं।
• P.G.C.E. (Post Graduate Certificate in Education) शुरू किया गया (MIE तथा MGI)	• (वरिष्ठ एजुकेटर हेतु) 8 छात्रों ने कोर्स पूरा किया। (विषय विशेष, मुख्य-शोध) प्रोजेक्ट, शिक्षण अभ्यास कार्य-MGI का कार्यभार था)।
• ABC (Adult Beginner's Course)	
• V.C. (Vacation course for CPE)	
• DHT (Deputy Head Teacher's course)	• सहायक सुपरवाइज़र्स हेतु (मंत्रालय, MIE तथा MGI ने मिलकर यह कोर्स चलाया)

1982-1986

उपलब्धियाँ	अन्य जानकारियाँ
सन् 1986 में विभाग (Department of Languages) के अध्यक्ष श्री मुनीश्वरलाल चिंतामणि बने। हिंदी के इंचार्ज बने श्री टी. पांडे। प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष—श्री अभिमन्यु अनत।	हिंदी विभाग के कार्य बढ़ने लगे थे इसलिए विभागाध्यक्ष तथा एक हिंदी के इंचार्ज बनाए गए। सन् 1986 में चिंतामणिजी ने भारत से पीएचडी पूरी कर ली थी।
छात्र संख्या— ABC कोर्स हिंदी PGCE कोर्स हिंदी	I, II 54 (1985-86) 17 (1985-86)
• **1982 में श्री बिसुनदयाल निदेशक बने।**	सपने ने आगे का सफ़र तय करने में गति पकड़ी।

• सन् 1985-86 में तीन अध्यापकों ने PGCE किया और बाद में MGI के हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक पद से सेवानिवृत्त हुए।	श्री को. रामफल, डॉ. बी. जगासिंह, डॉ. के. रघुनंदन।
• 'वसंत' के विशेषांक निकले (हिंदी पत्रिका)	मार्च 1986, बासुदेव बिसुनदयाल विशेषांक जुलाई 1986, रवींद्रनाथ टैगोर विशेषांक
• टेलीविज़न तथा रेडियो पर हिंदी पाठों का प्रसारण	प्राइमेरी के लिए—रेडियो पर सेकंडरी के लिए—टेलीविज़न पर
• 'टीचर एजुकेशन' (हिंदी) कोर्स शुरू हुआ।	MIE/MGI के सहयोग से।

1987-1989

आयोजन	अन्य जानकारियाँ
DHT (Deputy Head Teacher's course)	दो सप्ताह तक चला (पूर्वी भाषाओं के) MIE, MGI के सहयोग से।
सेमिनार, कार्यशालाएँ, कवि जयंतियाँ	27 अक्टूबर, 1987 (हिंदी साहित्य तथा हिंदी लेखन पर) मुख्य संयोजक: भारत से विशिष्ट साहित्यकार थे।
सेकंडरी स्कूलों के अध्यापकों (हिंदी, उर्दू) के लिए राष्ट्रीय सेमिनार हुआ।	MES, MGI के सहयोग से जून 1989—235 स्थानीय लेखकों के साथ सेमिनार अप्रैल 1989—प्रेमचंद पर सेमिनार
ABC कोर्स,	**छात्र संख्या** 1988 1989 **ABC –** 56 48
1988-'डिप्लोमा इन हिंदी स्टडीज़ तीन वर्ष का P/T कोर्स	23 14

1988-1989

योजनाएँ	उपलब्धियाँ
• प्रकाशन में विस्तार, पुस्तक छपाई तथा विमोचन तथा मॉरीशस के नव हिंदी कवि (सं. अभिमन्यु अनत)	मधु-गुंजार-ब्रजेंद्र कुमार भगत, मॉरीशस की हिंदी कहानियाँ
B.A. हिंदी-फ्रेंच पाठ्यक्रम तैयार किया	UOM तथा MGI के सहयोग से यह डिग्री कोर्स की तैयारी का वर्ष था।
डिप्लोमा का नया कोर्स तैयार किया ***स्कूल ऑफ इंडियन स्टडीज़ बना***	• केवल HSC पास प्राइवेट स्कूल के अध्यापकों के लिए। • सेकंडरी में पढ़ाने के इच्छुक छात्रों के लिए। • छात्र जो बी.ए. में भाषा लेंगे।
सन् 1989 में • **पूर्वी भाषाओं में 'डिप्लोमा कोर्स' की योजना बनने लगी, जो डिग्री कोर्स की नींव थी।** • **बाकी सभी कोर्स पाठ्यक्रम पर कार्य यथावत् चल रहे थे।**	मीराबाई, प्रेमचंद, कबीर पर हिंदी में सी.डी. बनी। हिंदी का कार्य निरंतर बढ़ रहा था। हिंदी शिक्षण हेतु, विभाग द्वारा आधारभूत शब्दावली तैयार की गई।

1990-1991

योजनाएँ	उपलब्धियाँ
• जो हिंदी के एजुकेशन ऑफ़िसर थे तथा सेकंडरी में पढ़ा रहे थे, उच्च अध्ययन हेतु (हिंदी) संस्थान की ओर से भारत भेजे गए।	• एम.ए., एम.फिल अथवा पीएचडी स्तर तक
• सन् 1991 प्रथम बाह्य निरीक्षक (बी.ए. हिंदी के कार्य के लिए भारत से आए)। • बी.ए. हिंदी/फ्रेंच/अंग्रेज़ी/कोर्स जॉइंट रूप में शुरू हुआ।	• डॉ. टी.एन. बाली यह परंपरा आज तक चल रही है।
• मूल्यांकन के कोर्स के निरीक्षण हेतु भी पटना से प्राध्यापक आए तथा उन्होंने अनेक सत्रों में अध्यापकों के साथ कार्य किया।	• 1 नवंबर, 1991 से 7 जनवरी, 1992 तक डॉ. रामवचन राय (पटना विश्वविद्यालय) • Feb 1991 – Durban Westville University प्रवक्ता : श्रीमती उषा देवी शुक्ला

• Pilot basis Advance Level course French/English में शुरू किया गया। • 'एजुकेश्न प्रोग्राम' पर विचार शुरू हुआ। • हिंदी नाटकों की प्रस्तुतियाँ प्रारंभ	• 150 छात्रों ने प्रवेश लिया। उद्देश्य था—छात्रों को तृतीय स्तर के प्रवेश योग्य बनाना। • 'भरत सम भाई' (2 अगस्त, 1991) लेखक तथा प्रस्तुतकर्ता—श्री अनत

1992-1993

योजनाएँ	उपलब्धियाँ
दिसंबर 1993, चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन पर हिंदी की कार्यशालाएँ, सेमिनार, प्रकाशन कार्य चलते रहे। • सभी कोर्स आवश्यकता तथा पुनः सुधार के साथ आगे बढ़ते गए। • ABC प्राइमेरी अध्यापन प्रशिक्षण, डिप्लोमा, उत्तमा, HSC के छात्रों का शिक्षण, पी.जी.सी.ई. ये सभी कोर्स तृतीय स्तर की पढ़ाई के लिए छात्रों की मानसिकता को तैयार कर रहे थे। • अब तृतीय स्तर (Tertiary Education) की स्थापना हुई तथा स्कूल ऑव इंडियन स्टडीज़ के अंतर्गत हिंदी विभाग तथा अन्य विभाग एवं स्कूल भी एक नए शीर्षक के अंतर्गत अलग से अपना-अपना कार्य देखने लगे। एक नया 'स्ट्रेटेजिक प्लान' बना।	• 'मॉरीशस में हिंदी का विकास' विषय पर प्रदर्शनी MGI ने लगाई • छात्र संख्या

	1992	1993
B.A. yr I	5	12
B.A. yr II	3	1
B.A. yr III	3	3
PGCE	15	-
Diploma	24	16
Primary Teacher Certificate course (टी.सी.पी)	34	
Advance Certificate in Education in Hindi Studies	104	

1994–1995

योजनाएँ	उपलब्धियाँ
• बी.ए. तथा अन्य कक्षाओं के लिए अब पढ़ाने की प्रविधि पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।	ये प्रविधियाँ थीं— • अध्यापक के आमने-सामने • मीडिया पर आधारित • डिस्क लर्निंग प्रविधि (दूर-दूर छात्रों तक पहुँचने के लिए)
• निदेशक अध्यापकों को भी उच्च शिक्षा के लिए सुविधा प्रदान कर रहे थे।	विशेष रूप से हिंदी विषय में सन् 1995 में जो बाह्य निरीक्षक के रूप में मॉरीशस आए थे, उनके निर्देशन में BA (HONS) Hindi का पाठ्यक्रम विभाग ने तैयार किया।
• अन्य सभी कोर्स चल रहे थे पर अब MGI तृतीय स्तर (Tertiary Education) पर केंद्रित हो रहा था।	1995 में BA (Hons) Joint Hindi से 2 छात्र उत्तीर्ण हुए।
• BA (Hons) Hindi, BA (Hons) Joint Hindi और P.G.C.E. Hindi, इनका कार्यक्रम तथा मूल्यांकन का आधार मानक था।	• मॉड्युल्स प्रणाली, सेमेस्टर, क्रेडिट प्रणाली, निरंतर दत्त कार्य तथा छः माह बाद परीक्षाएँ!
• MGI के पास लगभग 900 छात्र थे— Meca Cognitive Balance Theory (Reinforce Theory) के अंतर्गत दो वर्ग बने।	• एक वर्ग को आमने-सामने (Face to Face) तथा विभिन्न मोड से शिक्षित करना था तथा दूसरे वर्ग को Distance Education Material देकर उन्हें तृतीय स्तर की शिक्षा के लिए तैयार किया गया।

2000–2001

यह वर्ष महात्मा गांधी संस्थान के बीज रूप में किए गए कार्यों का प्रगति-वर्ष था। तृतीय स्तर (Tertiary) में छात्रों की संख्या बढ़ने लगी। नए कोर्स विज्ञापित हुए। अब पुराने चल रहे कोर्स के साथ-साथ M.A.Hindi के पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य पूरा हो गया।

कोर्स	छात्र संख्या
B.A. (Hons) Hindi with Education (MGI + MIE)	Level I–38 Level II – 33
B.A (Hons) Joint B.A (Hons) Single	Level I Joint – 11 Level I Single – 33
प्राइमेरी अध्यापक प्रशिक्षण	32
B.A (Hons) Hindi with Education	38

योजनाएँ	उपलब्धियाँ
B.A (Hons) Hindi I,II,III Joint/single	पाठ्यक्रम पर पुनर्विचार (Review) हुआ। बाह्य परीक्षा की देख-रेख में।
शोध कार्य	PhD स्तर पर (UOM तथा MIE)

		2000-2004	2004-2005	2007-2008
Subject	**Level**	**No. of Students**		
B.A (Hons) Hindi Joint	I	11	09	8
	II	10	11	09
	III	12	-	11
B.A (Hons) Hindi Single	I	33	30	35
	II	30	33	30
	III	35	30	33
B.A (Hons) Hindi with Education	I	38	36	18
Diploma in Hindi Studies (Credit System पर आधारित)	I	15	13	08
	II	08	15	13
M.A. Hindi	I	20	16	12
	II		20	16

Courses	2009-2010	2010-2011	2011-2012	2013-2014	2014-2015
Diploma Year 1 (P/T)	-	9	-	-	-
Year 2 (P/T)	6	-	5	-	-
Year 3 (P/T)	-	6	-	05	-
BA(Hons) Hindi Year 1 (F/T)	28	26	29	31	39
Year 2 (F/T)	24	25	26	27	27
Year 3 (F/T)	23	24	25	29	28
BA(JOINT) Hindi Year 1 (F/T)	11	5	4	4	3
Year 2 (F/T)	-	11	5	3	2
Year 3 (F/T)	-	-	10	4	3
BA (HONS) Hindi Year 1 (P/T)	13	-	10	5	
Year 2 (P/T)	12	13	-	10	6
MA Year 1 (P/T)	7	13	05	4	
Year 2 (P/T)	-	7	13	05	4
PGCE Year 1 P/T, F/T	26	14	14		(P/T-13), (F/T-18)
Year 2	-	26	14	14	
TDP Year 1	-	23	19	-	
Year 2	41	-	23	19	
ACE	29	29	70	-	
DHT	-	21	-	-	

नया सपना

अब एम.जी.आई. अपने कुछ पाठ्यक्रमों को ऑनलाइन अथवा डिस्टेंस एजुकेशन द्वारा केवल मॉरीशस वासियों तक ही नहीं, वरन अपने आस-पास के टापुओं (रोड्रिग्स, रीयूनियन आदि) तथा अफ्रीका तक इसका विस्तार एवं प्रसार करने की योजना बना रहा है।

योजनाबद्ध कार्य, भारी बजट, परिश्रम तथा कुशल निर्देशन द्वारा यह सपना भी यथार्थ होगा। ऐसी हम सभी अकादमिक सदस्यों की आशा है।

आभार

MGI Library
www.mgirti.info
www.openuniversity.mu
www.uom.ac.mu
ICGIC Library
Indian Studies Registry (MGI)
D.A.V. Degree College/ R.D.I.

अध्यक्षा, हिंदी विभाग, महात्मा गांधी संस्थान
सोल्फेरिनो नो.1, वाक्वा, मॉरीशस
alkadunputh@yahoo.co.in

15. मॉरीशस में हिंदी-शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार में शोध की भूमिका

डॉ. माधुरी रामधारी

मॉरीशस में हिंदी का प्रचार भारतीय आप्रवासियों के आगमन के साथ आरंभ हुआ। शोध का बीजारोपण उस समय हुआ जब पूर्वज रामचरितमानस, गीता, हनुमान–चालीसा आदि धर्म–ग्रंथों से उन विशिष्ट दोहों, चौपाइयों एवं श्लोकों की खोज करके पठन करते थे, जिनसे यंत्रणाओं को सहने की शक्ति प्राप्त हो। अंग्रेज़ी के 'रिसर्च' शब्द का हिंदी अनुवाद 'शोध' है। 'रिसर्च' का तात्पर्य है—जो पहले से खोजा जा चुका है, उसकी पुन: खोज करना अथवा विषय की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए बार–बार खोज करना। मॉरीशस के 'बैठकाओं' में जब बच्चों को हिंदी पढ़ाने का समय आया तब स्वर, व्यंजन, मात्रा तथा संयुक्ताक्षर का बोध कराने के पश्चात उपलब्ध धर्म–ग्रंथों में पुन: खोज की गई और उन सरल शब्द–समूहों को उद्‌धृत करके बच्चों को पढ़ाया गया जिन्हें वे सहजता पूर्वक कंठस्थ कर सकें और जिनके नित्य पठन से वे शब्दार्थ ग्रहण कर सकें—

''उस समय के विद्यार्थी अक्षर–बोध हो जाने के बाद रामलीला, हनुमान–चालीसा और बाद में रामायण और आल्हा–ऊदल का सस्वर पाठ करने लग जाते थे। इस प्रकार इन हस्तलिखित ग्रंथों के नित्य पठन–पाठन से उन्हें शब्दों का अर्थ और पंक्तियों का आशय बहुत संघर्ष के बाद पता चलता था।''

यद्यपि के. हज़ारीसिंह की मान्यता है कि प्रारंभिक चरण में बैठकाओं में हिंदी–शिक्षण की अपेक्षा धर्म की शिक्षा अधिक होती है और अपने ऐतिहासिक दस्तावेज़ 'मेरी हिंदी यात्रा' में श्री सोमदत्त बखोरी ने लिखा है—

''शाम को मोंताई लोंग के शिवालय में पढ़ने जाता था। वहाँ पर पंडित दीक्षित पढ़ाते थे। इनकी पढ़ाई से अधिक मुझे इनकी पूजा की याद है।''

तथापि यह निर्विवाद है कि बैठकाओं की उर्वर भूमि में हिंदी–शिक्षण का बीज रोपा गया और इसी के साथ शोध का भी बीजारोपण हुआ। भारत से पुस्तिकाएँ मँगवाकर शिक्षण–कार्य का विस्तार किया गया। सन् 1922 में पंडित अनिरुद्ध शर्मा ने पोर्ट–लुई बाज़ार में एक कोना लेकर 'सरस्वती पुस्तकालय' (वर्तमान 'हरी बुक शॉप') की स्थापना की। मॉरीशस के इस प्रथम हिंदी पुस्तकालय में भले ही प्रारंभ में धर्म, दर्शन, संस्कृति और ज्योतिष–विद्या संबंधी पुस्तकें बिकने लगीं, किंतु कालांतर में स्वयं पंडित अनिरुद्ध शर्मा भारत से श्री मोतीलाल बनारसीदास के 'डायमंड पॉकेट बुक', मुंशी प्रेमचंद के 'गोदान' और 'कर्मभूमि' तथा हिंदी की सरल बाल–पुस्तकें लाकर 'सरस्वती पुस्तकालय' में उपलब्ध कराने लगे। फलस्वरूप, हिंदी–साहित्य के प्रति पाठकों की रुचि बढ़ी, साहित्य–शिक्षण हेतु उपयुक्त सामग्री प्राप्त हुई, साहित्यिक–रचनाओं में शोध करने की वृत्ति जागृत हुई और हिंदी–शिक्षण को नया आयाम मिला।

द्वितीय विश्वयुद्ध में बाल–पुस्तकों का अभाव पड़ा और शिक्षकों ने पुन: शोध के आधार पर हिंदी की शब्द–संपदा एवं संरचनात्मक व्यवस्था से शब्दावलियों तथा वाक्य–संरचनाओं की खोज करके नवीन पाठ्य–सामग्री तैयार करने का प्रयास किया। डेविड हॉपकिंस ने शिक्षक को 'शोधकर्ता' माना है—"A teacher is a researcher."

सन् 1935 में हिंदी प्रचारिणी सभा में हिंदी शिक्षक के रूप में कार्यरत श्री सोमदत्त बखोरी ने सभा की माँग पर बनवारीलाल पचौरी रचित 'हिंदी भाषा व्याकरण' तथा शूरेश्वर पाठक विद्यालंकार लिखित 'व्याकरण मयंक' आदि पुस्तकों में शोध–कार्य करके हिंदी की पहली पुस्तक तैयार की। सन् 1947 में उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद के हिंदी विश्वविद्यालय से संचालित 'परिचय' परीक्षा में भाग लेनेवाले विद्यार्थियों की अधिगम–सुविधा के लिए भारत से मँगाई गईं 'हिंदी गद्य की प्रवृत्तियाँ', 'हिंदी के गौरव ग्रंथ' और 'हिंदी–साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' के आधार पर अनुसंधान करके 'हिंदी–साहित्य की एक झाँकी' लिखी, जिसे 'परिचय' के पाठ्यक्रम में निहित किया गया। सन् 1978 में इस पुस्तक का नया

संस्करण तैयार करने पर श्री सोमदत्त बखोरी ने लिखा—

''ढेर सारी पुस्तकों में देखना पड़ा और 'झाँकी' के ढाँचे को बदलना पड़ा। फलस्वरूप एक नई पुस्तक लिख डाली जिसका शीर्षक 'हिंदी-साहित्य का परिचय' रखा।''

मॉरीशस में अगर हिंदी पठन-पाठन के साथ शोध का बीज लगा तो पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की प्रक्रिया के साथ इस बीज में अंकुर फूटा। इस तथ्य का पुष्टिकरण सन् 1954 में हुआ जब प्राथमिक पाठशालाओं में पूर्णकालिक हिंदी-अध्यापकों की नियुक्ति के पश्चात हिंदी-शिक्षण कार्य सुनियोजित रूप से चलने लगा और प्रो. रामप्रकाश का ध्यान उस समय प्रयुक्त पाठ्य-पुस्तक 'भारत की राष्ट्रभाषा पुस्तक-माला' भाग एक से छः की अपेक्षा मॉरीशसीय परिवेश का दिग्दर्शन करानेवाली पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण की ओर केंद्रित हुआ। वरिष्ठ अध्यापकों के सहयोग से शोधकार्य किया गया और सन् 1957 में 'नवीन हिंदी पाठमाला' पहली से छठी तक की पुस्तकों का निर्माण किया गया। इस संदर्भ में श्री प्रह्लाद रामशरण कहते हैं—

''भारत के विश्वविद्यालयों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर शोध-प्रबंध लेखन का प्रचलन नहीं है। अनुशंसनीय है कि मॉरीशस की उच्च शिक्षा में शोध और उसकी गुणवत्ता को महत्व दिया जाता है।''

''इनमें मॉरीशस के इतिहास, भूगोल तथा सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी दी गई और नवीन शिक्षण-विधि अर्थात तोता-रटन से अक्षर-ज्ञान न कराकर 'सप्तपदी' द्वारा शब्दों के माध्यम से अक्षर-ज्ञान कराने की परिपाटी चली।''

प्राथमिक स्तर पर जब भी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में नवीन बिंदुओं का समावेश किया गया तब नए सिरे से खोज की गई और नवीन सामग्री प्रस्तुत करनेवाली नई पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। यह शृंखला माध्यमिक स्तर पर हिंदी-शिक्षण में जारी रही। इसी शृंखला की एक कड़ी सन् 1978 में डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि द्वारा संपादित 'पद्य-पराग' पुस्तक का प्रकाशन है। भारत तथा मॉरीशस की प्रतिनिधि साहित्यिक रचनाओं के विशिष्ट अंगों की खोज करके डॉ. चिंतामणि ने 'पद्य-पराग' का निर्माण किया जो आज भी माध्यमिक स्तर पर हिंदी-साहित्य की शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग बना हुआ है।

निम्न माध्यमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण हेतु हिंदी भाषिक-व्यवस्था की खोज से लेकर पंचतत्र की कहानियों और विज्ञान के आधुनिकतम साधनों की भी खोज की गई ताकि हिंदी-ज्ञान प्रदान करने के साथ युवा छात्रों के चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सके तथा उन्हें नवीन प्रौद्योगिकी का बोध भी कराया जा सके। नित्य शोध के आधार पर पूरक पुस्तक माला का निर्माण व प्रकाशन निरंतर होता रहा। इस दिशा में 'महात्मा गांधी संस्थान' विशेष रूप से प्रयत्नशील रहा। सन् 1993 से 1996 तक क्रमशः फ़ॉर्म एक से फ़ॉर्म चार और सन् 2012 तथा 2014 में पुनः फ़ॉर्म चार तथा फ़ॉर्म पाँच की पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन इसका ज्वलंत प्रमाण है। पाठ्य-पुस्तक निर्माता प्रायः हिंदी प्राध्यापक एवं हिंदी शिक्षक ही रहे हैं। अगर हिंदी-शिक्षकों में शोध-वृत्ति प्रबल न होती और वे शिक्षण-सामग्री तथा शिक्षण-विधि में नवीनता व निखार लाने में कटिबद्ध नहीं होते तो न प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर हिंदी-शिक्षण का विकास होता और ना ही हिंदी मॉरीशस के विश्वविद्यालय तक पहुँचती।

तृतीयक शिक्षा में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर छात्र व्यवस्थित रूप से शोध-कार्य संपन्न करके लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत करते हैं। 'महात्मा गांधी संस्थान' में हिंदी में डिप्लोमा करनेवाले विद्यार्थी निर्धारित नियम के अनुसार कोर्स के तृतीय वर्ष में हिंदी

भाषा अथवा साहित्य पर गुणात्मक शोध करके 5000 से 6000 शब्दों का लघु शोध-प्रबंध लिखते हैं। मॉरीशस के विश्वविद्यालय में 'महात्मा गांधी संस्थान' के सहयोग से हिंदी में बी.ए. (ऑनर्ज़) करनेवाले छात्र 8000 से 12000 शब्दों का और एम.ए. (हिंदी) के विद्यार्थी 12000 से 15000 शब्दों का शोध-प्रबंध लिखते हैं। 'महात्मा गांधी संस्थान' के सहयोग से 'मॉरीशस शिक्षा संस्थान' (MIE) में पी.जी.सी.ई. (हिंदी) के लिए पंजीकृत विद्यार्थी कोर्स के द्वितीय वर्ष में हिंदी-शिक्षण पर क्रियात्मक अनुसंधान करके 7000 से 10000 शब्दों का लघु शोध-प्रबंध लिखते हैं। डिप्लोमा, बी.ए., एम.ए. और पी.जी.सी.ई. के स्तर पर लिखित शोध-प्रबंधों का प्रकाशन नहीं होता परंतु इनकी प्रतियाँ मॉरीशस के विश्वविद्यालय, 'महात्मा गांधी संस्थान' और 'मॉरीशस शिक्षा संस्थान' के पुस्तकालयों में संदर्भ के लिए शोधार्थियों को उपलब्ध कराई जाती हैं। सन् 2010 में मॉरीशस के विश्वविद्यालय में आमंत्रित विदेशी परीक्षक की रिपोर्ट के अनुसार—

''भारत के विश्वविद्यालयों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर शोध-प्रबंध लेखन का प्रचलन नहीं है। अनुशंसनीय है कि मॉरीशस की उच्च शिक्षा में शोध और उसकी गुणवत्ता को महत्व दिया जाता है।''

यूनिवर्सिटी ऑव मॉरीशस सन् 1995 से विद्यार्थियों को एम.फिल. / पीएचडी करने का अवसर प्रदान कर रहा है। अब तक निम्न चार विद्यार्थियों ने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है जिनमें दो के शोध-प्रबंध पुस्तकाकार में प्रकाशित हैं—

1. डॉ. हेमराज सुंदर—स्वातंत्र्योत्तर मॉरीशस में हिंदी-काव्य की उपलब्धियाँ : एक विश्लेषण, 1998
2. डॉ. राजरानी गोबिन—स्वातंत्र्योत्तर हिंदी-कविता में नोस्टेल्जिया-भावना, 1999 (प्रकाशित)
3. डॉ. विनोदबाला अरुण—वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस में नैतिक-मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन एवं मॉरीशस के हिंदू-समाज पर उनका प्रभाव, 2000 (प्रकाशित)
4. डॉ. माधुरी रामधारी—मॉरीशसीय हिंदी नाट्य-साहित्य में असुरक्षा-भाव, 2012

प्रश्न यह उठता है कि सन् 1994 से 2012 तक अर्थात अठारह वर्षों की दीर्घ कालावधि में मात्र चार विद्यार्थी ही क्यों पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर पाए? इसके उत्तर में वर्तमान प्रतिकुलाधिपति व परिषद अध्यक्ष प्रो. सुदर्शन जगेसर का कथन है—

''शोध के स्तर और उसके नतीजे से ही किसी विश्वविद्यालय की पहचान होती है। यूनिवर्सिटी ऑव मॉरीशस अपना स्तर और अपनी पहचान बनाए रखना चाहता है। इसीलिए बहुत ही नाप-तौल कर पीएचडी की उपाधि देता है।''

सन् 2000 से 2004 तक मॉरीशस विश्वविद्यालय में एम.फिल./पीएचडी के लिए पंजीकृत छात्रों के निर्देशकों की मान्यता है कि शोधार्थी शोध को प्राथमिकता न देने के कारण एकाग्रता एवं दृढ़ता द्वारा शोध-कार्य को विधिवत आगे नहीं बढ़ा पाते हैं। कुछ छात्र निर्धारित कालावधि में शोध-प्रबंध जमा न करने पर यूनिवर्सिटी के नियमानुसार 'टरमिनेट' कर दिए जाते हैं और अन्य शोधार्थी बारंबार 'एक्सटेंशन' की माँग करते हुए शोध-प्रबंध के लेखन-कार्य को लंबे समय तक खींचते हैं। शोध-वृत्ति तथा शोध के प्रति समर्पण-भाव को विकसित करने से ही पीएचडी के विद्यार्थियों को वांछित सफ़लता प्राप्त हो सकती है।

पिछले आठ वर्षों में (2006-2014) यूनिवर्सिटी ऑव मॉरीशस में पीएचडी के लिए पंजीकृत होनेवाले छात्रों की संख्या नगण्य है। इसके अनेक कारण हैं—छात्रों की शोध-योजना को पारित करने की धीमी प्रक्रिया, शोध-काल और शोध-प्रबंध के मूल्यांकन-काल की दीर्घता तथा एम.फिल./पीएचडी कोर्स का भारी शुल्क। शोध-प्रबंध को जमा करने में कम से कम पाँच साल तथा उसका मूल्यांकन करने में दो साल लग जाते हैं। कुल मिलाकर सात साल बाद ही

शोधार्थी पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर पाता है। एम.फिल./पीएचडी के स्तर पर हिंदी में शोध को बढ़ावा देने के लिए कोर्स-काल तथा मूल्यांकन-प्रक्रिया-काल को घटाने की आवश्यकता है। 'टर्शरी एजुकेशन कमिशन' एवं 'मॉरीशस रिसर्च काउंसिल' द्वारा अधिक शोधार्थियों को छात्रवृत्ति की उपलब्धि कराई जाने पर निश्चय ही तृतीयक शिक्षा के उच्चतम स्तर पर हिंदी में शोध को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

सन् 1973 से 2014 के बीच भारत के दिल्ली, आगरा, बनारस, उज्जैन आदि विश्वविद्यालयों से सोलह विद्यार्थियों ने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। इनमें चार शोधार्थियों के शोध-प्रबंध प्रकाशित हैं—

1. डॉ. रामेश्वर ओरी—मॉरीशस का भोजपुरी लोक-गीत, 1973
2. डॉ. मोहनलाल हरदयाल—मॉरीशस में हिंदी और उसका साहित्य, 1980
3. डॉ. बीरसेन जगासिंह—हिंदी को मॉरीशस का योगदान, 1983
4. डॉ. उदय नारायण गंगू—मॉरीशस का भोजपुरी लोक-साहित्य एवं भारतीय संस्कृति, 1991 (प्रकाशित)
5. डॉ. अलका धनपत—छायावादोत्तर हिंदी-काव्य में पौराणिक कथाएँ तथा आधुनिक मानसिकता, 1992
6. डॉ. संयुक्ता भोवन—अंत: संघर्ष का यथार्थ एवं निराला की काव्य-सर्जना, 1997 (प्रकाशित)
7. डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि—मॉरीशस के फ़ॉर्म-एक से फ़ॉर्म-पाँच की पाठ्य-पुस्तकों के आधार पर हिंदी-शिक्षण, 1997
8. डॉ. ठाकुरदत्त पांडे—भाषा-विज्ञान विषयक शोध-कार्य, 1997
9. डॉ. देवरत्न सिरतन—अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में हिंदीत्तर भाषिक प्रयोग, 1999
10. डॉ. रेशमी रामधनी—समकालीन हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में अभिव्यक्त बहुआयामी विद्रोह, 2001(प्रकाशित)
11. डॉ. सुरीति रघुनंदन—विरेंद्र मिश्र के काव्य में युगीन संदर्भ, 2001
12. डॉ. कृष्ण कुमार झा—मॉरिशस का हिंदी कथा-साहित्य—एक सांस्कृतिक अध्ययन, 2004 (प्रकाशित)
13. डॉ. लालदेव अंचराज—भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा मॉरीशस के राष्ट्रकवि डॉ. ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन, 2004
14. डॉ. जयचंद लालबिहारी—मॉरीशस के माध्यमिक स्कूल के बच्चों का त्रुटि-विश्लेषण, 2004
15. डॉ. तनुजा पदारथ—कृष्णा सोबती के अंग्रेज़ी में अनूदित हिंदी-उपन्यासों की अनुवाद-प्रक्रिया के संदर्भ में मूल्यांकन, 2011
16. डॉ. लक्ष्मी झमन—मॉरीशसीय हिंदी लेखन में स्त्री-विमर्श, 2013

मॉरीशस का 'टर्शरी एजुकेशन कमिशन' (TEC) शोध-प्रबंध के प्रकाशन हेतु 'बुक ग्रांट' के रूप में आर्थिक सहायता प्रदान करता है, परंतु हिंदी का बिरला ही कोई शोधार्थी इससे लाभान्वित हो पाता है। इस 'ग्रांट स्कीम' में विस्तार लाने की आवश्यकता है।

मॉरीशस में पिछले चार सालों से 'ओपन यूनिवर्सिटी' हिंदी में पीएचडी करने की नई सुविधाएँ प्रदान कर रही है। इस समय पाँच विद्यार्थी 'ओपन यूनिवर्सिटी' से हिंदी में शोध कर रहे हैं। उनका झुकाव अधिकांशत: मॉरीशस के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़े विषयों पर शोध करने की ओर है—

1. मोहाबीर शांति—आर्य समाज के हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का मॉरीशस के विकास में योगदान
2. उदय राजेश कुमार—डॉ. बीरसेन जगासिंह की रचनाओं

में विद्रोह-एक समीक्षात्मक अध्ययन

3. भोगीरथ वर्षा—मॉरीशसीय कवि डॉ. हेमराज सुंदर की साहित्यिक रचनाओं में विद्रोह के तत्व
4. शशि दुखन—मॉरीशस के हिंदी निबंधों का एक सांस्कृतिक अध्ययन
5. गिरजानंदसिंह बिसेसर—मॉरीशस की सामाजिक लोक-कथाओं का सामाजिक और नृवैज्ञानिक अध्ययन

मॉरीशस का विपुल हिंदी-साहित्य शोधकर्ताओं में रुचि जागृत करने में सक्षम है। ओपन यूनिवर्सिटी में शोध-प्रक्रिया के व्यवस्थित रूप से शोधार्थी संतुष्ट है परंतु वहाँ भी कोर्स-फ़ी एक जटिल मुद्दा है।

शोध के नए क्षितिजों की तलाश जारी है। इसका प्रमाण मॉरीशस में हिंदी में 'पोस्ट-डॉक्टोरल' शोध-कार्य है। एक शोधार्थी, आगरा के डॉ. अंबेडकर विश्वविद्यालय से डी.लिट. कर चुका है

1. डॉ. हेमराज सुंदर—मॉरीशस के हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास, डॉ. अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, 2009

अन्य शोधकर्ता भी 'पोस्ट-डॉक्टोरल' अनुसंधान की ओर बढ़ रहे हैं। इस दिशा में UGC-TEC consortium agreement के तहत अनुसंधानकर्ताओं को भारत के विश्वविद्यालयों में शोध करने की वित्तीय सुविधाएँ भी प्रदान की जाती हैं। यूनिवर्सिटी ऑव मॉरीशस में भी हिंदी में 'पोस्ट-डॉक्टोरल' शोध का प्रावधान किया गया है, परंतु आज तक इस दिशा में किसी शोधार्थी ने कदम नहीं उठाया है। इसका अहम कारण यह है कि मॉरीशस का नेशनल क्वालिफ़िकेशंस फ्रेमवर्क (NQF) दसवें स्तर तक अर्थात पीएचडी के स्तर तक रुका हुआ है। पोस्ट-डॉक्टोरल शैक्षिक प्रमाण की दृष्टि से 'राष्ट्रीय क्वालिफ़िकेशंस फ्रेमवर्क' में परिवर्द्धन करने की आवश्यकता है।

मॉरीशस में हिंदी में शोध-कार्य विभिन्न स्तरों में हो रहा है। फिर भी शोध के क्षेत्र में कमियाँ हैं। शोधार्थियों एवं संस्थाओं का सम्मिलित शोध-कार्य (collaborative research) नहीं के बराबर है। अनुसंधानकर्ताओं तथा देश-विदेश की संस्थाओं के बीच सम्मिलित शोध (inter-institutional research) द्वारा हिंदी में शोध का विस्तार करना शेष है।

संदर्भ :

1. के. हज़ारीसिंह, मॉरीशस में भारतीयों का इतिहास, पृ. 65, 1914, 'मॉरीशस स्टेशनरी एंड प्रिंटिंग एस्टेब्लिशमेंट'
2. पंडित रविशंकर कौलेशर, वसंत अंक 42, पृ. 11, 1987, 'महात्मा गांधी संस्थान', मोका
3. सोमदत्त बखोरी, वसंत अंक 42, पृ. 12, 1987, 'महात्मा गांधी संस्थान', मोका
4. David Hopkins, 'A teacher's guide to classroom research', pg 2, 1985, Open University Press, Buckingham, Philadelphia
5. सोमदत्त बखोरी, वसंत अंक 31, पृ. 16, Dec. 1985, 'महात्मा गांधी संस्थान', मोका
6. प्रह्लाद रामशरण, 'एक मॉरीशसीय साहित्यकार की आस्था', पृ. 50, 1997, आत्माराम एंड संस, दिल्ली
7. मुनीश्वरलाल चिंतामणि, हिंदी पद्य-पराग, दो शब्द, 1978
8. Examiner's Report, pg 2, 2010, University of Mauritius, Reduit, Mauritius
9. प्रो. सुदर्शन जगेसर, सी.एस.के., जी.ओ.एस.के., साक्षात्कार, सितंबर 2014

अध्यक्षा, सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग,
महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस
madhuri.ramdharee@yahoo.com

16. मॉरीशस में हिंदी-शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार में शोध तथा प्रकाशन की भूमिका

श्री धनपाल राज हीरामन

प्रस्तावना

साहित्य और शोध तभी संभव है, जब प्रकाशन हो! प्रकाश की व्यवस्था हो! मुद्रण मशीन हो! 1834-1920 तक भारतीय गिरमिटिया मज़दूर भारत से मॉरीशस आए या लाए गए। उन्हीं के साथ भोजपुरी व हिंदी यहाँ पहुँची थी क्योंकि भारतीय मज़दूरों की अधिकतर संख्या बिहार से थी, मध्य प्रदेश से थी! वे कुछ लिखित व हस्तलिखित धर्म ग्रंथ अपने साथ ले आए थे पर अधिक साहित्य यानी लोककथाएँ और लोकगीत, बोलचाल तथा बोली-बतियाने तक ही सीमित थी। साहित्य लेखन तब तक इस देश में आरंभ नहीं हुआ था, जब तक प्रकाशन नहीं हुआ और मुद्रण की मशीन यहाँ नहीं पहुँची।

भारतीय मज़दूर पेट के लिए यहाँ सवेरे 5:00 से शाम 6:00 बजे तक खेतों में बैलों की तरह जोते जाते थे। भला उन्हें कहाँ फ़ुर्सत थी इन सब बातों के लिए। बूट और कोड़े के दर्द को बयाँ करने के लिए आवाज़ थी पर शब्द कहाँ थे? राशन पर खाना, तेल, घासलेट पानेवालों के यहाँ पैसे कहाँ थे जो मुद्रण मशीनें मँगवाते, अख़बार-पत्रिका छापते और लोगों तक पहुँचाने की आज़ादी भी तो नहीं थी। भारतीय मज़दूर अपने वतन भारत नहीं लौट पाए थे क्योंकि उन के यहाँ पैसा नहीं था। क्योंकि शर्त के मुताबिक गोरे उन्हें भारत लौटा न पाए थे। वे ठगे गए थे। वे यहीं बस गए थे। कहीं गंगा बना दी तो गाँव-गाँव में मंदिर, मस्जिद, कोविल खड़े कर दिए।

1901 में इत्तेफ़ाक ही सही, मोहनदास करमचंद गांधी यहाँ आए थे, क्योंकि दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय उनका जहाज़ 'नौशेरा' ख़राब हो गया था। मरम्मत के लिए 19-20 दिनों तक पोर्ट लुई बंदरगाह में लंगर डाले रहा। दक्षिण अफ्रीका में रह रहे गांधी को मॉरीशस के भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की खराब स्थिति का पता था। वे जानकारी लेते रहते थे और गुजरात में छप रहे 'ट्रिब्यून' अख़बार में इसकी चर्चा करते रहते थे। अपने मॉरीशस ठहराव के दौरान उन्होंने अपना समय ज़ाया नहीं किया था। घूम-घूमकर स्थिति का जायज़ा लिया था और जाने से पहले यहाँ के भारतीय मूल के लोगों को दो सलाहें दीं—

1. अपने बच्चों को शिक्षित कीजिए।
2. उन्हें राजनीति में आने के लिए प्रेरित कीजिए।

1901 नवंबर के गए करमचंद गांधी ने इंग्लैंड से शिक्षित बड़ौदा के युवा बैरिस्टर मगनलाल मणिलाल डॉक्टर को यहाँ भेजा। मणिलाल इंग्लैंड में ही गांधी जी से मिले थे। भारत लौटते समय वे फ्रांस भी हो आए थे जहाँ उन्होंने फ्रांसीसी भाषा सीखी, क्योंकि मॉरीशस के औपनिवेशिक ज़्यादातर फ्रेंच गोरे थे और उन्हीं से टक्कर लेना था। वे 1907 में यहाँ, मॉरीशस पहुँचे। उनका मिशन था मॉरीशस में रह रहे भारतीय मज़दूरों की दयनीय स्थिति को सुधारने में मदद करना। यहाँ के मज़दूरों के पक्ष में लड़ना, संघर्ष करना, पैरवी करना आदि।

भारतीय मज़दूरों को एक करने के लिए उन्होंने 1909 में भारत से मुद्रण मशीन मँगवाई और 'हिंदुस्तानी' अख़बार निकालना शुरू किया। वह छपता गुजराती-अंग्रेज़ी में था पर बाद में हिंदी-अंग्रेज़ी में छपने लगा था।

'हिंदुस्तानी' ही वह पत्र था जहाँ हिंदी का पहला छपा रूप इस बंजर ज़मीन पर देखने को मिला। इस देश का पहला हिंदी साहित्य भी 'होली' कविता का प्रकाशन होता है। इस तरह से मणिलाल इस देश में हिंदी मुद्रण, प्रकाशन और हिंदी पत्रकारिता के जनक हो जाते हैं।

कविता

मॉरीशस की भूमि पर जो पहली कविता प्राप्त है, वह 'होली' है जो 'हिंदुस्तानी' अख़बार में 1913 को छपी थी। इसके लगभग दस वर्षों के बाद 1923 में मॉरीशस की धरती की कविता की पहली पुस्तक छपती है—'रसपुंज कुंडलियाँ'। इसके रचयिता पं.

लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी 'रसपुंज' थे। यद्यपि यहाँ पुरानी और सीमित छापनेवाली मुद्रण मशीन थी तथापि कवि ने स्वयं भारत से यह प्राप्त व प्रकाशित करवाई थी। इस बीच हिंदी अख़बारों या मासिक पत्रिकाओं में हिंदी कविता का प्रकाशन तो हुआ है पर पहला काव्य-संग्रह रसपुंज का ही माना जाएगा। कुछ इतिहासकारों को यह अस्वीकार्य है। उनका कथन है ''क्योंकि लेखक भारतीय और प्रकाशन भारत तो फिर यह मॉरीशसीय कैसे हुआ?''

इसके पूरे दस वर्ष बाद 1934 में मॉरीशस का दूसरा और तीसरा काव्य-संग्रह है—'कृष्ण की वेदी' और 'वंशी की तान'। 1935 में 'रसपुंज कुंडलियाँ' के रचयिता का दूसरा काव्य-संग्रह छपता है—'शताब्दी सरोज'।

मौलिक और मॉरीशसीय तथा मॉरीशसीय पृष्ठभूमि की कविताएँ 1940 के बाद लिखी और प्रकाशित होने लगी। इसमें हिंदी प्रचारिणी सभा का भारी योगदान था। 1935, 1936 और 1937 में सभा ने हस्तलिखित पत्रिका 'दुर्गा' निकाली। हाथ से लिखते और हाथों-हाथ वितरित करते। इसी में लिखते-पढ़ते, देखा-सुनी में कवि सामने आए। 'दुर्गा' के आवरण पृष्ठ बनानेवाले मधुकर भगत कवि के रूप में नज़र आने लगे। 1948 में पहला काव्य-संग्रह प्रकाशित किया—मधुपर्क। 1949 में दो संग्रह तथा 1953 में भी दो काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए। वे 5-6 दशकों तक हमारे कविता संसार में छाए रहे और कुल मिलाकर 50 संग्रह निकाले।

देश के प्रथम नाटककार जयनारायण रॉय है। 1941 में उनका 'जीवन संगिनी' छपा था। नाटक-एकांकी की 40 के लगभग पुस्तकें प्रकाशित हैं। पिछले महीने गौकरण सितोहल का 'ममता' एकांकी-संग्रह दिल्ली के स्टार पब्लिकेशन से छपकर आया है। स्व. गौकरण ने सैकड़ों एकांकी कई भाषाओं में लिखीं और मंचित भी किया। उनकी 75 एकांकियाँ अप्रकाशित हैं। रामदेव धुरंधर ने 300 रेडियो नाटक लिखे और प्रस्तुत किए। इसी तरह हर वर्ष कला एवं संस्कृति मंत्रालय हिंदी और भोजपुरी में एकांकी/नाटक प्रतियोगिता का आयोजन करता है जिसमें देश के कोने-कोने से, कॉलेजों से सैकड़ों नाटक मंचित होते हैं पर ये प्रकाशित नहीं होते हैं।

1953 आते-आते मॉरीशसीय कविता में स्वतंत्रता का बिगुल साफ़ सुनाई देने लगा था। लेखन ने ज़ोर पकड़ा—कवि और कविता धड़ाधड़ सामने आए। 1953 से 1973 के बीच 50 से भी कुछ अधिक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो जाते हैं। 1973-1993 तक लगभग इतने ही काव्य-संग्रह छपे। 1993-2013 तक काव्य-संग्रहों के प्रकाशन की यह संख्या जारी रही और बढ़ी भी।

2013 से अब तक हर साल तकरीबन 8-10 हिंदी प्रकाशन मॉरीशस में छपते आ रहे हैं। उनमें अधिकतर काव्य-संग्रह हैं। काव्य-संग्रहों के प्रकाशन में हर वर्ष ही वृद्धि नोट की गई है। अच्छी और स्तरीय कविताएँ भारत की पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी हैं तथा स्थानीय पाठ्य-पुस्तकों में भी शामिल हो चुकी हैं।

मॉरीशस के प्रमुख कवि : अभिमन्यु अतन, ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर', सोमदत्त बखोरी, हरिनारायण सीता, ठाकुरदत्त पांडेय, मुनिश्वरलाल चिंतामणि, बीरसेन जागासिंह, पूजानंद नेमा, हेमराज सुंदर, धनराज शंभु, राज हीरामन, सुमति संधु, सूर्यप्रसाद मंगर भगत, जनार्धन कालिचरण, ज्ञानेश्वर रघुवीर, देवननन हेमराज, रीधि रूपचंद, रेशमी कुमारी रागपत, परमेश्वर बिहारी, जगलाल रामा, बृजलाल रामदीन, महेश रामजीयावन, जयदत्त जीऊत, श्रीमती कल्पना लालजी आदि।

कहानी विधा

कहानी, इस विधा पर काम अधिक हुआ है पर कविता-

प्रकाशन के काफ़ी बाद! 1968 में ईश्वरचंद्र गंगाराम का 'एक सपना' कहानी-संग्रह छपता है। उसी साल ईश्वरदत्त अलीमन 'नई कहानियाँ' कहानी-संग्रह का संपादन करते हैं।

1974 में अभिमन्यु अनत का पहला काव्य-संग्रह सामने आता है। इसे प्रकाशित किया, बो-बासें (मॉरीशस) के त्रिवेणी क्लब ने। 1967 से लेकर 2014 तक 60 कहानी-संग्रह यहाँ प्रकाशित हो चुके हैं। पिछला कहानी-संग्रह है राज हीरामन का 'बर्फ सी गरमी'।

मॉरीशस के प्रमुख कहानीकार हैं : अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, पूजानंद नेमा, भानुमति नागदान, धनराज शंभु, जय जीऊत, महेश रामजियावन, डॉ. हेमराज सुंदर, मोहनलाल बृजमोहन, इंद्रदेव भोला, यंतुदेव बुधु, आजामिल माताबदल, लोचन बिदेसी, दानिश्वर शाम, पं. बेणीमाधो रामखेलावन, राज हीरामन आदि।

उपन्यास

'पहला कदम' इस देश का पहला उपन्यास माना जाता है, जो 1960 में छपा और लिखनेवाले श्री कृष्ण लाल बिहारी हैं। उनके ठीक दस वर्ष बाद मॉरीशस के कथाकार तथा उपन्यास सम्राट अभिमन्यु अनत का पहला उपन्यास छपता है—'और नदी बहती रही'। 1970 से वे अब तक लिखते आ रहे हैं। उनके 50 से भी अधिक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।'लाल पसीना' उनका कालजयी उपन्यास है।

प्रमुख उपन्यासकारों के नाम इस तरह हैं : अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, पं. बेणीमाधो रामखेलावन, दानिश्वर शाम, प्रसाद गणपत, देव रंजीत, हीरालाल लीलाधर, आनंद देबी, दीपचंद बिहारी, गोवर्धन ठाकुर आदि।

रामदेव धुरंधर ने 6 खंडों, 3000 पृष्ठों और 500 पात्रोंवाला 'पथरीला सोना' लिखकर संसार के सबसे लंबे (बड़े) उपन्यास लिखने का कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। यह मॉरीशसीय साहित्य की उपलब्धि ही मानी जाएगी। रामदेव के अब तक दस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

लघुकथा

मॉरीशस में लघुकथाएँ कम लिखी और प्रकाशित हुईं। रामदेव धुरंधर ने 6 लघुकथा-संग्रहों में 3000 स्तरीय लघुकथाएँ प्रकाशित करवाईं। इतनी लघुकथाएँ तो शायद भारत में भी किसी ने प्रकाशित नहीं करवाई होंगी। रामदेव के साथ-साथ हिंदी लेखक संघ, अभिमन्यु अनत, राज हीरामन, जय जीऊत, बीरसेन जागासिंह आदि के लघुकथा-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। स्थानीय पत्रिकाओं में लघुकथाएँ काफ़ी छपी हैं। डॉ. मुनिश्वरलाल चिंतामणि, डॉ. सुंदर आदि के नाम आ पाते हैं।

नाटक-एकांकी

देश के प्रथम नाटककार जयनारायण रॉय है। 1941 में उनका 'जीवन संगिनी' छपा था। नाटक-एकांकी की 40 के लगभग पुस्तकें प्रकाशित हैं। पिछले महीने गौकरण सितोहल का 'ममता' एकांकी-संग्रह दिल्ली के स्टार पब्लिकेशन से छपकर आया है। स्व. गौकरण ने सैकड़ों एकांकी कई भाषाओं में लिखीं और मंचित भी किया। उनकी 75 एकांकियाँ अप्रकाशित हैं। रामदेव धुरंधर ने 300 रेडियो नाटक लिखे और प्रस्तुत किए। इसी तरह हर वर्ष कला एवं संस्कृति मंत्रालय हिंदी और भोजपुरी में एकांकी/नाटक प्रतियोगिता का आयोजन करता है जिसमें देश के कोने-कोने से, कॉलेजों से सैकड़ों नाटक मंचित होते हैं पर ये प्रकाशित नहीं होते हैं।

नाटक इस देश में पुरनियों ने मंचित करना शुरू किया था। 'रामलीला' और धर्मग्रंथों की कथाओं पर आधारित नाटक! पर अभिमन्यु अनत ने महात्मा गांधी संस्थान में रहकर अनेक नाटक (लंबे) लिखे और मंचित किए जिनमें प्रमुख हैं— 'गूँगा इतिहास', 'मरीशा गवाही देना', 'भरत सम भाई', 'रोक लो कान्हा', 'रवि गान'। ये नाटक प्रकाशित भी हुए हैं।

प्रमुख नाटककार : जयनारायण रॉय, अभिमन्यु अतन, रामदेव धुरंधर, महेश रामजियावन, अस्तानंद सदासिंह, धनराज शंभु, राजेंद्र सदासिंह, छत्रदत्त हीरामन, धन्नारायण जीऊत, गौकरण सितोहल आदि।

व्यंग्य

व्यंग्य में सिर्फ़ दो ही नाम आते हैं—अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर। रामदेव की चार प्रकाशित व्यंग्य रचनाएँ हैं।'कलजुगी धरम-करम', 'बंदे आगे भी देख', 'पापी स्वर्ग' और 'चेहरों के झमेले'।

यात्रा-संस्मरण

सिर्फ़ तीन रचनाएँ हैं। सोमदत्त बखोरी व अभिमन्यु अनत की।

संस्मरण

लगभग 10 संस्मरण प्रकाशित हैं।

बाल-साहित्य

'मुन्नी लौट आई'—ए.पी. मँगरू, 'बस चली गई'—यंतुदेव बुधु, 'खिलती कलियाँ'—बृजलाल रामदीन, 'मॉरीशस की 15 बाल-कहानियाँ'—बीरसेन जागासिंह, 'लालिमा'—केशवदत्त चिंतामणि। पत्रिकाओं में बहुत सारी बाल कहानियाँ और कविताएँ प्रकाशित हैं।

निबंध

अब तक 12-15 निबंध-संग्रह प्रकाशित बताए जाते हैं। इनमें मुनिश्वरलाल चिंतामणि तथा प्रह्लाद रामशरण की तीन-तीन रचनाएँ हैं। राजनीतिक या किन्हीं और कारणों से पं. बासुदेव विष्णुदयाल का नाम जानबूझकर दरकिनार किया गया है वरना उनकी छोटी-मोटी 300 से अधिक रचनाएँ हैं। पं. वासुदेव ही इस देश के सबसे अधिक निबंध लिखने व प्रकाशित करानेवाले निबंधकार हैं। वे ही हिंदी के विकास के जनक हैं।

इतिहास

मॉरीशस में इतिहास की लगभग 30 पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें अधिकतर प्रह्लाद रामशरण की हैं। पं. वासुदेव विष्णुदयाल, जयनारायण रॉय, मुनिंद्रनाथ वर्मा, मोहनलाल मोहित, अनिरुद्ध द्वारका, भरत कौड़िया आदि के नाम भी आ जाते हैं।

हिंदी-साहित्य का इतिहास

हिंदी-साहित्य के इतिहास में डॉ. मुनिश्वरलाल चिंतामणि ने तन्मयता से खोज और शोध कार्य किया। उन्होंने खोज कार्य के पश्चात् ही अपनी तीनों रचनाएँ प्रकाशित करवाईं। साहित्य का इतिहास की 7-8 रचनाएँ अब तक गिनाई जा सकती हैं।

उपसंहार

मॉरीशसीय रचनाकारों की रचनाएँ सिर्फ़ स्थानीय पाठ्यक्रमों में शामिल नहीं की गई हैं परंतु यह विदेशी शिक्षा में भी योगदान पहुँचा रही हैं। इस लेख में आए सभी विधाओं के साहित्यकारों की रचनाओं पर मॉरीशस विश्वविद्यालय के हजारों स्नातक लघुशोध लिख चुके हैं और इस दिशा में अनुसंधान जारी है। पी-एच.डी. और एम.फिल. की छात्र-छात्राएँ भी स्थानीय रचनाकारों पर अपना शोध प्रबंध संपन्न कर रहे हैं। अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर तो भारतीय विश्वविद्यालयों के स्नातकों के लिए चहेते शोध-विषय बन गए हैं।

वरिष्ठ सहायक संपादक, वसंत/रिमझिम,
सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग,
महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस
rajheeramun@gmail.com

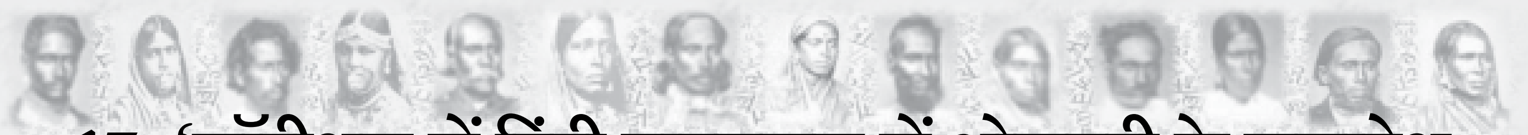

17. 'मॉरीशस में हिंदी पाठ्यक्रम में भोजपुरी के समावेश द्वारा दोनों भाषाओं का परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण'

श्रीमती संध्या अंचराज़-नवसाह

मॉरीशस संसार का एकमात्र देश है जहाँ औपचारिक शिक्षा-व्यवस्था में भारतीय भाषाओं में हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगु और मराठी शामिल हैं। इन भाषाओं के साथ-साथ अरबी और मंडारीन भाषा को यहाँ प्राच्य भाषाओं (Asian Languages) की संज्ञा दी जाती है। भारतीय भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन यहाँ प्राथमिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालय के स्तर पर सुचारू रूप से चलता है। अत: कक्षा एक से ही भारतीय मूल के छात्र इन पाँच भाषाओं में किसी एक का चयन करते हैं। इस प्रकार बच्चे अन्य विषयों के साथ-साथ दूसरी भाषा के रूप में हिंदी या अन्य प्राच्य भाषाएँ सीखते हैं।

मॉरीशस की सामाजिक संरचना को देखते हुए यहाँ की भाषा-नीति और भाषा-शिक्षा बहुत जटिल प्रतीत होती हैं। यह जटिलता मूल रूप से सभी भाषाओं की संख्या, उनके प्रयोग तथा उनकी सामाजिक-राजनीतिक महत्ता पर आधारित है। मॉरीशस में भाषा-प्रयोग का अध्ययन करनेवाले विद्वान फ़िलिप बेकर और पीटर स्टाइन के अनुसार अंग्रेज़ी भाषा 'ज्ञान' के साथ जुड़ी हुई है, फ्रेंच भाषा यहाँ की 'संस्कृति' के साथ, क्रेओल-मोरीस्यें 'समतावाद' के साथ तो अन्य प्राच्य भाषाएँ 'पैतृक विरासत' के साथ जुड़ी हुई हैं (CIA World Fact Book, 1994)। सतरंगी संस्कृतियोंवाले इस स्वर्ग में सतरंगी भाषा जहाँ एक ओर उसकी सुंदरता में चार चाँद लगाती है वहीं भाषा-शिक्षा की जटिलता को और भी गहराती है।

2011 में सरकार द्वारा संवैधानिक रूप से मॉरीशस की शिक्षा-प्रणाली में देश की दो मातृ-भाषाएँ भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें को शामिल करने का निर्णय एक ऐतिहासिक कदम है। यह कदम संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मातृभाषा के संरक्षण और विकास हेतु पारित मंतव्य के अंतर्गत उठाया गया। फलस्वरूप, सभी सदस्य देशों की शिक्षा-व्यवस्था में उस देश की मातृभाषा की उपस्थिति अनिवार्य समझी गई। छात्र के मानसिक विकास और शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता में वृद्धि के उद्देश्य से मातृभाषा को शिक्षा-व्यवस्था में शामिल करने के मंतव्य के औचित्य पर प्रश्नचिह्न लगाना विरोधाभास की स्थिति को जन्म देने के समान था परंतु भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें को प्राथमिक शिक्षा में सम्मिलित करने का निर्णय चुनौतीपूर्ण था, कारण कि लगभग आधी शताब्दी की कालावधि में स्थापित शिक्षा-व्यवस्था में तथा अन्य भाषाओं की शिक्षण-प्रक्रिया में विघ्न का डर बना रहा। साथ ही इस देश में भाषा एक बहुत ही संवेदनशील और विवादास्पद मसला है जो भावना और जोश, दोनों को ही जन्म देता है।

फलस्वरूप, भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें के कार्यान्वयन प्रक्रिया को निर्धारित करने हेतु शिक्षा तथा मानव संसाधन मंत्रालय ने दो उच्चस्तरीय बैठकों का गठन किया जिनमें महात्मा गांधी संस्थान को भोजपुरी भाषा से संबंधित प्रक्रिया का कार्यभार सौंपा गया। भिन्न सामाजिक-धार्मिक संस्थाएँ भोजपुरी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए काम करनेवाली ग़ैर-सरकारी संस्थाओं तथा शिक्षण संस्थाओं आदि की सदस्यता से उच्चस्तरीय बैठक के गठन के बाद भाषा, भाषा-विज्ञान, संगीत आदि अनेक विभागों के प्राध्यापक, शिक्षाविद् और प्राथमिक पाठशाला में कार्यरत अध्यापकों के साथ एक तकनीकी समिति गठित की गई जिसने भोजपुरी पाठचर्या विकास और पाठ्य-पुस्तक-निर्माण के लिए काम प्रारंभ किया।

परंतु प्रारंभ से ही दोनों भाषाओं के शिक्षण की कार्यान्वयन प्रक्रिया में समानता देख पाना असंभव-सा प्रतीत हो रहा था। सरकार द्वारा प्रस्तावित प्रक्रिया के अनुसार भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें अन्य भारतीय भाषाओं के समान ही विकल्पों में सम्मिलित होतीं। अत: इसका अभिप्राय यह था कि भारतीय मूल का छात्र कक्षा एक में हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगु, मराठी, अरबी, मंडारीन, भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें में से किसी एक भाषा का चयन करता। अफ्रीकी

मूल के लोग जहाँ सरकार के इस निर्णय से संतुष्ट थे वहीं भारतीय मूल के लोग और मुख्य रूप से हिंदी भाषी दुविधा में थे। हिंदी तथा भोजपुरी में किस भाषा का चयन करें? भाषा-शिक्षण का प्रश्न उठता है तो उसकी उपयोगिता, उसकी सामाजिक महत्ता को रेखांकित करना आवश्यक हो जाता है। महत्ता की दृष्टि से मानक भाषा और उसके प्रचार-प्रसार के आधार पर हिंदी और भोजपुरी की जब-जब तुलना होती है, हिंदी-भाषा का पलड़ा अधिक भारी होता है। इस बात का प्रमाण हमें इस तथ्य से मिलता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में जब शिक्षा-व्यवस्था में भारतीय भाषाओं को सम्मिलित करने की बात उठी तो हिंदी और उर्दू-भाषा की सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रतिष्ठा के कारण मॉरीशस में बसे भारतीय मूल को जोड़नेवाली भोजपुरी भाषा से अधिक महत्वपूर्ण माने गए। डॉ. रामयाद 'मॉरीशस में खड़ी-बोली हिंदी की स्थापना और प्रसार' विषय पर अपने शोधग्रंथ में इस बात की पुष्टि इन वाक्यों से करते हैं—

"In fact, literacy and vernacular education presented a problem to Bhojpuri speakers because Bhojpuri was not a written language nor was it regarded as being suitable to be so and formal education thus, of necessity, had to be in Khari-Boli Hindi, the language perceived to have both literary and cultural prestige, whether as Hindi or Urdu. It was towards Khari-Boli-Hindi, therefore, that they looked for their educated and cultural modes of expression; there was no hope of Bhojpuri achieving this for them."

''भोजपुरी हमारे बहुत काम आई है। उसी के द्वारा हमने अपनी हिंदी को देखा, पहचाना और समझा भी। यदि भोजपुरी नहीं होती तो यहाँ हिंदी की जड़ें मजबूत नहीं होतीं। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व हमारे पूर्वज भारत से आल्हा खंड, हनुमान चालीसा, एवं रामचरितमानस लेकर यहाँ आए थे। इनके प्रताप से भोजपुरी की रक्षा हुई। आगे चलकर भोजपुरी के द्वारा ही हिंदी का प्रचार संभव हुआ।''

इन मुद्दों को ध्यान में रखते हुए तकनीकी समिति ने उच्चस्तरीय बैठक के सामने दूसरा प्रस्ताव रखा। दूसरा प्रस्ताव यह था कि हिंदी-पाठ्यक्रम में ही भोजपुरी का समावेश हो, अतः दूसरे शब्दों में हिंदी की पढ़ाई के अंतर्गत भोजपुरी के पठन-पाठन का प्रावधान किया जाए।

दोनों भाषाओं की अच्छी शुरुआत की सफ़लता को मापने के लिए किए गए सर्वेक्षण से क्रेओल-मोरीस्यें की तुलना में भोजपुरी एक मुक्त विषय के रूप में आने में असफ़ल सिद्ध हुआ, जबकि क्रेओल-मोरीस्यें को मुक्त विषय के रूप में अधिक स्वीकृति मिली। फलतः उच्चस्तरीय बैठक ने तकनीकी समिति द्वारा प्रस्तावित दूसरे प्रस्ताव को पारित कर भोजपुरी का समावेश हिंदी भाषा में करने का निर्णय लिया। इस निर्णय से तकनीकी समिति के सामने कुछ नई चुनौतियाँ और नए प्रश्न भी खड़े हो गए। हिंदी भाषा के निर्धारित पाठ्यक्रम में भोजपुरी का समावेश कैसे और कितना किया जाए? क्या इससे पाँच-वर्षीय बच्चों की ग्रहण-क्षमता में बाधा आ सकती है? क्या बच्चों के भ्रमित होने की आशंका रहेगी? भ्रम की स्थिति से बचने के लिए, समन्वयन प्रक्रिया कैसी हो? तथा पूर्वजों की भाषा को बच्चों के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाए कि बच्चों में उस भाषा के अध्ययन की रुचि बनी रहे?

पाठचर्या विकास और पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सभी विषयों और मुद्दों की चर्चा-

परिचर्चा के बाद निम्नोक्त निर्णयों पर पहुँचे—

1. भोजपुरी का आगमन औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत अनौपचारिक रूप में होना चाहिए।
2. भाषा-शिक्षण के लिए सूचना-प्रौद्योगिकी और नए साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
3. समन्वयन प्रक्रिया ऐसी हो जिससे बच्चों में भ्रम की स्थिति कम हो, साथ ही हिंदी के अध्ययन में किसी प्रकार की बाधा न पड़े।
4. पाठ्य-सामग्री में उपरोक्त सभी मुद्दों से हिंदी का सशक्तिकरण हो।

समन्वयन प्रक्रिया के साथ-साथ इस बात पर भी ध्यान दिया गया कि पाठ्य-सामग्री में निर्धारित कविताएँ और गीत, प्राथमिक पाठशालाओं में आयोजित संगीत दिवस, स्वतंत्रता दिवस और पुरस्कार वितरण समारोह आदि के अवसर पर छात्रों की प्रस्तुति के लिए उपलब्ध कराया जाए। इसके साथ ही सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों या परियोजनाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया और उसे राष्ट्रीय-पाठ्यक्रम की नई रूपरेखा के अनुरूप ढाला गया।

औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत भोजपुरी का अनौपचारिक रूप में आगमन—

मॉरीशस में हिंदी के उत्थान और प्रगति में मातृभाषा के रूप में भोजपुरी के अनन्य योगदान को अनदेखा करना असंभव प्रतीत होता है। इतना ही नहीं, डॉ. हज़ारीसिंह के अनुसार आज़ादी से पहले भोजपुरी ही वह भाषा थी, जिसने हिंदू, मुसलमान, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती को एक सूत्र में बाँधे रखा। जयनारायण रॉय भी भोजपुरी भाषा के पक्ष में इसी प्रकार की घोषणा करते हैं। भारत से बाहर हिंदी भाषा की स्थिति का अध्ययन करने पर मॉरीशस में उसकी स्थिति, उसके विकास और प्रचार-प्रसार संतोषजनक और अग्रणी हैं। बैठकाओं और मंदिरों से निकलकर प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चस्तरीय शिक्षा तक तय की गई इस यात्रा में अनेक हिंदी-सेवियों का योगदान रहा ही, लेकिन उस भाषा की नींव को सशक्त बनाने में मातृभाषा के रूप में भोजपुरी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। 'वसंत पत्रिका' के एक भोजपुरी विशेषांक में डॉ. ठाकुरदत्त पांडे मॉरीशस की भोजपुरी को मॉरीशस में हिंदी भाषा की जननी मानते हैं जिसने हमारे धर्म, संस्कृति और भाषा को बचाए रखने के लिए संजीवनी बूटी का काम किया। इस सुदृढ़ नींव की चर्चा करते हुए डॉ. पांडे कहते हैं—

"भोजपुरी हमारे बहुत काम आई है। उसी के द्वारा हमने अपनी हिंदी को देखा, पहचाना और समझा भी। यदि भोजपुरी नहीं होती तो यहाँ हिंदी की जड़ें मज़बूत नहीं होतीं। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व हमारे पूर्वज भारत से आल्हा खंड, हनुमान चालीसा, एवं रामचरितमानस लेकर यहाँ आए थे। इनके प्रताप से भोजपुरी की रक्षा हुई। आगे चलकर भोजपुरी के द्वारा ही हिंदी का प्रचार संभव हुआ।"

मॉरीशस में भोजपुरी के बलबूते हिंदी की नींव रखी गई जो न केवल पल्लवित-पुष्पित हुई, बल्कि मॉरीशसीय हिंदी-साहित्य के रूप में विश्व-पटल पर छा भी गई। घर की बोली बैठकाओं, स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में हिंदी के पठन-पाठन में योगदान देती रही। भोजपुरी भाषी होने से हिंदी की पढ़ाई में कम कठिनाइयाँ होती थीं; साथ ही यह भी देखा गया कि भोजपुरी भाषियों को क्रेओल-मोरीस्यें बोलनेवाले छात्रों की अपेक्षा उच्चारण और व्याकरण

समझने में अधिक सफ़लता मिलती रही, परंतु पिछले दो-ढाई दशकों से घरों में भोजपुरी भाषा के प्रयोग में कमी के कारण छात्रों द्वारा भाषा से संपर्क में भी कमी आई है जिसका स्पष्ट परिणाम शिक्षा के सभी स्तरों में हिंदी पढ़नेवालों की संख्या में गिरावट के रूप में देखा जा सकता है।

हिंदी के अध्ययन के लिए घरों में भोजपुरी भाषा के प्रयोग से भाषा-अर्जन की नींव बाल्यावस्था में ही रखी जाती थी; हिंदी-शिक्षण उस नींव को सींचता था और भाषा को समृद्ध बनाता था। लेकिन कालांतर में भाषा के प्रभाव में कमी के कारण उसकी इस आदिम-भूमिका को क्षति पहुँची। अत: भोजपुरी के औपचारिक शिक्षण के अंतर्गत अनौपचारिक रूप से आगमन का लक्ष्य उस नींव को सुदृढ़ बनाने का प्रयास था, जिसे कविता, गीत, कहानी और नाटक के माध्यम से छात्रों में केवल श्रवण तथा भाषण कौशल को उभारने के उद्देश्य से किया गया। फलस्वरूप, भाषिक-दक्षता में श्रवण और भाषण कौशल को उभारते हुए पाठ्य-सामग्री के रूप में अध्यापकों को छोटी कविताएँ, गीत, कार्टूनवाली कहानियाँ और नाटक आदि दिए गए, जहाँ उन्हें लिखित भोजपुरी को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने की अपेक्षा मात्र सी-डी के माध्यम से उन्हें सुनाना और रटाना था।

भाषा-शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी और नए साधनों का प्रयोग

समिति के सामने जो दूसरी चुनौती थी—वह पाठ्य-सामग्री और उसके स्वरूप को लेकर थी। पिछले दो-ढाई दशकों में अत्यधिक घरों में भोजपुरी का प्रयोग कम हो जाने से आज असंख्य छात्र क्रेओल-मोरीस्यें को अपनी मातृभाषा और भोजपुरी को अपने पूर्वजों की भाषा मानते हैं। ऐसी स्थिति में नए साधनों और सूचना-प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत भोजपुरी भाषा का प्रवेश प्रभावशाली रहा। संगीत तथा सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में विशेषज्ञों की सदस्यता से पाठचर्या विकास तथा पाठ्य-पुस्तक-निर्माण समिति ने गीतों और कविताओं को लयबद्ध ही नहीं बनाया, अपितु बाल-मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए उन्हें संगीत में ढालकर 'काराओके' जैसे संसाधन भी उपलब्ध कराए। भाषा संसाधन केंद्र और भोजपुरी तथा लोक संस्कृति विभाग के सदस्यों ने कहानी और नाटकों को मल्टीमीडिया में ढालकर उसे अत्यधिक आकर्षक बनाया और दूसरी कक्षा की पाठ्य-सामग्री के लिए कदम बढ़ाते हुए एनिमेशन से 3D एनिमेशन तक पहुँच गए। पूर्वजों की भाषा कहलानेवाली भोजपुरी का इस रूप में शिक्षा में प्रवेश अपने-आप में अद्‌भुत रहा और क्रेओल-मोरीस्यें की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली भी। साथ ही उसने भाषा-प्रभावन को बढ़ावा दिया।

समन्वयन प्रक्रिया

ध्यातव्य है कि हिंदी भाषा-शिक्षण के अंतर्गत भोजपुरी भाषा के समावेश के निर्णय से हिंदी-पाठ्यक्रम तथा उसके लिए निर्धारित समयावधि में कोई बदलाव नहीं लाया गया। इस निर्णय से यह चुनौती सामने आई कि हिंदी-पाठ्यक्रम में बिना किसी बदलाव के भोजपुरी का समावेश कितनी मात्रा में हो। अर्थात जो पाठ्यक्रम एक-वर्षीय योजना को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है, उसमें भोजपुरी के समावेश से उसको अधिक बोझिल तो नहीं बनाया जा रहा था? क्या हर पाठ में भोजपुरी का तत्व होना अनिवार्य है? अगर हाँ तो क्या अंतत: यह पाठ्यक्रम बहुत बोझिल नहीं हो जाएगा? क्या लिया जाए और कितना लिया जाए, किस पाठ के अंतर्गत क्या रखा जाए; इन सभी प्रश्नों के आलोक में समिति ने एक समन्वयन प्रक्रिया पर काम किया और हर छोटी-से-छोटी बात पर ध्यान दिया गया। उदाहरणार्थ *''मैया देदे अबीरवा खेलब होली''* लोक-गीत होली पाठ के अंतर्गत रखा गया, स्वतंत्रता दिवस पाठ के अंतर्गत *''हमनी के देस''* कविता और *''हमनी हँय स निमन लैका''* बाल-गीत रखा गया।

समन्वयन प्रक्रिया के साथ-साथ इस बात पर भी ध्यान दिया गया कि पाठ्य-सामग्री में निर्धारित कविताएँ और गीत, प्राथमिक पाठशालाओं में आयोजित संगीत दिवस, स्वतंत्रता दिवस और पुरस्कार वितरण समारोह आदि के अवसर पर छात्रों की प्रस्तुति के लिए उपलब्ध कराया जाए। इसके साथ ही सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों या परियोजनाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया और उसे राष्ट्रीय-पाठ्यक्रम की नई रूपरेखा के अनुरूप ढाला गया।

हिंदी का सशक्तिकरण

हिंदी और भोजपुरी को बहनों की संज्ञा दी जाती है। ऐसी दो बहनें जिनके रूप-रंग और हाव-भाव में अनेक समानताएँ हैं। दोनों भाषाओं में समान ध्वनियों के प्रयोग से दोनों भाषाओं का परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण किया गया। सामग्री-निर्माण के समय शब्द-चयन आदि पर विशेष बल देते हुए दोनों भाषा-शिक्षण के बीच भ्रम की स्थिति को कम करने की भरपूर चेष्टा की गई, अत: व्याघात से बचने के लिए सफ़ल प्रयास किया गया।

मॉरीशस की भोजपुरी भाषा की अपनी एक अलग पहचान है। भोजपुरी, मगही, मैथिली, अवधी, ब्रज, कन्नौजी आदि अनेक भाषाओं के सम्मिश्रण से तथा औपनिवेशकाल में विकसित क्रेओल-मोरीस्यें भाषा के साथ संपर्क में आकर मॉरीशसीय भोजपुरी की अपनी सुगंध, अपनी अस्मिता और पहचान है। मॉरीशसीय भोजपुरी की एक विशेषता यह भी रही है कि क्रेओल-मोरीस्यें से आदान-प्रदान के दौरान उसने शब्दों को केवल उधार में नहीं लिया, अपितु उन्हें अपनी प्रकृति के अनुरूप ढाला। कुछ आलोचक इसे मॉरीशसीय भोजपुरी की कमज़ोरी भी मानते हैं। लेकिन हिंदी भाषा-शिक्षण के अंतर्गत भोजपुरी भाषा के समावेश पर विशेष ध्यान देते हुए समिति ने यह निर्णय लिया कि दोनों भाषाओं में व्याघात से बचने के लिए क्रेओल-मोरीस्यें या फ्रेंच के प्रभाव से आनेवाले शब्दों को न लेकर उनके समतुल्य शुद्ध भोजपुरी के शब्द या हिंदी के शब्द लिए जाएँगे। उदाहरणार्थ *''लाल लाल फूल, नीला नीला फूल, पियर पियर फूल, झुलवा झूल झुलवा झूल''* गीत में मात्र चार-पाँच ही ऐसे शब्द हैं जिन्हें भोजपुरी के शब्द कहा जा सकता है अन्यथा शब्द-चयन करते समय दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों को ही प्राथमिकता दी गई।

मॉरीशस की औपचारिक शिक्षा-व्यवस्था में आने के लिए भोजपुरी भाषा को एक लंबी यात्रा तय करनी पड़ी। अंतत: हिंदी-पाठ्यक्रम में भोजपुरी के समावेश द्वारा वह सफ़ल हुई और दोनों भाषाओं के परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण के लिए माध्यम भी बनी। शोध का उद्देश्य शिक्षा-व्यवस्था में भोजपुरी भाषा के प्रवेश के व्यावहारिक पक्ष पर विचार-विमर्श और उसकी कार्यान्वयन-प्रक्रिया का एक वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। हिंदी की जड़ों को सींचनेवाली भोजपुरी भाषा, आज औपचारिक शिक्षा-व्यवस्था में अनौपचारिक रूप से प्रवेश कर फिर अपनी उस आदिम-भूमिका को निभा रही है जिसकी पुष्टि Development of Overseas Hindi के शोधकर्ता रीचार्ड बार्ज के इस कथन से होता है—

"Bhojpuri should be maintained and encouraged for the sake of Hindi."

अत: हिंदी भाषा के सशक्तिकरण और प्रोत्साहन के लिए भोजपुरी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। भोजपुरी की अपनी महत्ता है लेकिन हिंदी-शिक्षण में उसके समावेश से तथा भाषा-प्रभावन के प्रसार से दोनों भाषाओं के परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए गए।

प्राध्यापिका, भाषा संसाधन केंद्र,
महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस
sundhya1501@gmail.com

छठा सत्र : ग़ैर सरकारी, अर्ध सरकारी व स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण व प्रचार–प्रसार

18. मॉरीशस में गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण

श्री यंतुदेव बुधु

मॉरीशस में कई ऐसी स्वैच्छिक संस्थाएँ हैं जो परतंत्र मॉरीशस के समय से हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करती आ रही हैं। इनमें हिंदी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हिंदी के पठन-पाठन को बढ़ावा देने में हिंदी लेखक संघ, इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद तथा हिंदी परिषद का भी योगदान रहा है। हिंदू महासभा तथा अन्य धार्मिक संस्थाएँ किसी न किसी रूप से हिंदी भाषा के माध्यम से धर्म-प्रचार कर रही हैं। हिंदी संगठन भी हिंदी के प्रचार में काफ़ी कार्यरत है और कई संस्थाएँ हैं जो क्षेत्रीय तौर पर हिंदी स्कूल चलाती हैं—इनमें मॉरीशस हिंदी संस्थान तथा मॉरीशस एक्सटेंशन यूनिट के नाम भी मुखरित होते हैं।

2 नवंबर, 1834 में भारतीय मज़दूरों के आगमन से ही मॉरीशस में हिंदी भाषा के इतिहास का श्रीगणेश हो जाता है। प्रारंभ में भारतीय मूल के लोग परस्पर भोजपुरी में बोलते थे। मॉरीशस में बैठक भारतीय गिरमिटिया मज़दूरों का एक केंद्र बनी। बैठकों ने भारतीय उत्सवों की परंपरा को बनाए रखा। लोग उन्हीं स्थानों में सामूहिक रूप से होली या दिवाली मनाते थे। इस प्रकार धार्मिक विचारों का प्रचार होता था। बैठकों में हिंदी सिखाई जाने लगी। अगर बैठका की स्थापना न हुई होती तो हिंदी भाषा का उचित प्रचार नहीं हो पाता।

वैसे प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल तो खुद एक संस्था स्वरूप उभरकर आए। हिंदी प्रचार तथा लेखन में उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जो कार्य किया वह एक बड़ी हिंदी संस्था के कार्य से कम न था। धार्मिक और साहित्यिक दोनों क्षेत्रों में इन्होंने कमाल का काम किया। प्रो. विष्णुदयाल गाँव-गाँव तथा शहर-शहर धर्म-प्रचार करते थे और उनके प्रचार का माध्यम हिंदी भाषा थी।

हिंदी और संस्कृत : मॉरीशस में जिन संस्थाओं में हिंदी की पढ़ाई होती है, प्राय: उन सभी जगहों में संस्कृत का भी पठन-पाठन होता है। संस्कृत देव-वाणी कहलाती है। यह दुनिया की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है। संस्कृत में हिंदू धर्म के लगभग सभी धर्मग्रंथ लिखे गए हैं। हिंदू धर्म में यज्ञ और पूजा संस्कृत में ही होती हैं। इसलिए इन ग्रंथों को पढ़ने-समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है। संस्कृत की परीक्षाएँ भारतीय विद्या भवन, मुंबई द्वारा संचालित तथा मॉरीशस के श्री सनातन धर्मीय ब्राह्मण महा सभा द्वारा आयोजित होती हैं। छात्र बालबोध से लेकर कोविद तक की परीक्षाओं में भाग लेते हैं।

इन परीक्षाओं का आयोजन सन् 1962 से शुरू हुआ था। इनके आयोजन में स्वर्गीय पंडित दौलत राम शर्मा तथा पंडित जगदीश शर्मा का योगदान रहा है। आज हज़ारों की संख्या में लोग इन परीक्षाओं में भाग लेते हैं। यह बात उल्लेखनीय है कि कुछ वर्षों से हमारे पुरोहित गण भी इन परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं। संभवत: संस्कृत संगठन (Sanskrit Speaking Union) की स्थापना हो जाने पर संस्कृत भाषा के पठन-पाठन में और गति आ जाएगी। ऐसा हमारा विश्वास है।

मॉरीशस में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी प्रचारिणी सभा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना 12 जून, 1926 में हुई थी। तब से अब तक सभा हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करती आ रही है। सभा का आदर्श वाक्य है, 'भाषा गई तो संस्कृति गई'। सभा की स्थापना से अब तक कई कार्यकारिणी समितियाँ आईं और गईं पर हर समिति का एक ही उद्देश्य रहा—हिंदी भाषा का प्रचार करना। हिंदी प्रचारिणी सभा आज तक अपने पैरों पर खड़ी है। सभा के सदस्य आज तक सेवा-भाव से ही कार्य करते आ रहे हैं।

सभा की स्थापना का उद्देश्य था : पूरे मॉरीशस में नि:शुल्क हिंदी भाषा पहुँचाना तथा भाषा के माध्यम से हिंदू संस्कृति की रक्षा करना और भाषा एवं साहित्य का प्रचार करना।

सन् 1954 से मॉरीशस सरकार ने प्राथमिक स्कूलों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था कर इस भाषा को औपचारिकता प्रदान की। पर स्वैच्छिक संस्थाएँ हिंदी भाषा का प्रचार-कार्य बराबर करती रही हैं। लगभग 300 गैर-सरकारी विद्यालयों में हिंदी की सायंकालीन एवं सप्ताहांत कक्षाएँ चलती हैं जिनमें करीबन 500 अध्यापक कार्यरत हैं। आज सभी लोग यह स्वीकारते हैं कि 19वीं सदी में भारतीय मज़दूरों ने गाँव-गाँव में बैठका बनाए जिनके द्वारा हिंदी शिक्षण का बीजारोपण हुआ था। इन बैठकाओं में हिंदी शिक्षण का प्रारंभ— 'राम गति देहूँ सुमति' से होता था और शिक्षक सेवा भावना से ही हिंदी पढ़ाते रहे। इस सेवा को मान्यता देते हुए मॉरीशस सरकार इन शिक्षकों को प्रतीकात्मक रूप में भत्ता दे रही है।

आज हिंदी प्रचारिणी सभा गर्व का अनुभव करती है क्योंकि सन् 1926 में जो हिंदी ज्ञान गंगा सभा ने बहाई थी, वह गंगा-धारा पूरे मॉरीशास में बही। हम उसी हिंदी ज्ञान गंगा की उपज हैं। हमारे देश में अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर आदि विश्व विख्यात साहित्यकार पैदा हुए। असंख्य हिंदी के विद्वान पैदा हुए। सभी का किसी न किसी तरह से हिंदी प्रचारिणी सभा से संबंध रहा है।

अर्थव्यवस्था : किसी भी कार्य को करने के लिए आर्थिक-व्यवस्था होनी चाहिए। हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना के लिए स्वयं सेवियों तथा हिंदी सेवियों ने इस कार्य को बहुत खूबी से किया। सभा के कई दाता हुए जिनमें प्रमुख थे स्वर्गीय श्री रामदास रामलखन जो गिरधारी भगत से जाने जाते थे। उन्होंने हिंदी भाषा के नाम पर भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी सारी संपत्ति दान में दे दी और खुद तीर्थ-यात्रा के लिए भारत चले गए। इनसे प्रेरणा पाकर और लोगों ने पैसे तथा अपनी ज़मीनें सभा को दान में दीं। इस तरह आज तक सभा का कार्य सुचारु रूप से उन्हीं दाताओं की बदौलत होता आ रहा है।

सभा के भवन : हिंदी प्रचारिणी सभा के भवन में एक विद्यालय भी है जहाँ सप्ताहांत में हिंदी भाषा की पढ़ाई प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर होती है। यहाँ हिंदी के साथ-साथ संस्कृत भाषा की भी पढ़ाई होती है। सभा का एक विशाल सभागार है जहाँ पर सभा के उत्सवों, गोष्ठियों, प्रतियोगिताओं, कवि-सम्मेलनों तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। सभा की चार और शाखाएँ हैं जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ पर सायंकालीन तथा सप्ताहांत विद्यालयों में हिंदी भाषा का पठन-पाठन होता है। हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा सन् 1926 में क्रेव केर ग्राम में एक कन्या पाठशाला खोली गई जहाँ लड़कियों की शिक्षा का प्रबंध किया गया। वहाँ पर लड़कियों के लिए पूरे दिन हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था की गई थी।

बैठका एवं परीक्षाएँ : सभा से पंजीकृत लगभग 175 सायंकालीन तथा सप्ताहांत स्कूल हैं जिनमें प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाएँ चलती हैं। सभा की स्थापना के बाद से हिंदी की पढ़ाई को बढ़ावा देने के लिए इन प्राथमिक स्कूलों का निरीक्षण, परीक्षण तथा पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण सभा अपने खर्च पर करती है। इन स्कूलों की छठी कक्षा की परीक्षा का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन होता है और प्रोत्साहन हेतु छात्रों को पुरस्कृत किया जाता है। देश की कई बैठकाओं में छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण के लिए वार्षिकोत्सवों का आयोजन होता है। उस अवसर पर छात्रों के अलावा अभिभावक तथा हिंदी के विद्वानों को भी आमंत्रित किया जाता है।

50 वर्ष से अधिक हो चुके हैं जब से हिंदी प्रचारिणी सभा भारत के इलाहाबाद शहर से हिंदी साहित्य सम्मेलन के सौजन्य से

कक्षा परिचय से उत्तमा (साहित्य रत्न) तक की परीक्षाओं का आयोजन करती है। यह कार्य स्वर्गीय श्री जयनारायण रॉय की कोशिश का नतीजा रहा है। ये परीक्षाएँ आज तक होती हैं। इन परीक्षाओं को हमारी सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त है। उत्तमा (साहित्य रत्न) को डिप्लोमा इन हिंदी (Diploma in Hindi) का दर्जा प्राप्त है। प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के बीच की कठिनाई को देखकर सभा ने छठी कक्षा एवं परिचय के बीच की खाई की पूर्ति के लिए एक स्थानीय परीक्षा (प्रवेशिका) का आयोजन शुरू किया जिसमें सफ़लता प्राप्त करने के बाद ही छात्र माध्यमिक कक्षा की ओर बढ़ते हैं।

आयोजन : वर्ष भर में सभा तीन मुख्य उत्सवों का आयोजन करती है—जून महीने में स्थापना दिवस। इस अवसर पर एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन होता है। गोष्ठी के लिए एक साहित्यकार को चुना जाता है जिसपर हिंदी भवन विद्यालय के छात्र अपनी-अपनी तैयारी प्रस्तुत करते हैं। विद्यालय का एक छात्र ही इस गोष्ठी को प्रस्तुत करता है। इसी मौके पर एक विद्वान को आमंत्रित किया जाता है जो कि छात्रों को सुनने के बाद अपना विचार प्रकट करता है तथा छात्रों का मार्गदर्शन भी करता है।

जुलाई-अगस्त महीने के लगभग तुलसी जयंती के उपलक्ष्य पर सभा हिंदी दिवस का आयोजन करती है। पहली बार के लिए सभा ने सन् 1965 में हिंदी दिवस का आयोजन किया था। तब से इसी अवसर पर हिंदी दिवस मनाने की एक परंपरा बन गई है। तुलसी जयंती के उपलक्ष्य पर ही इस दिवस का आयोजन क्यों? सभा इस बात को नकार नहीं सकती कि मॉरीशस देश में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस का बहुत बड़ा योगदान है। श्रीरामचरितमानस से धर्म प्रचार के साथ-साथ हिंदी भाषा का भी प्रचार होता रहा, भले ही उस ग्रंथ की भाषा अवधी है। हिंदी दिवस के अवसर पर छात्र श्रद्धा के साथ श्रीरामचरितमानस के दोहे एवं चौपाइयाँ गाते हैं। हिंदी दिवस के अवसर पर ही छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

समावर्तन समारोह दिसंबर महीने में मनाया जाता है। इस मौके पर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण के साथ-साथ देश के दो हिंदी सेवियों को, जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया हो, उन्हें **''हिंदी प्रचारिणी सभा सम्मान''** से विभूषित किया जाता है।

प्रतियोगिताएँ : लेखन को बढ़ावा देने के लिए सभा समय-समय पर अनेक लेखन-प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है। इसके अलावा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा कविता-वाचन प्रतियोगिता का भी आयोजन सभा करती है। छात्रों की रुचि को देखते हुए कविता-वाचन प्रतियोगिता का आयोजन अब वार्षिक होने लगा है। छात्र इस प्रतियोगिता में काफ़ी दिलचस्पी दिखाते हैं और वे बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

कार्यशाला : सभा सायंकालीन तथा सप्ताहांत स्कूलों के शिक्षकों के लिए हर वर्ष कार्यशाला का आयोजन करती है। इस दौरान शिक्षकों को प्राथमिक पुस्तकों तथा शिक्षण विधि पर अधिक जानकारी दी जाती है। पाठ्यक्रम तथा परीक्षा से संबंधित जानकारी के लिए उत्तमा (साहित्य रत्न) के छात्रों के लिए भी सभा वार्षिक कार्यशाला का आयोजन करती है। इससे छात्र लाभान्वित होते हैं।

प्रकाशन : यह तो सर्वविदित है कि साहित्य-सृजन बिना भाषा आगे नहीं बढ़ सकती। हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना होते ही प्रकाशन का कार्य शुरू हो गया था। सन् 1935 में ही सभा द्वारा हस्तलिखित 'दुर्गा' पत्रिका निकलती थी। आज भी सभा के पुस्तकालय में दो-तीन प्रतियाँ सुरक्षित हैं। इस हस्तलिखित पत्रिका की एक प्रति कुछ साल पहले दिल्ली की पुस्तक प्रदर्शनी में भी रखी गई थी।

इसके अलावा सभा ने कई तरह की पुस्तकों का प्रकाशन किया है। सभा द्वारा संचालित प्राथमिक स्कूलों के छात्रों के लिए 'सुगम हिंदी' पुस्तक माला I–VI तक का प्रकाशन हुआ है। स्थानीय साहित्यकारों को बढ़ावा देने के लिए प्रवेशिका कक्षा के पाठ्यक्रम में सभा ने स्थानीय लेखकों की कहानियाँ तथा स्थानीय कवियों की कविताएँ संकलित की हैं। छात्रों में पढ़ने की रुचि बढ़ाने के लिए सभा 'पंकज' नाम की एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन करती है जिसमें स्थानीय साहित्यकारों की रचनाओं के अलावा विदेशी साहित्यकारों की रचनाएँ भी होती हैं। अब तक सभा ने 'पंकज' के कई विशेषांक भी प्रकाशित किए हैं। सभा 'हिंदी भवन संदेश' का प्रकाशन भी करती है जिसमें सभा की गतिविधियों का ब्यौरा तथा सभा से संबंधित जानकारी एवं सूचनाएँ सदस्यों को तथा स्कूल के संचालकों को भेजी जाती हैं।

उपलब्धियाँ : आज हिंदी प्रचारिणी सभा गर्व का अनुभव करती है क्योंकि सन् 1926 में जो हिंदी ज्ञान गंगा सभा ने बहाई थी, वह गंगा-धारा पूरे मॉरीशास में बही। हम उसी हिंदी ज्ञान गंगा की उपज हैं। हमारे देश में अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर आदि विश्व विख्यात साहित्यकार पैदा हुए। असंख्य हिंदी के विद्वान पैदा हुए। सभी का किसी न किसी तरह से हिंदी प्रचारिणी सभा से संबंध रहा है।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में संचार के माध्यमों का योगदान अद्वितीय है। कंप्यूटर और इंटरनेट संचार का नवीनतम साधन है। इंटरनेट ने हिंदी को एक नई दिशा दी है। आज के युग में कंप्यूटर और इंटरनेट की जानकारी के बिना शिक्षा अधूरी समझी जाती है। हिंदी प्रचारिणी सभा की एक वेबसाइट है जहाँ सभा से संबंधित जानकारियाँ एवं सूचनाएँ उपलब्ध हैं, जिनसे छात्र लाभ उठा रहे हैं। छात्र इ-मेल से भी संपर्क रखते हैं। कंप्यूटर पर टंकन की सुविधा भी दी जा रही है। कंप्यूटर को लेकर शिक्षण के क्षेत्र में काफ़ी काम किए जा रहे हैं। छात्रों को शिक्षण की सामग्री इ-मेल द्वारा भी भेजी जाती है। छात्र इन सुविधाओं का पूरा-पूरा लाभ उठा रहे हैं। अत: आज हिंदी भाषा का प्रचार इस नए उपकरण से किया जा रहा है। मतलब हिंदी भाषा भी समय की माँग को लेकर साथ चल रही है।

नौकरी की संभावनाएँ : आज सच तो यह है कि परीक्षाओं में हिंदी विषय को लेकर छात्रों की संख्या घटती जा रही है। इसका प्रथम कारण है आजीविका। छात्र अपने भविष्य में नौकरी को ध्यान में रखकर ही ऐसा सोचने पर मजबूर हो जाते हैं क्योंकि मॉरीशस में हिंदी के क्षेत्र में नौकरी की बहुत कम संभावनाएँ हैं। इसलिए छात्र हिंदी में डिग्री कोर्स या उच्च शिक्षा की ओर बढ़ने में संकोच करते हैं।

अगर गैर-सरकारी संस्थाओं में, जैसे पर्यटन क्षेत्र में लोगों की भर्ती होने लगे तो जाने कितने लोगों को आजीविका प्राप्त हो सकती है। संचार तथा प्रकाशन के क्षेत्र में भी नौकरी की संभावनाएँ हो सकती हैं। मॉरीशस में हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन की कम सुविधा है। ज़्यादातर हिंदी की पुस्तकें भारत में ही प्रकाशित होती हैं। अगर प्रकाशन का कार्य यहाँ अधिक हो तो इस क्षेत्र में भी हिंदी को लेकर नौकरी की संभावनाएँ हो सकती हैं। ऐसे कई छोटे-मोटे क्षेत्र हैं जहाँ पर हिंदी को लेकर नौकरी की संभावनाएँ हो सकती हैं।

निष्कर्ष : हिंदी भाषा मॉरीशस में गिरमिटिया मज़दूरों के साथ आई। उन मज़दूरों ने इस भाषा को अपने पसीने से सींचा, आगे बढ़ाया, इसकी रक्षा की। अब हमारा फ़र्ज़ बनता है कि हम हिंदी भाषा की मशाल को लेकर आगे चलें। इसकी रक्षा करना, आगे बढ़ाना हमारा कर्तव्य बनता है।

अध्यक्ष, हिंदी प्रचारिणी सभा
बंधु गली, मोर्सेलमाँ सेंट आंद्रे
ashvin2409@hotmail.com

19. मॉरीशस की स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा हिंदी का शिक्षण

डॉ. उदय नारायण गंगू व श्री देवव्रत सीरतन

मॉरीशस में हिंदी के शिक्षण में अनेक स्वैच्छिक संस्थाओं का योगदान रहा है। लेख में केवल कुछेक प्रमुख संस्थाओं का ही विशेष उल्लेख किया गया है जैसे—'सनातन धर्म मंदिर परिषद', 'आर्य सभा', 'हिंदी प्रचारिणी सभा', 'आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा', 'गहलोत राजपूत महासभा', 'जनांदोलन' आदि। चूँकि आर्य समाज मॉरीशस अन्य संस्थाओं की अपेक्षा अधिक प्राचीन स्वैच्छिक संस्था है, इसलिए हिंदी-शिक्षण कार्य में उसके योगदान का रेखांकन विशेष रूप से करने का यत्न किया जाएगा।

भारतीय आप्रवासी और हिंदी

प्रश्न उठता है कि हिंदी-शिक्षण-कार्य कब और कैसे शुरू हुआ। यह सर्वविदित है कि भारतीय मूल के लोग जब यहाँ आकर बस गए तब यह देश 'लघु भारत' कहलाने लगा। सन् 1834 से शर्तबंद भारतीय मज़दूरों का मॉरीशस में आगमन आरंभ हुआ। आप्रवासन-काल सन् 1915 तक जारी रहा। मॉरीशस आनेवाले श्रमिक आर्थिक दृष्टि से दरिद्र अवश्य थे पर इस देश में खाली हाथ आते न थे। अपने साथ अपनी भाषाएँ, अपना धर्म, अपनी संस्कृति, अपनी जीवन-पद्धति लिए आते थे। सबसे बड़ी संख्या में श्रमिक पश्चिमी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के उन स्थानों से थे, जहाँ भोजपुरी बोली जाती थी।

भारतीय आप्रवासी दिनभर की जानलेवा मेहनत के बाद रात्रि-काल में फूस के बने झोंपड़ों में धार्मिक चर्चा के लिए एकत्र होते थे। ये झोंपड़े 'बैठका' कहलाते थे। यही बैठका उन श्रमिकों का सांस्कृतिक केंद्र था जहाँ कुछ समय बैठकर 'रामचरितमानस' पर सत्संग किया करते थे। रामचरितमानस की चौपाइयों के अर्थ को भोजपुरी में ही समझाया जाता था। यही भोजपुरी आगे चलकर हिंदी की नींव बनी। परिणामस्वरूप कुछेक कम पढ़े जनों ने हिंदी-शिक्षण का बीजारोपण किया।

हिंदी पाठशालाएँ

कालांतर में बैठकाओं की गतिविधियों में, हिंदी को प्राथमिकता दी गई और प्रतिदिन रात के समय एक घंटा इस काम के लिए दिया जाने लगा। यह हिंदी शिक्षण प्राथमिक स्तर पर होता था और इसके विद्यार्थियों में बच्चों के साथ वयस्क भी होते थे। कई बार तो बाप और बेटा दोनों एक ही कक्षा में साथ बैठकर पढ़ते थे।

बैठकाओं में वर्णमाला आरंभ करने से पूर्व विद्यार्थी अपनी पाटी पर एक सूक्ति लिखते थे, यथा—'रामागतिदेहुसुमति'। इस सूक्ति के द्वारा वे भगवान राम से अच्छी बुद्धि की प्रार्थना करते थे ताकि पढ़ाई में प्रगति कर सकें।

बैठकाओं में पढ़ानेवाले शिक्षकों को न हिंदी व्याकरण का ज्ञान था और न ही शिक्षण-विधि का। वर्णों की रटाई द्वारा पढ़ाई होती थी। छात्र बारहखड़ी को रटने के बाद शब्द-निर्माण करना सीखते थे।

आप्रवासन के आरंभिक वर्षों में एस्टेट मालिकों ने भारतीय मज़दूरों के साथ दास जैसा व्यवहार किया। सन् 1835 से सन् 1865 तक का समय उनके लिए बड़ा ही कष्टमय था। इस संबंध में मॉरीशस के प्रसिद्ध विद्वान श्री जयनारायण रॉय लिखते हैं—''तीस वर्षों का यह समय, जिसमें आप्रवासियों को अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी भाषा की बढ़ोतरी के लिए भगीरथ प्रयत्न करने पड़े, अनेक कठिनाइयों से भरा हुआ था।'' भारतवंशियों के मॉरीशस-आगमन से पूर्व यहाँ की दो प्रमुख भाषाएँ, अंग्रेज़ी और फ्रेंच थीं। ईसाई धर्म प्रचलित था। दास-प्रथा के अंतर्गत आए हुए अफ्रीकी मूल के लोग तत्कालीन शासकों के धर्म के अनुयायी बन गए थे। चूँकि भारतीय श्रमिक अपने देवी-देवताओं को साथ ले आए थे, इसलिए अपने हिंदू धर्म को त्यागना पाप समझते थे।

रॉय जी लिखते हैं—''एस्टेट मालिक व उनकी सरकार दोनों ही भारतीय आप्रवासियों के धार्मिक उत्साह, भारतीय समाज के दृढ़ीकरण के प्रयत्न और ख़ास तौर पर हर एस्टेट में शुरू किए गए सायंकालीन हिंदी स्कूलों से ज़रा भी खुश नहीं थे। उन्हें यह जानने की बड़ी उत्सुकता थी कि गीता और रामायण में क्या है और हिंदी स्कूलों में पढ़कर अपनी परंपराओं को बनाए रखने के लिए भारतीय

इतने व्यग्र क्यों हैं! जब उन्होंने विद्यार्थियों को अपने बड़ों के साथ हिंदी स्कूलों में पढ़ते देखा तो आतंकित हो गए और स्कूलों पर दबाव डालने लगे।''

भारतीय आप्रवासियों के हृदय में अपना धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी भाषा बसी हुई थी। उन्हें ईसाई बनाने में ईसाई पादरियों ने कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। बैठकाओं में पढ़ानेवाले समर्पित सेवकों ने उनकी रक्षा की।

सनातन धर्मियों द्वारा हिंदी-शिक्षण में योगदान

भारतीय आप्रवासन के आरंभिक दशकों में पठन-पाठन-कार्य हस्तलिखित पुस्तकों द्वारा होता था। श्री जयनारायण रॉय जी लिखते हैं—''कुछ बरसों तक हर शाम घंटे दो घंटे बैठकर न मिटनेवाली स्याही में सरकंडे की कलम बोर-बोरकर पूरी रामायण नकल करते और यों धर्म के प्रति अपने उत्साह को अभिव्यक्त किया करते थे। बहुत से लोग जो भी किताब हाथ लग जाती, उसी की नकल कर डालते थे, फिर वह कबीर, सूरदास या नानक के भजन, आल्हाखंड या सारंगधर की कहानी ही क्यों न हो।''

कुछ ऐसे पुरोहित थे जो हिंदी का अल्प ज्ञान रखते थे। वे अपने हिंदी-ज्ञान से भाषा और संस्कृति को धर्म-रक्षण प्रदान करते थे। इन श्रद्धालु पंडित-पुरोहितों ने अपने अल्प हिंदी ज्ञान के माध्यम से इस देश में सनातन धर्म की धारा प्रवाहित की। उन्होंने कई बैठक बनवाकर अपनी विधि से हिंदी का साधारण ज्ञान दिया।

डॉक्टर मुनीश्वरलाल चिंतामणि जी 'बैठका' की शिक्षण प्रणाली के बारे में लिखते हैं—पढ़ाई का आरंभ ईश-वंदना से होता था यथा—

सर-सर-सर-सर सनझाकारी।
सोने रूपे गिरवर धारी॥
जे जाने गिरवर के भेव।
नित उठ पूजे गनपत देव॥

बच्चों को अक्षर-ज्ञान बड़े विचित्र ढंग से कराया जाता था। जैसे—

पहिल	– 'क'
दूसर	– 'ख'
गुनिया	– 'ग'
छता	– 'छ'
जनेवा	– 'ज'
पहनवा	– 'प'
तीनकोनिया	– 'य' आदि।

मात्रा का ज्ञान या बारह खड़ी का अभ्यास इस प्रकार कराया जाता था—

क में कानून	– का
क में हिरसिन	– कि
क में दीरघिन	– की
क में तारूकुन	– कु
क में बार्जून	– कू
क में एकले	– के
क में दोलै	– कै
क में कोर्मत	– को
क में दूजकनौ	– कौ
क में मांस्ते	– कं
क में दुबासी	– कः

इस शिक्षण पद्धति में भोजपुरी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है। बच्चों को स्वर-व्यंजन तथा मात्राएँ क्रम से रटाई जाती थीं।

वे धीरे-धीरे शब्दों, फिर वाक्यों को पढ़ने में समर्थ होते थे। थोड़ी सी गिनती का ज्ञान भी कराया जाता था। डॉक्टर चिंतामणि जी आगे लिखते हैं—

पहाड़े का अभ्यास इस क्रम से होता था—

दू - इकाई — दू
दू - दुयाँ — चार

दू - तीयाँ — छौ
दू - चौके — आठ
दू - पाँचे — दस
दू - छके — बारह
दू - साते — चौदह
दू - आठे — सोलह
दू - नवे — अठारह
दू - दहाई — बीस

उन दिनों देवनागरी लिपि के साथ ही कैथी लिपि का प्रयोग होता था। 'बैठकाओं' में पाठ्य-पुस्तकों के न होने के कारण तुलसीकृत रामायण और हनुमान चालीसा के अलावा 'बालचित्र बोध', 'दानलीला', 'तोता-मैना' आदि पुस्तकों का पठन-पाठन हुआ करता था। कहीं-कहीं 'कुँवर विजयमल', 'आल्हा खंड', 'बीरबल विनोद' से भी काम लिया जाता था।

भारत से आए हुए पंडित गोविंद त्रिवेदी और कई अन्य जनों ने हिंदी में प्रवचन करके अनेकों के हृदय में हिंदी के प्रति प्रेम पैदा किया। स्थानीय सनातनी हिंदी विद्वानों की सूची लंबी है। गत शती के कुछेक नाम चिरस्मरणीय हैं, जैसे श्री नरसी मुलुराम सामी, पंडित रामावध शर्मा, पंडित देवदत्त शर्मा, पंडित उमाशंकर गिरजानंद आदि।

ज्यों-ज्यों समय बढ़ता गया त्यों-त्यों धर्म प्रेमियों का उत्साह भी बढ़ता गया। सनातन धर्मियों ने 'रामचरितमानस' और धर्म-प्रचार के लिए अपने देवालयों को माध्यम बनाया। कई दशकों के पश्चात 'मॉरीशस सनातन धर्म मंदिर परिषद' की स्थापना हुई। वर्तमान में यह परिषद हिंदी के माध्यम से भावी पुरोहितों को प्रशिक्षण दे रही है। हिंदी में कथा-वार्त्ता कर रही है। इस प्रकार के कार्यों से हिंदी का अनौपचारिक शिक्षण होता रहा है।

डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि द्वारा रेखांकित उपर्युक्त शिक्षण-विधि का प्रयोग अनेक स्वैच्छिक संस्थाओं में सन् 1940 तक होता रहा। इस विधि का पूर्णत: अंत प्रोफ़ेसर वासुदेव विष्णुदयाल और भारत से आए प्रोफ़ेसर रामप्रकाश जी के हिंदी शिक्षण-क्षेत्र में उतरने से हुआ।

सन् 1949 में मॉरीशस सरकार के निमंत्रण पर प्रोफ़ेसर रामप्रकाश जी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के छात्राध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए मॉरीशस आए। वे महान शिक्षा शास्त्री थे। वे यहाँ तीन दशकों तक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत रहे। छात्राध्यापकों ने उनसे शिक्षण विधि, कक्षाध्यापन और बाल मनोविज्ञान का प्रशिक्षण पाया। उनके द्वारा प्रशिक्षित अध्यापक-अध्यापिकाएँ न केवल सरकारी स्कूलों में हिंदी पढ़ाते थे, प्रत्युत सायंकालीन एवं रविवारीय हिंदी पाठशालाओं में भी हिंदी पढ़ाने लगे। विद्यार्थी नई शिक्षण विधि के माध्यम से हिंदी का ज्ञान अर्जित करने लगे।

प्रोफ़ेसर विष्णुदयाल एवं प्रोफ़ेसर रामप्रकाश के शिक्षण-कार्य से पूर्व मॉरीशस में 'आर्य परोपकारिणी सभा', 'आर्य प्रतिनिधि सभा', 'गीता मंडल', 'हिंदू महासभा', 'तिलक विद्यालय', 'हिंदी प्रचारिणी सभा' आदि स्वैच्छिक संस्थाएँ हिंदी-शिक्षण-कार्य में संलग्न थीं। उपर्युक्त संस्थाओं का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

गीता मंडल

सन् 1920 में 'गीता मंडल' की स्थापना हुई। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य गीता का प्रचार-प्रसार करना था। यह कार्य हिंदी के माध्यम से ही होता था। फलत: बहुतों को हिंदी पढ़ने की प्रेरणा मिली।

हिंदू महासभा

'हिंदू महासभा' की स्थापना सन् 1925 में हुई। इस संस्था ने 'गीता' और 'रामायण' से संबंधित परीक्षाएँ आरंभ कीं। इन ग्रंथों को पढ़ने के लिए बहुत से लोग हिंदी पढ़ने लगे।

तिलक विद्यालय

12 जून, 1926 को मोंताई लोंग ग्राम में 'तिलक विद्यालय' की स्थापना श्री गिरधारी भगत और रामलाल मंगर भगत जी के सहयोग से हुई। इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य था—हिंदी का शिक्षण।

हिंदी प्रचारिणी सभा

'तिलक विद्यालय' में ही 24 दिसंबर, 1935 को 'हिंदी प्रचारिणी सभा' ने जन्म लिया। इस संस्था ने अपने स्थापना-काल से अब तक मुख्यत: व्याकरण सम्मत और साहित्यिक हिंदी का प्रचार-प्रसार किया। 'हिंदी प्रचारिणी सभा' द्वारा आरंभिक काल में 'परिचय' और 'प्रथमा' परीक्षाएँ चालू की गईं। सन् 1960 के दशक में साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'मध्यमा' और 'उत्तमा' परीक्षाएँ प्रारंभ हुईं। मॉरीशस सरकार ने हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की सभी परीक्षाओं को मान्यता दी। इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए सैकड़ों लोग सरकारी हिंदी अध्यापक नियुक्त हुए।

आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा

'आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा' की स्थापना 1930 में हुई। इसका पंजीकरण 1934 में हुआ। इस सभा के प्रमुख कार्य हैं—हिंदी के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना, अपने केंद्रीय भवन में भावी पुरोहित-पुरोहिताओं को प्रशिक्षित करना, अपनी शाखाओं में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हिंदी पढ़ाना आदि।

इस सभा ने अपने कार्यों की पूर्ति के लिए कई समितियों को गठित किया है। 'हिंदी शिक्षा विभाग समिति' हिंदी शिक्षण-कार्य करती है। इस समय इस सभा की तीस शाखाओं में हिंदी की पढ़ाई हो रही है। इन शाखाओं में पहली से छठी कक्षाओं की पढ़ाई के साथ-साथ 'प्रवेशिका', 'परिचय', 'प्रथमा', 'मध्यमा' और 'उत्तमा' परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाती है। गत दस वर्षों में कोई पंद्रह हज़ार विद्यार्थी प्राथमिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो चुके हैं और माध्यमिक परीक्षाओं में लगभग तीन हज़ार छात्र-छात्राएँ उत्तीर्ण हैं।

स्वामी स्वतंत्रानंदजी महाराज के आगमन से पूर्व 1912 में पंडित आत्माराम विश्वनाथजी मॉरीशस आ चुके थे। वे हिंदी के अच्छे लेखक थे। उन्होंने कई हिंदी पत्रों का संपादन किया और हिंदी में अनेक पुस्तकें लिखीं। वे हिंदी के माध्यम से आर्य समाज के मंच से हिंदी प्रचार-कार्य में लंबे समय तक रत रहे। बहुतों ने उनसे हिंदी सीखने की प्रेरणा पाई। स्वामी स्वतंत्रानंदजी हिंदी-संस्कृत के धुरंधर विद्वान थे। उन्होंने इस देश में व्याप्त अंध परंपरा और अविद्या पर काफी प्रहार किया। अनेक गाँवों में पैदल पहुँचकर हिंदी पाठशालाएँ खोलीं। उन्होंने दो वर्ष यहाँ रहकर सैकड़ों व्यक्तियों को हिंदी की ओर उन्मुख किया।

'आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा' के 'धार्मिक प्रशिक्षण विभाग' द्वारा भावी पुरोहित-पुरोहिताओं को हिंदी के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है। छात्र पुरोहितों को तीन वर्षों तक वैदिक कर्मकांड और वैदिक दर्शन की शिक्षा दी जाती है। उन्हें इस प्रशिक्षण द्वारा तीन परीक्षाओं, 'पुरोहित प्रबोध', 'पुरोहित रत्न' और 'पुरोहित निधि' में उत्तीर्ण होना पड़ता है। छात्र-पुरोहितों को सुयोग्य शिक्षक पढ़ाते हैं जो भारत के गुरुकुल कांगड़ी से 'आचार्य' की उपाधि से विभूषित होकर आए हैं। इन आचार्यों ने गत दस वर्षों में पाँच सौ पंडित-पंडिताओं को तैयार किया है। ये सभी 'आर्य रविवेद सभा' की विभिन्न शाखाओं में हिंदी के माध्यम से धर्म का प्रचार करते हैं।

गहलोत राजपूत महासभा

'गहलोत राजपूत महासभा' की स्थापना 1964 में हुई। इसका मुख्य कार्यालय 'महाराना प्रताप गली', पोर्ट लुई में पाया जाता है। इस सभा का मुख्य उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना है। इसके पंडित-प्रचारक हिंदी के माध्यम से ही प्रचार-प्रसार कार्य करते हैं। इस सभा की ओर से भावी पुरोहित-पुरोहिताओं को हिंदी के माध्यम से ही प्रशिक्षण दिया जाता है।

मानव सेवा निधि

इस स्वयंसेवी संस्था की ओर से समय-समय पर सांस्कृतिक

कार्यक्रमों का आयोजन होता है। सभी कार्यक्रम हिंदी भाषा के माध्यम से ही प्रस्तुत किए जाते हैं। भजन और रामायण-गान द्वारा नई पीढ़ी को हिंदी सीखने की प्रेरणा दी जाती है। 'मानव सेवा निधि' कई वर्षों तक 'स्वदेश' नामक हिंदी पत्र निकालती रही। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस संस्था ने अपने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी का अनौपचारिक शिक्षण करने में प्रशंसनीय कार्य किया है।

जनांदोलन द्वारा हिंदी शिक्षण

श्री वासुदेव विष्णुदयाल भारत जाने से पूर्व 'आर्य कुमार सभा' के सक्रिय सदस्य थे। सन् 1939 में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि से विभूषित होकर मॉरीशस लौटे। स्वदेश लौटते ही उन्होंने हिंदी के माध्यम से धर्म-प्रचार प्रारंभ कर दिया। उन्होंने अपने जनांदोलन के द्वारा 300 हिंदी पाठशालाएँ खोलीं। वे धर्म-प्रचार के अवसर पर स्त्री-पुरुषों से यह गाना गवाया करते— ''पढ़ो हिंदू सभी हिंदी—अ, आ, इ, ई। यह ऋषियों की भाषा है—क, ख, ग, घ,...।''

पंडित विष्णुदयाल जी ने हिंदुओं में राजनीतिक चेतना पैदा की। उनके द्वारा संचालित 'जनांदोलन' ने आर्य समाजियों तथा सनातनियों दोनों को ही हिंदी और हिंदू धर्म की ओर आकृष्ट किया।

अन्य संस्थाएँ

मॉरीशस में 'सम्मेलन सभा', 'सावान संगीत संघ', 'हिंदी एक्सटेंशन यूनिट' आदि कई स्वैच्छिक संस्थाओं ने भी प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हिंदी का शिक्षण किया है।

सत्यार्थप्रकाश और हिंदी

मॉरीशस में खड़ी बोली हिंदी का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार करनेवाली सबसे प्रबल संस्था 'आर्य सभा' है। यह सभा सन् 1960 में अस्तित्व में आई। यह 'आर्य प्रतिनिधि सभा' एवं 'आर्य परोपकारिणी सभा' की कोख से जन्मी है। 'आर्य प्रतिनिधि सभा' के जनक महर्षि दयानंद सरस्वती का अमर ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' है। यह ग्रंथ मॉरीशस कैसे पहुँचा? यह घटना बड़ी ऐतिहासिक है।

सन् 1898 में ब्रिटिश सेना में सिपाही के रूप में बंगाल रेजिमेंट से कुछ बंगाली सिपाही मॉरीशस आए। उनमें से एक का नाम भोलानाथ तिवारी था। वे महर्षि दयानंद के कालजयी ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' साथ ले आए थे। सन् 1902 में भारत लौटते समय वे अपने ग्वाले, भिखारी सिंह जी को वह पुस्तक दे गए। भिखारी सिंह ने पुस्तक खेमलाल लाला नामक व्यक्ति को दे दी। खेमलाल लाला 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़कर अत्यंत प्रभावित हुए। फलत: उन्होंने सन् 1903 में अपने दो साथियों—गुरुप्रसाद दलजीतलाल और जगमोहन गोपाल के सहयोग से 'क्यूर्पिप' में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की। 'सत्यार्थप्रकाश' पर साप्ताहिक सत्संग शुरू हुआ। अब तक भारतीय आप्रवासी केवल सूर, तुलसी और कबीर की रचनाओं पर ही सत्संग किया करते थे। 'सत्यार्थप्रकाश' वह प्रथम ग्रंथ था जिसने मॉरीशस में खड़ी बोली की नींव डाली। इस देश में पहले पहल 'सत्यार्थप्रकाश' के माध्यम से ही लोगों ने खड़ी बोली हिंदी का ज्ञान प्राप्त किया। आर्य समाज ने खड़ी बोली हिंदी को 'आर्य भाषा' नाम से अभिहित किया तथा इसके प्रचार-प्रसार में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी।

मॉरीशस की राजधानी—पोर्ट लुई में आर्य समाज की स्थापना

सन् 1909 के राजकीय आयोग के सामने भारत से आए हुए हिंदुओं के त्राता बारिस्टर मणिलाल मगनलाल डॉक्टर ने सरकार द्वारा हिंदी पढ़ाने के पक्ष में बयान दिया था जो स्वीकृत नहीं हुआ था।

सन् 1911 के अंत में मणिलाल मॉरीशस से रवाना हुए। जाने से पहले उन्होंने 8 मई, 1911 को मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आर्य समाज की स्थापना करने में श्री खेमलाल लाला और उनके साथियों को अपना पूरा सहयोग दिया। सन् 1911 से आज तक आर्य समाज ने हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में अभूतपूर्व कार्य

किया है। मणिलाल डॉक्टर ने जिस प्रेस में हिंदुस्तानी-पत्र निकाला था, वह प्रेस भी पोर्ट लुई आर्य समाज को दे दिया। साथ ही रंगून से एक प्रकांड वैदिक विद्वान, डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज को मॉरीशस में कार्य करने के लिए बुलाया।

आर्य समाज के पूर्वार्द्ध काल का शिक्षण-कार्य

मॉरीशसीय आर्य समाज की आयु इस समय एक सौ बारह वर्षों की है। इस संस्था द्वारा किए गए हिंदी-शिक्षण-कार्य को दो काल-खंडों में देखा जा सकता है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। प्रथम, 1950 से पूर्व का शिक्षण-कार्य और दूसरा सन् 1950 के पश्चात का कार्य।

पूर्वार्द्ध में कई भारतीय वैदिक प्रचारक मॉरीशस आए और अनेक मॉरीशसीय युवक भारत पढ़ने गए।

डॉक्टर भारद्वाज जी 15 दिसंबर, 1911 में अपनी पत्नी सुमंगली देवी और दो पुत्रों के साथ यहाँ आए। वे लगभग तीन वर्षों तक मॉरीशस में कार्य करते रहे। वे योग्य चिकित्सक थे। उन्होंने जीविका के लिए चिकित्सा का सहारा लिया। यहाँ आते ही आर्य समाज आंदोलन में पिल पड़े। सन् 1913 में उन्होंने आर्य समाज का पंजीकरण करवाया और नया नाम रखा गया, 'आर्य परोपकारिणी सभा'। उन्होंने नारी शिक्षा एवं जागृति, हिंदी प्रचार और सुधारवादी आन्दोलन चलाए। उन्हें रूढ़िवादियों द्वारा विरोध का सामना करना पड़ा पर अविचल डॉक्टर भारद्वाज अपनी पत्नी सुमंगली देवी के साथ डटकर काम करते रहे। सुमंगली देवी प्रथम भारतीय महिला थीं जो इस देश में सार्वजनिक सभाओं में हिंदी में भाषण देती थीं। उन्होंने स्त्रियों और लड़कियों की शिक्षा के लिए अनेक कन्या-पाठशालाएँ खोलीं। कन्या-शिक्षा के विरोधी लोग कुछेक पाठशालाओं में आग लगा देते थे।

सन् 1914 में डॉक्टर भारद्वाज ने मॉरीशस से प्रस्थान किया। जाने से पहले उन्होंने इस देश में जागरण लाने के लिए पंजाब से एक तेजस्वी संन्यासी, स्वामी स्वतंत्रानंद जी को मॉरीशस आने के लिए निमंत्रित किया।

पंडित आत्माराम विश्वनाथ और स्वामी स्वतंत्रानंद

स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज के आगमन से पूर्व 1912 में पंडित आत्माराम विश्वनाथ जी मॉरीशस आ चुके थे। वे हिंदी के अच्छे लेखक थे। उन्होंने कई हिंदी पत्रों का संपादन किया और हिंदी में अनेक पुस्तकें लिखीं। वे हिंदी के माध्यम से आर्य समाज के मंच से हिंदी प्रचार-कार्य में लंबे समय तक रत रहे। बहुतों ने उनसे हिंदी सीखने की प्रेरणा पाई। स्वामी स्वतंत्रानंद जी हिंदी-संस्कृत के धुरंधर विद्वान थे। उन्होंने इस देश में व्याप्त अंध परंपरा और अविद्या पर काफ़ी प्रहार किया। अनेक गाँवों में पैदल पहुँचकर हिंदी पाठशालाएँ खोलीं। उन्होंने दो वर्ष यहाँ रहकर सैकड़ों व्यक्तियों को हिंदी की ओर उन्मुख किया।

पंडित काशीनाथ के कार्य

सन् 1911 में भारत लौटते समय मणिलाल डॉक्टर दो मॉरीशसीय युवकों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने साथ ले गए थे। एक थे काशीनाथ किष्टो और दूसरे रामखेलावन बुधन। काशीनाथ किष्टो डी.ए.वी. कॉलेज में पढ़कर 1916 में मॉरीशस लौटे। वे कुशल शिक्षक, उपदेशक, लेखक, संपादक और समीक्षक थे। उनके सहयोग से सन् 1818 में वाक्वा में 'आर्यन वैदिक स्कूल' खोला गया।

उन्होंने अपनी पत्नी के साथ इस स्कूल में पढ़ाना आरंभ किया। बच्चों को पढ़ाने के लिए 'शिशु बोध' नामक तीन पुस्तकें लिखीं। उनके शिष्यों में श्री मोहनलाल मोहित, पंडित रामरतन, श्री नंदलाल आदि कर्मठ समाज सेवक और हिंदी प्रचारक बने।

पंडित काशीनाथ जी ने लेखन, संपादन, गायन और जोशीले प्रवचनों के माध्यम से हिंदी का खूब प्रचार किया। वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी पढ़ाने के लिए बहुतों को प्रशिक्षण दिया।

पंडित वेणिमाधव सतीराम

युवक वेणिमाधव भारत से पढ़कर 1925 में लौटे। वे हिंदी-

संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। बड़े कुशल वक्ता थे। उन्होंने हिंदी-शिक्षण-कार्य में स्तुत्य प्रयास किया। बहुत से आर्य समाजी पंडितों को हिंदी-संस्कृत का अच्छा ज्ञान दिया। दीर्घकाल तक पुरोहित-प्रशिक्षण-कार्य करते रहे और प्रति सप्ताह 'वैदिक वाणी' कार्यक्रम में ज्ञानवर्धक संदेश रेडियो पर प्रसारित करते रहे। हिंदी के प्रचार-प्रसार में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता।

श्री मोहनलाल मोहित जी का हिंदी-शिक्षण में योगदान

मोहनलाल मोहित जी आर्य समाज के भीष्म पितामह थे। उन्होंने दीर्घकाल तक आर्य समाज का हिंदी के माध्यम से नेतृत्व किया।

मोहित जी ने बचपन में कैथी लिपि द्वारा पढ़ाई शुरू की थी। पंडित काशीनाथ के संपर्क में आकर देवनागरी के माध्यम से हिंदी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया।

वे किशोरावस्था से ही अपने निवास स्थान के आसपास के गाँवों में रहने वाले युवकों को हिंदी पढ़ाने लगे। उन्होंने 'आर्योदय' पत्र का लंबे समय तक संपादन किया। न केवल शिक्षण द्वारा वरन लेखन द्वारा भी सबको हिंदी सीखने की प्रेरणा देते रहे।

1925 तक आते-आते आर्य समाज की पचहत्तर शाखाएँ खुल चुकी थीं। सभी शाखाओं में हिंदी की पढ़ाई हो रही थी। हिंदी पाठशालाओं के संचालन के लिए वार्षिकोत्सवों का आयोजन होने लगा। उन अवसरों पर आर्थिक दान के लिए अपील की जाती। लोग यथाशक्ति दान देते। इस प्रकार के आयोजनों से भोजपुरी बोली के मुकाबले हिंदी का प्रचार बढ़ा और वह अधिकाधिक लोकप्रिय होती गई।

आर्य समाजियों के हिंदी-प्रेम को रेखांकित करते हुए श्री जयनारायण रॉय जी लिखते हैं—''सनातन धर्म का प्रचार करनेवाले पंडित-पुरोहित केवल पूजा-पाठ और व्रत अनुष्ठान के अवसर पर ही उपदेश देते थे। इसके विपरीत आर्य समाजी पंडित चाहे त्योहार हो या शादी, मृत्यु-जागरण हो या कोई सामाजिक उत्सव, सभी का उपयोग उपदेश देने के लिए करने लगे। इससे हिंदी के प्रचार-प्रसार को बड़ा बल मिला। आर्य समाजी कौन है, इसका फौरन पता चल जाता था क्योंकि वे हमेशा हिंदी बोलने का आग्रह करते थे। उनकी देखा-देखी और आग्रह पर दूसरे भी हिंदी बोलते और इस तरह अधिकाधिक लोगों को हिंदी बोलने की आदत होती गई।''

जैमिनी मेहता और स्वामी विज्ञानानंद

सन् 1925 में मेहता जैमिनी जी और 1926 में स्वामी विज्ञानानंद जी मॉरीशस आए। मेहता जैमिनी जी बड़े कुशल वक्ता थे। उन्होंने यहाँ 'आर्य कुमार सभा' की स्थापना की तथा युवकों को हिंदी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हीं की प्रेरणा से 1933 में वासुदेव विष्णुदयाल लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज में पढ़ने गए और छः वर्ष बाद हिंदी एवं अंग्रेज़ी के योग्य विद्वान बनकर मॉरीशस लौटे।

जैमिनी जी और स्वामी विज्ञानानंद ने अपने व्याख्यानों द्वारा मॉरीशस की नई पीढ़ी को हिंदी की ओर आकृष्ट किया।

प्रवासी भारतीयों की आगमन-शती एवं जन-जागरण

सन् 1935 में 'आर्य परोपकारिणी सभा' ने प्रवासी भारतीयों के मॉरीशस आगमन की शताब्दी का आयोजन किया। इस शताब्दी-समारोह में विद्वानों के हिंदी भाषणों को सुनकर श्रोता बड़े प्रभावित हुए। परिणामस्वरूप माता-पिता ने अपने बच्चों को हिंदी सीखने के लिए हिंदी पाठशालाओं में बड़ी संख्या में भेजना शुरू किया।

आर्य समाज के उत्तरार्द्ध काल में किए गए शिक्षण-कार्य

सन् 1950 से आज तक बीसियों भारतीय धर्मोपदेशक मॉरीशस आए और दर्जनों युवक-युवतियाँ हिंदी का उच्च ज्ञान प्राप्त करने भारत गए। 1950 से आज तक आए हुए कुछ हिंदी विशेषज्ञों के नाम इस प्रकार हैं—स्वामी नारायणानंद, महात्मा आनंद भिक्षु, स्वामी ध्रुवानंद, स्वामी अभेदानंद, स्वामी अखिलानंद, पंडित कृष्ण शर्मा, महात्मा आनंद स्वामी, आचार्य वैद्यनाथ, आचार्य कृष्ण, आचार्य वेदपाल, स्वामी विद्यानंद विदेह, स्वामी दिव्यानंद, स्वामी सत्यम,

डॉक्टर उषा शर्मा आदि। इन सभी धर्म-प्रचारकों ने हिंदी में धुआँधार भाषण देकर हजारों लोगों को हिंदी सुनने, समझने और सीखने की प्रेरणा दी। ये विद्वान रेडियो और टेलीविज़न के माध्यम से भी संदेश देते रहे। स्थानीय पंडित-पुरोहित भारतीय विद्वानों से प्रभावित होते रहे और उन्हीं के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए हिंदी का प्रचार-प्रसार डटकर करते रहे। साथ ही आर्य सभा के मुखपत्र आर्योदय पर लेख लिखकर हिंदी वातावरण का निर्माण करते रहे। वे अपने प्रभावशाली उपदेशों द्वारा हिंदी का अनौपचारिक शिक्षण करते रहे हैं।

सन् 1960 से पहले आर्य समाज के मंतव्यों का प्रचार-प्रसार करनेवाली दो सभाएँ थीं—'आर्य परोपकारिणी सभा' और 'आर्य प्रतिनिधि सभा'। सन् 1960 में दोनों सभाओं का आर्य सभा में विलय हो गया। आर्य सभा ने हिंदी के विशेष शिक्षण के लिए कुछ नए कदम उठाए। अनेक समितियाँ गठित करके हिंदी को चार स्तरों पर पढ़ाना शुरू किया, यथा (1) पूर्व-प्राथमिक स्तर, (2) प्राथमिक स्तर, (3) माध्यमिक स्तर और (4) विश्वविद्यालयीय स्तर।

पूर्व प्राथमिक पाठशाला समिति

आर्य सभा की पूर्व प्राथमिक पाठशाला समिति द्वारा शिशुओं की पढ़ाई की व्यवस्था की जाती है। पूर्व प्राथमिक पाठशाला के छात्र-छात्राओं को अन्य विषयों के साथ हिंदी का भी ज्ञान दिया जाता है। हिंदी-शिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षित अध्यापक-अध्यापिकओं द्वारा काम लिया जाता है। पाठ्य-सामग्री तैयार करना, हिंदी में बाल गीतों को गवाना, पशु-पक्षियों एवं आसपास की वस्तुओं के हिंदी में नाम बताना, हिंदी में ईश-प्रार्थना सिखाना आदि पूर्व-प्राथमिक शिक्षण-कार्य के अंतर्गत होता है। इस समय आर्य सभा द्वारा चौदह पूर्व प्राथमिक पाठशालाएँ चल रही हैं। इन पाठशालाओं की देख-रेख के लिए कुछ निरीक्षक नियुक्त किए जाते हैं। हजारों बच्चे अपनी योग्यतानुसार हिंदी शब्दों को सीखकर सरकारी प्राथमिक पाठशालाओं में भरती होते हैं।

विद्या समिति

सन् 1950 से आज तक आर्य सभा द्वारा गठित विद्या समिति सायंकालीन और रविवारीय पाठशालाओं में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की पढ़ाई की व्यवस्था करती रही है।

इस समय आर्य समाज के मंदिरों में स्थित एक सौ बहत्तर हिंदी पाठशालाओं में लगभग 300 अध्यापक-अध्यापिकाएँ पढ़ा रहे हैं। दो प्रकार के अध्यापक-अध्यापिकाएँ छात्रों को पढ़ाते रहे हैं। एक वे हैं जिन्होंने प्रोफ़ेसर रामप्रकाश द्वारा अध्यापन-विधि सीखी है और दूसरे वे अध्यापक हैं जिन्हें 'विद्या समिति' ने कार्यशालाओं का आयोजन करके प्रशिक्षित किया है।

प्रशिक्षण के अतिरिक्त विद्या समिति पाठ्यपुस्तकों का निर्माण भी करती है। साथ ही पहली से छठी कक्षा की परीक्षाओं का आयोजन करती है। ज़िले के स्तर पर विद्या दिवस मनाती है तथा शिक्षण-कार्य की देख-रेख के लिए निरीक्षकों को नियुक्त करती है।

बीसवीं सदी के पाँचवें दशक में 'भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद्' अजमेर की परीक्षाओं—'विद्या विनोद', 'विद्यारत्न', 'विद्या विशारद' और 'विद्या वाचस्पति' की पढ़ाई शुरू की गई जो सन् 2000 तक होती रही। इन परीक्षाओं में धर्म, दर्शन, साहित्य, सामान्य ज्ञान आदि विषयों का समावेश था। सभी प्रश्नों का हल हिंदी के माध्यम से करना पड़ता था। प्रोफ़ेसर रामप्रकाश द्वारा प्रशिक्षित अध्यापक पचास वर्षों तक इन परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्र-छात्राओं को पढ़ाते रहे। अनगिनत छात्र-छात्राओं ने इन परीक्षाओं के माध्यम से हिंदी का ज्ञान प्राप्त किया।

सन् 1950 से सन् 2000 तक हज़ारों छात्र-छात्राओं ने भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद की 'विद्या वाचस्पति' परीक्षा में सफ़लता प्राप्त की है।

पिछले कुछ वर्षों से विद्या समिति ने छठी कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों के लिए दो नई परीक्षाएँ—'सिद्धांत प्रवेश' और 'सिद्धांत रत्न' नाम से चलाई है। अब तक काफ़ी छात्रों ने इन परीक्षाओं में

भाग लेकर सफ़लता प्राप्त की है।

आर्यन वैदिक स्कूलों में हिंदी-शिक्षण

आर्य सभा द्वारा दो 'आर्यन वैदिक स्कूलों' का संचालन होता है जिनमें सरकार द्वारा प्रशिक्षित शिक्षक-शिक्षिकाएँ पढ़ाते हैं। एक स्कूल लावाँचियर ग्राम में है जिसमें सभी बच्चे हिंदी पढ़ते हैं। दूसरा स्कूल वाक्वा में है जिसमें हिंदू बच्चों के साथ ग़ैर हिंदू बच्चे भी हैं।

डी.ए.वी. कॉलेज में हिंदी

आर्य सभा द्वारा दो डी.ए.वी. कॉलेजों का संचालन होता है एक पोर्ट लुई में जो पचास वर्षों से शिक्षण-कार्य कर रहा है और दूसरा मोरसेलमाँ-सेंट-आँद्रे गाँव में जो सन् 2004 से शिक्षण-कार्य में रत है। दोनों कॉलेजों में दो हज़ार बच्चे फ़ॉर्म एक से एच.एस.सी. तक पढ़ते हैं। सभी हिंदू विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से फ़ॉर्म तीन तक हिंदी पढ़नी पड़ती है। बहुत से छात्र 'कैंब्रिज विश्वविद्यालय' की 'स्कूल सर्टिफ़िकेट' और 'हायर स्कूल सर्टिफ़िकेट' तथा 'लंदन यूनिवर्सिटी' की जी.सी.ई. 'ऑर्डिनरी' और 'एडवांस लेवल' की परीक्षाएँ भी कई दशकों से देते आ रहे हैं। पिछले पचास वर्षों में पोर्ट लुई के डी.ए.वी. कॉलेज से अनगिनत बच्चे हिंदी सीखकर निकले हैं।

आर्य सभा अपने विद्यालयों में पूर्वप्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक पढ़ाई के अतिरिक्त स्नातक स्तर का भी शिक्षण करती रही है। 'भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद' अजमेर द्वारा संचालित 'विद्या वाचस्पति' तथा 'सर्वानंद विद्यापीठ दयानंदमठ, पंजाब' द्वारा संचालित 'सिद्धांत शास्त्री' की पढ़ाई कई वर्षों तक करती रही। ये दोनों परीक्षाएँ बी.ए. के समकक्ष हैं।

'हिंदी प्रचारिणी सभा' सन् 1960 के दशक से 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' प्रयाग द्वारा संचालित 'उत्तमा' परीक्षा की पढ़ाई व्यवस्थित ढंग से करती आई है। आर्य सभा ने 'उत्तमा' परीक्षा के लिए बीते वर्षों में हज़ारों छात्र-छात्राओं को पढ़ाया।

1970 के दशक में 'उत्तमा' उपाधि से विभूषित विद्यार्थियों को बनारस तथा भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में एम.ए. के लिए प्रवेश मिलता था। 'उत्तमा' परीक्षा को बी.ए. का दर्जा दिया जाता था।

डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज द्वारा तृतीयक स्तर का शिक्षण

आर्य सभा विश्वविद्यालयीय स्तर पर हिंदी का शिक्षण करनेवाली मात्र एक ही स्वैच्छिक संस्था है जो गत एक दशक से इस दिशा में कार्य कर रही है।

विश्वविद्यालयीय स्तर के शिक्षण का अधिकार प्राप्त करने के लिए स्थानीय 'तृतीयक शिक्षा आयोग' अर्थात Tertiary Education Commission की कई माँगों की पूर्ति करनी पड़ती है। उदाहरण के लिए सर्वप्रथम माँग है किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय का वह स्वीकृति-पत्र जिसके द्वारा यह प्रमाणित किया जाए कि अमुक विश्वविद्यालय अमुक संस्था को तृतीयक स्तर का शिक्षण प्रारंभ करने के लिए अपने विश्वविद्यालय के साथ संबद्ध कर रहा है अथवा वह परीक्षा लेने और उपाधि प्रदान करने की स्वीकृति दे रहा है। दूसरी माँग है तृतीयक स्तर के शिक्षण-कार्य के लिए एक उपयुक्त विद्यालय जिसका एक सुसज्जित पुस्तकालय हो, तृतीय माँग है एक कंप्यूटर लैबोरेटरी की जिसमें उचित शिक्षण सामग्रियाँ हों, चौथी माँग है विश्वविद्यालयीय स्तर के शिक्षण के लिए सहयोगी कर्मचारीगण। सबसे आवश्यक माँग है योग्य व्याख्याता जो कम-से-कम एम.ए. तक पढ़ा हो और शिक्षण-क्षेत्र में जिसका दीर्घकाल का अनुभव हो।

इन सबकी पूर्ति में करोड़ों का व्यय होता है। तृतीयक स्तर के शिक्षण के लिए आर्य सभा आवश्यक धन-राशि प्राप्त करने के प्रयास में जुट गई।

आर्य सभा ने विश्वविद्यालयीय स्तर के शिक्षण के लिए एक आधुनिकतम भवन का निर्माण मॉरीशस की राजधानी के पास पाय नामक ग्राम में, राजमार्ग की कुछ दूरी पर किया। इस भवन का नाम रखा गया 'डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज।' इस कॉलेज के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्रियाँ जुटाई गईं। एक भरा-पूरा पुस्तकालय भी खोला गया।

सन् 2007 में आर्य सभा ने हिंदी में बी.ए. और एम.ए. की पढ़ाई के लिए 'कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय', हरियाणा, भारत से संपर्क स्थापित किया। अंतत: एक समझौता तैयार किया गया और दोनों तरफ़ से हस्ताक्षर किए गए।

समझौते के अनुसार 2007 में बी.ए. की पढ़ाई शुरू की गई। बत्तीस छात्र इस कोर्स के लिए भरती हुए। बी.ए. में चार विषय पढ़ने थे—अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य, हिंदी साहित्य, संस्कृत और भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन। चारों विषयों के शिक्षण के लिए चार व्याख्याता नियुक्त किए गए जिनमें पीएचडी उपाधि से विभूषित दो व्याख्याताओं ने तीन वर्षों तक नि:शुल्क अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। हिंदी शिक्षण में आधुनिक शैक्षणिक प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

बी.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षाएँ सन् 2008 के मई महीने में हुईं। तीस परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए और बी.ए. द्वितीय वर्ष की पढ़ाई में मनोयोग से लग गए।

सन् 2008 में बी.ए. प्रथम वर्ष में 28 छात्र-छात्राएँ भरती हुए और दस एम.ए. पूर्वार्द्ध में। अगले मई में परीक्षाएँ हुईं। बी.ए. प्रथम वर्ष में पच्चीस परीक्षार्थी पास हुए। द्वितीय वर्ष में अट्ठाईस और एम.ए. पूर्वार्द्ध में आठ। तृतीय वर्ष की बी.ए. परीक्षा में सत्ताईस परीक्षार्थी सफ़ल हुए और एम.ए. उत्तरार्ध में आठ।

सन् 2010 में पहली बार डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज का दीक्षांत समारोह (Convocation Ceremony) हुआ। उस अवसर पर सत्ताईस छात्र बी.ए. की डिग्री और आठ एम.ए. की उपाधि से विभूषित हुए।

सन् 2014 के दिसंबर मास में पाँचवाँ दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ। अब तक डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज में पढ़नेवाले एक सौ पाँच छात्र-छात्राओं ने बी.ए. की डिग्री प्राप्त की है और चालीस एम.ए. की उपाधि से विभूषित हो चुके हैं।

साथ ही इस कॉलेज में डिप्लोमा स्तर की भी पढ़ाई होती है। अब तक पैंतीस छात्र-छात्राएँ हिंदी में डिप्लोमा पा चुके हैं।

गत वर्ष डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज का पुनर्नामकरण किया गया। नया नाम रखा गया 'ऋषि दयानंद इंस्टिट्यूट'। इस शिक्षा संस्थान में इस समय डिप्लोमा, बी.ए. और एम.ए. की पढ़ाई हो रही है। कोई सवा सौ छात्र-छात्राएँ हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं।

बी.ए. के छात्र पूर्णकालिक अध्ययन करते हैं। एम.ए. और डिप्लोमा की पढ़ाई अंशकालिक होती है। हिंदी के कोई दस व्याख्याता शिक्षण-कार्य में बड़े समर्पित भाव से संलग्न हैं। इस शिक्षण-कार्य के उद्देश्यों में एक है, हिंदी के प्रति छात्रों के हृदयों में अनुराग पैदा करना और दूसरा है, शिक्षण-कार्य के लिए हिंदी के भावी शिक्षक-शिक्षिकाएँ तैयार करना।

गत शती के प्रथम दशक में मॉरीशस में आर्य समाज ने बैठकाओं में हिंदी की पढ़ाई शुरू की थी। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक तक आते-आते आर्य समाज से जुड़े हिंदी प्रेमियों ने इस हिंदी भाषा को विश्वविद्यालय तक पहुँचा दिया। चूँकि आर्य समाज हिंदी को 'आर्य भाषा' के रूप में प्रतिष्ठित करता है, इसलिए जब तक मॉरीशस में आर्य समाज की गतिविधियाँ होती रहेंगी तब तक हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल बना रहेगा।

संदर्भ

1. जयनारायण रॉय, मॉरीशस में हिंदी भाषा का संक्षिप्त इतिहास, पृ. 55, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली, संस्करण 1970
2. वही, पृष्ठ 58
3. वही, पृष्ठ 64
4. वही, पृष्ठ 66
5. आर्योदय, पृ. 7, 26 फरवरी, 1999
6. वही, पृ. 8, 26 फरवरी, 1999

डीन, ऋषि दयानंद इंस्टिट्यूट, पाय
मॉरीशस
aryamu@intnet.mu

❖

प्राध्यापक, ऋषि दयानंद संस्थान, पाय
मॉरीशस

20. मॉरीशस में हिंदी प्रचार-प्रसार : संस्थाएँ व गतिविधियाँ

श्री राजनारायण गति

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैश्विक धरातल पर हिंदी को लेकर गहन चिंतन की आवश्यकता है। परिस्थितियाँ बदल रही हैं, नई-नई चुनौतियाँ सामने आ रही हैं और लोगों के दृष्टिकोण में भी अंतर आ रहा है। इन सब बातों पर अनेकानेक सम्मेलनों में विस्तारपूर्वक चर्चाएँ तो हुई हैं परंतु प्रश्न वहीं आकर ठहर जाता है कि इन मुद्दों के सामने कौन कितना कटिबद्ध है ?

भारत तो हिंदी का अथाह सागर है। वहाँ भी समस्याएँ अपनी जगह हैं लेकिन साधन व संभावनाएँ भिन्न हैं। भारत से बाहर वातावरण अलग ही है। फिर भी, हिंदी के उन्नयन की दिशा में विभिन्न स्तरों पर अद्भुत कार्य हो रहा है। प्रवासियों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। उपनिवेश काल में जो भारतीय गिरमिटिया मज़दूर दक्षिण-अफ्रीका, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गयाना इत्यादि देशों में ले जाए गए थे और दूसरा जो विश्व के सभी कोनों में जाकर रोज़गार, व्यापार आदि के लिए अपनी इच्छानुसार बसे हुए हैं।

इन दोनों वर्गों ने अपने-अपने तरीकों से अपने नए निवास-स्थान के परिप्रेक्ष्य में अपने संस्कारों व अपने मूल्यों के संरक्षण के लिए अथक प्रयास किया है। कहीं सफ़लता कम मिली है तो कहीं अधिक। परंतु यह स्पष्ट है कि 'गिरमिटिया देशों' की स्थिति लगभग एक जैसी है। इन सभी को करीब-करीब उन्हीं स्थानों से ले जाया गया था जहाँ इनकी भाषा-संस्कृति व इनका रहन-सहन एक जैसा था और वे अधिक शिक्षित भी नहीं थे। इनके लिए भाषा केवल संपर्क का माध्यम नहीं थी। इनके लिए इनकी भाषा इनकी धरोहर थी जिससे इनका आत्मिक लगाव था और आदर से उसे 'मातृभाषा' कहते थे। इनकी भाषा इन्हें इनके धर्म व इनके इष्टदेव से जोड़ती थी। इनकी भाषा ही इनका सम्मान था।

मॉरीशस भी उसी श्रेणी में आता है। परंतु यहाँ की बात कुछ अलग है क्योंकि यहाँ पर पूर्व से कोई आबादी नहीं थी और यहाँ बसाए गए लोगों में भारतीय मूल के लोगों की संख्या कोई 70 प्रतिशत रही। स्वतंत्रता के पश्चात भी हमेशा भारतीय वंशज ही प्रशासन संभालते रहे हैं। अत: भाषा-संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए प्रशासन का भरपूर समर्थन प्राप्त होता रहा है। साथ में, भारत और मॉरीशस के विशेष संबंधों के कारण इस दिशा में भारत सरकार व भारत की जनता की पूरी सहानुभूति प्राप्त होती रही जो कि शायद अन्य गिरमिटिया देशों के लिए संभव न था।

परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि इन 'गिरमिटिया देशों' में अनगिनत लोगों ने शिक्षक, पंडित-पुरोहित, सभा-संचालक, लेखक व प्रचारक के रूप में हिंदी भाषा को स्थापित करने की दिशा में अपने-अपने देश में अनूठी सेवा प्रदान की है। आरंभिक काल में स्वयंसेवी संस्थाओं ने अत्यंत ही सक्रिय भूमिका निभाई है। हिंदी पाठशालाएँ खोली गईं और आज यहाँ प्राथमिक, माध्यमिक तथा तृतीय स्तर पर हिंदी शिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। शोधकार्य का भी यहाँ प्रावधान है। भारत और मॉरीशस की सरकारों के सहयोग से यहाँ विश्व हिंदी सचिवालय भी कार्यरत है।

आए दिन धार्मिक अनुष्ठान, प्रवचन, सार्वजनिक कार्यक्रम, तीज-त्योहार, उत्सव इत्यादि का आयोजन होता रहता है जिसमें हिंदी भाषा का प्रयोग होता है। रेडियो-टेलीविज़न का दैनिक प्रसारण हिंदी में भी प्राप्त होता है। यदा-कदा हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ भी पाठकों को प्राप्त होती रहती हैं। कभी-कभार कुछ साहित्यिक गतिविधियाँ भी होती हैं, जैसे कवि-सम्मेलन, प्रतियोगिता, गोष्ठी, वक्तव्य आदि। समय-समय पर हिंदी पुस्तकें भी प्रकाश में आती हैं। अब सूचना प्रौद्योगिकी की भी भरपूर सुविधा उपलब्ध है। इसमें दो राय नहीं कि हर तरफ़ से हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास जारी है।

फिर भी, हमारे सामने अनेकों चुनौतियाँ भी हैं। सर्वप्रथम हमें इस बात का एहसास नहीं कि हमको अपनी भाषा के प्रति कहाँ तक प्रतिबद्ध होना चाहिए या हमारे जीवन में हमारी भाषा का क्या महत्व है। इसीलिए अपने दैनिक जीवन में हम या तो अपनी भाषा का प्रयोग ही नहीं करते या फिर कम से कम प्रयोग करते हैं। अपने

बच्चों से तो कतई अपनी भाषा में बात ही नहीं करते हैं। सब से भयानक स्थिति यह है कि हमारे बच्चों के लिए हिंदी तो दूसरे लोक की भाषा है। घर पर सभी लोगों को बच्चों के साथ 'क्रियोल' में बात करनी होगी तभी जाकर बच्चा कुछ समझ पाएगा। यहाँ तक की विद्यालयों में, शिक्षक को हिंदी कक्षा चलाने के लिए 'क्रियोल' का सहारा लेना पड़ता है।

स्कूलों में हिंदी पढ़नेवाले छात्रों की संख्या दिनोंदिन घटती जा रही है। और तो और, अभिभावक शिक्षकों व विद्यालय के अधिकारियों से साफ़ कह जाते हैं कि हमारा बच्चा हिंदी नहीं पढ़ेगा। वे ही अभिभावक अपने बच्चों को अन्य भाषा व विषय के लिए ट्यूशन पर लाखों रुपए खर्च करते हैं। उन्हें इस बात का विश्वास है कि हिंदी के पीछे समय गँवाने से बच्चे का भविष्य खराब होगा और उन्हें अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए अन्य भाषाओं पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। यह एक अत्यंत ही खतरनाक स्थिति है।

हम बहुसंख्यक होते हुए भी एक हिंदी पत्र चलाने में अक्षम हैं। हिंदी पत्र-पत्रिका चलाने की बहुत कोशिश होती रही है। परंतु सफ़लता कभी नहीं मिलती है क्योंकि पाठक ही नहीं है। पूर्व में मुद्रण की पर्याप्त सुविधा हुआ करती थी। परंतु आज मुश्किल से कोई मुद्रणालय मिलता है जहाँ हिंदी का काम होता हो। अतएव हिंदी प्रकाशन के लिए अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है। कुछ संस्थाएँ अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपने कोष से लाखों रुपए खर्च कर अपना एक मुखपत्र चलाती हैं। वह भी उनके कुछ सदस्य पढ़ते हैं।

यहाँ हिंदी लेखकों की स्थिति अत्यंत ही गंभीर है। अपनी भाषा के प्रति प्रेमवश कई लोग अपनी रचना प्रकाशित करवाना चाहते हैं। कठोर परिश्रम के पश्चात जब रचना पूरी हो जाती है तब प्रकाशन का प्रश्न सामने आता है। चूँकि यहाँ पर ऐसी सुविधा उपलब्ध नहीं है, लेखक महोदय को अपने खर्चे पर भारत जाना पड़ता है जहाँ दर-दर की ठोकरें खाकर पुस्तक तो प्रकाशित करवा लेता है परंतु अपने देश में कोई 10 पुस्तकें भी खपा नहीं पाता है। अंतत: प्रकाशक ही खपत का दायित्व लेता है। परिणामस्वरूप, मॉरीशस में उस पुस्तक के बारे में और लेखक के बारे में कोई कुछ जानता भी नहीं है।

इन स्थितियों से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर हमारे दो सुझाव हैं। प्रथम, किसी न किसी संस्था व प्रशासन द्वारा पूर्व-प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को भाषा से अवगत कराने के लिए एक विशेष कार्यक्रम प्रारंभ होना चाहिए। जब तक वहाँ से भाषा का वातावरण पैदा नहीं किया जाएगा तब तक सफ़लता नहीं मिलेगी। हमारे देश में कोई 1000 सरकारी व निजी पूर्व-प्राथमिक विद्यालय चलते हैं लेकिन इस क्षेत्र के लिए हिंदी भाषा की कोई आधिकारिक योजना नहीं है। प्राथमिक स्तर तक पहुँचते-पहुँचते देर हो जाती है। हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा इस दिशा में कुछ प्रयास तो चल रहा है परंतु पर्याप्त नहीं है। आर्थिक दृष्टि से संस्था की अपनी सीमा है। ध्यातव्य

इन देशों में प्रारंभिक स्तर से कार्य की शुरुआत होनी चाहिए। इन देशों में अधिकतर देवनागरी के बदले रोमन-लिपि से काम चलाया जाता है। वहाँ शिक्षकों को तैयार करना चाहिए जो जगह-जगह पर हिंदी कक्षाएँ चला सकें। इनके लिए इनकी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तक तैयार होनी चाहिए। प्रत्येक देश की माँग के अनुसार सामग्री तैयार होनी चाहिए। अभी तक किसी ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है। हम लोग बस सभी देशों में एक समान कार्यक्रम चलाते हैं और पिंड छुड़ा लेते हैं तथा इन देशों को अपने हाल पर रोने के लिए छोड़ दिया जाता है क्योंकि इनकी समस्या का समाधान कभी प्राप्त नहीं होता है। ईमानदारी से इस दिशा में ऊर्जा, साधन व समय का सदुपयोग करना होगा। आधुनिकतम सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

है कि इस अभियान में हिंदी कार्टून फ़िल्में काम को अधिक आसान बना देंगी।

हमारा दूसरा सुझाव है कि हिंदी के नाम पर विशेष रूप से ईमानदारी के साथ सभी संस्थाएँ मिलकर एक मंच कायम करें। अपनी-अपनी गतिविधियों के लिए स्वतंत्र रहें। परंतु हिंदी के कार्यों के लिए एक अलग योजना तैयार हो जिसमें आर्थिक सहयोग अत्यावश्यक है। तब प्रकाशन, शिक्षण, पत्र-पत्रिका व हर प्रकार से हिंदी प्रचार-कार्य के लिए अलग से कोई ठोस योजना हो। सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि मिलकर एक विशेष समिति गठित करें जो सभी योजनाओं के कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान दे। अलग-अलग कार्य करने से बहुत दूर तक नहीं पहुँच पाएँगे और स्थिति वैसी ही रहेगी जैसी आज है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारा सुझाव है कि विशेष रूप से 'गिरमिटिया देशों' पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जाए। इन देशों में स्थिति अत्यंत ही संवेदनशील है। अपने पैरों पर खड़े होकर कुछ-कुछ तो प्रयास कर रहे हैं। परंतु लड़खड़ाते-लड़खड़ाते कितनी दूर पहुँच सकते हैं। इनकी आवश्यकताएँ अन्य देशों से भिन्न हैं। यहाँ हम उच्च-शिक्षा, विश्वविद्यालय, शोधकार्य या साहित्य-सृजन की बात सोच ही नहीं सकते हैं। मात्र कुछ पुस्तकें दान कर देने से या समय-समय पर वक्तव्य के लिए किसी विद्वान को भेज देने भर से कार्य पूर्ण नहीं होगा।

इन देशों में प्रारंभिक स्तर से कार्य की शुरुआत होनी चाहिए। इन देशों में अधिकतर देवनागरी के बदले रोमन-लिपि से काम चलाया जाता है। वहाँ शिक्षकों को तैयार करना चाहिए जो जगह-जगह पर हिंदी कक्षाएँ चला सकें। इनके लिए इनकी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तक तैयार होनी चाहिए। प्रत्येक देश की माँग के अनुसार सामग्री तैयार होनी चाहिए। अभी तक किसी ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है। हम लोग बस सभी देशों में एक समान कार्यक्रम चलाते हैं और पिंड छुड़ा लेते हैं तथा इन देशों को अपने हाल पर रोने के लिए छोड़ दिया जाता है क्योंकि इनकी समस्या का समाधान कभी प्राप्त नहीं होता है। ईमानदारी से इस दिशा में ऊर्जा, साधन व समय का सदुपयोग करना होगा। आधुनिकतम सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पश्चिम के तीव्र आघातों एवं विश्व के तेज़ी से बदलते संदर्भ के चलते हिंदी की स्थिति अत्यंत ही नाजुक हो गई है। अब मात्र कुछ गतिविधियाँ आयोजित कर देने से काम नहीं चलेगा। अधिक शक्ति व अधिक से अधिक साधन की आवश्यकता है। पर इनसे अधिक ईमानदारी के साथ समर्पण भाव की अति आवश्यकता है। हमें पूरा विश्वास है कि इस मुहिम में सभी का साथ मिलेगा और हम सब कदम से कदम मिलाकर संघर्ष जारी रखेंगे। ईश्वर हमारे प्रयासों को सफ़ल बनाएँ, ऐसी हमारी कामना है।

प्रधान, हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस,
शांति निवास, सुभाषचंद्र बोस मार्ग,
फों जी साक, मॉरीशस
raguttee@mail.gov.mu
hsumauritius@hotmail.com

सातवाँ सत्र : यूरोप एवं अमेरिका में हिंदी

21. अमेरिका में हिंदी शिक्षण

श्री अशोक ओझा

न्यू जर्सी के रटगर्स विश्वविद्यालय में संपन्न द्वितीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन अमेरिका में हिंदी प्रचार और हिंदी शिक्षण को सशक्त बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक घटना है। इस वर्ष अप्रैल 3 से 5 तक आयोजित इस सम्मेलन में भारत और अमेरिका और कनाडा के दो दर्जन से अधिक हिंदी कर्मियों ने भाषा शिक्षण की चुनौतियों और संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया। सम्मेलन के अंतिम सत्र में जिसकी अध्यक्षता न्यू यॉर्क में भारतीय कौंसुलाधीश माननीय ज्ञानेश्वर मुळे ने की, अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र स्थापित करने के लिए सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए भारत सरकार से सहयोग की माँग की गई। प्रस्तावित केंद्र स्कूल-कॉलेज में हिंदी पाठ्यक्रम के निर्माण से लेकर भारत और अमेरिका के संस्थानों के बीच समन्वय करने की दिशा में एक केंद्रीय शिक्षण और सांस्कृतिक संस्था के रूप में कार्य करेगा। इस केंद्र पर उत्तर और दक्षिण अमेरिका के समस्त भूभाग में हिंदी प्रचार-प्रसार को समृद्ध करने के लिए योजनाओं का निर्माण और उनपर अमल करने की ज़िम्मेदारी होगी। इसका संचालन हिंदी संगम प्रतिष्ठान के तहत हिंदी विद्वानों की सम्मति से होगा। भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कौंसुलाधीश सलाहकार समिति के स्थायी आमंत्रित सदस्य होंगे। रटगर्स विश्वविद्यालय और हिंदी संगम के बीच घनिष्ठ सहयोग कायम करने के लिए प्रयास जारी है। सम्मेलन में कई सुझाव पेश किए गए जिनका उद्देश्य हिंदी शिक्षण को उच्चस्तरीय बनाने और उसके तकनीकी स्वरूप को निखारना है।

इक्कीसवीं सदी में अमेरिकी सरकार की भाषा नीति में मूलभूत बदलाव भी हिंदी की प्रतिष्ठा और उसकी शिक्षा को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण कारण है। सन् 2006 में जब वाइट हाउस ने हिंदी को राष्ट्रीय वाणिज्य और सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण विदेशी भाषाओं की श्रेणी में शामिल किया तब से यहाँ हिंदी पठन-पाठन का एक आंदोलन—जैसा प्रारंभ हो गया। राष्ट्रीय सुरक्षात्मक भाषाई पहल (नेशनल सिक्योरिटी लैंगुएज इनिशिएटिव) नामक इस उच्च स्तरीय कार्यक्रम के अंतर्गत उर्दू और पश्तो-दरी सहित एशिया तथा अफ्रीका की आधे दर्जन से अधिक भाषाओं को प्रमुखता की श्रेणी में शामिल किया। चूँकि हिंदी भाषी प्रवासियों की बड़ी संख्या इस देश में पहले से ही मौजूद थी, हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए व्यापक सामाजिक समर्थन पहले से उपलब्ध था। लेकिन इस समुदाय में अपनी भाषा और संस्कृति के लिए नई जागरूकता ज़रूरी थी। 2006 से पूर्व विदेशी भाषा की सूची में स्पेनिश के अतिरिक्त सिर्फ़ फ्रेंच, इटालियन, जर्मन जैसी यूरोपीय भाषाओं को ही विदेशी भाषा की श्रेणी में रखा गया था। अमेरिकी सरकार की नई भाषा-नीति का तात्कालिक लाभ यह हुआ कि हिंदी को एक महत्वपूर्ण विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने के लिए अमेरिका की विदेशी भाषा अनुसंधान संस्थाओं द्वारा भाषा शिक्षा का संगठित प्रयास प्रारंभ हुआ।

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में आज अमेरिका की शिक्षा व्यवस्था में हिंदी एक महत्वपूर्ण स्थान पर विराजमान है। 2013 की अमेरिकी जनगणना के अनुसार यहाँ हिंदी बोलनेवाले आप्रवासियों की संख्या छह लाख से अधिक है। यूनिवर्सिटी ऑव पेंसिलवेनिया के भाषाविद् दंपती डॉ. सुरेंद्र और विजय गंभीर के अनुसार यदि अमेरिका के भारतीय मूल के उन आप्रवासियों की संख्या, जो कि आठ लाख के करीब है, जोड़ दें, जो कि हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं, तो हिंदी बोलनेवालों की कुल संख्या बीस लाख से ऊपर चली जाएगी।

अमेरिका के प्रतिष्ठित आइवी लीग विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रमों को गंभीरता से लागू किया जा रहा है चाहे वह हार्वर्ड हो, कोलंबिया या स्टैनफ़ोर्ड, इन सभी संस्थानों में हिंदी और भारतीय संस्कृति से संबंधित विषयों को स्नातक पाठ्यक्रमों का अभिन्न अंग बनाया है। न्यू यॉर्क के कोलंबिया और न्यू यॉर्क विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा को भारतीय समुदाय की आशा-

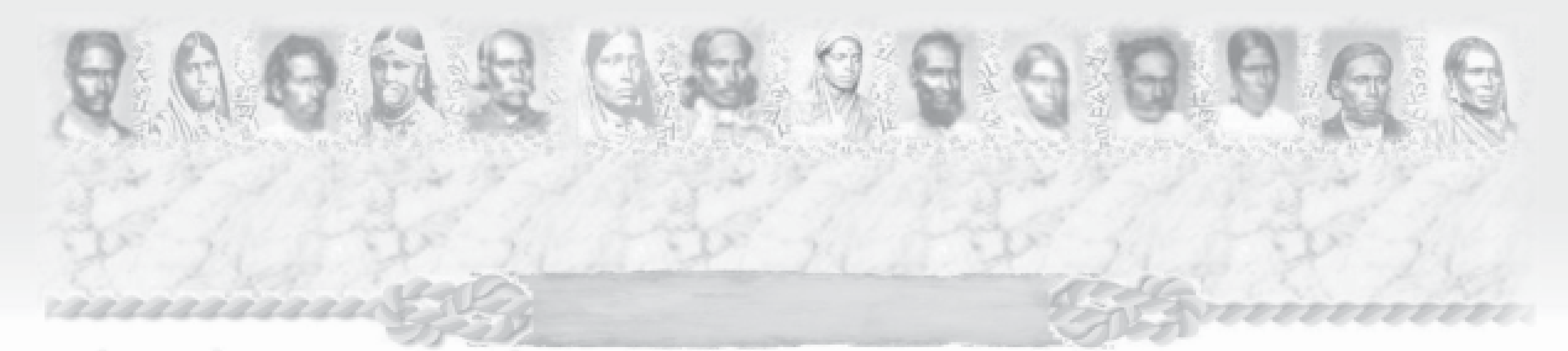

आकांक्षाओं के साथ जोड़ने की मौलिक गतिविधियों को अंजाम देने का कार्य किया गया है।

हिंदी शिक्षा के आधुनिकीकरण की दिशा में पिछले एक दशक से महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य है हिंदी को साहित्यिक ग्रंथों की परिधि से बाहर निकालकर सामान्य जीवन से जोड़ना जिससे अमेरिका के हिंदी छात्र आजीवन हिंदी सीखने के लिए प्रेरित हो सकें। यही नहीं, हिंदी सीखकर भारत जानेवाले शोधार्थियों और स्नातकों के लिए व्यावहारिक ज्ञान ज़्यादा उपयोगी साबित हो रहा है।

यूनिवर्सिटी ऑव टेक्सास और पेंसिलवेनिया के भाषा शास्त्रियों द्वारा अपने हिंदी छात्रों को भारत भेजकर हिंदी समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराने के कार्यक्रम वर्ष दर वर्ष चलते रहे। उनके प्रयासों से आज दर्जनों विश्वविद्यालयों के हिंदी छात्र अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑव इंडियन स्टडीज़ के अनुभवी हिंदी प्राध्यापकों की देख-रेख में महीनों भारत में निवास कर हिंदी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ वहाँ के सांस्कृतिक जीवन से रूबरू होते रहते हैं।

आज यूनिवर्सिटी ऑव टेक्सास का हिंदी-उर्दू फ़्लैगशिप कार्यक्रम और यूनिवर्सिटी ऑव पेंसिलवेनिया के साउथ एशियाई स्टडीज़ विभाग का हिंदी कार्यक्रम फल-फूल रहा है। हिंदी शिक्षण को विश्वविद्यालय परिसर से बाहर छोटे नगरों और कस्बों के स्कूलों में प्रविष्ट किया जा चुका है। जैसा कि भाषाविद् कहते हैं किशोरवय और कम उम्र के बच्चों के पास नई भाषा सीखने के लिए लगनशीलता और मन:स्थिति दोनों ही भरपूर होती है। भाषा सीखने के उनके कारण भी निजी और भावुकता से प्रेरित होते हैं। दूसरे शब्दों में छोटे बच्चों को आजीवन भाषा विद्यार्थी बनने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। सरकारी प्रोत्साहनों और अनुदान की बदौलत टेक्सास और न्यू जर्सी के शिक्षा अधिकारियों ने स्कूलों में हिंदी पाठ्यक्रम प्रारंभ किए। आज न्यू जर्सी के एडिसन और टेक्सास के हर्स्ट-यूलेस स्कूल संकुल में हिंदी के सशक्त कार्यक्रम वर्ग नौ से प्रारंभ होकर अब माध्यमिक स्कूलों की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वह दिन शायद दूर नहीं जब प्रारंभिक विद्यालयों में भी हिंदी पढ़ाई जाने लगे।

स्कूल की कक्षाओं में हिंदी को प्रविष्ट कराने में हिंदी यू.एस.ए., हेरिटेज फ़ाउंडेशन, युवा हिंदी संस्थान जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं ने निरंतर प्रयास किए हैं। हिंदी यू.एस.ए., न्यू जर्सी के दो दर्जन स्कूलों में हिंदी सिखाने का कार्य पिछले एक दशक से कर रहा है। संस्था के प्रयासों का ही नतीजा था कि एडिसन स्कूल में हिंदी पाठ्यक्रम भारतीय समाज की पहचान बनकर प्रारंभ किया गया। टेक्सास में भवानी परपिया के प्रयत्नों से हर्स्ट-यूलेस स्कूल संकुल में अब माध्यमिक कक्षाओं में हिंदी की पढ़ाई प्रारंभ हो चुकी है। इसी प्रकार युवा हिंदी संस्थान के प्रयत्नों से पेंसिलवेनिया के बेनसेलम स्कूल डिस्ट्रिक्ट में हिंदी को पाठ्यक्रम में शामिल किया

विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव और युवा हिंदी कर्मी श्री गुलशन सुखलाल के सतत प्रयासों से अक्टूबर-नवंबर 2014 में आयोजित अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन में न्यू यॉर्क सम्मलेन की गूँज सुनाई दी जिसमें प्रस्ताव संख्या 19 के अंतर्गत न्यू यॉर्क क्षेत्र में हिंदी केंद्र स्थापित करने के साथ-साथ प्रशांत देशों में हिंदी केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किया गया। भारत सरकार सहित समस्त हिंदी प्रेमियों को यह याद दिलाना उचित होगा कि सम्मेलनों में प्रस्ताव पारित कर उन्हें अमल में लाना अगली पीढ़ी के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी का प्रतीक है जिसे निभाए बिना हम अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकते, न ही हिंदी को उसका वास्तविक स्वरूप ही प्रदान कर सकते हैं।

गया। सन् 2010 में इस प्रस्तुतकर्ता ने न्यू जर्सी के केन विश्वविद्यालय में स्टारटॉक कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी शिक्षण का सिलसिला प्रारंभ किया था, जो कि आज ऑनलाइन पेडागोजिकल हिंदी पाठ्यक्रम के रूप में सफलीभूत हो रहा है। यहाँ उन हिंदी सेवी संस्थानों और हिंदी प्रेमियों की चर्चा उपयुक्त है, जो बिना किसी पुरस्कार की अपेक्षा किए अपने समुदाय की अगली पीढ़ी को, जो अमेरिका में पैदा होकर अमेरिकी परिवेश में बड़ी हो रही है, अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़े रखने का कार्य कर रहे हैं। इनमें अमेरिका के विभिन्न प्रदेशों में सक्रिय चिन्मय मिशन, विश्व हिंदू परिषद, अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, भारतीय मंदिर और अन्य सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थाएँ शमिल हैं जो हिंदी को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग मानती हैं और बच्चों को भारतीय विरासत के रूप में सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान करती हैं।

यहाँ अमेरिकी सरकार की दो महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की चर्चा करना सामयिक होगा। ये कार्यक्रम–स्टेट डिपार्टमेंट यानी विदेश विभाग द्वारा संचालित नेशनल सिक्योरिटी लैंग्वेज इनिशिएटिव फ़ॉर यूथ जो कि स्कूली छात्रों को भारत जाकर हिंदी सीखने और वहाँ के रहन–सहन का अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं और स्टारटॉक जो कि गर्मियों में छोटे बच्चों से लेकर कॉलेज विद्यार्थियों को दो या तीन सप्ताह हिंदी की सघन शिक्षा–दीक्षा प्रदान करने का मज़बूत कार्यक्रम है—हिंदी शिक्षा को सफ़लता की सीढ़ी चढ़ने के लिए सक्षम ढाँचा साबित हो रहे हैं। इन दोनों कार्यक्रमों को स्थानीय स्कूल व्यवस्था से अलग रखा गया है ताकि भारतीय समुदाय के हिंदी शिक्षक और स्वयंसेवी संस्थाएँ अपना योगदान दे सकें। एन.एस.एल.वाई. कार्यक्रम एक राष्ट्रीय स्तर का प्रतियोगी कार्यक्रम है जिसमें स्कूल के अंतिम वर्ष के ऐसे विद्यार्थियों का चयन किया जाता है जो विदेशी भाषा और संस्कृति से परिचित होने की लगनशीलता का प्रदर्शन कर सकते हैं। दूसरी तरफ़ स्टारटॉक पढ़ने और पढ़ाने दोनों के लिए सुनियोजित कार्यक्रमों को प्रायोजित करता है जो कि विद्यार्थियों के लिए पूरी तरह नि:शुल्क होते हैं। भारतीय समाज की नई पीढ़ी को अपनी भाषा से जोड़े रखने का इससे बेहतर अवसर और क्या हो सकता है?

अमेरिकी सरकार की विदेशी भाषा–नीति जिसमें हिंदी के अलावा चीनी, कोरियाई, अरबी, उर्दू, टर्किश आदि कई एशियाई भाषाओं को लाभान्वित होने की पूरी गुंजाइश है तथा भारतीय समाज के लिए सकारात्मक प्रोत्साहन जैसी है। अमेरिकी सरकार की यह नीति उस समझ का परिणाम है जो 9–11 के हादसे के बाद पैदा हुई और सरकार ने महसूस किया कि सिर्फ़ अंग्रेज़ी के भरोसे विश्व के बदलते आर्थिक–सामाजिक परिवेश को प्रभावित नहीं किया जा सकता। हॉलीवुड और अमेरिकी पॉप संस्कृति भी यह कार्य नहीं कर सकती। अमेरिका के बाहर का विश्व सिर्फ़ अंग्रेज़ी का मुहताज नहीं। यह समझ भारतीय समाज को अपनी भाषा एवं संस्कृति को विकसित करने और अगली पीढ़ी तक ले जाने के लिए अत्यंत उपयुक्त है जिसका लाभ उठाकर भारत सरकार, उससे संबद्ध भाषाई संस्थान तथा गैर–सरकारी एजेंसियों को आगे आकर अमेरिका के अनौपचारिक क्षेत्र में हो रहे उन तमाम प्रयासों का समर्थन करना होगा जिनसे हमारी भाषा और संस्कृति समृद्ध हो सकती है।

आखिर क्यों ज़रूरी है अमेरिका में हिंदी का प्रचार–प्रसार? जैसे–जैसे भारत की नई पहचान विश्व में उभर रही है, यह प्रश्न अकसर उठता है। विगत चार दशकों में भारत से आनेवाले प्रवासियों का बड़ा वर्ग अंग्रेज़ी के भरोसे अमेरिका में सफ़लता की सीढ़ियाँ चढ़ने में सफ़ल हुआ। लेकिन यह वर्ग अपने सामाजिक जीवन में हिंदी से जुड़ा रहा जबकि अमेरिका में पली–बढ़ी पीढ़ी हिंदी से दूर रही, यहाँ तक कि उनकी पारिवारिक भाषा भी पूरी तरह हिंदी न रही। उनका हिंदी ज्ञान सामुदायिक पाठशालाओं से कुछ हद तक पूरा हुआ लेकिन इन स्कूलों की शिक्षा अमेरिकी विदेशी भाषा शिक्षा पद्धति के सभी नियमों का पालन करने में सक्षम नहीं थी।

स्टारटॉक ने मानक बनाने और ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमों के लिए शिक्षक प्रशिक्षित करने का कार्य कर शिक्षा और शिक्षक के बीच की खाई को पाटने का कार्य किया है। स्टारटॉक का सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा है, अमेरिकन कौंसिल ऑन टीचिंग फॉरेन लैंग्वेज द्वारा विकसित प्रवीणता मानक को हिंदी पाठ्यक्रमों में लागू करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना। इस प्रकार सेंटर फ़ॉर एप्लाइड लिंग्विस्टिक ने भाषा प्रवीणता की जाँच के मापदंड बनाए। अब यह हम शिक्षकों की ज़िम्मेदारी है कि इन नियमों और मानकों का प्रयोग कर हम शिक्षार्थियों की ज़रूरतों के अनुसार पाठ्यक्रम बनाएँ।

अमेरिका के एक सौ कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में हिंदी सीखनेवाले विद्यार्थियों की संख्या में निरंतर कमी और हिंदी के प्रति समाज में व्यापक उदासीनता आज हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि अमेरिका में रहनेवाले भारतीय मूल के लोगों में हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने के नए उपाय किए जाएँ, साथ ही भारत में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की समस्याओं पर गहरी नज़र डाली जाए। अमेरिका के अनेक प्रदेशों में प्रारंभ हुए हिंदी कार्यक्रम विभिन्न कारणों से अवरुद्ध हो गए जो कि हिंदी आंदोलन के ऐसे पहलू हैं जिनपर गंभीरता से विचार होना चाहिए। वाशिंग्टन प्रदेश का सीएटल स्कूल संकुल, यूनिवर्सिटी ऑव कैलिफ़ोर्निया लॉस एंजेल्स और केंट यूनिवर्सिटी में हिंदी स्टारटॉक कार्यक्रम पुनः स्थापित करने के लिए हम सबको प्रयास करना चाहिए। अमेरिकी विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम निर्माण एक तरफ़ हम जैसे शिक्षकों की ज़िम्मेदारी है तो दूसरी तरफ़ भारत स्थित उन संस्थाओं और सरकार की भी जो इन योजनाओं का समर्थन कर सकते हैं। आख़िर अमेरिका में हिंदी सिखाने के लिए प्रामाणिक पाठ्यक्रम मूल सांस्कृतिक परिवेश अर्थात भारत में ही बन सकते हैं।

इन्हीं चुनौतियों पर विचार करने के लिए न्यू यॉर्क स्थित भारतीय प्रदूतावास के सहयोग से न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय, युवा हिंदी संस्थान और अन्य समान विचारधारी स्वयंसेवी संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए थे—

'21वीं सदी में हिंदी भाषा', विषय पर आयोजित सम्मेलन न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय के वाशिंग्टन स्क्वेयर प्रांगण में हुआ जिसमें भारतीय कौंसुलाधीश राजदूत ज्ञानेश्वर मुले ने इसे वार्षिक स्वरूप देने पर ज़ोर दिया। उन्होंने सम्मेलन में पारित इस भावना का भी समर्थन किया कि अमेरिका में हिंदी शिक्षण की चुनौतियों का सामना करने और हिंदी के प्रचार-प्रसार को अभियान का रूप देने के लिए एक हिंदी केंद्र की स्थापना की जानी चाहिए। सम्मेलन में पारित अन्य प्रस्तावों में हिंदी समाचार-पत्र का प्रकाशन तथा हिंदी शिक्षा के लिए अमेरिका और भारत के बीच एक्सचेंज कार्यक्रमों को स्कूल स्तर पर विस्तारित करने पर ज़ोर दिया गया। इनके अलावा ऑनलाइन हिंदी शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार करने के समर्थन में भी प्रस्ताव पारित हुए।

विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव और युवा हिंदी कर्मी श्री गुलशन सुखलाल के सतत प्रयासों से अक्टूबर-नवंबर 2014 में आयोजित अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन में न्यू यॉर्क सम्मलेन की गूँज सुनाई दी जिसमें प्रस्ताव संख्या 19 के अंतर्गत न्यू यॉर्क क्षेत्र में हिंदी केंद्र स्थापित करने के साथ-साथ प्रशांत देशों में हिंदी केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किया गया। भारत सरकार सहित समस्त हिंदी प्रेमियों को यह याद दिलाना उचित होगा कि सम्मेलनों में प्रस्ताव पारित कर उन्हें अमल में लाना अगली पीढ़ी के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी का प्रतीक है जिसे निभाए बिना हम अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकते, न ही हिंदी को उसका वास्तविक स्वरूप ही प्रदान कर सकते हैं।

अध्यक्ष, युवा हिंदी संस्थान और प्रबंध न्यासी,
हिंदी संगम प्रतिष्ठान, न्यू जर्सी
4 Melville Road, Edison, NJ 08817
aojha2008@gmail.com

22. Teaching and Propagation of Hindi with success in Canada

Dr. Ratnakar Narale

1. SHORT HISTORY

In Canada, until about last 40 years ago, one would hardly find any Hindi speaking people and even if you find a Hindi speaking person he or she would feel shy and hesitate to speak Hindi in a public place. This was the case in Toronto, which has mild winter and is the biggest, most populated, most developing and most cosmopolitan city in Canada followed by Vancouver. The situation for the rest of Canada was even poorer.

Thereupon in about next ten years, first major development was foundation of the Hindi Pracharini Sabha by Prof. Harishankar Adesh and Shiam Tripathi group with Hindi Chetna as their tri-monthly mini magazine. In addition numerous individual poetic groups sprung all across Canada, main hub being Toronto. The main activity and interest of these organizations was to gather for a Poetic Meet (kavi sammelan), in which Poets would read their beautiful creations to other poets and the gathering. The poems may then get published in magazines and space permitting.

Then Prof. Narale came up with a philosophy which was one time published with much appreciation in Sahitya Amrit, New Delhi. His assertion was that the poetic groups are a wonderful activity but the question is "*where is the propagation of Hindi if a poet reads his poem in front of four other poets or Hindi lovers and at the end have tea and Samosa. Rather if you teach Hindi to one novice person, you will sow a seed that will propagate into a new Hindi speaker and will give him/her a gift lasting for life.*" Teaching Hindi is true propagation, not the literary social activities. *Literary activities are good for keeping Hindi alive and enriching Hindi literature.*

Then in 1994 Hindu Institute of Learning was formed by Dr. Venkatacharya, Jagdish Chandra Sharda, Prof. Ratnakar Narale and their group. Hundreds of their students from Canada and other countries benefitted from their services. Having opened these windows of inspiration, few temples began primary Hindi classes concurrent to their Services. The course material being primary grade books were imported from India or Hindi learning books by western authors.

Most notable, valuable and successful among the literary societies that grew in Toronto around 2008 is the Hindi Writers Guild. It is organized by Hindi giants Dr. Shailaja Saksena, Vijay Vikrant and Suman Ghei group. The poets and Hindi lovers meet regularly for a Kavi-Goshthi. After an interesting and informative session of reading poetry and Tea-Samosa serving, the poets stay connected to organize next events of drama, anniversary, honoring celebrities, publication of Hindi literature etc.

2. CURRENT SITUATION

Following the dismal results and snail like

> **While all other Hindi Learning Books are written in nearly same style, the book is one of its kind, distinct from all other books. It teaches Hindi alphabet in a very unique manner so that a student learns to read/write complete Hindi in just three to four lessons. The book then enables the students to make their own Hindi sentences in another five to six lessons.**

progress from the teaching material used in teaching Hindi through books by western authors and the grade books imported from India, Prof. Ratnakar Narale and his group did extensive research and survey and developed a wholly new technique of Teaching / Learning Hindi with sure success. For over twenty years he taught Hindi at both the School Boards and all three Universities of Toronto and there he field experimented his book 'Hindi teacher for English Speaking People,' published in New Delhi in 2005. He improved the book through several stages through his practical experience of teaching thousands of students and the valuable inputs he received through the course evaluation reports by his students at the end of each term, in credit as well as non-credit Hindi classes. The book in its New Enlarged Edition is published in July 2014. Another valuable book he has written is "Hindi Teacher for Hindu Children," especially suited for Temple schools and NRI home teaching for Hindu parents. Canada and USA alone have over 2 million and UK has over 800,000 Hindu people, out of which nearly 200,000 are children.

Now the **current situation** in Teaching and Propagation of Hindi in Canada is that ***his Hindi Learning book gives almost one-hundred-percent success in learning to Read, Write and confidently Make your own Hindi sentences for any situation in present, past or future tense in less than ten lessons of three hours each.*** That can safely be called an effective and fruitful methodology for Teaching and Propagating Hindi.

THE RESEARCH: After systematically and thoroughly analyzing the problem why students are not learning Hindi satisfactorily through the professional Learning material that are currently available, the conclusion was threefold.

i. The primary grade books and Hindi Learning Books in India are written in Hindi for children of age six and up. The book that is written in Hindi for a Grade One, the author knows that the student has already been speaking Hindi at home with his mother, father, brother, sister, friends and neighbors. A book written for such a student is not suitable for a child born outside India, or in a non-Hindi province of India where the student is absolutely new to Hindi.

ii. The books written by non-Indian authors miss out on the salient 'cultural' and the 'Indian' aspect of the Hindi language in their books.

iii. Thirdly, the standard method of teaching Hindi is through "how to say a sentence in Hindi," beginning with What is your name, my name is..., how are you and so on.

The SOLUTION to above three problems is also threefold.

i. The book must be written for the students who are absolutely new to Hindi who may be living in Hindi speaking or non-Hindi speaking land.

ii. Secondly, it must be borne in mind that while learning Hindi the student must pick up Indian culture and the India's facets saliently. After all, language is the brick of foundation of that culture.

iii. Thirdly, rather than the standard way of teaching Hindi through premade Hindi sentences, the Hindi Learning book must empower the student to "confidently make his/her own Hindi sentences on his/her own understanding of the language for any thought in his/her mind."

Keeping in this and many other key points in mind, and after a long field testing and the input from thousands of his Hindi learning students and Language Professionals to achieve sure results, Prof. Narale developed his "Hindi teacher for English Speaking People."

While all other Hindi Learning Books are written in nearly same style, the book is one of its kind, distinct from all other books. It teaches Hindi alphabet in a very unique manner so that a student learns to read/write complete Hindi in just three to four lessons. The book then enables the students to make their own Hindi sentences in another five to six lessons.

The book is based on Prof. Narale's absolutely original novel and interesting way of teaching Hindi Alphabet, Golden Rules, Illustrations, Maps, Charts, Tables, hundreds of pertinent Examples and Exercises, Brain surgery and X-Ray-vision of the Hindi grammar, which are all innovations that cannot be found in any other book. They make the learning a systematic, easy, step-by-step, interesting and hundred percent fruitful experience.

This novel Hindi Learning book has many interesting Hindi learning aspects than any other book because they are researched, discovered, innovated and formulated by the author himself. *It is hoped that one day the whole world will follow these steps for Learning any Indian language with total success*. The books for learning Hindi, Sanskrit, Tamil and Urdu with his revolutionary methodology are available wholesale at INGRAM.com and retail at Amazon.com. The revolutionary methodology is so new that at the beginning the Hindi teachers may resist to change from their old less effective ways but

they will discover that it benefits the learners greatly.

3. DIALECTS AND THEIR USE IN TEACHING STANDARD

Since the emergence of Bollywood as a strong media the use of Hinglish-dialect, Mumbai-Hindi-dialect, Bhojpuri-Hindi dialect, Hindustani-Hindi Dialect are influencing the expected standard by the students and their mixed race parents living outside India. Prof. Narale's Hindi learning book therefore takes all factors into consideration and serves the need or liking optionally. It even takes into account the fact that some people may want to just learn to speak Hindi but not reading and writing it. This book helps them too. For Bollywood type Hindi, there is even a chapter on Grammatical Rules for speaking Hinglish if an individual or an organization prefers so.

4. CAREER PROSPECTS

Canada being one of the most multi-cultural and multi-lingual progressive country, preference for bilingual ability is an added advantage. In the province of Quebec the first language being French and for the rest of Canada English. Among the Second language status Hindi is most preferred followed by Punjabi, Urdu and Gujarati. Canada being a country of almost all immigrants, businesses and organizations are owned and operated by people immigrated or born to people from every country. Among Indian community, the above mentioned second languages are the most potential. Consequently, there is need for a large volume of Hindi Teaching people to serve the need of Indian as well as non-Indian students. It must be noted that again for the above mentioned reasons there is an overwhelmingly greater number of non-Indian people interested in learning Hindi than the people from India or descendents of Indian people. In our classes and most other institutions the non-Indian people interested in learning Hindi include people from Guyana, Trinidad, Mauritius, Fiji, Pakistan, China, France, Europe, America, Arab countries, etc.

5. LEARNER DEMOGRAPHY, ASPIRATIONS and INSPIRATION

Canada being a cosmopolitan, multicultural, multilingual, modern, democratic, open and secular country, people are interested in knowing each other's cultures and languages. Indian culture and Hindi language being of special interest, more so in the densely populated and urban areas.

Being an open and free society, there is more inter-relationship between Indian and non-indian and between Hindi and non-Hindi communities and thereby more need, inspiration and aspiration to learn Hindi.

Since Prime Minister Narsimha Rao and Now Narendra Modi, India is more open to International trade, more non-Indians travelled to India for business,

excursion, social or cultural purposes and they desire to learn Hindi and Indian culture before their travel.

Organizations like World Literacy of Canada, which does tremendous amount of social work in India, Dr. Narale teaches Hindi to their interns before they travel to India for their six months to a year assignment. Many people from Chamber of Commerce from Toronto and other cities go to India for their economic missions and they prefer learning Hindi to increase their success there.

With the popularity of Yoga and Ayurveda, a large number of non-Indian people are interested in learning Hindi and/or basic Sanskrit. In our non-credit classes there are always some students learning Hindi for understanding Yoga terms, Yoga philosophy or going to India for Yoga-retreat or Ayurveda-edification.

6. TECHNOLOGY, AVAILABILITY AND ACCEPTANCE

The advancing technology is making the world a smaller and smaller place. The advent of Internet has connected the whole world and made it just an e-mail away. Distributors like Amazon made the availability of Learning/Teaching material easy on finger tips worldwide in a flash.

Hindi is now accepted as world's one of the four major languages of communication. Hindi dialogue in a public place is now a common occurrence. It is now accepted by the speakers and welcome by the listeners worldwide. Credit goes to progressive organizations like the World Hindi Secretariat, Mauritius and Vidya Bharati of India.

7. STATUS OF SYSTEM

Delivery status of the Hindi Language Teaching and Propagation is partly commercial and partly voluntary. In Toronto, while the Sanskrit Hindi Research Institute is doing on Commercial and Cultural footing, the Hindu Institute of Learning is doing purely on voluntary and charitable purposes. The Hindi Writers Guild is working for Social and Charitable causes. All are non-formal. Indian High Commission is guiding these organizations on a formal, official and non-partisan manner.

8. EDUCATION CYCLES

In Canada, (1) the adult education at University level is the credit and non-credit courses. The credit courses are in day hours and the non-credit courses in evening hours. A cycle is of about 10-15 weeks, once a week, three terms a year and 30 students maximum in each class. (2) Adult courses at Secondary Schools and High Schools are run by the School Boards. They are designed nearly on the same lines as the Universities. (3) At Primary Level, the Hindi teaching is done by private organizations in their evening and weekend classes. (4) The tertiary informal Hindi Teaching for youth and children is done by almost all temples in some form or other, as day

classes during their service hours.

9. INSTITUTIONS ENGAGED IN PROPAGATION OF HINDI

i. Starting with the Temples, where Hindi is taught along with Indian Culture, there are private organizations engaged in teaching Hindi with Indian culture.

ii. At secondary and high school levels, it is mostly non-credit evening classes.

iii. At University level, it is adult credit and non-credit classes as described in the Education cycles.

iv. Dr. Narale teaches two classes (Level I and Level II) at School Board and three classes (Levels I, II and III) at University, his *"Hindi teacher for English Speaking People: i. the Beginner and ii. The Advanced"* being the text books.

10. PROPAGATION STRATEGIES AND ACTIVITIES

Nearly twenty years ago, when we were importing and using the Hindi books prescribed for primary grades in India and the books written by Rupert Snell and other authors, our quest in Canada was to develop effective Propagation Strategy and Activities to teach Hindi and Indian culture together with nearly one-hundred percent success with ease and in educational manner, in a period of ten weeks or less.

For this quest, Dr. Narale wrote a Hindi Learning book and proved possible in every one of his classes. Thus the propagation of Hindi gained a real meaning. Now, if this method is standardized world wide, the dream of WHS will come true, through able and trained teachers.

Having developed the good teaching material, the next important strategy now is to develop Trained Teachers to teach the material effectively for sure results. For this Teachers' workshops need to be held to produce Trained Teachers as well as Teachers to speed up and ascertain the propagation.

11. SUPPORT

In Canada, Government is supporting the Hindi Propagation only indirectly by funding Universities and School Boards. Some charitable organizations and some temples are receiving small provincial grants for social and multicultural activities, part of which goes to Hindi poetic meets and Hindi classes. Main funding for Hindi Propagation comes from private donations and religious offerings. Currently, the class sizes being too small, Hindi teaching classes cannot be sustained only on the fees collected from the students. However, if the propagation is systematically and energetically with the above strategy, large number of learners can be attracted and then it is possible for sure.

HINDI TEACHER FOR ENGLISH SPEAKING PEOPLE

This methodical book is based on extensive Research and Development, Effective Techniques and Improved Ways beneficial to the Readers to give them proper return for their investment of Time and Money. The book begins with simple primary steps and moves forward with authentic examples coupled with Progressive Exercises suitable to each context to bring home the topic being discussed. The vocabulary and illustrations are selected carefully to offer a window to the topics, as used in Real Life Situations. You will not find such original contemplative work in any other Hindi learning book. It is written in two volumes, i. Primary and ii. Advanced.

HINDI TEACHER FOR HINDU CHILDREN

This amazing book imbibes the lofty Hindu Values on the minds of learners in a fun filled manner. While teaching the Hindi language, the children are enlightened in the glorious Hindu Dharma, our beloved India, its holy rivers and great mountains, the interesting Indian flora and fauna, the glorious Hindu history, the righteous Hindu ethics, the sacred Hindu scriptures, the holy Hindu Gods, the noble Hindu forefathers, the illustrious Hindu Heroes, the venerable Hindu saints, the blissful Hindu prayers, the grand Hindu festivals, the peaceful Hindu people, the divine Hindu worship, the celestial Hindu Temples, the classical Hindu music, the towering Hindu discoveries in science and arts, the unique Hindu philosophies of yoga, vegetarianism, non-violence, and universal brotherhood.

SUGGESTION

If World Hindi Secretariat partners with Prof. Narale and publishes updated versions of these two books under new titles i. *Hindi Primer* and ii. *Hindi Primer for Hindu Children*, with endorsement from PM Modi ji and few other key people, it will be a huge success in Teaching and Propagation of Hindi. Prof. Narale's two books are being sent to you for your evaluation.

13. HINDU INSTITUTE OF LEARNING

The only Institute on International reputes and exclusively dedicated to Teaching Hindi and other Indian Languages, Art and Culture in Canada is the Hindu Institute of Learning. Hundreds of its happy students are holding professional careers in various countries of the world.

Principal, Hindu Institute of Learning, Toronto
180 Torresdale Ave.,
Toronto, Ontario,
Canada M2R 3E4
rnarale@yahoo.ca

23. हॉलैंड में हिंदी

श्री नारायण शर्मा मथुरा

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनम् आपनोती, धनाद् धर्मः ततः सुखम्॥
अर्थात विद्या विनय देती है, विनय से योग्यता मिलती है।
योग्यता से धन, धन से धर्म और उससे सुख मिलता है॥

हमारे पूर्वजों ने 26 फरवरी, 1873 को कलकत्ता से लालारूख जहाज़ द्वारा सूरीनाम की ओर प्रस्थान किया और 5 जून, 1873 को अपना पहला कदम सूरीनाम की धरती पर रखा। यह दिवस हमारे लिए हर वर्ष एक प्रेरणा लेकर आता है क्योंकि उस मुश्किल समय में भी उन लोगों ने अपनी मान-मर्यादा, वेश-भूषा, रहन-सहन, सांस्कृतिक धरोहर व धार्मिकता के चिह्नों को नहीं मिटने दिया। उनके जीवन में अनेकों उतार-चढ़ाव आए पर वे कभी विचलित नहीं हुए। वह समय उनके लिए परीक्षा की घड़ी थी जिसमें उन्हें पास होना था। अपने कष्ट, दर्द तथा आँसुओं को हँसते-हँसते झेलने या उन्हें भूलने के लिए मेले या गोष्ठियाँ आयोजित होती थीं। सायंकाल थकने के बाद वे सब भोजपुरी और हिंदी में मनोरंजन के गीत गाते थे तथा अपनी भावनाओं को प्रकट करते थे। खुशी की बात यह है कि उन्होंने अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखा तथा धर्म और संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। बाद में अनेक विद्वानों ने जनता को हिंदी के प्रति उत्साहित किया।

जब 1975 में सूरीनाम स्वतंत्र हुआ तब बहुत से लोग हॉलैंड में आकर बस गए। हॉलैंड में प्रारंभ में भी हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पश्चिम की हवा ने बहुत रफ़्तार से हमारे समाज पर आक्रमण किया। यूरोप तो गोरों का देश है, वहाँ का रहन-सहन तथा धर्म और संस्कृति हमसे बहुत अलग है। पश्चिमी संस्कृति एवं सभ्यता ने बच्चों को अपनी ओर काफ़ी प्रभावित किया और अभी भी कर रहे हैं।

अब हम जल में रहकर, मगरमच्छ से कैसे बचें?

कैसे हम अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखें?

कैसे हम अपने धर्म और संस्कृति को बचाएँ?

कैसे हम आनेवाली पीढ़ी में अपनी पहचान की भावना भर सकें?

जब धर्म गया तो संस्कृति भी गई।

मनुष्य की पहचान, उसकी संस्कृति और सभ्यता पर आधारित है। अगर हम अपने बच्चों में संस्कृति व धार्मिकता के चिह्न भरना चाहते हैं तो उनमें भाषा यानी मातृभाषा के प्रति लगाव पैदा करना होगा। यही कारण है कि लोग हॉलैंड में व्यक्तिगत रूप से हिंदी पढ़ाने लगे।

परिणामस्वरूप 19 सितंबर, 1983 में हिंदी परिषद नीदरलैंड की स्थापना हुई जिसका लक्ष्य रहा हॉलैंड में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना, जिससे हम धर्म, संस्कृति, हिंदी साहित्य, कला आदि क्षेत्रों पर विशेष रूप से उन्नति कर सकें।

आज हॉलैंड में हिंदी जो फल-फूल रही है, उसमें विशेष हाथ हिंदी प्रेमी अध्यापकों का भी रहा है। हम उन सभी के सहयोग को अपने मानस-पटल पर सदैव अंकित रखेंगे। हिंदी परिषद नीदरलैंड के अंतर्गत आज अनेक संस्थाएँ, समाज, मंदिर, स्कूल एवं कॉलेज परीक्षा देते हैं। इससे बच्चे, युवा एवं प्रौढ़ लोगों के बीच हिंदी के माध्यम से धर्म, संस्कृति, आचार-संहिता सभ्यता को काफ़ी बढ़ावा मिला है। यह संस्था वर्धा से पाठ्य पुस्तक मँगवाकर हिंदी की परीक्षाओं का आयोजन करने लगी।

अब हिंदी परिषद नीदरलैंड इतनी विकसित हो गई कि यहाँ करीब 45 स्वैच्छिक संस्थाओं में हिंदी की पढ़ाई हो रही है। सरनामी हिंदी जाननेवालों को मानक हिंदी समझने में कोई बाधा नहीं होती है क्योंकि दोनों ही भाषाओं की सांस्कृतिक संपन्नता एक समान है। सूरीनामी लोग अपने बच्चों को हिंदुस्तानी और डच भाषा के संस्कार देते हैं। डच यदि कामकाज की भाषा है तो हिंदुस्तानी बनी सरनामी

भारतवंशियों के जीवन और संस्कृति की भाषा। हम अपने दैनिक जीवन में सरनामी का प्रयोग करते हैं, फिर भी हिंदी को अपनी मातृभाषा मानते हैं। इसका कारण यह है कि सभी हिंदुस्तानी जो अपने-आपको भारतवंशी मानते हैं, अपने धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों में हिंदी का ही प्रयोग करते हैं।

हॉलैंड एक बहुसांस्कृतिक देश है जिसमें सभी प्रकार के लोग रहते हैं। यहाँ पर सभी को अपनी संस्कृति-सभ्यता व भाषा का प्रचार करने की सुविधा है। प्रसन्नता की बात यह है कि स्थानीय आकाशवाणी द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार भी होता है। दूरदर्शन के माध्यम से हर सप्ताह डच-हिंदी भाषा में कार्यक्रम भी चलते हैं।

हिंदी परिषद नीदरलैंड ने भी सांस्कृतिक धरोहर एवं अपनी अस्मिता को अक्षुण्ण रखने के लिए 1983 से आज तक अनथक प्रयास किया है। वर्धा से हम पुस्तकें मँगाते हैं पर अब पाठ्य पुस्तक यहाँ पर ही तैयार कर रहे हैं। वर्ष में दो बार यहाँ प्राथमिक, प्रारंभिक तथा प्रवेश स्तर पर परीक्षाओं की तैयारी होती है। अति प्रसन्नता की बात यह है कि आज तक हम 12,000 प्रमाण-पत्र वितरण कर चुके हैं। उच्च स्तर की परीक्षाएँ जैसे परिचय, कोविद, रत्न आदि के परीक्षा-पत्र वर्धा से ही मंगवाते हैं।

हिंदी परिषद का प्रधान परीक्षा केंद्र देन हाग में है। इसके अलावा नीदरलैंड के चार दिशाओं पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में हिंदी-केंद्र बनाए गए हैं। इन केंद्रों के मुख्य अधिकारी हैं—श्रीमान तेतेर जी, श्री महाबीर जी, श्री अवतार जी और कृष्णदत्त जी। अन्य अधिकारी भी हैं जो कार्यालयों को बड़े अच्छे तरीके से चला रहे हैं और हिंदी के विकास में अपना सहयोग दे रहे हैं।

प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस पर राजनेताओं को भी हिंदी के संबंध में अपना मंतव्य देने के लिए बुलाया जाता है। भारतीय दूतावास भी हिंदी परिषद को अपना योगदान देता रहा जिसके लिए हम उनका आभार व्यक्त करते हैं। लक्ष्य यह रहा कि हम डच संस्कृति में रहते हुए भी उसको अपनाते हुए, सहज भाव से अपने धर्म, संस्कृति एवं अस्मिता को सुरक्षित रखें।

नीदरलैंड को हॉलैंड भी कहा जाता है। इसकी राजधानी एम्स्टर्डम है। यहाँ पर राजाओं का राज है पर यह देश स्वतंत्र है। यहाँ पर 160 नस्लों के लोग रहते हैं। इसकी सरकार देन हाग में है और देन हाग से ही हिंदी परिषद का कार्य निर्माण होता है। देन हाग में 2,500 भारतीय और 50,000 भारतवंशी रहते हैं। इसलिए इसको 'छोटा भारत' भी कहा जाता है। हमारी संस्था का नाम 'हिंदी परिषद नीदरलैंड' है। इसको हम 'एच.पी.एन.' के नाम से पुकारते हैं।

निर्माण—इस संस्था को 1983 में स्थापित किया गया था। इस संस्था का कार्यभार श्री नारायण मथुरा जी संभालते हैं। वे एक अध्यापक हैं और समाज सेवक भी हैं। उन्होंने काफ़ी परिश्रम करके अपने सहयोगियों के साथ इस संस्था को आगे बढ़ाया। देन हाग में 5 स्वैच्छिक संस्थाओं में हिंदी की पढ़ाई होती रही है और 2 हिंदू स्कूल भी हैं। यहाँ पर अन्य भाषाओं की तरह ही हिंदी को भी प्राथमिकता दी गई है। इन विद्यालयों में 850 बच्चे पढ़ रहे हैं। इन हिंदू स्कूलों में हिंदी परिषद की तरफ़ से अध्यापकों का चयन किया जाता है।

प्रमुख पदाधिकारी हिंदी परिषद नीदरलैंड के पदाधिकारी श्री नारायण मथुरा जी हैं। अन्य प्रमुख पदाधिकारियों में से रोसीता रामचरण, श्याम ब्रजमोहन, दिहल, मुनीष शर्मा और ज्योति बाला जी हैं। ये सब इस संस्था का कार्यभार संभाल रहे हैं और आगे अन्य अध्यापकों का चयन करते हैं। इनके द्वारा चयन किए गए 26 प्रमुख अध्यापक हैं जिनके सहयोग से हिंदी परिषद को विकसित

किया जा रहा है।

न केवल भारतीय और भारतवंशी यहाँ पर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं बल्कि अन्य जातियों के लोग भी हिंदी पढ़ने के लिए उत्सुक हैं। हिंदी परिषद के अधिकारी पूरी मेहनत और लगन से इसके विकास हेतु प्रयास में लगे हैं और उन्हें काफ़ी हद तक सफ़लता प्राप्त भी हुई है। हिंदी परिषद नीदरलैंड में अधिकारियों का चयन योग्यता के आधार पर किया जाता है। अनेक गतिविधियों द्वारा हिंदी का प्रयार-प्रसार किया जा रहा है।

हिंदी परिषद ने 2008 में अपनी 25वीं वर्षगांठ मनाई। 1983 से आज तक हर वर्ष हिंदी दिवस मना रहे हैं। विद्यालयों में परीक्षा हेतु परीक्षा समिति का गठन किया गया है और प्रबंध, निदेशक व अध्यक्ष द्वारा परीक्षा समिति के सदस्यों का चयन किया जाता है। यहाँ पर परीक्षा छह स्तर पर होती है। तीन स्तर की परीक्षाएँ हिंदी परिषद द्वारा ही ली जाती है और तीन स्तर की परीक्षा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा ली जाती है। हिंदी परिषद द्वारा ली जानेवाली परीक्षाएँ हैं—(1) प्राथमिक, (2) प्रारंभिक और (3) प्रवेश। भारतीय राजदूतावास भी इस अभियान में हमारा सहयोग दे रहा है। इस परीक्षा के तीनों स्तरों में विद्यार्थी उत्तीर्ण होते हैं तो उनकी योग्यता के आधार पर उन्हें प्रमाण पत्र देकर आगे के स्तर में भेज दिया जाता है।

आगे भेजे गए विद्यार्थियों की परीक्षा भारत द्वारा ली जाती है। हमारे विद्यालयों के कुछ योग्य छात्र भारत में शिक्षा प्राप्त करने हेतु भी जाते हैं जिनकी परीक्षा वर्धा द्वारा ली जाती है। भारत द्वारा ली जानेवाली तीन स्तर की परीक्षा है। जो विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं उनके आगे की परीक्षा के लिए भारत (वर्धा) हमें सहयोग देता है। इसके प्रश्न-पत्र वर्धा द्वारा भेजे जाते हैं। परीक्षा की उत्तर-पुस्तकों को संशोधन के लिए वहीं भेजा जाता है और प्रमाण-पत्र भी वर्धा से ही आते हैं। वर्धा द्वारा ली जानेवाली परीक्षाएँ हैं—(1) परिचय, (2) कोविद और (3) रत्न।

हिंदी परिषद का प्रधान परीक्षा केंद्र देन हाग में है। इसके अलावा नीदरलैंड की चार दिशाओं पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में हिंदी-केंद्र बनाए गए हैं। इन केंद्रों के मुख्य अधिकारी हैं—श्रीमान तेतेर जी, श्री महाबीर जी, श्री अवतार जी और कृष्णदत्त जी। अन्य अधिकारी भी हैं जो कार्यालयों को बड़े अच्छे तरीके से चला रहे हैं और हिंदी के विकास में अपना सहयोग दे रहे हैं।

देन हाग में 9 मंदिर हैं। यहाँ पर हम हिंदी का प्रचार भी करते हैं। इन मंदिरों में पूजा-पाठ, प्रवचन के अलावा रामायण और गीता का पाठ भी किया जाता है तथा सभी मुख्य त्योहार जैसे नवरात्रि, दीपावली, होली आदि मनाते हैं। पूरे देश में 25 से अधिक हिंदू मंदिर हैं जिनके द्वारा हिंदी का प्रचार किया जाता है।

हिंदी दिवस पर हिंदी के कार्यक्रम बड़ी लगन से होती है, जिसमें सभी मुख्य और अन्य अधिकारी अपनी प्रतिभा दिखाते हैं तथा लोगों को हिंदी सीखने हेतु उत्साहित करते हैं।

आकाशवाणी (लोकल) रेडियो जिनका नाम 'अमोर' और 'फाहोन' है, अति लोकप्रिय हैं। नीदरलैंड के प्रमुख शहरों में स्थानीय आकाशवाणी भी है। यह हिंदी में है।

ओउम् (टी.वी.) दूरदर्शन प्रसारित होता है जिसके द्वारा हम अपने विचार और अनुभव लोगों तक पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं।

देन हाग में स्थानीय हिंदी संस्थाएँ हैं जिनके द्वारा हम हिंदी का प्रचार करते हैं। हम हिंदी की सफ़लता हेतु तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। इन समागमों में भारतीय राजदूतावास का सहयोग और विश्वास हमें मिलता रहा है। वे हिंदी के विस्तार के अभियान में हमेशा सहयोग देते हैं। आज उन्हीं के सहयोग से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की राह पर चल रहे हैं और हमें आशा है कि हम इस लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

हम अपने दैनिक जीवन में सरनामी भाषा का प्रयोग करते हैं

पर शिक्षा के लिए हिंदी को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि धर्म, संस्कृति और संस्कारों की भाषा आज हॉलैंड में हिंदी ही है और यही कारण है कि हम हिंदी को महत्व देते हैं।

सरनामी एक बोल-चाल की भाषा है। इसकी लिपि रोमन है। सभी धार्मिक और सांस्कृतिक ग्रंथ केवल देवनागरी या संस्कृत में उपलब्ध हैं। शिक्षकों की सहायता से ऐसे कार्यक्रम ऐसे पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं जिनसे आधुनिक प्रणाली द्वारा अच्छी तरह से हिंदी का ज्ञान कराया जा सके तथा कुछ नए पाठ्यक्रम की तैयारी में अभी से जुटे हुए हैं। इस कार्य को संपन्न करने हेतु हमने भारत सरकार का सहयोग भी माँगा है क्योंकि हम नीदरलैंड के घर-घर में हिंदी पहुँचाना चाहते हैं।

सम्मान/पुरस्कार : हमारी हिंदी परिषद को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। सितंबर 2013 में हिंदी दिवस पर भारतीय राजदूतावास की तरफ़ से वहाँ के अध्यक्ष ने हिंदी परिषद को सबसे अच्छी हिंदी संस्था के रूप में सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त 2011 में Hindu Council Netherland जो राज्य सरकार द्वारा स्थापित किया गया है, ने हिंदी परिषद को सम्मान दिया।

अंतिम में आप सब के लिए एक छोटी सी कविता—

हिंदी भाषा ज्ञान का सागर,
जिसमें हमको तैरना है,
वायदा किया जो पूर्वजों से,
उसको पूरा करना है।

हिंदी भाषा अमर रहे!

अध्यक्ष, हिंदी परिषद नीदरलैंड
त्रुद मेर्टेंस्लान 10
2545 ए.एम.
देन हाग
नीदरलैंड
nsmathura@gmail.com

आठवाँ सत्र : विश्व में हिंदी शिक्षण व प्रचार–प्रसार—भारतीय संस्थाओं की भूमिका व योगदान

24. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा विदेशी शिक्षण केंद्र

प्रो. चित्तरंजन मिश्र

हिंदी दुनिया की सबसे प्रमुख भाषाओं में से एक है। भारत और दुनिया के दूसरे देशों में इसे बोलने और समझनेवालों की संख्या बहुत बड़ी है। पिछले दशकों में अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भी हिंदी के प्रभाव और हस्तक्षेप को महसूस किया गया है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रमुख दायित्वों में से एक हिंदी को विश्वभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना भी है। अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के विकास के लिए केंद्रीय और समन्वयक अभिकरण के रूप में कार्य करने के लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयत्नशील है।

विश्वविद्यालय ने सौंपे गए और अपेक्षित दायित्वों को पूरा करने के लिए पहले विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ की स्थापना की थी, जिसे अब विदेशी शिक्षण केंद्र के रूप में विधिवत प्रोन्नत कर लिया गया है। केंद्र का लक्ष्य सब प्रकार से हिंदी को एक समर्थ अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित करने के साथ-साथ दुनिया के दूसरे भाषा-भाषी देशों के साथ सांस्कृतिक संबंध के विस्तार और संवाद के सेतु का निर्माण करना भी है। यह केंद्र विदेशी विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों का संचालन, प्रबंध, नियमन और शिक्षण करता है।

संचालित पाठ्यक्रम

केंद्र द्वारा निम्नलिखित पाठ्यक्रम संचालित हैं—

क्रम	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	पात्रता	लक्ष्य
1	आधार पाठ्यक्रम	4 सप्ताह	ऐसे विदेशी विद्यार्थी जिनका हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि से कोई परिचय नहीं है। स्तर-10+2	डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए आधार तैयारी।
2	गहन हिंदी पाठ्यक्रम	4 सप्ताह	ऐसे विदेशी विद्यार्थी जिन्होंने कम-से-कम 1 सेमेस्टर का हिंदी पाठ्यक्रम पूरा किया है।	हिंदी भाषा प्रयोग में प्रवीणता और वास्तविक स्थितियों में उसका व्यवहार-अभ्यास।
3	प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम	12 सप्ताह (3 माह)	उन विदेशी विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम का शिक्षण जिनके साथ विश्वविद्यालय का अनुबंध है।	हिंदी के भाषायी और सांस्कृतिक परिवेश में पाठ्यक्रम शिक्षण।

4	विश्वभाषा हिंदी में डिप्लोमा	2 सेमेस्टर (कोई विद्यार्थी 1 सेमेस्टर की पढ़ाई के बाद प्रमाण–पत्र लेकर पाठ्यक्रम छोड़ सकता है।)	हिंदी भाषा से सामान्य परिचय या 4 सप्ताह का आधार पाठ्यक्रम। स्तर 10+2	हिंदी भाषा का सम्यक बोध और व्यावहारिक कुशलता (यह डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद विदेशी विद्यार्थी बी.ए. हिंदी (भाषा, साहित्य और संस्कृति) पाठ्यक्रम में प्रवेश के पात्र होंगे।)
5	बी.ए. हिंदी (भाषा, साहित्य और संस्कृति)	6 सेमेस्टर	10+2 और/ विश्वभाषा हिंदी में डिप्लोमा।	हिंदी में अंडर–ग्रेजुएट पाठ्यक्रम
6	एम.ए. हिंदी	4 सेमेस्टर	बी.ए. हिंदी (भाषा, साहित्य और संस्कृति)	हिंदी में पोस्ट–ग्रेजुएट उपाधि। इस उपाधि के बाद विद्यार्थी न्यूनतम पात्रता पूरी करने पर एम.फिल. अथवा पीएचडी में प्रवेश के पात्र होंगे।

प्रस्तावित

अब तक विश्वविद्यालय में इन पाठ्यक्रमों में विभिन्न देशों के 130 विद्यार्थी (43 पुरुष और 87 महिला) अध्ययन कर चुके हैं। इन देशों में—जर्मनी, पोलैंड, बेल्जियम, इटली, ऑस्ट्रिया, क्रोएशिया, श्रीलंका, थाईलैंड, मॉरीशस, चीन, मलेशिया, जापान और हंगरी आदि के विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

यहाँ भाषा शिक्षण के साथ विद्यार्थियों को भारतीय सांस्कृतिक परिवेश और जीवन से भी परिचित होने का अवसर उपलब्ध कराया जाता है। इसके अलावा भारतीय नृत्य और संगीत के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की जाती है।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने विदेशों में हिंदी का शिक्षण करनेवाले अध्यापकों के लिए दो अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए हैं—प्रथम अभिविन्यास पाठ्यक्रम 1 जनवरी, 2011 से 15 जनवरी, 2011 तक और दूसरा अभिविन्यास पाठ्यक्रम 31 अक्टूबर, 2011 से 9 नवंबर, 2011 तक आयोजित किया गया। दूसरे पाठ्यक्रम में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आई.सी.सी.आर.) ने पाँच लाख रुपए की अनुदान राशि भी प्रदान की थी। विश्वविद्यालय भविष्य में भी इस तरह के अभिविन्यास/पुनश्चर्या कार्यक्रम आयोजित करने के लिए उत्सुक

है और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् से सहयोग की अपेक्षा रखता है।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् नई दिल्ली द्वारा विदेशी विश्वविद्यालयों में स्थापित हिंदी पीठों (चेयर्स) पर हिंदी शिक्षण के लिए चयनित शिक्षकों के लिए भी एक सप्ताह के अभिविन्यास पाठ्यक्रम का प्रस्ताव करता है; जिससे संबंधित शिक्षकों की आधारभूत तैयारी हो सके। इस अभिविन्यास पाठ्यक्रम में हिंदी शिक्षकों को विदेशी विद्यार्थियों की शिक्षण सामग्री का सम्यक ज्ञान, अद्यतन शिक्षण विधियों से परिचय, भिन्न सांस्कृतिक परिवेश में शिक्षण की समस्याओं और तौर-तरीकों का भली प्रकार से प्रशिक्षण दिया जाना सम्मिलित है। इस पाठ्यचर्या में यह भी सम्मिलित है कि संबंधित शिक्षक भारत के सांस्कृतिक दूत की भी बेहतर भूमिका निभा सकें।

ये पाठ्यक्रम वर्ष में कम-से-कम एक बार या आवश्यकतानुसार आयोजित किए जा सकते हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् से पूर्ण वित्तीय अनुदान की अपेक्षा करता है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली इस अभिविन्यास पाठ्यक्रम को विदेशी विश्वविद्यालयों के हिंदी पीठों (चेयर्स) के लिए आधारभूत पात्रता के रूप में प्रस्तावित करने पर विचार कर सकती है।

हिंदी शिक्षण हेतु आधार सामग्री निर्माण

विश्वविद्यालय ने विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए पाठ्यक्रम सामग्री के निर्माण की दिशा में भी पहल की है और इसके लिए दिनांक 11 दिसंबर, 2012 से 21 दिसंबर, 2012 तक भारतीय एवं विदेशी शिक्षकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के बाद हंगरी में हिंदी की प्रोफेसर सुश्री मारिया न्येगेशी ने हंगेरियन और हिंदी में एक पाठ्यपुस्तक तैयार की है जिसका विश्वविद्यालय ने प्रकाशन किया है। भविष्य में भी पाठ्यसामग्री निर्माण की दिशा में नियमित प्रयत्न किए जाएँगे।

विशेष दायित्व

विश्वविद्यालय को जुलाई 2007 से न्यूयॉर्क में संपन्न 8वें तथा सितंबर, 2012 में जोहान्सबर्ग में संपन्न 9वें विश्व हिंदी सम्मेलनों में विशेष दायित्व सौंपे गए थे। 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण के लिए मॉडल पाठ्यक्रम निर्माण का विशेष दायित्व भी विश्वविद्यालय को सौंपा गया है। विश्वविद्यालय इन मॉडल पाठ्यक्रमों को तैयार करने की प्रक्रिया में है। शीघ्र ही ये पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध होंगे।

अनुबंध (MOU)

विश्वविद्यालय ने अपनी शैक्षणिक/अकादमिक गतिविधियों के विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत दुनिया के 7 देशों के 9 विश्वविद्यालयों/संस्थानों के साथ शैक्षणिक अनुबंध किया है और भविष्य में कई अन्य विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध की योजना है। इन अनुबंधों के अंतर्गत महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और अनुबंधित विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों/शोधार्थियों और शिक्षकों के बीच परस्पर, शैक्षणिक/अकादमिक गतिविधियों की आवश्यकताओं के अनुरूप आदान-प्रदान के कार्यक्रम होते हैं।

देश	अनुबंधित विश्वविद्यालय/संस्थान	लिंक
श्रीलंका	यूनिवर्सिटी ऑव केलानिया, केलानिया सबरगामुवा यूनिवर्सिटी, बेलिहुलोया	http://www.kln.ac.IK/ http://www.sab.ac.IK/

मॉरीशस	महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, मोका	http://www.mgirti.org
हंगरी	इतवॉस लोरांद यूनिवर्सिटी, बुदापेस्त	http://www.elte.hu/en
बेल्जियम	घेंट यूनिवर्सिटी, घेंट	http://www.ugent.be/en
इटली	यूनिवर्सिटी ऑव टूरिन, टूरिन	http://www.unito.it/
जर्मनी	यूनिवर्सिटी ऑव टयूबेंगिन, जर्मनी यूनिवर्सिटी ऑव हैम्बर्ग, जर्मनी	http://www.uni-tuebingen.de/en http://www.uni-hamburg.de/
रूस	मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी, मास्को	http://www.msu.ru/

विद्यार्थियों को दी जानेवाली सुविधाएँ

- नागपुर एयरपोर्ट अथवा वर्धा/सेवाग्राम रेलवे स्टेशन से विश्वविद्यालय परिसर तक आगमन एवं प्रस्थान के समय तथा क्लास-रूम से हॉस्टल तक आने-जाने हेतु स्थानीय परिवहन की व्यवस्था
- फ़ादर कामिल बुल्के अंतरराष्ट्रीय छात्रावास (एसी) में आवासीय सुविधा
- भोजन (शाकाहारी एवं मांसाहारी)
- ए.सी. क्लास-रूम
- लैंग्वेज लैब
- 24 घंटे बिजली
- 'आर ओ' प्रशोधित पेयजल
- इंटरनेट
- केंद्रीय पुस्तकालय
- जिम
- विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केंद्र
- खेलकूद

शुल्क

300 यू.एस. डॉलर प्रतिमाह

संपर्क

प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल
अधिष्ठाता : भाषा विद्यापीठ
एवं
प्रभारी : विदेशी शिक्षण केंद्र
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स
वर्धा : 442005 (महाराष्ट्र) भारत
वेबसाइट : hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-230084
फैक्स : +91-7152-230903
मोबाइल : +91-9403783977
इ-मेल : ftc.mgahv@hindivishwa.org
shuklahp7@gmail.com

प्रतिकुलपति,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, वर्धा 442001 (महाराष्ट्र), भारत
chittranjanmishra@gmail.com

25. प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण व प्रचार-प्रसार– विदेश मंत्रालय, भारत सरकार का योगदान

श्रीमती सुनीति शर्मा

किसी भी देश की पहचान वहाँ की भाषा और उससे जुड़े साहित्य से होती है जिसके सृजन का एक क्रमबद्ध इतिहास होता है। भारत भाषा की दृष्टि से विविध भाषाओं के साथ एक अत्यंत समृद्ध राष्ट्र है। यहाँ की सभी भाषाएँ परस्पर पूरक हैं किंतु हिंदी भारतवर्ष की सर्वाधिक बोली–समझी जानेवाली भाषा है और भारत की सांस्कृतिक चेतना के रूप में इसकी अपनी पहचान है।

भारत सरकार हिंदी के विश्वभर में प्रचार–प्रसार के लिए प्रयासरत है। भारत सरकार का विदेश मंत्रालय विदेश स्थित भारतीय मिशनों/केंद्रों के माध्यम से **'विदेशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार योजना'** के तहत विदेशों में हिंदी–शिक्षण व प्रचार–प्रसार को प्रोत्साहित करने की सक्रिय भूमिका निभा रही है।

इस योजना के तहत मंत्रालय अपने संबंधित मिशनों के माध्यम से हिंदी शिक्षण तथा हिंदी के प्रचार–प्रसार से जुड़ी शैक्षणिक संस्थाओं तथा गैर–सरकारी संगठनों आदि के हिंदी–शिक्षण तथा प्रचार–प्रसार से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों हेतु वित्तीय अनुदान तथा अन्य माँग संबंधी अनुरोधों को पूरा करने का प्रयास करता है। **हिंदी–शिक्षण** हिंदी के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए मंत्रालय हिंदी–शिक्षण कार्यक्रमों हेतु विभिन्न संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा उनकी माँग पर हिंदी की शिक्षण सामग्री/ पुस्तकें/ सॉफ्टवेयरों आदि की आपूर्ति अपने मिशनों के माध्यम से कराता है। विदेश मंत्रालय के प्रयास और मिशनों के सहयोग से आज कई देशों में हिंदी बोली व समझी जा रही है तथा साथ ही वहाँ के स्थानीय विश्वविद्यालय, स्कूल, संस्थाएँ आदि अपने पाठ्यक्रम में हिंदी को विभिन्न स्तरों तक शामिल कर रहे हैं। इस कार्य में स्थानीय सरकारें भी योगदान कर रही हैं क्योंकि आज वैश्विक मंच पर भारत एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है और व्यापारिक दृष्टि से भारत के महत्व को देखते हुए भी कई देशों की सरकारें हिंदी को किसी–न–किसी स्तर और रूप में प्रोत्साहित कर रही हैं।

विदेश मंत्रालय की **'विदेशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार योजना'** के तहत कई देशों में हिंदी–शिक्षण का कार्य चल रहा है जिसमें मुख्यत: शामिल हैं—पारामारिबो, कैंडी, हो ची मिन्ह सिटी, येरेवान, उलान बतार, बुडापेस्ट, बाकू आदि। इन देशों में संबंधित शिक्षकों को मानदेय भी प्रदान किया जाता है। हिंदी–शिक्षण और हिंदी के प्रचार–प्रसार की गति प्रवासी देशों में अन्य देशों के मुकाबले काफ़ी अधिक तथा अच्छी है। इसका मूल कारण है—प्रवासी भारतीय समुदायों द्वारा अपनी पुरानी भाषा एवं अपनी संस्कृति से लगाव और इसके प्रति आदर तथा झुकाव।

भारत सरकार का विदेश मंत्रालय विदेशों में हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में मिशनों के माध्यम से **'विश्व हिंदी सम्मेलनों तथा अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों'** के आयोजन को प्रायोजित करता है।

जैसा कि विदित है प्रथम 'विश्व हिंदी सम्मेलन' नागपुर में 10–12 जनवरी, 1975 को आयोजित किया गया था। मॉरीशस में स्थापित **विश्व हिंदी सचिवालय** की परिकल्पना इसी सम्मेलन में की गई थी। **विश्व हिंदी सचिवालय** ने अब अपना कार्य शुरू कर दिया है पर जिसे गति पकड़ने में अभी कुछ और समय लग सकता है। इसके लिए अभी बहुत कुछ किया जाना है। भारत सरकार द्वारा इसके भवन–निर्माण के कार्य पर कार्यवाही चल रही है।

हिंदी के प्रचार–प्रसार को और अधिक गति प्रदान करने तथा इसके क्षेत्र को व्यापक बनाने के उद्‌देश्य से विदेश मंत्रालय ने विश्व हिंदी सम्मेलनों के अतिरिक्त एक वर्ष में तीन अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों को आयोजित करने का प्रावधान रखा है। ये सम्मेलन भी संबंधित मिशनों से उन्हें स्थानीय संस्थाओं और संगठनों से प्राप्त अनुरोधों के आधार पर मंत्रालय को भेजे गए प्रावधानों के अनुरूप स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से आयोजित किए जाते हैं।

कुल मिलाकर विदेश मंत्रालय विदेशों में हिंदी-शिक्षण और उसके प्रचार-प्रसार में अहम तथा सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इसके अतिरिक्त, मंत्रालय का एक और अंग '**भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद**' भी भारतीय संस्कृति तथा भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित और प्रसारित करने का भी कार्य कर रहा है। परिषद ने कई देशों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र खोले हैं, जिनमें विभिन्न विधाओं से संबंधित शिक्षा प्रदान की जाती है। परिषद ने 100 से भी अधिक देशों में पीठों की स्थापना की है जिसमें अन्य भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त हिंदी पीठ भी है, जहाँ हिंदी का अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया जाता है। परिषद् कई देशों में हिंदी शिक्षकों को भी भेजता है और वहाँ के स्थानीय बच्चों को हिंदी पढ़ने के लिए छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, भारत में **केंद्रीय हिंदी संस्थान** में हिंदी पढ़ने हेतु भी छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं और इसके लिए विभिन्न मिशनों को छात्रों के लिए स्लॉट आवंटित किए गए हैं।

उल्लेखनीय है कि भारत सरकार का विदेश मंत्रालय हिंदी के प्रचार-प्रसार में काफ़ी सक्रिय है। विदेश मंत्रालय विश्वभर में हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े सभी व्यक्ति, संस्थाओं, संगठनों की सराहना करता है, जो हिंदी में इस प्रकार रुचि दिखाते हुए हिंदी को आगे बढ़ाने में सहयोग दे रहे हैं।

उप सचिव (हिंदी)
विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली
dshindi@mea.gov.in

सम्मेलन की कार्यवाही पर मुख्य प्रतिवेदक द्वारा रिपोर्ट व गोलमेज़ बैठक का सार

26. मुख्य प्रतिवेदक द्वारा सम्मेलन की कार्यवाही का सारांश

श्री केसन बधु

30 अक्टूबर की कार्यवाही का सारांश

इस भाग में बीज वक्तव्य सत्र में मॉरीशस विश्वविद्यालय के प्रति-कुलाधिपति एवं परिषद अध्यक्ष प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर ने 3 मुख्य मुद्दों की चर्चा की—

1. हिंदी को राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के प्रयासों को जारी रखना चाहिए।
2. जिन देशों में हिंदी-शिक्षा को लेकर राजनीतिक इच्छाशक्ति (Political Will) नहीं है, वहाँ सरकारी समर्थन तलाशना आवश्यक है।
3. अगर आवश्यकता पड़े तो हमें अच्छे अध्यापकों को विदेश भेजना चाहिए।
4. परिवार में भारतीय संस्कृति कायम रखनी चाहिए।

बीज वक्तव्य में भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल ने 'भाषा गई तो संस्कृति गई' विषय पर मुट्‌ठी में पकड़कर रखी हुई रेत का बिंब प्रस्तुत किया। पता नहीं चलता कि कब संस्कृति रूपी रेत मुट्‌ठी से रिस जाती है। भाषा मुट्‌ठी के अंदर की दरारों को भरती है और उस रेत-संस्कृति को रिसने से बचाती है। उनके वक्तव्य में 3 बातें विशेष उल्लेखनीय हैं—

1. टेक्नोलॉजी की भूमिका : हिंदी भाषा जितनी अधिक प्रौद्योगिकी से संबंध बनाए रखेगी उतनी ही अधिक वह प्रगति करेगी।
2. हिंदी को जीविका (Career) से जोड़ना चाहिए।
3. प्रवासी देशों को हिंदी-शिक्षण में महात्मा गांधी संस्थान (MGI) की भूमिका से प्रेरणा लेना चाहिए।

इसके बाद 14 प्रतिनिधियों ने हिंदी-शिक्षण पर अपने-अपने अनुभव बाँटे।

मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी-शिक्षण विषय पर सरकारी हिंदी अध्यापक संघ (GHTU) के प्रधान श्री टेंगर ने कहा कि मॉरीशस में 1834 में 'कुली' कहे जानेवाले प्रथम शर्तबंद मज़दूरों के आगमन से जो हिंदी बैठकाओं में सिखाई जाती थी उसे स्कूली पाठ्‌यक्रम में मान्यता मिलने में 100 साल लगे। हिंदी को स्कूली-पाठ्‌यक्रम में उसका उचित स्थान दिलाने की लड़ाई अदालती धरातल पर प्रिवी काउंसिल (Privy Council) तक पहुँचाई गई जहाँ हिंदी के पक्ष में फ़ैसला सुनाया गया। आज देश के प्राथमिक स्कूलों में 600 हिंदी के अध्यापक हैं और करीब 42 हज़ार बच्चे यह भाषा सीखते हैं जिनमें 900 ईसाई धर्म के बच्चे हैं। हिंदी में सफलता की दर 70 प्रतिशत है और फ्रेंच भाषा में सफलता की दर के समकक्ष है।

1. उन्होंने प्राथमिक स्तर की हिंदी की पढ़ाई में ICT के अधिक-से-अधिक प्रयोग पर ज़ोर दिया।
2. भारतीय उच्चायोग से हिंदी की पढ़ाई हेतु अनुकूल सॉफ्टवेयर विकसित करने की माँग की, जो मौजूदा फ्रेंच सरकार द्वारा प्रदान SANKORE परियोजना के नक्शे पर हो।

मॉरीशस में माध्यमिक स्तर पर हिंदी की शिक्षा पर श्री लक्ष्मी ठाकुरी का वक्तव्य रहा। उन्होंने कहा कि आज देश में 63 सरकारी माध्यमिक स्कूल हैं जहाँ हिंदी सिखाई जाती है और अधिकतर निजी कॉलेजों में भी यही स्थिति है। जो बच्चे CPE में हिंदी-विषय लेते हैं उन्हें फ़ॉर्म 1 से फ़ॉर्म 3 तक अनिवार्यत: हिंदी सीखनी चाहिए। सन् 2012 में इन तीनों कक्षाओं में हिंदी पढ़नेवाले बच्चों की दर 45 प्रतिशत के आस-पास थी। सरकारी कॉलेजों में हिंदी के 89 शिक्षक (Education Officers) और 20 सप्लाई टीचर्स (Supply Teachers) हैं। जहाँ अंग्रेज़ी और फ्रेंच के लिए सप्ताह में 5-6 पीरियड्‌स (Periods) होते हैं, वहाँ हिंदी के केवल 3 होते हैं।

1. उन्होंने यह भी कहा कि फ़ॉर्म 3 के बाद छात्रों में हिंदी के प्रति रुचि बहुत हद तक घट जाती है।
2. इसका प्रमुख कारण हिंदी में करियर (Career) की कम संभावना है।

सभासदों के प्रश्नों में निम्न तथ्य सामने आए—

1. फ़ॉर्म 4 में हिंदी सीखनेवाले छात्रों की संख्या में कमी का

एक प्रमुख कारण विषय-संयोजन (Subject Combination) के समय उन पर लादे जा रहे प्रतिकूल विकल्प हैं जो उन्हें हिंदी छोड़ने के लिए बाध्य कर देते हैं।

2. कुछ प्रतिनिधियों में मानक हिंदी और 'देशज' हिंदी को लेकर बहस छिड़ गई।

पूर्वी एशिया एवं प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में हिंदी-सत्र में 'फिजी हिंदी संगठन' की प्रधान श्रीमती मनीषा रामरक्खा ने कहा कि उनके देश में हिंदी को अंग्रेज़ी और फिजीयन के समान दर्जा प्राप्त है। फिजी में हिंदी के दो रूप देखने को मिलते हैं—फिजीयन हिंदी और मानक हिंदी।

भाषा को बढ़ावा देने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दिया जाता है—

1. प्राथमिक स्तर में यहाँ हिंदी भाषियों को हिंदी सीखना अनिवार्य है।
2. माध्यमिक स्तर में वर्ष 9 और वर्ष 10 के लिए भाषा अनिवार्य है।
3. इसके ऊपर की पढ़ाई में हिंदी वैकल्पिक (Optional) है।
4. वार्तालापीय हिंदी समस्त प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के ग़ैर-हिंदुस्तानी बच्चों के लिए अनिवार्य है।
5. मौखिक हिंदी में भी परीक्षा होती है।
6. भारतीय दूतावास की मदद से नियमित रूप से कार्यशालाओं के माध्यम से प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के स्मस्त अध्यापकों को हिंदी टाइप सेटिंग की योग्यता उपलब्ध करने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाता है।

फिजी में मानक हिंदी जिन चुनौतियों का सामना कर रही है, वे हैं—

1. आधुनिक तकनीकी—फ़ेसबुक, चैट, इ-मेल आदि के आकर्षण में भाषा के प्रति अरुचि बढ़ रही है।
2. पाठ्यक्रम में मानक हिंदी के स्थान पर फिजी हिंदी लाने का प्रयास किया जा रहा है।
3. देवनागरी लिपि का स्थान रोमन लिपि ले रही है, परिणामतः हिंदी-ध्वनियों का लोप हो रहा है।

सिंगापुर में हिंदी-विषय पर सुश्री उदीची पांडेय ने वक्तव्य दिया जो वहाँ हिंदी सोसाइटी (Hindi Society) से संलग्न हैं। उनके संबोधन से निम्न बातें सामने आईं—

1. सिंगापुर में तीन मुख्य भाषाएँ बोली जाती हैं—चाइनीज़, मलय और तमिल। अभी हाल तक सभी विद्यार्थियों को इनमें से एक की पढ़ाई अनिवार्य थी और हिंदी भाषियों के लिए यह एक समस्या थी क्योंकि उनको कम अंक मिलता था और अच्छा कॉलेज नहीं मिलता था।
2. 1999 से वहाँ हिंदी (बंगाली, गुजराती, पंजाबी और उर्दू) की तरह माध्यमिक कक्षाओं में द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। सभी की परीक्षाएँ एक ही प्रारूप (format) में होती है।
3. मौखिक परीक्षाओं पर भी ध्यान दिया जाता है।
4. वहाँ हिंदी-सोसाइटी 25 सालों से कार्यरत है। आज उसके 3000 से अधिक छात्र हैं और 135 अध्यापिकाएँ। बच्चों में 80 प्रतिशत भारत के ग़ैर-हिंदी प्रांतों से आए परिवारों के हैं, जिनके लिए हिंदी विदेशी भाषा के समान ही है।
5. प्राथमिक कक्षाओं के लिए ICT PORTAL का प्रयोग होता है जिससे बच्चे वर्णमाला, समानार्थी, विलोम आदि का अभ्यास घर पर बैठे-बैठे कर सकते हैं।

न्यू ज़ीलैंड में हिंदी विषय पर वक्ता रहीं श्रीमती सुनीता नारायण। वहाँ हिंदी-शिक्षण अनौपचारिक है। कई संस्थाएँ हिंदी शिक्षण सेवा प्रदान करती हैं। कक्षाएँ अधिकतर साप्ताहांत को चलाई जाती हैं। परिवार में भी हिंदी स्पेनीश (Spanish), फ्रेंच आदि भाषाओं की तुलना में सबसे नीचे आती है। उसे सरकारी सहायता प्राप्त नहीं है।

1. यहाँ हिंदी के प्रति रुचि बच्चों में कम है, बड़ों में अधिक है।

2. एक ही अख़बार है जो हिंदी में कुछ पृष्ठ छपता है।
3. जो भी रामायण मंडलियाँ आदि हैं, वे रोमन लिपि का प्रयोग करती हैं।
4. अधिकतर अवकाश प्राप्त एवं अप्रशिक्षित अध्यापक ही हिंदी भाषा पढ़ाते हैं।
5. उनका प्रयास भाषा, धर्म और संस्कृति सभी को साथ लेकर चलना है।
6. वे एक Online Masters Course चलाने पर विचार कर रही हैं।
7. चूँकि भारतीय TV Channnels यहाँ उपलब्ध हैं, श्रीमती सुनीता नारायण का प्रयास है कि Star Plus के साथ संपर्क करके Star Kids नामक हिंदी-शिक्षण प्रोग्राम शुरू करने की माँग की जाए।

वीडियो कॉन्फ़्रेरेंसिंग के माध्यम से ऑस्ट्रेलिया की श्रीमती माला मेहता ने ऑस्ट्रेलिया में निजी संस्थाओं द्वारा हिंदी-शिक्षण की दिशा में किए जा रहे कार्यों का ब्यौरा दिया। इनमें उनकी IABBV संस्था भी है जिसके 120-130 विद्यार्थी हैं और 16-17 अध्यापक। सातवीं कक्षा तक हिंदी पढ़ाई जाती है और कई वयस्क भी पढ़ने आते हैं।

1. उनका अपना वेबसाइट भी है और कई कक्षाएँ वीडियो कॉन्फ़्रेरेंसिंग के माध्यम से भी होती हैं।
2. केवल एक ही प्राथमिक स्कूल में हिंदी पढ़ाई जाती है।
3. पिछले साल से वहाँ हिंदी को अधिक मान्यता मिलने लगी है और इस साल से हिंदी की पढ़ाई हेतु फंड भी मिलने लगे हैं।
4. अगले महीने तक एक हिंदी पाठ्यक्रम बनकर तैयार हो जाएगा।

अफ़्रीका तथा हिंद महासागरीय क्षेत्र सत्र में श्रीमती मालती रामबली और श्री हीरालाल शिवनाथ ने दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी के शिक्षण पर बात की। वे दोनों हिंदी शिक्षा संघ से जुड़े हुए हैं जो सायंकालीन हिंदी-कक्षाएँ चलाता है। छात्रों की संख्या 900 है। 'प्रथमा' से 'कोविद' तक की कक्षाएँ चलती हैं परंतु सरकारी स्कूलों में हिंदी नहीं पढ़ाई जाती और माँग के अभाव में विश्वविद्यालय में भी नहीं।

1. भारत में छपी पुस्तकों का प्रयोग होता है।
2. एक हिंदी सामुदायिक रेडियो स्टेशन है जो संस्था चलाने के लिए फ़ंड का स्रोत है।
3. घर-घर में Zee TV है इसलिए हिंदी को अच्छे दिन देखने को मिलेंगे, यह आशा हुई है।
4. दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी तृतीय भाषा के स्थान पर आ गई है।

फिर भी गौटेंग प्रांत में हिंदी का शिक्षण दुबारा ज़ोर पकड़ रहा है। इसमें ICCR और हिंदी सिनेमा का भारी योगदान है। हिंदी कवि सम्मेलन, हिंदी दिवस आदि आयोजित हो रहे हैं।

1. भारत और विश्व हिंदी सचिवालय से समर्थन की माँग करते हैं,
2. भारत में अध्यापकों के प्रशिक्षण की सुविधा की माँग और
3. हिंदी-शिक्षण के लिए ICT समर्थन की भी माँग करते हैं।

श्री रमणीक चीतू ने रोड्रिग्स में हिंदी स्पीकिंग यूनियन खोलने से संबंधित अपने अनुभव बाँटे। वहाँ पहले तो हिंदी को लेकर यह शंका हो रही थी कि कहीं ये धर्म-परिवर्तन का प्रयास तो नहीं है ? पर अब 75 बच्चे यहाँ हिंदी पढ़ते हैं जो अधिकतर ईसाई हैं। इन्होंने खुद अपनी दुकान का एक हिस्सा स्कूल में बदल दिया है और कई बच्चों को बस का भाड़ा भी देते हैं।

1. परीक्षा आयोजन हेतु समर्थन और टेक्निकल समर्थन की माँग करते हैं।

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की डॉ. राजरानी गोबिन ने रीयूनियन में हिंदी की भावी शिक्षकों के लिए अगस्त 2013 में वहाँ चलाए गए सत्र का वर्णन किया। उनका कहना है कि रीयूनियन में

अगर हिंदी का शिक्षण शुरू करना है तो प्रौढ़ लोगों से शुरू करना चाहिए क्योंकि उनमें अपनी जड़ों की ओर लौटने की अधिक जिज्ञासा है।

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा ने सर्व अफ्रीका प्रोग्राम (serve Africa program) के तहत पश्चिम और केंद्रीय अफ्रीका के देशों के अपने अनुभव के बल पर कहा कि उन्होंने केन्या, कैमरून, रुआंडा और आइवरी कोस्ट में हिंदी भाषा के शिक्षण की कई संभावनाएँ देखीं, विशेषकर भक्तों में जो ISKCON के मंदिरों, गीता मंदिरों और नवरात्र के समय संस्कृत मंत्रों आदि का उच्चारण तो कर लेते हैं लेकिन वहाँ विधिवत हिंदी की कक्षा नहीं चलती।

दक्षिणी अमेरीका क्षेत्र में सूरीनाम और गयाना में हिंदी की स्थिति की चर्चा की गई। श्री वीरजानंद अवतार ने सूरीनाम में हिंदी पर चर्चा की। प्रथम भारतीय गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की खुशी यहाँ भी हर साल मनाई जाती है। भोजपुरी, हिंदी और अवधि आज भी लोगों के कंठ में सुरक्षित है परंतु कब तक?

सूरीनाम में हिंदी भाषा अनौपचारिक रूप से सिखाई जाती है। 'प्रथमा' से 'कोविद' तक की कक्षाएँ वर्धा, भारत से संचालित हैं। पाठ्य-पुस्तकें सूरीनाम और भारत के विशेषज्ञों द्वारा तैयार की जाती हैं। आजकल हिंदी पढ़नेवालों की संख्या कम हो रही है। इसके निम्न कारण हैं—

1. कठिन परिस्थितियों में बिना वेतन के पढ़ाना।
2. नई पीढ़ी की सोच है कि हिंदी की पढ़ाई से कोई व्यवसाय या नौकरी नहीं मिलेगी।
3. स्कूली पाठ्यक्रम में हिंदी नहीं है।

वे भारतीय दूतावास से अपने समर्थन में कुछ और जोड़ने की माँग करते हैं। हिंदी की चिंगारी अभी भी है, केवल कुछ फूँकने की आवश्यकता है...।

गयाना में हिंदी की स्थिति पर सुश्री वर्षिणी उधो सिंह ने वक्तव्य दिया जो वहाँ की हिंदी प्रचार सभा से जुड़ी हुई हैं। गयाना में राजनीतिक उथल-पुथल के कारण बहुत से हिंदी प्रेमी दूसरे देशों तक भाग गए थे इसलिए कई पीढ़ियों तक इसका प्रचार रुका रहा। आज दुबारा गाँव-गाँव में हिंदी के प्रति रुचि पैदा करने की कोशिश हो रही है परंतु यह भी हिंदी को लेकर करियर (Career) की कम संभावनाओं के कारण नौजवानों में रुचि नहीं है। सभा द्वारा 5 सत्रों की परीक्षाएँ चलाई जाती हैं।

इस साल के फरवरी महीने में वहाँ हिंदी के लिए एक राष्ट्रीय-पाठ्यक्रम तैयार करने और अध्यापकों को प्रशिक्षित करने तथा स्कूलों में O Level तक हिंदी पढ़ने के लिए 3 प्रस्ताव पेश किए गए जिनपर वहाँ की सभी 6 जातियों ने मंज़ूरी दे दी।

1. अब टी.वी. पर हिंदी के पाठ तैयार करने की सोच रहे हैं—विशेषकर बोलचाल पर।
2. चूँकि कई प्रांतों में अभी तक बिजली भी नहीं है, पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता आई.सी.टी. से ज़्यादा है।

उनका प्रस्ताव है कि—

1. हिंदी के प्रचार के लिए एक अंतरराष्ट्रीय फंड कायम किया जाए।
2. जो लोग हिंदी पढ़ना और सीखना चाहते हैं, उनके लिए हिंदी मल्टीमीडिया निःशुल्क हो।
3. भारत से कल्चरल एक्सचेंज (Cultural Exchange) का जो भी प्रस्ताव आए उसमें हिंदी सीखने पर भी ज़ोर दिया जाए।
4. वे विश्व हिंदी सचिवालय से हिंदी के शुरुआती ज्ञान के वास्ते कार्य-सत्र आयोजित करने की माँग करती हैं।

अंत में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की श्रीमती संध्या अंचराज नवसाह ने हिंदी-भोजपुरी के परस्पर प्रचार एवं सुदृढीकरण पर बात करते हुए हिंदी के पाठ्यक्रम में भोजपुरी के समावेश पर बात की। उन्होंने भोजपुरी भाषा में पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण तथा आई.सी.टी. के प्रयोग पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।

31 अक्टूबर की कार्यवाही का सारांश

शुक्रवार 31 अक्टूबर के सत्रों के आरंभ में गैर-सरकारी, अर्ध सरकारी और स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा हिंदी-शिक्षण और प्रचार-प्रसार पर बोलते हुए हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने 1926 से संस्था द्वारा नि:शुल्क हिंदी की पढ़ाई और हिंदी के माध्यम से हिंदू-धर्म की रक्षा हेतु किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। सभा 175 सायंकालीन एवं सप्ताहांत पाठशालाएँ चलाती हैं जहाँ प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की कक्षाएँ चलाई जाती हैं। राष्ट्रीय स्तर पर छठी कक्षा की परीक्षा होती है। अध्यापक-अध्यापिकाएँ स्वयंसेवी हैं, इन्हें सरकार की तरफ़ से प्रतीकात्मक भत्ता मिलता है। उत्तमा तृतीय खंड को 'Diploma in Hindi' की औपचारिक मान्यता प्राप्त है। प्रति वर्ष 3 मुख्य समारोह लगते हैं—स्थापना-दिवस, तुलसी जयंती के अवसर पर हिंदी-दिवस और समावर्तन समारोह। 'पंकज' पत्रिका भी निकाली जाती है और सभा स्वयं अपनी पाठ्य-पुस्तकें तैयार करती है।

1. सभा की यह भी चिंता है कि छात्रों की संख्या घट रही है जिसका मुख्य कारण हिंदी में करियर की कम संभावनाएँ हैं।

हिंदी स्पीकिंग यूनियन के प्रधान श्री राजनारायण गति ने कहा कि मॉरीशस में हिंदी की प्रतिष्ठा के तीन कारण हैं—(i) 70 प्रतिशत भारतीय मूल के लोग इस धरती पर आए जहाँ पहले कोई नेटिव आबादी नहीं थी अर्थात समस्त मॉरीशसीय जनता दूसरे देशों से आकर यहाँ बसी है, (ii) भारत का पास में ही होना और (iii) यहाँ के नेता हिंदी के प्रति संवेदनशील रहे हैं।

हिंदी के शिक्षण को लेकर उन्होंने निम्न विचार पेश किए—

1. आज हिंदी-शिक्षण के लिए साधन की कमी नहीं है, कमी है तो व्यवस्था की, मनोवृत्ति की।

2. सूरीनाम, गयाना, दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में हिंदी के प्रचार के वास्ते भारत में एक Special Desk कायम किया जाए।

3. जितनी असरकारी संस्थाएँ इस सम्मेलन में उपस्थित हैं, उनका एक परिसंघ (Federation) बनाया जाए।

श्री देवभरत सीरतन ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में 'आर्य सभा', 'मॉरीशस सनातन धर्म टेंपल्स फ़ेडरेशन', 'आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा', 'गहलोत राजपूत महासभा और मानव सेवा निधि' जैसी संस्थाओं की भूमिका पर बात की। उन्होंने मॉरीशस में हिंदी-शिक्षण में बैठकाओं की भूमिका पर ज़ोर दिया।

तृतीयक स्तर के हिंदी-शिक्षण पर 'ऋषि दयानंद संस्थान' के प्रधान डॉ. उदयनारायण गंगू ने संस्था द्वारा डिप्लोमा, बी.ए. और एम.ए. स्तर पर हिंदी-शिक्षण पर बात की। अब तक 105 बी.ए. और एम.ए. के छात्र यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं।

1. उन्होंने इस स्तर पर पढ़ानेवाले स्वयंसेवी शिक्षकों के अभाव,
2. तृतीयक शिक्षा आयोग (Tertiary Education Commission) की सख़्त नीतियों और
3. मान्यता (Accreditation) की समस्या का भी उल्लेख किया।

प्रश्न सत्र में यह विचार व्यक्त किया गया कि सायंकालीन कक्षाओं में बच्चों की संख्या कम हो जाने का एक कारण यह है कि लगभग सभी बच्चे शाम को अन्य विषयों में निजी शिक्षण (Private tuition) लेने जाते हैं।

1. पूर्व-प्राथमिक स्तर पर हिंदी की पढ़ाई की आवश्यकता
2. अभिभावकों से बात करने और उन्हें हिंदी के प्रति प्रेरित करने की आवश्यकता पर भी बात की गई।

'महात्मा गांधी संस्थान' की हिंदी विभागाध्यक्षा श्रीमती अलका धनपत ने कहा कि यहाँ बी.ए. हिंदी में आई.सी.टी. विषय अनिवार्य है। ये संस्थान पूर्वी भाषाओं में बी.ए. एवं एम.ए. तथा पीएचडी पाठ्यक्रम चलाने में मॉरीशस विश्वविद्यालय का पूरक है। उन्होंने कहा कि अलग-अलग देशों की हिंदी-प्रचारक संस्थाओं में जो

आरंभिक दिक्कतें हैं, 'महात्मा गांधी संस्थान' भी उनपर से गुज़री है, परंतु एक सुनियोजित कार्यनीति की बदौलत साल-दर-साल वह राष्ट्रीय एवं इलाकाई स्तर पर पीएचडी, एडवांस्ड सर्टिफ़िकेट, डिप्लोमा आदि से छात्रों की मानसिकता तैयार करता आया है और तब जाकर उसने बी.ए., एम.ए. तथा पीएचडी स्तर पर पढ़ाई शुरू की।

1. अब दूरस्थ शिक्षा (distance education) के माध्यम से आस-पास के देशों को हिंदी की कक्षाएँ चलाने में मदद करने की योजना है।

महात्मा गांधी संस्थान के शोध एवं प्रकाशन विभाग की श्रीमती माधुरी रामधारी ने हिंदी में शोध पर बात की। बी.ए. तथा एम.ए. के छात्रों के लघु-शोध प्रबंध उपलब्ध हैं, यद्यपि प्रकाशित नहीं हैं, परंतु मॉरीशस में स्नातकोत्तर स्तर पर शोध का अभाव ही है।

1. उन्होंने प्रस्ताव रखा कि एम.फिल./पीएचडी स्तरों पर शोध के लिए मॉरीशस विश्वविद्यालय को अपने शुल्क में कमी लानी चाहिए।
2. और पीएचडी की अवधि घटाकर 3-5 साल कर दी जाए।

इसी विभाग के श्री राज हीरामन ने मॉरीशस में रचनाओं के प्रकाशन पर बात की। इनके जनक मणिलाल डॉक्टर समझे जाते हैं। आज तक मॉरीशस में 175 कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, निबंधों में प्रोफ़ेसर बासदेव बिसुंदयाल की 500 से अधिक रचनाएँ हैं। कहानी-संग्रह, व्यंग्य तथा लघु-कथाओं में श्री रामदेव धुरंधर, उपन्यासों में श्री अभिमन्यु अनत के नाम उल्लेखनीय हैं। उनके प्रस्ताव निम्न हैं—

1. प्रो. बासदेव बिसुंदयाल की रचनाओं पर खोज और इसमें राजनीतिक प्रपंच में नहीं पड़ना चाहिए।
2. 'हिंदी प्रचारिणी सभा' की 'दुर्गा' पत्रिका पर गहरा अध्ययन
3. दिवंगत रचनाकारों के समस्त साहित्य का विश्वविद्यालीय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों में अध्ययन।

'महात्मा गांधी संस्थान' के भाषा-संसाधन केंद्र के अधिकारी श्री कुमारदत्त विनय गुदारी ने एम.जी.आई. की पहल पर प्राथमिक, माध्यमिक एवं तृतीयक स्तरों पर हिंदी के शिक्षण में आई.सी.टी. के सहयोग से लाई जा रही क्रांति पर बात की।

1. प्राथमिक कक्षाओं के 530 अध्यापकों को सांकोरे परियोजना (SANKORE Project) में ट्रेनिंग दी जा चुकी है, जिसका संबंध कक्षा में आई.सी.टी. के प्रयोग से है।
2. कॉलेजों में फ़ॉर्म 4 और 5 के छात्रों को टेबलेट (Tablet) वितरित किए जा चुके हैं। उनके लिए हिंदी-सामग्री तैयार हो रही हैं।
3. इन कक्षाओं के लिए पाठ्य-पुस्तक सी.डी. के साथ तैयार की गई है।
4. तृतीयक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा के लिए मूडल प्लैटफ़ार्म तैयार हो चुका है।
5. आई.सी.टी. समर्थित सामग्री मुफ़्त में प्राप्त की जा सकती हैं।
6. एक समस्या ब्रॉडबैंड इंटरनेट का अभाव है।

प्रोफ़ेसर महेंद्र किशोर वर्मा ने संयुक्त राज्य ब्रिटानिया (यू.के.) में हिंदी-शिक्षण की स्थिति पर बात की। वहाँ के परिवार संपन्न हैं, परंतु हिंदी सिखनेवाले बच्चे कई श्रेणियों के हैं जिनमें कईयों की मातृभाषा हिंदी नहीं है। पाठ्यक्रम में हिंदी है पर इसमें परीक्षाएँ नहीं होतीं।

1. यूरोप, अमेरिका आदि की जनता हिंदी सीखना चाहती हैं, परंतु हमारी युवा पीढ़ी में इसके प्रति रुझान कम है। उनको हिंदी के प्रति आकर्षित करना चाहिए।
2. भारतीय उच्चायोग को ब्रिटिश काउंसिल की भाषा-प्रचारक

नीतियों से सीख लेनी चाहिए।

श्री अशोक ओझा ने संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) में हिंदी पर बात की।

1. उन्होंने याद दिलाया कि न्यूयॉर्क हिंदी सम्मेलन में फिजी, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों को हिंदी-शिक्षण में मदद देने के लिए हिंदी केंद्र का प्रस्ताव किया गया था।
2. आई.सी.सी.आर. (ICCR) का शिक्षा के प्रति भी एक लक्ष्य होना चाहिए, जैसाकि ब्रिटिश काउंसिल और एलायंस फ्रांसेंज़ (Alliance Francaise) का है।
3. उन्होंने लाइफ़लोंग लर्निंग इन हिंदी (Lifelong Learning in Hindi) की धारणा शुरू की है, जहाँ व्याकरण को गौण रखकर आम जीवन में प्रयुक्त हिंदी सिखाई जाती है।
4. हमें अपनी भाषा के प्रति गर्व की भावना जगानी चाहिए और हिंदी-शिक्षण की जागरूकता पैदा करनी चाहिए।

इस बात का संकेत कुछ समय पहले एम.जी.आई. की निदेशिका श्रीमती वी. कुंजल ने किया था।

वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग के माध्यम से कनाडा के श्री रत्नाकर नराले ने परंपरागत तरीकों से हटकर नए तरीके से हिंदी सीखने के अपने एक प्रोग्राम पर बात की जिसमें 30 घंटे के अंदर-अंदर (अर्थात 3-3 घंटों के 10 पाठों में) ग़ैर-हिंदी भाषी को हिंदी का आधारभूत ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

1. वे इस तकनीक पर आधारित एक पुस्तक स्वयं तैयार करने और उसे 'विश्व हिंदी सचिवालय' के सौजन्य से प्रवासी देशों में वितरित करने का प्रस्ताव रखते हैं।

हॉलैंड के श्री नारायन मथुरा ने भी वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग के माध्यम से अपने देश में हिंदी के शिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत की। वहाँ 45 हिंदी-स्कूल हैं जहाँ सप्ताह में एक बार हिंदी स्वैच्छिक तरीके से सिखाई जाती है।

1. लेकिन हिंदी को रोमन लिपि में लिखने की प्रथा शुरू हो गई है जिसका वे कड़ा खंडन करते हैं।

प्रश्नसत्र में एस.सी. और एच.एस.सी. परीक्षाओं में मौखिक परीक्षा की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया। यह सुझाव दिया गया कि इसकी माँग औपचारिक तौर पर मॉरीशस की तरफ़ से की जानी चाहिए।

'महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय' के प्रोफ़ेसर चितरंजन मिश्र ने नौकरी पाने की प्रणाली में हिंदी को शामिल करने की आवश्यकता पर बात की। वे हिंदी-शिक्षण में त्याग और सर्जनात्मक मूल्यों पर बल देते हैं। जोहांसबर्ग में लगे नवें 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में उनकी संस्था को अलग-अलग प्रवासी देशों की माँगों के अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार करने का ज़िम्मा सौंपा गया था जो वह बखूबी कर रही है। ये उनके वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

भारतीय विदेश मंत्रालय की श्रीमती सुनीति शर्मा ने विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारतीय दूतावासों की भूमिका पर बात की।

1. उन्होंने कहा कि वर्ष में 3 अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन के आयोजन की योजना है।
2. आज जब भारत एक वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है तो कई देशों में हिंदी के प्रति उत्साह पैदा हो रहा है।
3. हिंदी को संयुक्त राज्य की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए भी काम करना बाकी है।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के डायस्पोरा और प्रवासन स्टडीज़ विभाग के मुख्य सलाहकार श्री डॉ. संजीव कुमार शर्मा ने जापान के कुछ छात्रों के लिए हिंदी भाषा शिक्षण हेतु चलाए जा रहे 3 महीने के प्रोग्राम का उदाहरण दिया और कहा कि इस तरह के समझौता-ज्ञापन (MOU) अन्य संस्थाओं के साथ भी कायम

किए जा सकते हैं जिसमें छात्र की यात्रा आदि का सारा खर्च भारतीय सरकार वहन करती है। उन्होंने हिंदी भाषा के अन्य विषय सिखाए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उनका मानना है कि—

1. हिंदी-परिवार की भाषा बननी चाहिए।
2. हिंदी के शिक्षण के लिए बॉलीवुड पर निर्भर नहीं रहना चाहिए क्योंकि वो जितनी भाषा सिखाती नहीं, उतनी संस्कार को हानि पहुँचा देती है।
3. बच्चों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करना परिवार का काम है।
4. बच्चे को व्याकरण पढ़ाना अनिवार्य है।

प्रश्नोत्तर सत्र में यह माँग की गई कि भारतीय विश्वविद्यालयों में विदेशियों के लिए हिंदी की पढ़ाई का शुल्क कम किया जाए।

1. सिंगापुर के प्रतिनिधियों ने पूछा कि क्यों हिंदी-दिवस मनाने के लिए भारत की सरकार जो फंड देती थी, वह बंद हो गया है।
2. यह भी प्रस्ताव रखा गया कि अगला 'विश्व हिंदी सम्मेलन' पूर्व में मलेशिया, सिंगापुर या इंडोनेशिया में लगे।

ये रहा 'अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन 2014' के दो दिवसीय वक्तव्यों का एक सारांश। इसे तैयार करने में मुझे एम.जी.आई. के बी.ए. छात्र-छात्रों की सहायता प्राप्त हुई है जिसके लिए मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

27. गोलमेज़ बैठक

श्री केसन बधु

द्वि दिवसीय सम्मेलन के पश्चात 1 नवंबर, 2014 को सम्मेलन की कार्यवाही पर गहन चर्चा व विचार-विमर्श हेतु दो सत्रों में गोलमेज़ बैठक लगाई गई।

गोलमेज़ सत्रों का विषय हिंदी शिक्षण में पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तक, प्रविधियाँ, प्रौद्योगिकी-समन्वयन आदि व प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में प्रचार की नीतियाँ, गतिविधियाँ, प्रणालियाँ, संसाधन आदि पर आधारित रहा। दो दिवसीय शैक्षणिक सत्रों की प्रस्तुतियों में इन विषयों से संबंधित सूचना के आधार पर देश और क्षेत्र विशेष की उपलब्धियों, कठिनाइयों, चुनौतियों व संभावनओं पर गहन चर्चा व विचार-विमर्श किया गया।

सत्र के बाद कई प्रस्ताव सामने आए जिनको तत्काल व लंबी अवधि में कार्यान्वयन की संभावना के आधार पर दो श्रेणियों में बाँटा गया।

तत्काल कार्यांवयन की संभावना गर्भित प्रस्ताव—

- हिंदी शिक्षक आपस में हिंदी में बात करें।
- हिंदी के पाठ्यक्रम के साथ व्यावसायिक नियम भी जोड़े जाएँ जैसे पर्यटन प्रबंधन व हिंदी और हिंदी एवं पत्रकारिता।
- स्थानीय टी.वी. पर बच्चों के लिए हिंदी में कार्टून फिल्में प्रसारित की जाए।
- पाठ्य-सामग्री जैसे पुस्तकों को अधिक आकर्षक बनाया जाए।
- हिंदी शिक्षण सामग्री का एक भंडार (Repository) ऑनलाइन उपलब्ध कराया जाए जिससे सभी प्रवासी देश लाभ उठा सकें।
- मॉरीशस में माध्यमिक स्तर पर हिंदी की शिक्षण-अवधि (periods) को बढ़ाकर अंग्रेज़ी और फ्रेंच जैसे की जाए।
- भारत सरकार प्रवासी देशों की सरकारों के साथ मिलकर हिंदी शिक्षा व शिक्षण हेतु परियोजनाएँ बनाएँ।
- विश्व हिंदी सचिवालय उन पाठ्य-पुस्तकों को संग्रहित करे जिनका प्रयोग अलग-अलग प्रवासी देशों में किया जा सके।
- व्यक्तियों कातथा इमारतों पर नाम-पट्ट हिंदी में लिखे जाएँ।

लंबी अवधि में कार्यान्वयन हेतु प्रस्ताव—

- हिंदी भाषा के प्रचार के लिए महात्मा गांधी संस्थान में नेहरूचेयर (chair) स्थापित हो।
- हिंदी शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए संस्थाओं द्वारा छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाए जैसे टरशरी एजुकेशन कमिशन, मॉरीशस, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, भारत, हिंदी प्रचारिणी सभा आदि।
- हिंदी व आई.सी.टी. में अनुभवी भारतीय विशेषज्ञों तथा दूरस्थ शिक्षा व इ-शिक्षण के एक विशेषज्ञ को मॉरीशस में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए भेजा जाए।
- गयाना जैसे देशों में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए विशेषज्ञों को भेजा जाए।
- हिंदी के माध्यम से छात्रवृत्ति प्राप्त छात्र भारत में कोई भी विषय सीख सकें।
- हिंदी प्रचार के लिए प्रशांत महासागरीय देशों में, फिजी आदि देशों में एक हिंदी केंद्र खोला जाए।
- न्यू यॉर्क व सिंगापुर में एक हिंदी केंद्र की स्थापना की जाए जिससे लोगों तक तथा ऑनलाइन माध्यम से हिंदी शिक्षण-सामग्रियाँ वितरित की जाए।
- रोड्रिग्स में एक भारतीय संस्कृति केंद्र खोला जाए।
- हर प्रवासी देश में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की एक शाखा हो और परिषद को मूलभूत हिंदी-शिक्षणके

साथ जोड़ा जाए। सांस्कृतिक आदान-प्रदान दो तरफ़ा हो।

- भारत के विदेश मंत्रालय में प्रवासी देशों के लिए एक डेस्क कायम की जाए।
- अवकाश प्राप्त अध्यापकों को दूसरे प्रवासी देशों में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए।
- हिंदी के प्रचार के लिए एक अंतरराष्ट्रीय निधि कायम की जाए जिसमें हिंदी शिक्षक अनुदान दे सकते हैं।
- प्रवासी देशों में विश्व हिंदी दिवस / हिंदी दिवस मनाने के लिए भारत सरकार की ओर से आर्थिक सहायता दी जाए।
- हिंदी सेवी संस्थाओं की नेटवर्किंग की जाए।
- टीम कायम की जाए जो घर-घर जाकर लोगों को हिंदी सीखने के महत्व पर बात करें।
- सभी देशों में भारतीय दूतावास हिंदी शिक्षण प्रचार का भी काम करे।
- शिक्षण-सामग्री जैसी पाठ्य-पुस्तकें व ऑनलाइन शिक्षण सामग्री की तैयारी के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय व राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा सहयोग।
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रवासी देशों के लिए श्रुतिलेख आदि प्रतियोगिता का आयोजन और विजेता को भारत जाने का अवसर।

इन प्रस्तावों के अनुरूप समापन सत्र में हिंदी शिक्षण से संबद्ध महत्वपूर्ण मंतव्य प्रस्तावित और पारित किए गए।

भाग–2 : वक्ताओं का परिचय

अंतरराष्ट्रीय तथा मॉरीशसीय वक्ता

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल

आपका जन्म 1956 में हुआ।

आपने वनस्पति विज्ञान में एम.फिल. किया है तथा 1984 में भारतीय विदेश सेवा से जुड़े। तब से आपने मेक्सिको सिटी, लीमा, बेलग्रेड, ब्रुसेल्स, विएना व म्यूनिख में कई भारतीय राजनयिक मिशनों तथा पदों पर कार्यरत रहे।

भारत में आप पूर्वी यूरोप प्रभाग व दक्षिण पूर्व एशिया प्रभाग में कार्यरत रहे तथा समय-समय पर विदेश मंत्रालय के निरस्त्रीकरण, स्थापना व प्रशासनिक प्रभाग में अध्यक्ष के पद को संभाला।

आपने कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है तथा हिंदी को आप अपनी मातृभाषा मानते हैं व उसके प्रचार-प्रसार में लगे रहते हैं।

सन् 2014 से आप मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त हैं तथा हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं की प्रगति हेतु स्थानीय संस्थाओं को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। 2014 में आपने तमिल सम्मेलन, भोजपुरी सम्मेलन तथा अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन के आयोजन में विशेष व महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री सत्यदेव टेंगर

आपका जन्म 12 अप्रैल, 1954 को हुआ। मॉरीशस में हिंदी के क्षेत्र में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आप प्राथमिक सरकारी स्कूल सहकारिता संघ के महासचिव रह चुके हैं। संप्रति आप आक्रोश हिंदी पत्रिका के मुख्य संपादक तथा सरकारी हिंदी शिक्षक संघ के प्रधान के साथ-ही-साथ विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य भी है।

श्री लक्ष्मी ठाकुरी

आपका जन्म 26 अक्टूबर, 1954 को हुआ। आपने एम.एस.सी. शैक्षिक प्रशासन, पी.जी.सी.ई., बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, हायर स्कूल सर्टिफ़िकेट, स्कूल सर्टिफ़िकेट किया है।

आप 3 वर्ष कैंब्रिज स्कूल सर्टिफ़िकेट परीक्षा के हिंदी-साहित्य-पत्र के मुख्य परीक्षक के रूप में कार्यरत रहे तथा 12 वर्षों तक हिंदी-पत्र के परीक्षक भी रहे। आप शिक्षा एवं मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय, मॉरीशस में शिक्षा अधिकारी, प्रशासक, रेक्टर तथा कार्यवाहक सहायक निदेशक के रूप मे भी काम किया है।

संप्रति आप मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व अनुसंधान मंत्रालय के ज़ोन 4 के कार्यवाहक सहायक निदेश हैं।

श्रीमती मनीषा रामरक्खा

आपने बी.ए. व एम.ए. अर्थशास्त्र (1975–1977) तथा बी.ए. व एम.ए. हिंदी (1969–1971) किया है।

आपको भारतीय संस्कृति संवर्धन परिषद, भारत द्वारा हिंदी सेवी सम्मान, फिजी हिंदी साहित्य समिति द्वारा फिजी समिति सम्मान तथा शिक्षा मंत्रालय, फिजी द्वारा प्रमाणपत्र प्राप्त है। संप्रति आप हिंदी टीचर्स असोसिएशन ऑव फिजी की प्रधान हैं तथा फिजी हिंदी प्रतिनिधि सभा की सक्रिय सदस्या भी। आपने अपने जीवन के 36 वर्ष फिजी में हिंदी भाषा व संस्कृति के प्रचार–प्रसार को समर्पित किया व सेवानिवृत्ति होने के पश्चात भी हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत रहीं।

आपकी संस्कृति और नैतिक शिक्षा, संस्कृति और मानव धर्म तथा 8वीं कक्षा के लिए शाश्वत ज्ञान–8 की पुस्तकें प्रकाशित हैं। 2015 में आपने हिंदी शिक्षकों के लिए कार्यशालाओं तथा 1997 में फिजी गिरमिट कौंसिल ऑव वीमन (Fiji Girmit Council of Women), वेलिंगटन, न्यू ज़ीलैंड के कार्यसत्रों का संचालन किया।

सुश्री उदीची पांडेय

आपका जन्म भारत में हुआ तथा विवाह के पश्चात सन् 1996 में आप सिंगापुर आईं। आपने गोरखपुर विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। 1999 में अध्यापिका के रूप में हिंदी सोसाइटी से जुड़ीं तथा विभिन्न गतिविधियों में सफ़लतापूर्वक संलग्न रहीं। 10 साल के अध्यापन अनुभव के बाद आपने सन् 2010 में मातृभाषा विशेषज्ञ अधिकारी (Mother Tongue Specialist Officer) का उत्तरदायित्व संभाला। सन् 2012 में आप हिंदी सोसाइटी की मुख्य अध्यापिका बनीं तथा अब भी हिंदी के प्रचार–प्रसार में नित्य कार्यरत हैं।

श्रीमती सुनीता नारायण

आपका जन्म फिजी में हुआ तथा 27 सालों से आप न्यू ज़ीलैंड की निवासी हैं।

आपने एडवांस्ड डिप्लोमा हिंदी (सी.एच.आई), डिप्लोमा एजुकेशन (यू.एस.पी., फिजी), टीचिंग हिंदी आज़ सेकंड लैंग्वेज, बी.ए., डिप्लोमा बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (मैसी विश्वविद्यालय, न्यू ज़ीलैंड), हिंदी अभिविन्यास (महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय) किया है।

आप मानव संसाधन विकास विशेषज्ञ तथा भाषा एवं संस्कृति की शिक्षिका हैं। आप फिजी के कॉलेजों में शिक्षिका रह चुकी हैं तथा 20 सालों से न्यू ज़ीलैंड में बच्चों से लेकर वयस्कों तक के हिंदी व संस्कृति शिक्षण में प्रवृत्त हैं। बच्चों के लिए हिंदी शिक्षण के संसाधन भी लेखती हैं। संप्रति आप वेलिंग्टन हिंदी स्कूल की संचालिका है तथा कम्युनिटी लैंग्वेजेज़ एसोसिएशन ऑव न्यू ज़ीलैंड की अध्यक्षा भी हैं।

श्रीमती माला मेहता

श्रीमती माला मेहता सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में भारतीय समुदाय के बीच अत्यंत प्रसिद्ध हस्ती हैं। आपने सिडनी में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आपने 1987 में सिडनी में इन्दो ऑस्ट्रेलियन बाल भारतीय विद्यालय की स्थापना की। ऑस्ट्रेलियन स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा को सम्मिलित करने में आपने बहुत संघर्ष किया है। आपके द्वारा संचालित स्कूल में 5 वर्ष की आयु से ही छात्र हिंदी सीखने आते हैं।

आपने सिडनी में अपने स्कूल में न केवल हिंदी भाषा का समावेश करवाया बल्कि वहाँ के भारतीय समुदाय के बीच भारत और भारतीय संस्कृति के प्रति जाग्रुकता लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपको 2015 में प्रवासी भारतीय सम्मान भी प्राप्त हुआ है।

श्रीमती मालती रामबली

क्वा जुलु नटाल विश्वविद्यालय से आपको हिंदी की डिग्री प्राप्त है। हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आपने-अपने जीवन के 30 वर्ष हिंदी शिक्षा संघ को समर्पित किया। आप हिंदी शिक्षण के साथ-साथ रामायण पाठ, भजन-गान तथा हारमोनियम में भी रुचि रखती हैं। आपने कई सम्मेलनों में भाग लिया तथा शोध पत्र भी प्रस्तुत किया है। आपकी पाँच कविताएँ 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रकाशित हुईं। सन् 2010 में हिंदी शिक्षा संघ द्वारा आपको अपने हिंदी सेवा के लिए विद्या रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। संप्रति आप बच्चों के लिए एक कविता संकलन तैयार कर रही हैं।

श्री हीरालाल शिवनाथ

आपका जन्म डरबन, क्वा जुलु-नटाल, दक्षिण अफ्रीका में हुआ। आपने क्वाजुलु-नटाल विश्वविद्यालय से स्नातक स्तर तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा से हिंदी की शिक्षा प्राप्त की है। दक्षिण अफ्रीका में श्री पंडित नरदेव वेदालंकार के मार्गदर्शन में श्री दीपनारायण रामप्रसाद चौधरी तथा वेदिका कर्म कांडा द्वारा हिंदी का ज्ञान प्राप्त किया। आपने 13 वर्ष की आयु से ही हिंदी शिक्षण तथा वैदिक प्रार्थना करना आरंभ किया। आप एक कृषि अनुसंधान पर्यावरण में काम करते हैं तथा सामुदायिक सेवा के रूप में बेसहारा व दुःखी बच्चों की मदद भी करते हैं।

डॉ. राजरानी गोबिन

आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. और एम.ए. हिंदी किया है। साथ ही आपने मॉरीशस विश्वविद्यालय से 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में नॉस्टैल्जिया भावना' पर पीएचडी भी की है।

आप महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग में पूर्व विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ प्राध्यापिका रही हैं तथा भोजपुरी विभाग में सहायक शोधकर्ता भी रह चुकी हैं।

स्थानीय पत्रिका जैसे 'वसंत' और 'रिमझिम' तथा भारत की पत्रिकाओं में आपकी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। 'गगनांचल' में आपका लेख भी प्रकाशित हुआ है। हाल ही में अभिमन्यु अनत कृत 'रोक दो कान्हा' का फ्रेंच भाषा में आपने अनुवाद किया है तथा वयस्कों के लिए 'Apprenons Hindi, Introductory Course in Hindi' का प्रकाशन किया।

डॉ. श्रीमती संयुक्ता भुवन-रामसारा

आपका जन्म 9 नवंबर, 1947 को हुआ।

आपने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से हिंदी भाषिक अनुप्रयुक्त भाषा दक्षता में डिप्लोमा, केबेक तेले यूनिवर्सिटी से डिप्लोमा, दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए., एम.आई.ई., मॉरीशस से पी.जी.सी.ई., उस्मानिया विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से पी-एच.डी.।

आपके अनेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में तथा 'अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में हिंदीतर भाषिक प्रयोग' विषय पर पी-एच.डी. शोधपत्र प्रकाशित।

आप प्राथमिक स्कूल पाठ्यपुस्तक लेखन-पैनल के मुख्यतया वयस्कों के लिए पाठ्यपुस्तक लेखन में कार्यरत रही हैं। आपने मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन, मॉरीशस में रेडियो व टी.वी. प्रस्तुतकर्ता के रूप में भी काम किया है।

श्री वीरजानंद अवतार

आपका जन्म 30 जून, 1957 को हुआ तथा आपके पूर्वज बलरामपुर, भारत से हैं। आपने खाद्य प्रौद्योगिकी (Food Technology) का अध्ययन किया है व हिंदी रत्न के विद्यार्थी भी रह चूके हैं। 12 वर्षों से आप सूरीनाम में हिंदी अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं एवं 15 वर्षों से आर्य समाज में कर्मकांडी पंडित भी हैं। आप हिंदी के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

सुश्री वर्षणी उधो सिंह

आपका जन्म पेकहाम, यू.के. में हुआ, जहाँ शिक्षा के बाद आपने प्रशासन, प्रबंधन, बीमा, बैंकिंग आदि क्षेत्रों में तथा 5 कानूनी फर्म के लिए पारालीगल के रूप में काम किया।

सन् 1997 में निवास करने तथा पारालीगल के रूप में काम करने के लिए गयाना प्रवास किया, जहाँ सन् 1999 में भरत जगदेव के साथ विवाह हुआ जो गयाना के राष्ट्रपति बने और आप गयाना की फर्स्ट लेडी बनीं।

हिंदी भाषा के साथ आपका भावात्मक लगाव प्रशंसनीय है और आप गयाना में हिंदी शिक्षण के उन्नयन तथा हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रचार के लिए कार्यरत अनेक संस्थाओं के साथ जुड़ी हैं। आप गयाना हिंदी प्रचार सभा की संरक्षिका और डिवाइन चैरिटेबल सोसाइटी की संरक्षिका तथा सचिव भी हैं। आप गयाना में बहुआयामी सामाजिक अभियानों के साथ संलग्न हैं तथा शांति व मानव अधिकार के पक्ष में आंदोलन करती रही हैं। गयाना के अमरिकन यूनिवर्सिटी ऑव पीस स्टडीज में शांति अध्ययन में डिग्री भी कर रही है।

संप्रति आप किड्स फर्स्ट फंड की तथा सिटिज़ेंस एडवाइस ब्यूरो की संरक्षिका एवं सचिव, कराटे कॉलेज तथा, एस. 4 फाउंडेशन के बोर्ड की सदस्या और बाल अधिकार तथा बाल श्रम के विरुद्ध राष्ट्रीय संचालन समिति के राष्ट्रीय आयोग की अध्यक्षा भी हैं।

डॉ. अलका धनपत

आपने हिंदी में पीएचडी, एम.फिल., एम.ए., बी.ए. किया है।

आपकी पुस्तक 'साशय की एक रात परंपरा तथा आधुनिकता' तथा कहानी 'दर्द अपना-अपना' प्रकाशित हैं। साथ ही आपके अनेक लेख व शोध पत्र गवेषणा, राजभाषा मंजूषा (शोध पत्रिका), गगनांचल, वसंत, रिमझिम, सुमन आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं।

आपको प्रवासी शिक्षक सम्मान, भारत तथा हिंदी सेवी सम्मान प्राप्त हैं।

संप्रति आप महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के हिंदी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका हैं।

आपने कई सम्मेलनों व कार्यशालाओं में भाग लिया यथा विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित स्त्री-विमर्श व सृजनात्मकता पर कार्यशाला, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, पी.आर. सरकारी कॉलेज, आंध्र प्रदेश, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, मुंबई प्रताप कॉलेज, अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस, रामकथा, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, रामायण सेंटर मॉरीशस, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, बैंकॉक, महात्मा गांधी संस्थान द्वारा आयोजित अनुवाद, संचार पर कार्यशालाएँ आदि।

डॉ. माधुरी रामधारी

आपका जन्म 22.12.73, मेबर्ग, मॉरीशस में हुआ।

जनवरी 2013 में मॉरीशस विश्वविद्यालय द्वारा पीएचडी की उपाधि (शोध-विषय : मॉरीशस हिंदी नाट्य साहित्य में असुरक्षा-भाव) प्राप्त की।

सन् 1995 से आप माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण कार्य से जुड़ी हुई हैं। संप्रति आप महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की अध्यक्षा तथा वरिष्ठ व्याख्याता हैं।

आप मॉरीशस एग्ज़ामिनेशन सिंडिकेट में एचएससी पाठ्यक्रम सलाहकार समिति (HSC syllabus, advisory committee), कला एवं संस्कृति मंत्रालय की हिंदी ड्रामा कमिटी तथा फ़ॉर्म 5 की पाठ्यपुस्तक लेखन पैनल की सदस्या हैं।

आप 'वसंत' एवं 'रिमझिम' पत्रिकाओं की मुख्य संपादिका हैं तथा All India Radio में कार्यक्रम व रेडियो मॉरीशस पर वेदों पर संदेश प्रस्तुत किए।

आपने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आलेख प्रस्तुत किए हैं।

श्री राज हीरामन

आपका जन्म 11 जनवरी, 1953 को हुआ।

आपने एम.ए. हिंदी, बी.ए. हिंदी वीज़ एजुकेशन, हिंदी एवं भारतीय दर्शन में डिप्लोमा, टीचर्स सर्टिफ़िकेट, टाइम्स ऑव इंडिया (बंबई) से पत्रकारिता में सर्टिफ़िकेट कोर्स तथा पत्रकारिता में डिप्लोमा किया है।

आप महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन व प्रकाशन विभाग में 'वसंत' और 'रिमझिम' पत्रिकाओं के वरिष्ठ उप-संपादक हैं तथा ऋषि दयानंद संस्थान, पाय, मॉरीशस में बी.ए. के प्राध्यापक भी हैं। आप 10 सालों से भी अधिक प्राथमिक सरकारी तथा माध्यमिक पाठशालाओं के हिंदी पाठ्य-लेखन पैनल के सदस्य रह चुके हैं। आपने मॉरीशस फ़िल्म डिवलॉप्मेंट कॉरपोरेशन के लिए इंडियन फ़िल्म फ़ेस्टिवल के अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए।

आपके अनेक कविता संग्रह, कहानी संग्रह व लघुकथा संग्रह प्रकाशित हैं। 2012 में आपको आधारशिला, नैनिताल द्वारा 'विश्व हिंदी रत्न' सम्मान तथा हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस द्वारा 'हिंदी सम्मान' से समादृत किया गया।

श्रीमती संध्या देवी अंचराज़-नवसाह

आपने अफ्रीकन लीडरशिप प्रोग्राम में आई.सी.टी., टीचर्ज़ सर्टिफ़िकेट प्राइमेरी, एम.ए. हिंदी, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, हायर स्कूल सर्टिफ़िकेट, स्कूल सर्टिफ़िकेट किया तथा पीएचडी जारी है।

एक भोजपुरी संकलन में आपकी भोजपुरी कविताएँ प्रकाशित हैं तथा आपके ब्लॉग HYPERLINK "htp//www.dakshinidruv.blogspot.com" www.dakshinidruv.blogspot.com पर आपकी अनेक हिंदी कविताएँ प्राप्य हैं।

भोजपुरी भाषा को प्रोत्साहित करने हेतु सन् 2014 में आप एम.बी.सी की 'युवा मंच' प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की सदस्या बनीं तथा सन् 2007 से अब तक साहित्य संवाद व हिंदी संगठन की सक्रिय सदस्या हैं।

संप्रति आप महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस में व्याख्याता हैं। आपने अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं में भाग लिया तथा शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। आप हिंदी तथा भोजपुरी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत रहती हैं तथा ऑनलाइन हिंदी पत्रिकाओं और ब्लॉगों पर नियमित रूप से आपना योगदान प्रदान करती रहती हैं।

श्री यंतुदेव बुधु

आपने एस.सी., जी.सी.ई., ए लेवल (हिंदी), उत्तमा, टी.टी.सी. सर्टिफ़िकेट, एडवांस्ड सर्टिफ़िकेट इन एजुकेशन, टीचर्स डिप्लोमा, डिप्लोमा इन एजुकेशन मैनेजमेंट, कंप्यूटर कोर्स (सी.सी.पी., आई.सी.3) किया है।

प्रकाशन : लघु कथा संग्रह 'बस चली गई', विदेश तथा स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में अन्य कहानियाँ प्रकाशित हैं।

अन्य जानकारियाँ : आप हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस के अध्यक्ष हैं तथा हिंदी भवन संदेश के संपादक भी हैं। सन् 1976 से 2013 तक हिंदी अध्यापक के रूप में हिंदी भाषा का प्रचार करते रहे हैं तथा संप्रति आप वाले दे प्रेत सरकारी पाठशाला के उप-मुख्याध्यापक हैं।

डॉ. उदय नारायण गंगू

आपने सन् 1979 में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, भारत से बी.ए. जेनरल, सन् 1983 में ओस्मानिया विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी, जीवाजी विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. किया है।

आपके अनेक पुस्तक प्रकाशित हैं यथा एक समर्पित जीवन, प्रभु मिलन का गीत, भोजपुरी लोक साहित्य, मॉरीशस के निर्माता सर शिवसागर रामगुलाम, स्वतंत्रता के अमर सेरानी : सुखदेव बिसुनदयाल, Hinduism for HSC, Abridged Version of Satyarthprakash, Hindu names in Mauritius, Arya Samaj Movement in Mauritius and South Africa, Vedic Marriages in Mauritius, समर्पण आदि। ब्रह्म पथ, संध्या हृदयं, अग्निहोत्रम, उपासना और विज्ञान तथा वरदा वेदा माता पुस्तकों के संपादक भी रहे हैं।

सन् 2007 से आप ऋषि दयानंद संस्थान, मॉरीशस के डीन हैं तथा सन् 1997 से आज तक आर्य सभा मॉरीशस के प्रबंध समिति के सदस्य भी हैं। सन् 2001 से 2003 तक आप महात्मा गांधी संस्थान में प्राध्यापक व सन् 1981 से 1990 तक अध्यापक रहे हैं। आपने कई स्थानीय तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया। आर्य समाज के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रीय योगदान देते आए हैं।

श्री देवभरत सीरतन

आपका जन्म 9 नवंबर, 1947 को हुआ।

आपने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से हिंदी भाषिक अनुप्रयुक्त भाषा दक्षता में डिप्लोमा, केबेक तेले यूनिवर्सिटी से डिप्लोमा, दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए., एम.आई.ई., मॉरीशस से पी.जी.सी.ई., ओस्मानिया विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएचडी किया है।

आपके अनेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में तथा अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में हिंदीतर भाषिक प्रयोग विषय पर आपका पीएचडी शोधपत्र प्रकाशित है। आप प्राथमिक स्कूल पाठ्यपुस्तक लेखन-पैनल के मुख्या तथा वयस्कों के लिए पाठ्यपुस्तक लेखन में कार्यरत रहे हैं। आपने मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन, मॉरीशस में रेडियो व टी.वी. प्रस्तुतकर्ता के रूप में भी काम किया है।

श्री राजनारायण गति

आपने जी.सी.ई., ए लेवल, उत्तमा, पत्रकारिता में डिप्लोमा, जनसंपर्क में डिप्लोमा किया है।

आप 2011 से आज तक हिंदी संगठन के प्रधान हैं। आप 'सुमन' पत्रिका के मुख्य संपादक भी हैं व मॉरीशस सरकार के सांस्कृतिक सलाहकार भी रह चुके हैं। आपने अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। मॉरीशस में हिंदी के उन्नयन व प्रचार-प्रसार हेतु आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। माध्यमिक पाठशालाओं तथा अन्य हिंदी संस्थाओं के लिए हिंदी प्रतियोगिताओं के आयोजन में व कई हिंदी रेडियो प्रोग्रामों में भी आपका विशेष सहयोग रहा है।

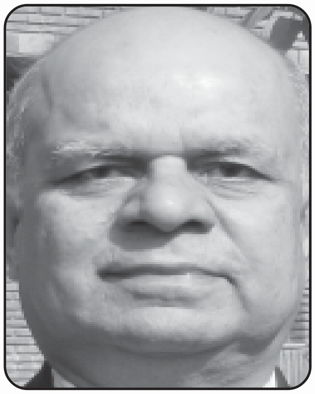

श्री अशोक ओझा

न्यू जर्सी के एडिसन निवासी अशोक ओझा पेशे से पत्रकार और शिक्षक हैं। युवा हिंदी संस्थान के संस्थापक-अध्यक्ष के रूप में 2010 से ही अमेरिका के विभिन्न नगरों में स्टारटॉक कार्यक्रमों का निदेशन किया है। न्यू जर्सी के केन विश्वविद्यालय में स्टारटॉक हिंदी कार्यक्रमों की शुरुआत करनेवाले अशोक प्रति वर्ष युवा हिंदी संस्थान के लिए भी अनुदान-प्रस्तावों को सफ़ल अंजाम देते आ रहे हैं। पिछले तीन वर्षों से पेनसिलवेनिया के नॉर्थ पेन्न स्कूल ज़िले में हिंदी स्टारटॉक कार्यक्रम के माध्यम से सैकड़ों प्राथमिक, माध्यमिक और हाई स्कूल विद्यार्थियों को हिंदी शिक्षा प्रदान करने के साथ ही भारतीय समाज

में हिंदी के प्रति जागरूकता फैलाने की अनवरत कोशिशें करते रहे हैं। उनके प्रयासों से न्यू जर्सी के मिड्डलसेक्स काउंटी कॉलेज और बेनसेलम स्कूल में हिंदी पाठ्यक्रम प्रारंभ हुए। सन् 2014 में न्यू यॉर्क और 2015 में न्यू जर्सी के रटगर्स विश्वविद्यालय के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों का सफ़ल संयोजन किया। हिंदी संगम प्रतिष्ठान की स्थापना के बाद अब अमेरिका में प्रथम हिंदी केंद्र की स्थापना का कार्य प्रारंभ कर चुके हैं।

डॉ. रत्नाकर नराले

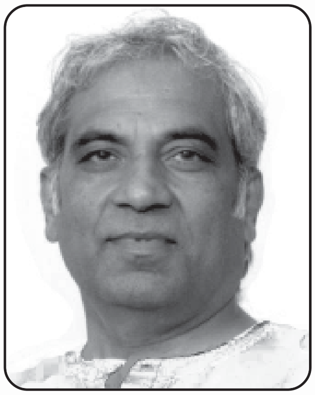

आपने आई.आई.टी., भारत तथा कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, भारत से पीएचडी किया है।

आपके अनेक पुस्तक प्रकाशित हैं यथा हिंदी टीचर फॉर हिंदू चिल्ड्रन, हिंदी टीचर फॉर इंग्लिश स्पीकिंग पीपल, हिंदी टीचर एडवांस्ड लेवल, संस्कृत प्राइमर, संस्कृत टीचर आल-इन-वन, संस्कृत ग्रामर एंड रिफरेंस बुक, योगसूत्र ऑफ पतंजलि, फ्लिप्पेद इंग्लिश डिक्शनरी, तमिल टीचर, उर्दू टीचर, गीता आज़ शी इज़ इन कृष्णाज़ ओन वड्र्स, गीता का शब्दकोश, गीता दर्शन, संगीत—श्री कृष्ण-रामायण, नई संगीत रोशनी आदि।

हिंदी, संस्कृत, मराठी, तमिल, बंगाली, उर्दू आदि भाषाओं में आपकी पकड़ है। आप हिंदू इंस्टीट्यूट ऑफ़ लर्निंग में संस्कृत और गीता पढ़ाते हैं। आप हिंदी राइटर्स गिल्ड के सदस्य और हिंदी चेतना के सलाहकार भी हैं। आपने भारतीय संगीत का भी अध्ययन किया है।

श्री नारायण शर्मा मथुरा

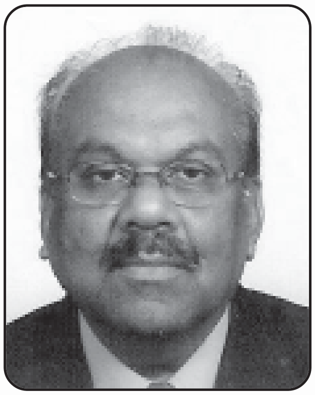

आपका जन्म 20 जून, 1949 को हुआ।

आपने डिप्लोमा टीचर ट्रेनिंग, डिप्लोमा हैड टीचर, बोमन अकादमी से अर्थव्यवस्था का अध्ययन, सर्टिफ़िकेट इंफार्मेटिक्स / सिस्टम मैनेजर, हिंदी डिप्लोमा परिचय (वर्धा) किया है तथा आपको पुरोहित HYPERLINK “javascript:void(0)”

डिप्लोमा : हिंदू प्रीस्ट, व्यास की उपाधि प्राप्त है।

आपका हिंदी फॉर स्टार्टर्स पार्ट 1 एंड 2 प्रकाशित है।

नीदरलैंड राजा की ओर से आपको राजकीय सम्मान *(Royals Honour on behalf of the King in the Netherlands – The order of Orange-Nassau – Koninklijke Onderscheiding)* प्राप्त है।

आपने 6ठा, 7वाँ व 8वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लिया तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में निरंतर कार्यरत रहे। आप नीदरलैंड के सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं यथा विद्वत परिषद, इंडियन डायस्पोरा, नीदरलैंड के सक्रिय सदस्य, मंदिर सेवा धाम व श्री कृष्ण मंदिर में पुरोहित आदि।

प्रो. चित्तरंजन मिश्र

अपका जन्म 29 दिसंबर, 1956 को हुआ। आपने एम.ए. तथा 'निर्गुण भक्त कवियों द्वारा उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत रामकथा' विषय पर पीएचडी किया।

आप हिंदी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखुपर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में प्राध्यापक, उपाचार्य व आचार्य रह चुके हैं तथा 2014 से महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रतिकुलपति हैं। आपको 30 वर्ष से अधिक स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्यापन का अनुभव है।

आपने कथा-भूमि, गद्य की रेखाएँ, साहित्य के दृष्टिकोण आदि जैसी पाठ्य-पुस्तकों एवं संदर्भ ग्रंथ जैसे भोजपुरी वैभव, पुरइन-पात, भोजपुरी रचना संचयन का संपादन किया है। देश की प्रमुख पत्रिकाओं में 50 से अधिक शोध आलेख, आलोचनात्मक एवं वैचारिक निबंध, शताधिक समीक्षाएँ प्रकाशित हैं। राष्ट्रीय महत्व की संगोष्ठियों में आपकी सक्रिय सहभागिता रही है।

हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के संवर्धन के लिए नित्य कार्यरत रहे हैं। 2007 में आपको नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा भगवत शरण उपाध्याय आलोचना सम्मान, 2012 में प्रेस्टिज सारस्वत सम्मान तथा 2014 में तमिलनाडु हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा साहित्य सेवी सम्मान से समादृत किया।

श्रीमती सुनीति शर्मा

आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर तथा दर्शन निष्णात (एम.फिल), भाषा विज्ञान विषय में डिप्लोमा किया है।

हिंदी भाषा के लिए आपके योगदान के लिए वर्ष 2013 में आपको भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, प्रवासी दुनिया, अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, नई दिल्ली तथा अक्षरम द्वारा 'हिंदी सेवा सम्मान' तथा 'संस्कृति समन्वय सम्मान 2013' से सम्मनित किया गया।

आपने दिल्ली विश्वविद्यालय में लेक्चरर के पद से अपने कैरियर की शुरुआत की। फिर लगभग 30 वर्षों से राजभाषा के कार्यान्वयन के कार्य से बड़ी सक्रियता से जुड़ी रहीं। इस दौरान आपने केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय, संघ लोक सेवा आयोग, वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों/विभागों में राजभाषा के कार्यान्वयन में योगदान दिया है और अब लगभग ढ़ाई वर्षो से विदेश मंत्रालय में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने और विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के महत्वपूर्ण काम को देख रही हैं।

श्री केसन बधु

आप मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन, मॉरीशस के समाचार विभाग समन्वयक हैं तथा महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में अंशकालिक संस्कृत प्राध्यापक के रूप में भी कार्यरत हैं। आपने मॉरीशस विश्वविद्यालय से मानविकी, रोड्स विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका से प्रसारण प्रबंधन तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान का अध्ययन किया है।

आपने अनेक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों व कार्यशालाओं में सक्रिय प्रतिभागिता दी है। सन् 2013 में, मीडिया में आपके योगदान के लिए आपको सम्मानित किया गया।

भाग–३ : सम्मेलन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन

पृष्ठभूमि

इस सम्मेलन को विशेष नीतिगत संबल मिला है जोहान्सबर्ग में लगे 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के मंतव्य 4 viii से जिसके अंतर्गत विश्व हिंदी सम्मेलनों के बीच अंतराल में विभिन्न देशों में अपने-अपने क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रसार में आनेवाली कठिनाइयों का समाधान खोजने के उद्‌देश्य से क्षेत्रीय सम्मेलनों के आयोजन के प्रोत्साहन की आवश्यकता व्यक्त की गई। इस दिशा में जब भारतीय उच्चायोग मॉरीशस ने पहल की तो हिंदी प्रचार कार्यों के लिए विश्व में आदर्श माने जानेवाली मॉरीशस सरकार (शिक्षा मंत्रालय) तत्काल सहयात्री बनी और दोनों संस्थाओं ने मिलकर विश्व हिंदी सचिवालय को एक अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) सम्मेलन के संयोजन का कार्यभार सौंपकर गौरवान्वित किया।

विशेष उपलक्ष्य की खोज कठिन नहीं थी, 2014, मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के आगमन की 180वीं वर्षगाँठ का सूचक है। यह उपलक्ष्य अपने साथ स्वत: ही सम्मेलन का केंद्रीय विषय भी लेकर आया—**''प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार : अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ''।**

उद्‌देश्य

विषय का निर्धारण केवल उपलक्ष्य से प्रेरित नहीं था। इसको ऊर्जा देनेवाली थी गिरमिटिया और नव प्रवास के देशों में हिंदी शिक्षण और प्रचार के कार्यों के पुनरावलोकन व आकलन का आवश्यकता-बोध।

आवश्यकता इतिहास के इस पड़ाव पर इन देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार से संबंधित स्थिति, चुनौतियों और कठिनाइयों तथा संभावनाओं का मूल्यांकन करने की जिससे कि प्रत्येक देश की वर्तमान कठिनाइयों व चुनौतियों का सामना करने हेतु आपसी अनुभवों, विशेषज्ञताओं, संसाधनों की जानकारी का आदान-प्रदान किया जा सके।

विश्वास यह है कि इस आदान-प्रदान से ही प्रत्येक देश के अनुभवों के प्रकाश में ये देश पृथक इकाइयों के रूप में नहीं बल्कि एक संगठित समूह के रूप में आपसी सहयोग से योजनाओं के कार्यांवयन, प्रयासों के समन्वयन तथा सामग्री व प्रणालियों के मानकीकरण की संभावनाओं की खोज कर सकें।

रूपरेखा

जब उद्‌देश्य इतना उत्कृष्ट था तब उसकी पूर्ति के लिए साझेदारों की कमी हो ही नहीं सकती थी। मॉरीशस के सभी हिंदी प्रचारक व शैक्षिक संस्थाएँ महामहिम भारतीय उच्चायुक्त के कुशल नेतृत्व में आयोजकों के साथ हो लीं और रूपरेखा बनी इस वृहद आयोजन की।

समितियाँ

संचालन समिति

अध्यक्ष :
महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, भारतीय उच्चायुक्त
सदस्य :
शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, कला व संस्कृति मंत्रालय, भारतीय उच्चायोग, विश्व हिंदी सचिवालय, महात्मा गांधी संस्थान, हिंदी स्पीकिंग यूनियन, हिंदी प्रचारिणी सभा, सरकारी हिंदी शिक्षक संघ, आर्य सभा मॉरीशस, ऋषि दयानंद इंस्टिट्यूट

जनसंपर्क व स्वागत समिति

अध्यक्ष : **श्री राजनारायण गति,** अध्यक्ष, हिंदी स्पीकिंग यूनियन
सदस्य : **कला व संस्कृति मंत्रालय, महात्मा गांधी संस्थान, आर्य सभा मॉरीशस, हिंदी प्रचारिणी सभा व इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र।**

व्यवस्था समिति

श्री संजय शर्मा, निदेशक, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र
शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, भारतीय उच्चायोग, विश्व हिंदी सचिवालय, महात्मा गांधी संस्थान, हिंदी स्पीकिंग यूनियन, आर्य सभा मॉरीशस व इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र।

अकादमिक समिति

अध्यक्ष : **डॉ. उदय नारायण गंगू,** डीन, ऋषि दयानंद इंस्टिट्यूट व **डॉ. रेशमी रमधनी,** प्रोफेसर, महात्मा गांधी संस्थान।

सदस्य : **भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस**—श्री मीमांसक, द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा); **हिंदी विभाग, महात्मा गांधी संस्थान**—अध्यक्षा, डॉ. अलका धनपत; भाषा संसाधन केंद्र, महात्मा गांधी संस्थान—अध्यक्ष, श्री कुमारदत्त गुदारी; **सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग, महात्मा गांधी संस्थान**—अध्यक्षा, डॉ. माधुरी रामधारी; **भोजपुरी विभाग, महात्मा गांधी संस्थान**—अध्यक्ष, श्री गिरिजानंदसिंह बिसेसर; **हिंदी स्पीकिंग यूनियन**—अध्यक्ष, श्री राजनारायण गति; **हिंदी प्रचारिणी सभा**—प्रतिनिधि, श्री तारकेश्वरनाथ गिरिधारी; **सरकारी हिंदी शिक्षक संघ**—प्रतिनिधि, श्री धर्मेंद्र रिकाय।

वित्त समिति

अध्यक्ष : **श्री जिंदल,** भारतीय उच्चायोग
सदस्य : **भारतीय उच्चायोग, विश्व हिंदी सचिवालय**

प्रतिवेदन टोली

मुख्य प्रतिवेदक : **श्री केसन बंधु,** समाचार विभाग समन्वयक, मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन

प्रतिवेदक : **सरस्वती बसरूपन, लेष्टा लोचन, जीनिया भंजन, शामिला मुंड्स, ज्ञानेश्वरी गुर्झन, भेराम जयश्री, लक्ष्मी रामशरण, शिक्षा धनपत, कीर्ति रिदोय, सोमेरा सुजेशना, निवेदिता बुलक, चंद्रिका रावडी, गंगेश्री मूरतिया, नंदिनी झुमक।**

आतिथ्य टोली

समन्वयन : **डॉ. श्रीमती अलका धनपत,** अध्यक्षा, हिंदी विभाग, महात्मा गांधी संस्थान।

लक्ष्मी मोती, याशना सलंदी, विद्या देवी सिबोरत, दर्शनी देवी लीला, उर्वशी नारायण, वंदना बिसनाथ, करिश्मा रामनोत, हंजना लालचंद, पूजा सहजु, सूर्या देवी भोला।

विश्व हिंदी सचिवालय टीम

नेतृत्व व सम्मेलन संयोजक : **श्री गंगाधरसिंह सुखलाल,** कार्यवाहक महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय।

सुश्री एशमा पदारथ, सुश्री रति नंदराम, सुश्री अंजलि हजगैबी, श्रीमती उषा राम, सुश्री करिश्मा रामझीतन, श्री कैलाश देवराज, सुश्री खुशबू चूड़ामन, श्री केशव रिसोल, श्री भेराम जयश्री।

सहयोगी

श्री भूमेश बिदेसी, महात्मा गांधी संस्थान, **श्री विवेक बिंदा,** महात्मा गांधी संस्थान, **श्री चंद्रदेव बिहारी,** हिंदी स्पीकिंग यूनियन।

आभार

राष्ट्रपति कार्यालय; विदेश, क्षेत्रीय एकीकरण व अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंत्रालय; मूल ढाँचा, राष्ट्रीय विकास इकाई, भूमि परिवहन व जहाजरानी मंत्रालय; मॉरीशस पुलिस फोर्स; एअरपोर्ट्स ऑफ मॉरीशस कंपनी लिमिटेड; पासपोर्ट व प्रवास कार्यालय; स्वास्थ्य मंत्रालय; आप्रवासी घाट ट्रस्ट फंड; मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन; हेनेसी पार्क हॉटल; भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन; प्रेस; श्री राज हीरामन, दूरसंचार सुविधा प्रायोजक: चिली (महानगर टेलीफोन मॉरीशस लिमिटेड)।

प्रथम दिवस : गुरुवार, 30 अक्टूबर, 2014

सत्र	समय	कार्यक्रम
	08.00–09.00	**पंजीकरण**
	09.00–09.45	**बीज वक्तव्य**
	अध्यक्ष	**प्रो. सुदर्शन जगेसर**, प्रतिकुलाधिपति व परिषद अध्यक्ष, मॉरीशस विश्वविद्यालय
	वक्ता	**महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल**, भारतीय उच्चायुक्त
प्रथम सत्र	**विषय**	मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण
प्रथम सत्र	**अध्यक्ष**	**प्रो. महेंद्र किशोर वर्मा**, *मानद निदेशक, हिंदी शिक्षण कार्यक्रम, भाषा एवं भाषा विज्ञान विभाग, यॉर्क विश्वविद्यालय, यॉर्क, यू.के.*
प्रथम सत्र	09.50	**मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण** *श्री सत्यदेव टेंगर*
प्रथम सत्र	10.05	**मॉरीशस में माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण,** *श्री लक्ष्मी ठाकुरी*
प्रथम सत्र	10.20	**प्रश्नोत्तर**
	10.30–10.45	**जलपान**
द्वितीय सत्र	**विषय**	**पूर्वी एशिया व प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में हिंदी**
द्वितीय सत्र	**अध्यक्ष**	**श्री सत्यदेव टेंगर**, *सदस्य, शासी परिषद, विश्व हिंदी सचिवालय*
द्वितीय सत्र	10.50	**फिजी में हिंदी**, *श्रीमती मनीषा रामरखा*
द्वितीय सत्र	10.05	**सिंगापुर में हिंदी**, *सुश्री उदीची पाण्डेय*
द्वितीय सत्र	11.20	**न्यू ज़ीलैंड में हिंदी**, *श्रीमती सुनीता नारायण*
द्वितीय सत्र	11.35	**ऑस्ट्रेलिया में हिंदी**, *श्रीमती माला मेहता* **(वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग)**
द्वितीय सत्र	11.50	**प्रश्नोत्तर**
	12.15–13.00	**भोजन**
तृतीय सत्र	**विषय**	**अफ्रीका तथा हिंद महासागरीय क्षेत्र में हिंदी**
तृतीय सत्र	**अध्यक्ष**	**श्री संत कुमार राय**, *उपाध्यक्ष, हिंदी सोसायटी सिंगापुर*
तृतीय सत्र	13.05	**दक्षिण अफ्रीका में हिंदी**, *श्रीमती मालती रामबली व श्री हीरालाल शिवनाथ*
तृतीय सत्र	13.20	**रॉड्रिग्स में हिंदी**, *श्री रमणीक चीतू*
तृतीय सत्र	13.35	**रीयूनियन टापू में हिंदी शिक्षण: मेरे अनुभव**, *डॉ. राजरानी गोबिन*
तृतीय सत्र	13.50	**पश्चिमी अफ्रीकी देशों में हिंदी : संभावनाओं का महाद्वीप**, *डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा*
तृतीय सत्र	14.10	**प्रश्नोत्तर**
	1430–14.45	**जलपान**
चतुर्थ सत्र	**विषय**	**दक्षिणी अमेरिकी क्षेत्र में हिंदी**
चतुर्थ सत्र	**अध्यक्ष**	**प्रो. रेशमी रामधोनी,** *महात्मा गांधी संस्थान*
चतुर्थ सत्र	14.50	**सूरीनाम में हिंदी**, *श्री वीरज़ानंद अवतार*
चतुर्थ सत्र	15.05	**गयाना में हिंदी**, *सुश्री वर्षणी उधो सिंह*
चतुर्थ सत्र	15.20	**पूर्वज़ीय हिंदी भाषी : शिक्षण और चुनौतियाँ**, *डॉ. राकेश रंजन*
चतुर्थ सत्र	15.35	**हिंदी-भोजपुरी परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण**, *श्रीमती संध्या अंचराज़-नवसाह*
चतुर्थ सत्र	15.50	**प्रश्नोत्तर**

द्वितीय दिवस : 31 अक्टूबर, 2014

सत्र	समय	कार्यक्रम
प्रथम सत्र	विषय	**मॉरीशस में तृतीयक स्तर पर हिंदी शिक्षण एवं शोध व प्रकाशन**
	अध्यक्ष	**प्रो. चित्तरंजन मिश्र**, *प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय*
	09.05	**मॉरीशस में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण**, *डॉ. अलका धनपत*
	09.20	**मॉरीशस में हिंदी शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार में शोध तथा प्रकाशन की भूमिका**, *डॉ. माधुरी रामधारी व श्री राज हीरामन*
	09.35	**प्राथमिक, माध्यमिक व स्नातक स्तर पर हिंदी शिक्षण में आई.सी.टी. और आधुनिक शैक्षणिक प्रविधियों का समावेश** *श्रीकुमारदत्त गुदारी*
	09.50	**प्रश्नोत्तर**
	09.50–10.05	**जलपान**
द्वितीय सत्र	विषय	**ग़ैर-सरकारी, अर्ध सरकारी व स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार**
	अध्यक्ष	**श्रीमती सुनीता नारायण**, *समन्वयक, वेलिंग्टन हिंदी पाठशाला, न्यू ज़ीलैंड*
	10.10	**ग़ैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण**, *श्री यंतुदेव बुधु*
	10.25	**स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा तृतीयक स्तर पर हिंदी शिक्षण**, *डॉ. उदय नारायण गंगू तथा श्री देवभरत सीरतन*
	10.40	**मॉरीशस में हिंदी प्रचार-प्रसार : संस्थाएँ व गतिविधियाँ**, *श्री राजनारायण गति*
	11.00	**प्रश्नोत्तर**
	12.15–13.00	**भोजन**
तृतीय सत्र	विषय	**यूरोप एवं अमेरिका में हिंदी**
	अध्यक्ष	**डॉ. श्रीमती विनोद बाला अरुण**, *पूर्व महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय*
	13.05	**यू.के. में हिंदी**, *प्रो. महेंद्र किशोर वर्मा*
	13.20	**संयुक्त राज्य अमेरिका (यू.एस.ए.) में हिंदी**, *श्री अशोक ओझा*
	13.35	**कनाडा में हिंदी**, *श्री रत्नाकर नराले* **(वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग)**
	13.50	**हॉलैंड में हिंदी**, *श्री नारापयण मथुरा* **(वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग)**
	14.05	**प्रश्नोत्तर**
	14.30–14.45	**जलपान**
चतुर्थ सत्र	विषय	**विश्व में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार : भारतीय संस्थाओं की भूमिका व योगदान**
	अध्यक्ष	**श्री अजामिल माताबदल**, *सदस्य शासी परिषद, विश्व हिंदी सचिवालय*
	14.50	**विदेशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की भूमिका व उपलब्धियाँ** *प्रो. चित्तरंजन मिश्र*
	15.05	**विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व में हिंदी प्रचार-प्रसार**, *श्रीमती सुनीति शर्मा*
	15.20	**आप्रवासी भारतीय : हिंदी अस्मिता के प्रतिमान, प्रयास और विस्तार जनिक संभावनाएँ**, *डॉ. संजीव कुमार शर्मा*
	15.35	**प्रश्नोत्तर**

गोलमेज़ : शनिवार, 1 नवंबर, 2014

सत्र	समय	कार्यक्रम
	09.00 – 09.20	**दो दिवसीय सम्मेलन की काररवाई पर मुख्य प्रतिवेदक द्वारा रिपोर्ट** *—श्री केसन बधु*
प्रथम गोलमेज़ सत्र	09.20 – 10.40	**प्रथम**
प्रथम गोलमेज़ सत्र	विषय	**गिरमिटिया प्रवासी देशों के विशेष संदर्भ में हिंदी शिक्षण व प्रसार कार्यों का पुन:स्थापन।**
प्रथम गोलमेज़ सत्र	अध्यक्षता	**श्री बिजय कुमार मधु** *महानिदेशक, महात्मा गांधी संस्थान/रवींद्रनाथ टैगोर संस्थान* **प्रो. चित्तरंजन मिश्र** *प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, भारत*
द्वितीय गोलमेज़ सत्र	10.40 – 12.00	**द्वितीय**
द्वितीय गोलमेज़ सत्र	विषय	**नव-प्रवासी के विशेष संदर्भ में हिंदी शिक्षण व प्रसार कार्यो का सुदृढीकरण**
द्वितीय गोलमेज़ सत्र	अध्यक्षता	**डॉ. उदय नारायण गंगू,** डीन, ऋषि दयानंद इंस्टीट्यूट **प्रो. महेंद्र किशोर वर्मा**, *मानद निदेशक, हिंदी शिक्षण कार्यक्रम, भाषा एवं भाषा विज्ञान विभाग, यॉर्क विश्वविद्यालय, यॉर्क, यू.के.*
	12.00 – 13.00	**समापन समारोह व मंतव्यों की प्रस्तुति**
	13.00	**भोजन**

मॉरीशस में आयोजित अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी-सम्मेलन में पारित संकल्प

दिनांक 1 नवंबर, 2014

1. ''प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण व प्रचार-प्रसार : अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ'' विषय पर भारतीय उच्चायोग एवं विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की हिंदी-सेवी संस्थाओं यथा-हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी संगठन, मॉरीशस आर्य सभा, सरकारी हिंदी शिक्षक संघ आदि के सहयोग से 29 अक्टूबर, 2014 से 1 नवंबर, 2014 के दौरान एक चार दिवसीय अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया।
2. सम्मेलन का आयोजन जोहांसबर्ग में संपन्न हुए 9वें 'विश्व हिंदी सम्मेलन' के मंतव्य संख्या 4.viii के कार्यान्वयन स्वरूप किया गया ताकि उस प्रस्ताव की भावना के अनुरूप प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण पर गहनता के साथ विचार-विमर्श किया जा सके तथा उन देशों में हिंदी के प्रसार में आनेवाली कठिनाइयों का हल ढूँढ़ने का प्रयास किया जा सके।
3. जोहांसबर्ग 'विश्व हिंदी सम्मेलन' के उपर्युक्त मंतव्य के क्रियान्वयन के अलावा इस सम्मेलन का लक्ष्य विशेष रूप से प्रवासी देशों में हिंदी की समग्र स्थिति का आकलन करना तथा प्रवासी देशों के बीच साझी कार्यवाही की संभावनाओं की तलाश करते हुए उन देशों में हिंदी-शिक्षण व प्रचार में संलग्न संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय व सहयोग के लिए मार्ग प्रशस्त करना भी रहा।
4. चार दिनों तक चले इस सम्मेलन का उद्घाटन 600 से भी अधिक हिंदी प्रेमियों की मौजूदगी में 29 अक्टूबर को मॉरीशस गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति श्री कैलाश प्रयाग जी द्वारा गणराज्य के कई मंत्रियों एवं देश-विदेश से पधारे गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में किया गया। यह सम्मेलन उन सब महानुभावों की उपस्थिति के लिए अपना आभार और धन्यवाद व्यक्त करता है।
5. यह सम्मेलन अपना धन्यवाद और अपना आभार व्यक्त करना चाहता है—मॉरीशस और भारत की सरकारों का, विश्व हिंदी सचिवालय तथा महात्मा गांधी संस्थान का, मॉरीशस की समस्त हिंदी-सेवी संस्थाओं, विशेष रूप से हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी संगठन, मॉरीशस आर्य सभा आदि का जिनके कारण आयोजन संभव हो पाया; सम्मेलन आभार और धन्यवाद व्यक्त करता है सम्मेलन के लिए बनी उन सभी समितियों, यथा—संचालन समिति, शैक्षिक समिति, स्वागत एवं जनसंपर्क समिति, संभार समिति, वित्त समिति का जिनके सक्षम मार्गदर्शन में सम्मेलन की गतिविधियाँ संभव हो पाईं।
6. इसी प्रकार 30 एवं 31 अक्टूबर को संपन्न शैक्षिक-सत्रों तथा 1 नवंबर, 2014 को संपन्न गोलमेज बैठक में लगभग 200 विद्वानों ने जिसमें तकरीबन 30 प्रवासी देशों के विद्वान भी शामिल थे, प्रत्यक्ष अथवा वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग के ज़रिए बहुत उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह सम्मेलन उन समस्त विद्वानों तथा प्रतिभागियों के समर्पित योगदान के लिए आभार व्यक्त करता है।
7. सम्मेलन यह महसूस करता है कि प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण तथा प्रचार-प्रसार की दृष्टि से इस सम्मेलन की कार्यवाही का बहुत महत्व है अत: सम्मेलन विश्व हिंदी सचिवालय से यह अनुरोध करता है कि इसकी कार्यवाही को पुस्तक के रूप में अथवा पत्रिका के विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाए।

8. 30 एवं 31 अक्टूबर को संपन्न शैक्षिक सत्रों में हुई प्रस्तुतियों के आधार पर 1 नवंबर, 2014 को विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे विद्वानों की उपस्थिति में संपन्न हुए गोलमेज़ बैठक के उपरांत अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन द्वारा सर्वसम्मति से अगले 'विश्व हिंदी सम्मेलन' के विचार के लिए निम्नलिखित मुद्दों पर कतिपय संकल्प पारित किए गए जो इस प्रकार हैं—

i. प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार की अपनी समस्याएँ हैं। सम्मेलन भारत सरकार से यह अनुरोध करता है कि उन देशों में हिंदी-शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार की विशिष्ट समस्याओं के हल के लिए भारत किसी एक संस्था को जो विदेश में हिंदी के शिक्षण में संलग्न हो, नोडल संस्था घोषित किया जाए या उसके लिए विदेश मंत्रालय में कोई एकल संपर्क कोष्ठ बनाया जाए जो प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े अनुरोध को कार्यान्वयन के लिए सही संस्था को सौंपे।

ii. प्रवासी देशों में मॉरीशस के हिंदी-शिक्षण के अनुकरणीय मॉडल की सम्मेलन यह सम्मेलन प्रशंसा करता है। मॉरीशस के हिंदी-शिक्षण के इस मॉडल का लाभ विश्व के अन्य देशों को मिले, इसके लिए यह सम्मेलन यह सिफ़ारिश करता है कि मॉरीशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान में विश्व हिंदी सचिवालय की वित्तीय सहायता से तथा संबंधित निकायों की सहभागिता से हिंदी-शिक्षण का एक प्रकोष्ठ तैयार किया जाए जिसमें विभिन्न गिरमिटिया देशों के विद्वानों की भी जहाँ तक संभव हो सके, सलाह ली जाए।

iii गिरमिटिया प्रवासी देश बड़े प्रवासी देशों के छात्रों को पूर्वजीय भाषा के रूप में हिंदी सिखलाने के लिए भारत सरकार द्वारा विशेष हिंदी-शिक्षण की व्यवस्था यानी उनके लिए विशेष पाठ्यक्रम आदि तैयार करने की संभावनाओं का पता लगाए तथा गिरमिटिया प्रवासी देशों के छात्रों के लिए अलग से छात्रवृत्तियों का प्रावधान किया जाए।

iv. प्रवासी देशों में हिंदी-भाषा की देशीय विशेषताओं का हिंदी-भाषा के वैश्विक स्वरूप के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। इस भाषिक विविधता के संरक्षण हेतु भारत सरकार संबंधित संस्थानों/निकायों/विद्वानों आदि की सहायता से हिंदी का एक ऐसा शब्दकोश तैयार करें जिसमें प्रवासी देशों की हिंदी के विशेष शब्दों को स्थान मिले, उनका प्रलेखीकरण हो।

v. सम्मेलन यह इच्छा व्यक्त करता है कि मॉरीशस का यह अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन प्रत्येक तीन वर्षों में मॉरीशस में एक बार आयोजित हो।

सम्मेलन की समाप्ति मॉरीशस के आतिथ्य को हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ-साथ अप्रवासी भारतीयों की उस स्मृति को नमन करने के साथ हुई जिनकी दुनिया भर में फैली संतानें आज विश्व के विकास में अपना गौरवपूर्ण योगदान कर रही हैं।

मॉरीशस, 1 नवंबर, 2014

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन : 2014, मॉरीशस

मॉरीशस सरकार व भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय तथा देश की हिंदी शैक्षणिक व प्रचारक संस्थाओं, हिंदी स्पीकिंग यूनियन, महात्मा गांधी संस्थान, आर्य सभा मॉरीशस, ऋषि दयानंद इंस्टीट्यूट हिंदी प्रचारिणी सभा तथा सरकारी हिंदी शिक्षक संघ के सहयोग से 29 अक्टूबर से 1 नवंबर, 2014 तक मॉरीशस में अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का सफ़ल आयोजन किया गया।

2014 मॉरीशस में गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की 180वीं वर्षगाँठ का वर्ष है। इसी ऐतिहासिक घटना को केंद्र में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय ''**प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार : अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ**'' रखा गया। सम्मेलन का आयोजन जोहान्सबर्ग में लगे 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के मंतव्य यश 4viii के स्वरूप किया गया जिससे कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रसार में आनेवाली का समाधान खोजा जा सके।

सम्मेलन का लक्ष्य प्रवासी देशों में हिंदी की समग्र स्थिति व संयुक्त कार्रवाई की संभावनाओं के आकलन के माध्यम से इन देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार में संलग्न संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय व सहयोग स्थापित करना रहा।

सम्मेलन में फिजी, सिंगापुर दक्षिण अफ्रीका, गयाना न्यू ज़ीलैंड सूरीनाम, अमेरिका, भारत, यू.के., नीदरलैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों के लगभग 30 हिंदी सेवी, अध्यापक, भाषाविद, लेखक-साहित्यकार आदि उपस्थित रहे तथा मॉरीशस से लगभग 100 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

उद्घाटन समारोह (29 अक्टूबर, 2014)

29 अक्टूबर को सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हुआ। अवसर पर मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, जी.सी.एस.के., जी.ओ.एस.के. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी, पूर्व शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री, भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल व माननीय श्री मुखेश्वर चूनी, पूर्व कला व संस्कृति मंत्री ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग ने अपने वक्तव्य में कहा, *''डायस्पोरा देशों में हिंदी शिक्षण और प्रचार के लिए आपसी सहयोग का एक पुल स्थापित करने के मक्सद से आयोजित इस सम्मेलन के बारे में जब मुझे पता चला तो मेरा माथा गर्व से ऊँचा हो गया! मुझे लगा हम लोग न केवल मॉरीशस की भूमि पर बल्कि सभी आप्रवासी देशों में कठिन समय में अपनी निष्ठा के बल पर अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखनेवाले अपने पूर्वजों को इससे बेहतर कोई श्रद्धांजलि नहीं दे सकते थे।''*

माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने अपने वक्तव्य में कहा, *''हिंदी भाषा और हिंदी शिक्षण इस देश में विशेष महत्व रखते हैं। इस देश के इतिहास के हर पन्ने पर हिंदी भाषा और उसके सेवकों के योगदान की कहानी लिखी हुई है और केवल इतिहास ही नहीं हिंदी इस देश के वर्तमान और भविष्य की अहम भाषा है।''* महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल तथा माननीय श्री मुखेश्वर चूनी ने अपने वक्तव्यों में सचिवालय के कार्यों की सराहना करते हुए सम्मेलन के लिए शुभकामनाएँ व्यक्त की।

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिह सुखलाल के स्वागत भाषण तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा गणेश वंदना प्रस्तुति से हुआ। समारोह के दौरान महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा 'कमर में धोतिया' और 'धरती अंबर' गीत प्रस्तुति हुई। अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान द्वारा निर्मित 'गिरमिटिया' गीत संकलन का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम का समापन विदेशी

प्रतिभागियों को स्मृतिचिह्न भेंट कर तथा 'वंदे मातरम' नृत्य प्रदर्शिनी से हुआ। विदेशी प्रतिभागी के साथ-साथ मॉरीशस के सैकड़ों हिंदी प्रेमी ने उत्साहपूर्वक समारोह में भाग लिया।

दो दिवसीय सम्मेलन (30-31 अक्टूबर, 2014)

सम्मेलन को चार सत्रों में बाँटा गया। 30 अक्टूबर को भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल के बीज वक्तव्य के साथ ही सत्रों का श्री गणेश हुआ। मॉरीशस विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति व परिषद् अध्यक्ष, प्रो. सुदर्शन जगेसर अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

प्रथम सत्र ***मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण*** विषय पर आधारित रहा। अध्यक्षता यॉर्क विश्वविद्यालय के भाषा एवं भाषा विभाग के मानद प्रो. महेंद्र वर्मा ने की। श्री सत्यदेव टेंगर ने मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी तथा श्री लक्ष्मी ठाकुरी ने मॉरीशस में माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण पर आधारित लेख प्रस्तुत किए व प्रश्नोत्तर के साथ ही प्रथम सत्र का समापन हुआ।

द्वितीय सत्र का विषय ***पूर्वी एशिया व प्रशांत महानगरीय क्षेत्र में हिंदी*** रहा जिसमें श्रीमती मनीषा रामरक्खा (फिजी), सुश्री उदीची पांडेय (सिंगापुर) तथा श्रीमती सुनीता नारायण (न्यू ज़ीलैंड)ने भाग लेते हुए अपने-अपने देश में हिंदी की स्थिति पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। साथ ही श्रीमती माला मेहता ने ऑस्ट्रेलिया से वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग द्वारा सत्र में भाग लेते हुए **ऑस्ट्रेलिया में हिंदी** पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री सत्यदेव टेंगर ने सत्र अध्यक्षता की।

तृतीय सत्र ***अफ्रीका तथा हिंद महासागरीय क्षेत्र में हिंदी*** विषय पर आधारित था। श्री संत कुमार राय (उपाध्यक्ष हिंदी सोसायटी सिंगापुर) ने सत्र की अध्यक्षता की। श्रीमती मालती रामबली (डरबन दक्षिण अफ्रीका), व श्री हीरालाल शिवनाथ (गौटेग दक्षिण अफ्रीका), श्री रमणीक चीतू (रॉड्रिग्स), डॉ. राजरानी गोबिन (मॉरीशस) तथा डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा (मॉरीशस) ने अपने लेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र ***दक्षिण अमेरिका क्षेत्र में हिंदी*** विषय पर आधारित था। अध्यक्षा प्रो. रेशमी रामधोनी ने की, इस सत्र में श्री वीरजानद अवतार (सूरीनाम) सुश्री वर्षणी उधो सिंह (गयाना) व श्रीमती संध्या अंचराज़-नवसाह (मॉरीशस) ने अपने-अपने लेख प्रस्तुत किए।

31 अक्टूबर, 2014 को सम्मलन के द्वितीय दिवस का **प्रथम सत्र मॉरीशस में तृतीयक स्तर पर हिंदी शिक्षण एवं शोध व प्रकाशन** पर आधारित रहा जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति, श्री चित्तरंजन मिश्र ने की। महात्मा गांधी संस्थान (मॉरीशस) के प्राध्यापकगण डॉ. अलका धनपत डॉ. माधुरी रामधारी व श्री राज हीरामन द्वारा प्रस्तुतियाँ हुईं। अंत में श्री कुमारदत्त गुदारी (मॉरीशस) ने ***प्राथमिक, माध्यमिक व स्नातक स्तर पर हिंदी शिक्षण में आई.सी.टी. और आधुनिक शैक्षणिक प्रविधियों का समावेश*** विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र का मूल विषय ***ग़ैर-सरकारी, अर्ध-सरकारी व स्वयं सेवी संस्थानों द्वारा हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार*** रहा। सत्र में मॉरीशस से श्री यंतुदेव बंधु, डॉ. उदय नारायण गंगू, श्री दैवभरत सीरतन तथा श्री राजनारायण गति ने भाग लिया। सत्र की अध्यक्ष श्रीमती सुनीता नारायण, समन्वयक, वेलिंग्टन हिंदी पाठशाला, न्यूजीलैंड रही।

तृतीय सत्र डॉ. विनोद बाला अरुण की अध्यक्षता में **यूरोप एवं अमेरिका में हिंदी** विषय पर चला जिसमें प्रो. महेंद्र किशोर वर्मा (यू.के.) व श्री अशोक ओझा (अमरीका) ने भाग लिया। इस सत्र में श्री रत्नाकर नराले ने कनाडा से तथा श्री नारायण माथुर ने नीदरलैंड से वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग द्वारा भाग लिया।

चतुर्थ सत्र का मूल विषय ***विश्व में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार : भारतीय संस्थाओं की भूमिका व योगदान*** रहा जिसकी अध्यक्षता सचिवालय की शासी परिषद के सदस्थ श्री अजामिल माताबदल ने की। प्रो. चितरंजन मिश्र, श्रीमती सुनीति शर्मा (उप सचिव (हिंदी) विदेश मंत्रालय, भारत सरकार) तथा डॉ. संजीव कुमार शर्मा ने लेख प्रस्तुत किए।

गोलमेज़ बैठक (1 नबंबर, 2014)

शनिवार 1 नवंबर को गोलमेज़ बैठक लगी। कार्यक्रम का आरंभ श्री केसन बंधु, मुख्य प्रतिवेदक की दो दिवसीय सम्मेलन की रिपोर्ट से हुई। दो बैठकों में *गिरमिटिया प्रवासी देशों के विशेष संदर्भ में हिंदी शिक्षण व प्रचार कार्यों का पुनर्स्थापन तथा सुदृढ़ीकरण* पर प्रस्तुतियाँ हुईं।

समापन सत्र

गोलमेज बैठक के समापन के बाद ही सम्मेलन का समापन समारोह रखा गया। समापन सत्र के विशेष अतिथि भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल, महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक श्री विजय मधु, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक श्री सतीश मेहता तथा ऋषि दयानंद संस्थान के डीन डॉ. उदय नारायण गंगू रहे।'

अवसर पर महामहिम भारतीय उच्चायुक्त तथा श्री सतीश मेहता ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता महामहिम भारतीय उच्चायुक्त ने की इस रात में दो गोलमेज़ सत्रों का प्रतिवेदन श्री केसन बधु द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा डॉ. उदय नारायण गंगू द्वारा सम्मेलन के मंतव्य पढ़े गए।

अन्य गतिविधियाँ

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन के आयोजन के अंतराल में ही मॉरीशस के कला एवं सस्कृति मंत्रालय के सौजन्य से भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन द्वारा एक **अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन** का आयोजन किया गया था। विश्व हिंदी सचिवालय तथा हिंदी सम्मेलन के प्रतिभागियों ने 10 अक्टूबर को आयोजित भोजपुरी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में अपनी प्रतिभागिता दी। 31 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन तथा भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आयोजकों द्वारा संयुक्त रूप से **प्रवासी कवि सम्मेलन** का आयोजन किया गया जिसमें दोनों सम्मेलनों के प्रतिभागियों के साथ-साथ मॉरीशस के कई हिंदी व भोजपुरी विद्वान व कवियों ने भाग लिया। 2 नवंबर को गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की 180वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में आप्रवासी घाट में एक भव्य स्मरणोत्सव का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि, भारत गणराज्य की विदेश मंत्री, माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज रहीं। सम्मेलन के प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भी रुचि के साथ भाग लिया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

उद्घाटन समारोह में महानुभावों के संदेश से कुछ महत्वपूर्ण कथन

1. ''मित्रों! डायस्पोरा देशों में हिंदी शिक्षण और प्रचार के लिए आपसी सहयोग का एक पूल स्थापित करने के मक्सद से आयोजित इस सम्मेलन के बारे में जब मुझे पता चला तो मेरा माथा गर्व से ऊँचा हो गया। मुझे लगा हम लोग न केवल मॉरीशस की भूमि पर बल्कि सभी आप्रवासी देशों में कठिन समय में अपनी निष्ठा के बल पर अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखनेवाले अपने पूर्वजों को इससे बेहतर कोई श्रद्धांजलि नहीं दे सकते थे।''

''मित्रों! आज हमारी हिंदी इतिहास की कठिनाइयों को पार करके ग्लोबल लेवल पर इकनोमिक और पॉलिटिकल महत्व की भाषा बन गई है। एक बिलियन लोगों की ये भाषा आज अमेरिका से लेकर जापान तक सभी बड़े देशों में पढ़ाई जा रही है। साइंस और टेक्नोलॉजी से जुड़ रही है। इस ग्लोबल पर्सपेक्टिव में हिंदी की पढ़ाई से लेकर उसके प्रचार तक में हमारा दृष्टिकोण भी ग्लोबल होना चाहिए। इसके लिए हम सभी को एक साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। मुझे लगता है कि इस सम्मेलन ने इस नए ग्लोबल पर्सपेक्टिव में इंटरनेशनल सहयोग की इस आवश्यकता की ज़रूरत को समझते हुए जो पहल की है वो प्रवासी दुनिया में हिंदी के इतिहास का एक नया अध्याय खोलेगा।''

उद्घाटन समारोह में
महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, जी.सी.एस.के., जी.ओ.एस.के.,
मॉरीशस गणराज्य के तत्कालीन राष्ट्रपति के उद्गार

2. ''हिंदी भाषा और हिंदी शिक्षण इस देश में विशेष महत्व रखते हैं। इस देश के इतिहास के हर पन्ने पर हिंदी भाषा और उसके सेवकों के योगदान की कहानी लिखी हुई है और केवल इतिहास ही नहीं हिंदी इस देश के वर्तमान और भविष्य की अहम भाषा है। इसलिए हमारे देश में हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं के प्रचार को बहुत महत्व दिया जाता है।...मुझे ये केहते बहुत गर्व का अनुभव हो रहा है कि प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार विषय पर इस अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन इस बात को साबित कर देता है कि अब समय आ गया है कि मॉरीशस हिंदी भाषा के शिक्षण के लिए भारत से बाहर एक नोडल प्वॉइंट बन सकता है...''

''आपमें से कई लोग इस बात को जानते होंगे कि जब दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन के लिए श्रीमती इंदिरा गांधीजी मॉरीशस आई थीं तब उन्होंने हमारे देश में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रेम को देखकर हमें 'एक छोटा भारत' कहा था। तब से भाइयों और बहनों! आज तक हमारा देश बहुत बड़ा हुआ है, हमारे छोटे-छोटे टापुओं को घेरनेवाला महासागर विशाल है लेकिन उसके साथ-साथ दुनिया में हमारे देश का सम्मान भी विशाल है, हमारे देश की आत्मा भी विशाल है और उस आत्मा में हिंदी और हिंदुस्तानी के लिए प्रेम भी विशाल है इसीलिए मैं कहना चाहूँगा कि आज हम 'एक छोटा भारत' नहीं है बल्कि 'एक और भारत हैं।'

उद्घाटन समारोह में
माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी,
तत्कालीन शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री, मॉरीशस के उद्गार

3. ''हिंदी प्यार की भाषा है। हिंदी अहिंसा की भाषा है। हिंदी एकता की भाषा है। हम हिंदी भाषा के माध्यम से

सारे दुनिया में प्यार, अहिंसा और एकता की गंगा बहाएँगे। इसलिए, भाइयों और बहनों! मैं समझता हूँ कि भारत के प्रधानमंत्री जी श्री नरेंद्र मोदी जी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी ही बोलते हैं...''

उद्घाटन समारोह में
माननीय श्री मुखेश्वर चूनी, जी.ओ.एस.के.
तत्कालीन कला व संस्कृति मंत्री के उद्गार

4. ''आज दुनिया में फैला हुआ हमारा जो 27-28 मिलियन डायस्पोरा हैं, उनमें कुछ ऐसी जगह हैं जहाँ हिंदी बोलनेवालों की संख्या छोटी है। अगर उनको पूरी तरह से सपोर्ट न मिले, उनको सींचा नहीं गया तो वहाँ पर इस भाषा को ज़रूर थोड़ा-बहुत झटका लग सकता है क्योंकि जहाँ-जहाँ थोड़ा-बहुत डायस्पोरा है वहाँ रहे तो वो हिंदी तो बोलते हैं लेकिन उनकी अपनी एक पहचान है। मॉरीशस की हिंदी मॉरीशस की हिंदी है। उसपर मॉरीशस का हक है। हम भी हिंदी बोलते हैं लेकिन ये मॉरीशस की हिंदी है। इसी तरह फीजी की हिंदी है, गयाना की हिंदी है। मैं सूरीनाम के वर्ल्ड हिंदी कॉन्फ़ेरेंस में था, उसकी अपनी हिंदी थी। तो ये गुलदस्ता अलग-अलग रंगों का है जिसको हिंदी बोलते हैं, उसके सारे रंगों को बचाना ज़रूरी है और उन रंगों को बचाने के लिए आज वे हमारे यहाँ इकट्ठे हुए हैं जो उन पौधों की देख-रेख करते हैं।''

उद्घाटन समारोह में
महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल,
भारतीय उच्चायुक्त के उद्गार

भाग–4 : चित्रावली

उद्घाटन समारोह

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि व गणमान्य अतिथियों के साथ सम्मेलन में भाग लेने वाले विदेशी प्रतिभागी

सम्मेलन में उपस्थित विदेशी व मॉरीशसीय प्रतिभागी तथा गणमान्य अतिथि

सभागार को संबोधित करते हुए महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस
व संचालन समिति के अध्यक्ष

स्वागत वक्तव्य देते हुए श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, कार्यवाहक महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस व सम्मेलन संयोजक

उद्‌घाटन समारोह में उपस्थित मॉरीशस की हिंदी शैक्षणिक व प्रचारक संस्थाओं के अध्यक्ष, प्रतिनिधि व सदस्य गण

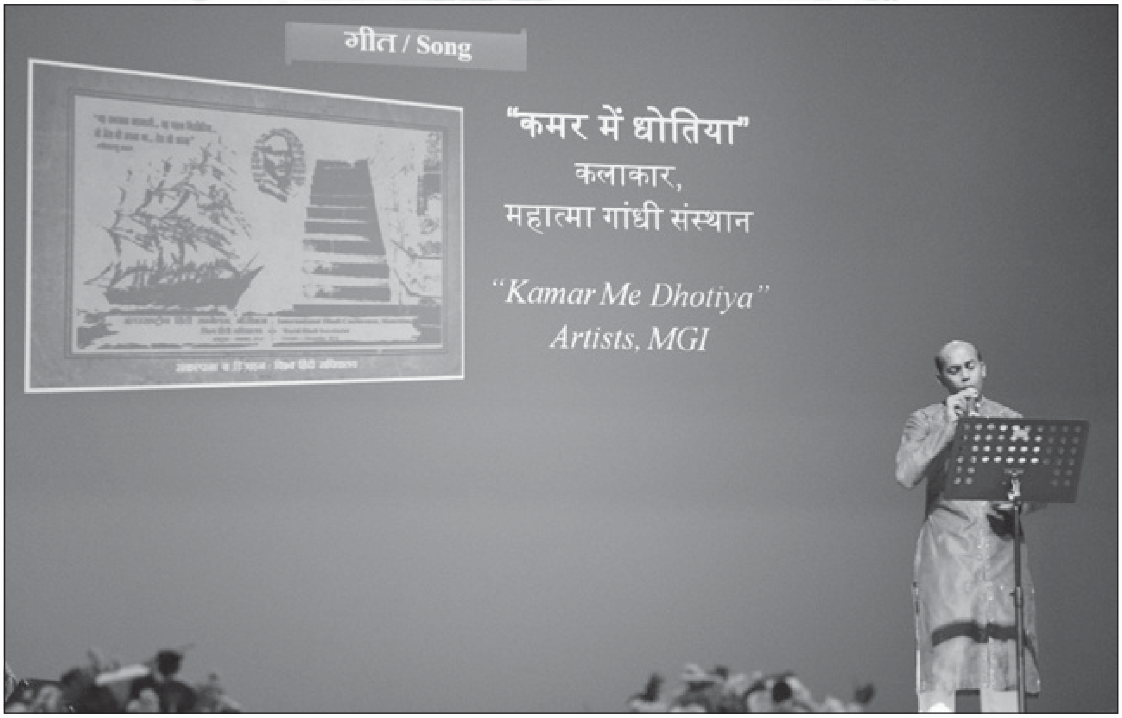

महात्मा गांधी संस्थान के कलाकार द्वारा 'कमर में धोतिया' गीत प्रस्तुति

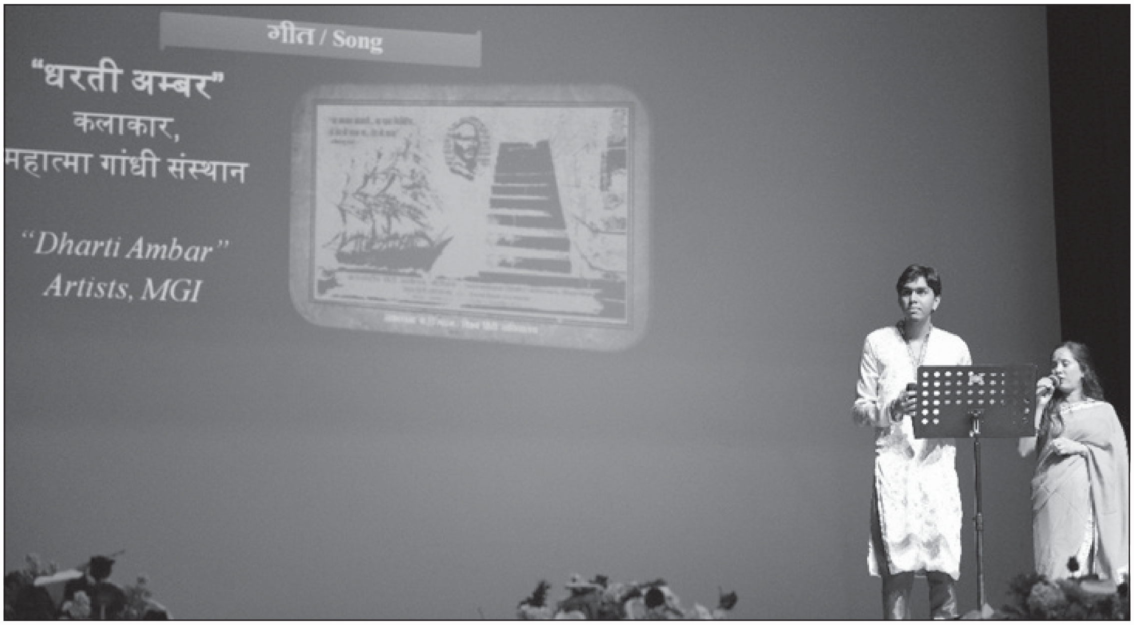

महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा 'धरती अम्बर' गीत प्रस्तुति

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा 'वंदे मातरम' संगीत व नृत्य प्रस्तुति

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकार

समापन समारोह

मुख्य अतिथि, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस द्वारा वक्तव्य

सम्मेलन के प्रतिभागियों को भेंट प्रदान करते हुए भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्‌गल, आई.सी.सी.आर. के महानिदेशक श्री सतीश मेहता व अन्य महानुभव

हिंदी प्रचारिणी सभा मॉरीशस द्वारा हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ्रीका को शिक्षण सामग्री भेंट प्रस्तुति

समापन समारोह में उपस्थित प्रतिभागी व अतिथि गण

सम्मेलन के प्रतिभागी